OM

THE RAMAYANA

OF

VALMIKI

BALAKANDA

(North-Western Recension)

CRITICALLY EDITED FOR THE FIRST TIME FROM ORIGINAL MSS.

BY

Bhagavad Datta B.A.

WITH THE CO-OPERATION OF PROF. RAM LABHAYA M.A. AND THE SHASTRIS OF THE DEPT.

1931

First Edition
500 Copies

Price
Rs. 5-0-0

ओम्

दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत-ग्रन्थमाला

अनेक विद्वानों की सहायता से

भगवद्दत्त

संस्कृताध्यापक वा अध्यक्ष अनुसन्धान-विभाग

दयानन्द महाविद्यालय, लाहौर द्वारा

सम्पादित

ग्रन्थाङ्क १२।

श्रीमद्दयानन्दमहाविद्यालय संस्कृत-ग्रन्थमाला सं० १२

* ओम् *

वाल्मीकीय-रामायणम्

बाल-काण्डम्

(पश्चिमोत्तरशाखीयम्)

पं० रामलभाया एम. ए. तथा अनुसन्धान-विभाग के
शास्त्रियों की सहायता से

भगवद्दत्त बी. ए.

अध्यक्ष अनुसन्धान विभाग, दयानन्द कालेज, लाहौर
द्वारा
सम्पादित

आर्य्य संवत् १९६०८५३०२

विक्रम सं० १९८८ सन् १९३१ ई०

दयानन्दाब्द १०७

प्रथम संस्करण ५०० प्रति मूल्य ५) रु०



Printed by Pt. Mahavir Prasad

MANAGER VIDYA PRAKASH PRESS, CHANGAR ROAD, LAHORE

And Published By

The Research Department, D. A. V. College, Lahore.



PREFACE.

The last fasciculus of the Ayodhya Kanda of Valmiki Ramayana edited by Pt. Ram Labhaya, M.A. was published towards the end of the year, 1927. But the printing of the further Kandas was altogether abandoned for want of money and also because Pt. Ram Labhaya joined the Khalsa College, Amritsar as Professor of Sanskrit. In the middle of 1928 I sought an interview with Sir Geoffery Fitz Hervey de Montmorency, the present Governor and the then Vice Chancellor of the Punjab University, and requested him to help our Department in completing the publication of the remaining kandas of Valmiki Ramayana. He showed much interest in this work and promised some help, with the result that our Dept. received a grant of Rs. 2000/- soon after this. Manohar Lal, Esq., M.A., the then Minister of Education, the Director of Education and A. C. Woolner, Esq., M.A., the Dean of the Punjab University, also came to our rescue with the result that an annual grant of Rs. 2000/- was extended for the subsequent period of five years. But for their timely help this Kanda would never have seen the light of day; nor would it have been possible for us to assure the public that the remaining Kandas will also be published in a reasonably short time. It is, therefore, my pleasant duty to render my most sincere thanks to those who made the publication of this work possible.

BHAGAVAD DATTA

ABBREVIATIONS.

N=Nill=(नास्ति)

पू=पूर्वार्ध=(1st. half of a verse)

उ=उत्तरार्ध=(IInd. half of a verse.)

व=वंगशाखीयं वाल्मीकीय-रामायणम् ।

Gorresio's Edition).

दा=दाक्षिणात्यशाखीयं वाल्मीकीय-रामायणम ।

(Gujrati Press Edition Bombay, 1913)



* ओम् *

भूमिका

कोशविवरण

१. कै, संख्या १९६९। यह कोश कैथल से प्राप्त किया गया था। इसीका अयोध्याकाण्ड रामायण के अयोध्याकाण्ड के सम्पादन में पं० रामलभाया वर्त चुके हैं। इसका आकार लम्बाई १३ इंच और चौडाई ८ इंच है। इस के ५४ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १६ पंक्तियां हैं। इसकी लिपि साधारणतया प्राचीन नागरी लिपि से मेल खाती है, परन्तु बाहुल्येन आजकल की प्रचलित लिपि से मिलती है हमारे अनुमानानुसार यह कोश लगभग १२५ वर्ष प्राचीन प्रतीत होता है। इस के मौलिक पाठ प्रायः शुद्ध हैं। कोश के जीर्ण होने के कारण कई जीर्ण स्थलों की पूर्ति किसी शोधक ने किसी दूसरी पुस्तक के आधार पर की है, परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि संशोधक ने इसे इसी शाखा के शुद्ध कोशानुसार शोधा है। क्योंकि पूर्त पाठ कई स्थानों पर इस शाखा से न मिल कर अन्य शाखा के पाठों से मिलते हैं और कई स्थलों पर अशुद्ध ही हैं।[1] वे इसके साथी रा-पुस्तक से प्रायः भिन्न हैं। पाठकने न केवल पाठों को ही पूरा किया है अपितु कई स्थलों पर अन्य शाखा के पाठ भी प्रान्तभाग पर लिख दिये हैं। उन में से बहुत से पाठ तो हमारे अन्य एक दो पुस्तकोंमें हैं, परन्तु कई पाठ अन्य शाखाओं के हैं। देखिये पृ० १२२ टिप्पण ५। यह सम्पूर्ण पाठ जो बङ्गशाखा में मिलता है पूरा नकल किया हुआ है। और भी देखिए पृ० १२४ नो० ३ और ११। पृ. १३३ नो ६। पृ० १९२ नो १०। इत्यादि।

---

१ देखिये पृ० १२१ नो १—गवमूले। पृ० २०४ नो० ६—वाविकुंस्थलम्। पृ० १२५ नो० १—अहास्वाश्रय०, नो० ५—एवैते, नो ११—वदूचे। पृ० ८४ नो० १२—मद्गमद्गुणात्मवैः। पृ० ६५ नो २—स्वर्की।

इतना होने पर भी इस पुस्तक के मौलिक पाठ प्रायः शुद्ध हैं। इसी कारण हमने इसे अपने सम्पादनकार्य का आधार पुस्तक बनाया है।

कै पुस्तक के साथ रा, ब पुस्तकें अन्त तक मिलती गई हैं। इन्हीं पुस्तकों का पाठ प्राचीनता के भाव से हृदयग्राही है। यद्यपि रा. ब में भी दो चार स्थानों पर कै पुस्तक से वैषम्य है,परन्तु इस प्रकार का नहीं जो इस से पार्थक्य को द्योतित करे। कै पुस्तक के प्रान्तभाग पर कितने ही ऐसे पाठ भी उद्धृत हैं जो हमारे प्र, प-पुस्तकों में हैं। देखो पृ० ३१, नो० १५, पृ० ५० नो० ६, इत्यादि। परन्तु प्र प-पुस्तकें हमारी शाखा से भिन्न प्रतीत हुई हैं। इसी कारण हमने इन्हें १३वें सर्ग से आगे छोड़ दिया है। इससे यह बात स्पष्ट होती है कि कै कोश के प्रान्तस्थ पाठ प्रायःअन्य-शाखास्थ हैं। हमने उन पाठों को टिप्पणीमें रख दिया है।इसके बालकाण्ड में ७७ सर्ग हैं। इसका आरम्भ निम्नलिखित मङ्गलश्लोकों से होता है --

ओं नमो विघ्नहर्त्रे श्रीगणेशाय नमः श्री गुरवे नमः
ओं नमः सरस्वत्यै ओं नमो भगवते वासुदेवाय नमः
ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥१॥
नमस्तस्मै मुनीशाय प्रयताय तपस्विने ।
सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥२॥
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलाम् ॥३॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥४॥
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम् ।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्रचेतःसमविक्रमम् ॥५॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥६॥
अञ्जनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लोकाभयंकरम् ॥७॥
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनम् ॥८॥

जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा ।
अजेन विष्णुरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥१॥

२. रा, सं० २९७३ । यह पुस्तक नासिक पञ्चवटी के राममन्दिर के पाससे प्राप्त हुई थी । इसका आकार १३×५ इञ्च है । इस के प्रत्येक पृष्ठ पर प्रायः १० पंक्तियां हैं । पाठ अतिशुद्ध है ।

इसका आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ॐ नमो ? श्रीगणेशाय नमः ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्,
देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।
जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुंडरीकाक्षः ।
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ॥
सर्व्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकमुनये नमः ॥
कूजंतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिं ॥
यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरं ।
अतृप्तस्तं मुनिं वंदे प्राचेतसमकल्मषं ॥
गोःपदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं ।
रामायणमहामालारत्नं वंदेनिलात्मजं ॥
अंजनीनंदनं वीरं जानकीशोकनाशनं ॥
कपीशरक्षहंतारं वंदे लंकाभयंकरं ।
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ॥
एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥

यह आदि से अन्तपर्यन्त क पुस्तक के साथ मिलती है। पाठभेद कम हैं। कहीं कहीं लेखक के अशुद्ध लिखने के कारण पाठभेद हुए हैं। उन पाठभेदों में से शुद्ध पाठ ही टिप्पण में दिये गये हैं ।

कहीं कहीं किसी २ श्लोक का एक पाद और दूसरे का अन्यपाद मिलाकर श्लोक पूरा किया गया है। देखो पृ० १८ नोट २। परन्तु कई स्थलों पर एक २

दो दो श्लोक 'कै' की अपेक्षा न्यूनाधिक हो गए हैं। उन को यथोचित स्थान पर रखा गया है। यह पुस्तक लगभग २०० वर्ष प्राचीन है। प्रतीत होता है कि इस पुस्तक का नकल करने वाला वैष्णव होगा। उसने कई स्थानों पर स्वमतानुसारी पाठ बनाए हैं, जैसे पृ० ७ नो ४ पर श्रीवैश्रवणशङ्करैः के स्थान पर श्रीमुकुन्दहरीश्वरैः, इत्यादि। अन्यत्र भी देखें। अयोध्याकाण्ड छापते हुए पं० रामलभाया ने हस्तलेखों के विभाग में लिखा था कि रा पुस्तक विलक्षण गौणविभाग दिखाती है अर्थात् मौलिक पाठ जो हमारी शाखा से मिलते हैं उन से भिन्न है, परन्तु बालकाण्ड में यह पुस्तक सर्वप्रकार से हमारी ही शाखा के मौलिक पाठ देती हुई हमारी आधार पुस्तक कै के साथ बिल्कुल मिलती है। इसके बालकाण्ड में ७८ सर्ग हैं। सर्गविभाग में कै से कुछ अन्तर अवश्य है।

३. ब, स० २९६२। यह पुस्तक बहावलपुर से प्राप्त किया गया था। इसका आकार १२ इञ्च लम्बा ७ इञ्च चौड़ा है। इस का आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं श्रीरामचन्द्राय नमः।

ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः॥
नमस्तस्मै मुनीशाय प्रयताय तपस्विने।
सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः॥
ओं कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं॥
वाल्मीकेर्मुनिभृङ्गस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिं॥
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचीतसमविक्रमम्॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं।
रामायणमहामालारत्नं वन्देनिलात्मजं॥

यह पुस्तक कै रा के साथ अन्त तक मिलती है। सर्ग १२ तक यह पुस्तक ज त ल प्र भ के साथ भी कई स्थानों पर मिलती रही है। परन्तु आगे चलकर इसने उनका साथ छोड़ दिया है और कै रा के पाठ से

अन्त तक अधिकांश में मिलती गई है। यदि कै रा से भेद भी किया है तो वह भेद प्रायः स्वतन्त्र है। देखो पृष्ठ ४७१ नोट ७। यह पुस्तक प्रायः स और म का भेद बहुत कम दिखाती है।

४. ल, सं० ४८४८। यह पुस्तक लाहौर से प्राप्त की गई थी। इसका आकार ११½ इञ्च लम्बा और ७½ चौड़ा है। यह प्रायः १०० वर्ष प्राचीन है। इस का आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

श्रों नमो नारायणाय।

श्रों नमः कमलदलविपुलनयनाभिरामाय श्रीरामचन्द्राय नमः॥
श्रों जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः॥
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने।
सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः॥
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविता शाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को नु याति परां गतिं॥
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम्।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्रचेतःसमविक्रमम्॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥

इसका पाठ १२ सर्ग पर्यन्त तो कै रा से मिलता गया है, परन्तु १३ वें सर्ग से ज ल भ इन पुस्तकों का समूह पृथक् बन गया है, और पाठ भी भिन्न ही हो गया है। देखो पृष्ठ १४९ से लेकर अन्त तक। आगे चलकर, पाठ में अधिकाधिक भिन्नता दृष्टिगत होती है। यह पुस्तक प्रायः स और म का भेद स्पष्टतया नहीं दिखाती। इसी कारण से कई पाठभेद भी पृथक् दीखने लगते हैं। कई स्थानों पर पाठभेद अथवा अधिक पाठ देने में यह पुस्तक त प्र प ट का अनुकरण करती है।

५. ज, सं० १७७२। यह पुस्तक अमृतसर से प्राप्त की गई थी। इसका

आकार १३ इञ्च लम्बा ७ इञ्च चौड़ा है। यह पुस्तक लगभग १०० वर्ष प्राचीन है। यह आरम्भ में मङ्गलश्लोक इस प्रकार देती है—

ओं स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ श्रीगुरवे नमः ॥

जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥ १ ॥
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।
सर्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥ २ ॥
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ॥ ३ ॥
वाल्मीकेःमुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥ ४ ॥
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं ।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम् ॥ ५ ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजं ॥ ६ ॥
अंजनीनन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं ।
कपीशमक्षहतारं वन्दे लोकाभयंकरं ॥ ७ ॥
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ।
एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥ ८ ॥
जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा ।
अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ॥ ९ ॥

यह पुस्तक ८१पत्र पर समाप्त हुई है। इस का पाठ प्रायः शुद्ध है। आरम्भ से लेकर १३ वें सर्ग के आरम्भ तक यह अन्य पुस्तकों के साथ मिलती गई है। १३वें सर्ग तक इसके पाठभेद अधिकांश रा के पाठभेदों से मिलते हैं। १३ सर्ग से इसका पाठ प्रायः भिन्न होकर ज ल भ से मिला है और ज ल भ इन तीनों का एक समूह बन गया है। अन्य पुस्तकों की तरह यह न तो अधिक पाठ देती है और न ही पाठ को छोड़ती है। किन्तु पूर्णरूपसे शुद्ध पाठ देती है। म और स का भेद नहीं देती। इस के बालकाण्ड में ६४ सर्ग हैं।

६. भ, सं० १९५९। यह पुस्तक भरतपुर से प्राप्त की गई थी। इसका आकार १३ इञ्च लम्बा ६ इञ्च चौड़ा है। आरम्भ में मङ्गलाचरण निम्न प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः।

ओं नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने,
सर्वज्ञानाधिवासाय बाल्मीकिमुनये नमः॥
श्रीजानकीवल्लभाय नमः॥ श्रीरघुनाथाय नमः॥
जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा।
अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना॥१॥
जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनो रामः
दशवदननिधनकारी दाथरथिः पुण्डरीकाक्षः॥२॥

यह पुस्तक २५० वर्ष प्राचीन है। इस में कई स्थानों पर पाठ विशेष भी हैं। जैसे पृ. ६ नोट १०। पृ. १७ नोट ६। पृ. ३१ नोट १५। ये पाठ प्रायः अन्य शाखाओं के हैं। जहां तक हमने प्र प पुस्तकों को वर्ता है वहां तक अधिक पाठों में यह उनका साथ देती है। भेद यह है कि भ अधिक पाठ का थोड़ा हिस्सा देती है और प्र प पूर्ण। इस से सिद्ध है कि प्र प ग्रन्थ हमारी शाखा के नहीं हैं। यह कई स्थानों पर कम भी पाठ देती है। जैसे पृ.२ नो*। पृ. १६ नोट ५,८। पृ.३६ नोट १६ इत्यादि। इसके पाठभेद प्रायः दूसरी ही शाखाओं से मिलते हैं,परन्तु श्लोक नहीं। यह भी १३ वें सर्ग से ज ल के समूह से मिलता गया है और अन्त तक पृथक् पाठ भेद देता गया है। इसके बालकाण्ड में ५७ सर्ग हैं।

७. प्र, सं०२९६६। यह पुस्तक प्रयागसे प्राप्त हुआ था। इसकी लम्बाई ११ इञ्च और चौड़ाई ६३⁄४ है। इसका लेखन काल सं० १८६९ है। यह पुस्तक कुछ दूर तक तो हमारे ग्रन्थों से मिली है, परन्तु आगे बिल्कुल भिन्न हो गई है। इसको हमने ७ वें सर्ग तक अपने उपयोग में लिया है। इसका आरम्भ निम्न प्रकार से है—

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं।
काकुत्स्थं करुणाकरं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकं।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिं॥
जयति रघुवंशतिलकः कौशल्यानन्दिवर्द्धनो रामः।

दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥
राम रामेति रामेति कूजन्तं मधुराक्षरं ।
आरूढकविताशाखं वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ।
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।
सर्वज्ञानाधिवासाय तस्मै वाल्मीकये नमः ॥

इसके पाठ न तो पश्चिमोत्तर, न दाक्षिणात्य और न वङ्ग शाखा से यथाक्रम मिलते हैं । परन्तु जहाँ अधिक श्लोक हैं वे प्रायः वङ्ग शाखा के हैं । परन्तु वङ्ग शाखा और सिरामपुर में छपी हुई शाखा (जो चौथे प्रकार की शाखा का पाठ देती है) से इसमें अधिक भेद नहीं । अधिक विचार और पूरी तुलना करने से ज्ञात हुआ है कि हमारी प्र. पुस्तक भी इसी शाखा की है । यह शाखा साधारणतया हमारी शाखा से मिलती है । इसी से हमने इसे अपने सम्पादन के सहायक पुस्तकों में रखा था, परन्तु आगे विशेषभेद देखने पर हमने इसे छोड़ दिया । यह पुस्तक पश्चिमोत्तर शाखा के सूत्रभूत को विशेष विस्तारसे वर्णन करती है और एक श्लोक के किसी स्थान पर कई कई श्लोक बना देती है । निदर्शन के लिए २७ वें सर्ग में ९ श्लोक के द्वितीय पाद से ११ श्लोक के द्वितीयपाद तक निम्न श्लोकों की तुलना करें—

स त्वं त्रैलोक्यराज्यं नो हृतं भूयो जगत्पते ।
दातुमर्हसि निर्जित्य विक्रमै र्भूरिभिस्त्रिभिः ॥
अयं सिद्धाश्रमो नाम सिद्धकर्मा भविष्यति ।
तस्मिन् कर्मणि संसिद्धे तव सत्यपराक्रम ॥

ये २ श्लोक हैं, जिन में अपने हरे हुए राज्य को पुनः लौटाने के लिये देवताओं ने वामन से प्रार्थना की है । इतने ही पाठ के स्थान में प पुस्तक पूरा ऐतिह्य जोड़ कर अच्छी तरह खोलती है—

स त्वं सुरहितार्थाय मायायोगमुपाश्रितः ।
वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमम् ॥
एतस्मिन्नन्तरे राम कश्यपोऽग्निसमप्रभः ।
अदित्या सहितो राम दीप्यमान इवौजसा ॥

इन उपर्युक्त दोनों पाठों की परस्पर तुलना करने से प्रतीत होता है कि प-पुस्तकस्थ पाठ पश्चिमोत्तर शाखा के पाठ से विस्तृत तथा भिन्न है। उस के सारे श्लोकों में से केवल—

वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमम् ।

यह आधा श्लोक ही ऐसा है जो पश्चिमोत्तर शाखा के श्लोकार्ध—

स त्वं वामनरूपेण कुरु कल्याणमुत्तमम् ।

से मिलता है। प-पुस्तक का शेष पाठ सर्वथा स्वतन्त्र है और वह पाठ सिरामपुर की रामायण के पाठ से मिलता है।

८. प, संख्या २९६७। यह पुस्तक पञ्चकटो से प्राप्त की थी। यह लग भग १५० वर्ष प्राचीन है। यह आकार में १४ इञ्च लम्बी और ६½ इञ्च चौड़ी है। इसका आरम्भ निम्न लिखित प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः। श्रीरामचन्द्राय नमः ॥
जयति रघुवंशतिलकः कौशल्याहृदयनंदनंदनो रामः ।
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥
जितं भगवता तेन हरिणा विश्वधारिणा ।
अजेन विश्वरूपेण निर्गुने ? गुणात्मना ॥
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने ।
सर्वज्ञानाधिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः ॥
कूजंतं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरं ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः ।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति परां गतिम् ॥
यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम् ।
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषं ॥
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देनिलात्मजम् ॥
अंजनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनं ।
कपीशमक्षहंतारं वन्दे लंकाभयंकरं ॥
चरित्रं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं ।
एकैकमक्षरं प्रोक्तं महापातकनाशनं ॥

मङ्गलाचरण का यह क्रम हमारे किसी अन्य कोश से नहीं मिलता। दक्षिण, वङ्ग और सिरामपुर में मुद्रित शाखा से भी यह नहीं मिलता। कई स्थलों पर इस के अधिक पाठ वङ्ग शाखा की रामायण में मिलते हैं। प—पुस्तक के दशम सर्ग की समाप्ति और एकादश सर्ग का आरम्भ वङ्ग और दक्षिण शाखा के समान ही है, परन्तु पाठभेद और श्लोक-संख्या में प—पुस्तक उन का साथ न दे कर पश्चिमोत्तर शाखा का अनुसरण करती है। इस से यह सिद्ध होता है कि सम्भवतः इस प्रकार के पाठ और क्रम देने वाली कोई अन्य ही पांचवीं शाखा हो।

१० सर्ग पर्यन्त हम ने इस कोश से काम लिया है, परन्तु आगे अधिक भेद होने से छोड़ दिया है।

यह पुस्तक अनेक स्थलों पर ऐसे पाठ देती है, जो कहीं रा—पुस्तक से मिलते हैं और कहीं ज भ से। परन्तु रा ज भ—पुस्तकों में जहां जहां अधिक पाठ हैं वे कई स्थानां पर तो इस से मिलते हैं और कई स्थानों पर सर्वथा स्वतन्त्र हैं। देखो पृष्ठ २।११॥ ५।८॥ ८।१२॥ इत्यादि ॥

९. ट, संख्या २९७०। इसकी लम्बाई १२ इञ्च और चौड़ाई ६ इञ्च है। यह कोश वि० सं० १८४६ का लिखा हुआ है। इस का मङ्गलाचरण निम्न लिखित प्रकार से है—

श्रीगणेशाय नमः। श्रीशारदायै नमः ओं नमः परमात्मने।
ओं नमः कमलदलविपुलनयनाभिरामाय श्रीरामचन्द्राय ॥
ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनंदनो रामः ॥
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः १
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने
सर्वज्ञाननिवासाय वाल्मीकिमुनये नमः २
कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलं ३
वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः
शृण्वन्रामकथानादं को न याति परां गतिं ४
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतं
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषं ५
गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसं

रामायणमहामालारत्नं वंदेनिलात्मजं ६
अंजनीनंदनं वीरं जानकीशोकनाशनं
कपीशमदहर्तारं वन्दे लोकाभयंकरम् ७
चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरं
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनं ८
जितं भगवता तेन हरिणा लोकधारिणा
अजेन विष्णुरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना ९

इति ।

इसके पाठभेद साधारणतया कई स्थलोंपर वङ्ग शाखा से मिलते हैं। जहाँ तक देखा गया है, सर्गसमाप्ति भी वङ्ग शाखा के समान ही है। परन्तु अनेक स्थल ऐसे हैं जिन के साथ तुलना से प्रतीत होता है कि यह कोश पाठ और क्रम में वङ्ग शाखा से प्रर्याप्त भिन्न है। यथा—वङ्ग शाखा में अनुक्रमणी के दो सर्ग हैं। एक तृतीय और दूसरा चतुर्थ[1] तृतीय सर्ग विस्तृत है। उसकी श्लोकसंख्या १४५ है। चतुर्थ कुछ संक्षिप्त है। इस की श्लोक संख्या ७१ है। दाक्षिणात्य और सिरामपुर में मुद्रित शाखा में भी अनुक्रमणी दो ही सर्गों में है। परन्तु ट—पुस्तक में अनुक्रमणी का केवल एक चतुर्थ सर्ग ही है। इस के तृतीय सर्ग में केवल थोड़े से श्लोक रामायण की प्रशंसामात्र के हैं। ये सब शाखाओं में मिलते है।[2] ट—पुस्तक के चतुर्थ सर्ग के श्लोक वङ्ग और दक्षिण शाखीय रामायण के विस्तृत तृतीय सर्ग में यत्र तत्र दृष्टिगत होते है। सम्भव हैं कि प्राचीन काल में अनुक्रमणी का यही एक सर्ग हो। क्योंकि इसी सर्ग में रामायण का काण्डक्रम, कथाक्रम और प्रत्येक काण्ड की सर्गसंख्या तथा श्लोकसंख्या आदि समस्त बातें आ जाती हैं।

ट—पुस्तक की श्लोक संख्या और क्रमभेद की तुलना के लिए देखिए वङ्ग शाखा सर्ग ३०—

---

१ पश्चिमोत्तर शाखा का चतुर्थ सर्ग ट—पुस्तक और वङ्ग तथा दक्षिण शाखा का तृतीय है।

२ इन श्लोकों को हमारे इस बालकाण्ड के तृतीय सर्ग पृ० ३७ से लेकर पृ० ५५ तक की ट—टिप्पणी को चतुर्थ सर्ग के मूल श्लोक ११ से १२ तक मिला कर देखें॥

अथ तां रजनीं व्युष्टां विश्वामित्रो महामुनिः ।
प्रहसन् राममामाष्य मधुरं वाक्यमब्रवीत् ॥१॥
तुष्टोऽस्मि राम भद्रं ते कर्मणा त्वत्कृतेन वै ।
प्रीतिदायं च दास्यामि सर्वायस्त्राण्यशेषतः ॥२॥

ये श्लोक वङ्गशाखा की रामायण के सर्ग ३० के आरम्भ के हैं । ट—के भी ३० वें सर्ग का आरम्भ यहीं से है, परन्तु वहां इन दो के स्थान पर केवल—

प्रभातायां तु सर्वर्यां विश्वामित्रो महामुनिः ।
प्रीतिदायं तु दास्यामि सर्वायस्त्राण्यशेषतः ॥१॥

यह एक ही श्लोक है । इससे यह बात स्पष्ट होती है कि सर्ग समाप्ति समान होने पर भी श्लोकक्रम और पाठ में भेद है ।

इसके बालकाण्ड को समाप्ति भी सब शाखाओं से भिन्न है ।

ट—कोश के पाठभेद प्रायः शुद्ध और सार्थक हैं । जो पाठ अशुद्ध हैं वे केवल लेखक-प्रमाद से हैं ।

१० त, संख्या १९७२ । यह कोश लाहौर से [illegible] किया गया था । लम्बाई में यह १३½ इञ्च और चौड़ाई में ८ इञ्च है । इसका आरम्भ निम्नलिखित प्रकार से है—

ओं स्वस्ति प्रजाभ्यः श्रीगणेशाय नमः ओं श्रीरामचन्द्राय
नमो नमः ओं नमः सरस्वत्यै ।
ओं जयति रघुवंशतिलकः कौसल्याहृदयनन्दनो रामः
दशवदननिधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः
नमस्तस्मै मुनीशाय श्रीयुताय तपस्विने
सर्वज्ञाननिवासाय बाल्मीकिमुनये नमः
कूजंतं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरं
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्
वाल्मीकेर्मुनिभृंगस्य कवितावनचारिणः
शृण्वन् रामकथानादं को नु ? [न] याति परां गतिं
यः पिबन् सततं लोके रामायणकथामृतम्
अतृप्तस्तं मुनिं वन्दे प्राचीतःसमविक्रमम्
गोष्पदीकृतवारीशं (शं) मशकीकृतराक्षसम्
रामायणमहामालारत्नं वन्देनिलात्मजम्

यह पुस्तक लगभग १०० वर्ष प्राचीन है। इसका पाठ प्रायः शुद्ध है और पाठभेद प्रायः ज – कोश से मिलते हैं। अष्टम सर्ग पर्यन्त तो यह हमारे आधार पुस्तकों से मिलता गया है, इससे आगे इसका क्रम सर्वथा भिन्न हो गया है। कहीं कहीं इसमें सर्ग अत्यन्त छोटे हैं। एक स्थान पर हमारी पश्चिमोत्तर शाखा में जो श्लोक केवल एक सर्ग में आ गए हैं वे ही श्लोक त—पुस्तक में तीन चार सर्गों में विभक्त कर दिए हैं। कहीं कहीं दो दो तीन तीन सर्गों के श्लोक एक ही सर्ग में रख दिए हैं। परन्तु यह क्रम सर्वत्र नहीं।

इसके बालकाण्ड में ७८ सर्ग हैं।

इन दश कोशों में से हमने छः कोशों को आरम्भ से अन्त तक वर्ता है। इन छः के भी दो समूह हैं। कै, रा, ब, का एक समूह है और ज, ल, भ का दूसरा। इन दोनों में हमारा आधार पहले समूह पर हो रहा है।

बालकाण्ड का सम्पादन

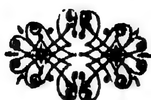
अयोध्या काण्ड का सम्पादन पं० रामलभाया एम. ए. ने किया था। उसके छपने के बीच ही में वे अमृतसर खालसा कालेज के प्रोफेसर हो गए थे। कै, ल और ब इन तीन कोशों से उन्होंने बालकाण्ड की प्रेस कापी भी तय्यार की थी। उनके जाने के पश्चात् मैं ने बहुत सी नई सामग्री हस्तगत की। उसकी सहायता से उनकी तय्यार की हुई प्रेस कापी का दोबारा शोधन किया गया है। अनेक स्थानों पर उनके पाठ शोधे गए हैं। नई सामग्री के उपयोग से यही नहीं, वरन् उनकी सारी कापी दोबारा लिखी गई है। इस शोधनमें हमारे विभाग के तीन शास्त्रियों ने मेरी बड़ी सहायता की है। उनके नाम पं० प्रेमनिधि शास्त्री, पं० विजयानन्द शास्त्री और पं० पीताम्बर शास्त्री हैं। कोशों के मिलाने में ये तीनों ही शास्त्री समय समय पर काम करते रहे हैं। कई वार इन्हों ने मिल कर भी काम किया है और पहले आठ सर्गों में तो तीनों मेरे साथ काम करते रहे हैं। परन्तु सम्पादन का सारा भार मेरे सिर पर रहा है। कोशों के समूहों का बनाना, पाठों का अन्तिम निश्चय करना, कहाँ तक कौन सा कोश काम में लाया जाए, इस सबके लिए मैं ही उत्तरदायी हूँ। अन्तिम प्रूफ भी मैं ने अपने देखे विना कभी छपने नहीं दिया। परन्तु बालकाण्ड का छपना असम्भव हो जाता यदि ये तीनों शास्त्री प्रारम्भिक

काम न करते। कोशों के विवरण की सामग्री पं० प्रेमनिधि ने तय्यार की है और अन्त में छपी हुई ग्यारह सूचियाँ भी उन्होंने ही बनाई हैं।

रामायण के मुद्रण में गवर्नमेण्ट की सहायता

पं० रामलभाया के चले जाने के पश्चात् मैं ने रामायण का मुद्रण एक प्रकार से बन्द ही कर दिया था। हमारी कालेज कमेटी धनाभाव से इस के मुद्रण का भार अपने ऊपर नहीं लेती थी। सन् १९२८ के मध्य में मैं श्रीयुत सर जाफरी फिट्ज़ हर्वे डी मॉण्टमोरेन्सी से मिला। वे उन दिनों पञ्जाब यूनिवर्सिटी के वाईस चान्सलर थे। उन्होंने मेरे काम में बड़ी सहानुभूति प्रकाशित की। उनकी प्रेरणा से उन दिनों के प्रान्तीय शिक्षाविभाग के मन्त्री श्रीयुत मनोहर लाल एम. ए. ने पञ्जाब सरकार से २०००) रु० की सहायता की। इस विषय में शिक्षा-विभाग के डायरैक्टर महोदय और पञ्जाब यूनिवर्सिटी के डीन श्री वूलनर महोदय ने भी परामर्श दिया। अगले वर्ष वह सहायता भावी पाँच वर्षों के लिए और बढ़ा दी गई। यदि यह समयोचित सहायता न मिलती तो बालकाण्ड प्रकाशित न हो सकता। अब तो अगले काण्डों के भी छपने की पूरी आशा है। इस भारी सहायता के लिए मैं पञ्जाब के गवर्नर महोदय का, शिक्षाविभाग के भूत-पूर्व मन्त्री श्रीयुत मनोहर लाल एम. ए. का, डायरैक्टर महोदय का और श्री ए. सी. वूलनर महोदय का अत्यन्त आभारी हूँ।

भगवद्दत्त





वाल्मीकीय रामायणम्

बालकाण्डम्



वाल्मीकीय-रामायणम्

* बालकाण्डम् *

[बं=१] [प्रथमः सर्गः] [दा=१]

तपःस्वाध्यायनिरतम्[1] तेजस्वी[2] वाग्विदां वरः[2]।
१] नारदं परिपप्रच्छ वाल्मीकिर्मुनिसत्तमः[3] ॥ १ ॥ [१
को न्वस्मिन्[4] प्रथितो लोके सद्गुणैर्गुणवत्तरः[5] ।
२] धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्[6] सुदृढव्रतः ॥ २ ॥ [२
उदाराचारसंयुक्तः[7] सर्वभूतहिते रतः[8] ।
३] वीर्यवांश्च[9] वदान्यश्च सदा[10] च[10] प्रियदर्शनः ॥[11] ३॥ [३
जितक्रोधो महान्कश्च[12] धृतिमान्[13] कोऽनसूयकः[13] ।
४] संजातरोषात् कस्माच्च देवता अपि बिभ्यति ॥ ४ ॥ [४

---

१. रा त ल—०निरतं ।
२. रा प्र प भ —तपस्वी वा० । त ल—सर्वशास्त्रविशारदम् ।
३. ट—०सत्तमं । रा—०निपुंगवः । प—०निपुंगव ।
४. प्र—न्वस्मिन् ।
५. त ल—सद्गुणो गुणा० ।
६. ज रा भ त ल प्र प ट—सत्यवाक्यो दृढव्रतः ।
७. ब त ल—कः सदाचारसंपन्नः । ज रा ट प्र प भ —०रसम्पन्नः ।
८. ब रा ल प ट—०तहितश्च कः ।
९. ब त ल—वीर्यवान् बलवांश्चापि ।
१०. ब रा [illegible] ल प्र प भ—कश्चापि ।
११. ट—[illegible] ।
१२. प भ—वदान्यश्च ।
१३. त ल—कृतज्ञश्चानसू० ।

क उदारः समर्थश्च त्रैलोक्यस्यापि रक्षणे ।
५] कः प्रजानुग्रहरतः[1] को निधिर्गुणसंपदाम्[2] ॥ ५ ॥ [N
समग्रा रूपिणी लक्ष्मीः कमेकं[3] संश्रिता नरम् ।
६] अनिलानलसूर्येन्दुशक्रोपेन्द्रसमश्च कः ॥ ६ ॥ [N
चारित्रेण च संयुक्तः[4] सर्वभूतेषु को हितः ।
N]*को विद्वांश्च समर्थश्चाप्यात्मवान् कोऽतिथिप्रियः ॥७॥ [N
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं त्वत्तो नारद तत्त्वतः ।
७] देवर्षे त्वं समर्थोऽसि ज्ञातुमेवंविधं नरम् ॥ ८ ॥ [५
कालत्रयज्ञस्तच्छ्रुत्वा वाल्मीकेर्नारदो वचः ।
८] श्रूयतामित्युपामन्त्र्य तं[5] मुनिं[5] प्रत्यभाषत ॥ ९ ॥ [६

नारद उवाच[6]

बहवो दुर्लभाश्चैव त्वयैते[7] कीर्तिता गुणाः ।
९] एकेन[8] हि नृलोके[9] ऽस्मिन् गुणा एते सुदुर्लभाः ॥१०॥ [७
देवेष्वपि न पश्यामि कश्चिदेभिर्गुणैर्युतम् ।
१०] श्रूयतां तु गुणैरेभिर्यो युक्तो नरसत्तमः[10] ॥[11]११॥ [N

---

१. प भ—०हकरः ।
२. कै—०गुंणसंयुतः ।
३. त, ल—कमेका ।
४. ट—को युक्तः ।
* त ल प्र प भ —नास्ति ।
५. त ल प्र प भ —तमृषिं ।
६. कै—अत्रैव । नान्यत्र ।
७. रा—त्वयैव ।
८. व त ल प्र प भ—एकस्मिन् । रा—एकत्र ।
९. त ल प्र—त्रिलोके ।
१०. त ल प्र भ ट—नरचन्द्रमाः ।
११. प—किन्तु वक्ष्याम्यहं तुभ्यं भविष्यति महायशाः ।

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम गुणाकरः। [८पू
११] एतैरभ्यधिकैश्चैव[1] गुणैर्युक्तो महाद्युतिः[2] ॥ १२ ॥[3][N
संयतात्मा[4] मद्युतिमान्[5] धृतिमान् गुणवान्[6] वशी। [८उ
१२] बुद्धिमान् नीतिमान्[7] वाग्मी धीमान्[8] शत्रुनिबर्हणः॥१३॥[९पू
विशालाक्षो[9] महाबाहुः कम्बुग्रीवो महाहनुः। [९उ
१३] महेष्वासो महातेजा गूढजत्रुररिन्दमः ॥१४॥ [१०पू
आजानुबाहुः सुशिरा[10] बलवान्[11] सत्यविक्रमः[12]।[१०उ
१४] समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान् ॥१५॥ [११पू
पीनवक्षा[13] विशालाक्षो[13] लक्ष्मीवान् कुलनन्दनः[14]।[११उ
१५] धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च जितक्रोधो[15] जितेन्द्रियः[16]॥१६॥[१२पू

---

१. भ—एतैश्चाप्य०। प्र प—एतैरप्य०।
२. ब ल—महामतिः।
३. प्र—श्लोके पूर्वापरार्धव्यत्ययः।
४. प्र—नियतात्मा।
५. त ल प्र भ ट—महात्मा च।
६. त ल प्र प भ ट—द्युतिमान्।
७. ल—प्रीतिमान्।
८. ब त ल प्र प भ ट—श्रीमान्।
९. ब—विपुलाक्षो। त ल भ ट—विपुलांगो। प्र प—विपुलांसो।
१०. प—सुमुखो।
११. प्र—सुललाटः।
१२. प्र—सुविक्रमः।
१३. त—विशालाक्षः पीनवक्षा। ल प्र प भ ट—विशालाक्षः पीनवक्षाः।
१४. त ल प्र प भ ट—शुभलक्षणः।
१५. ज—जितात्मा च। प्र—प्रजानां च।
१६. प्र—हिते रतः।

मनस्वी[1] ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वीर्यसमन्वितः[2] ।[3] [१२उ

१६] रक्षिता सर्वलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता ॥१७॥[4] [१३

१७पू] सर्ववेदाङ्गविच्चैव[5] सर्वशास्त्रविशारदः ।[6] [१४पू

१८पू] सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा बहुश्रुतः ॥१८॥ [१५पू

१८उ] सर्वदाऽनुगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः । [१५उ

१९पू] स सत्यश्च[7] समश्चैव सौम्यश्च[8] प्रियदर्शनः ॥[9]१९॥ [१६पू

१९उ] रामः[10] सर्वगुणोपेतः कौसल्याऽऽनन्दवर्धनः । [१६उ

२०पू] समुद्र इव गाम्भीर्ये स्थैर्ये च हिमवानिव ॥२०॥ [१७पू

२०उ] विष्णुना सदृशो वीर्ये सोमवत्प्रियदर्शनः[11] । [१७उ

२१पू] कालाग्निसदृशः कोपे[12] क्षमया पृथिवीसमः ॥२१॥ [१८पू

---

१. प्र—यशस्वी ।

२. प्र—शुचिर्वश्यः समाधिमान् । ब रा ल प भ ट—शुचिर्वीर्य० ।

३. प—अतः परमधिकः पाठः—प्रजापतिसमः श्रीमान् धातारिपुनिषूदनः ।

४. प—अतः परमधिकः पाठः—

स्वस्य धर्मस्य सर्वत्र स्वजनस्य च रक्षिता ।

५. प्र—वेदवेदाङ्गवि० । रा—सर्ववेदार्थवि० ।

६. त ल ट—अतः परमधिकः पाठः—

सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञो मतिमान्* प्रतिभानवान् ।

प्र— सत्त्ववान् सर्वसत्त्वज्ञो नीतिमान् प्रतिभानवान् ।

७. ज रा—सम्यश्च ।

८. रा—सदा च ।

९. ब त—स शूरसमरः सौम्यः स चैकः प्रियदर्शनः ।

ल— स शूरः समरः ,, ,, ,, ,,

प्र प— स सत्यः स समः सौम्यः स चैकः प्रियदर्शनः ।

ट— स सत्यश्च समः स्तुत्यः सौम्यश्च प्रि० ।

१०. के ज रा ट—सौम्यः ।

११. त—धैर्ये चाद्रुपमः सदा । ल—धैर्ये च मघवानिव ।

१२. ज रा त ल प्र प भ ट—क्रोधे ।

---

*रा प—नीतिमान् ।

२१उ] धनदेन[1] समश्चार्थे[2] सत्ये चानुपमद्युतिः[3] । [१८उ
२२पू] रञ्जयामास स्वगुणैरुदारैर्य इमाः प्रजाः ॥[4] २२ ॥ [N
२२उ] यस्मादतो राम इति नामैतत्तस्य विश्रुतम् । [N
२३पू] तमेवं गुणसम्पन्नं रामं सत्यपराक्रमम् ॥२३॥[5] [१९पू
२३उ] ज्येष्ठं[6] श्रेष्ठगुणैर्युक्तं[6] पिता दशरथः सुतम्[7] ।[8] [१९उ
२४पू] यौवराज्येन संयोक्तुमियेष स महाद्युतिः[9] ॥२४॥ [२०उ
२४उ] तस्याभिषेकसंभारं दृष्ट्वा केकयवंशजा ।
२५पू] पूर्वं[10] दत्तवरा[10] राज्ञा वरमेनमयाचत ॥
२५] विवासनं च रामस्य भरतस्याभिषेचनम् ॥२५॥ [२१
स सत्यवचनाद् राजा धर्मपाशेन[11] यन्त्रितः[12] ।
२६] विवासयामास सुतं राजा[13] दशरथः प्रियम् ॥२६॥ [२२
स जगाम वनं वीरः प्रतिज्ञामनुपालयन् ।

---

१. त ल प्र भ—धनदस्य ।
२. त ल प्र भ प—समस्त्यागे ।
३. ल प्र—ऽप्यनुपमः सदा । त भ प—चानुपमः सदा ।
४. त ल—नास्ति ।
५. त ल—नास्ति ।
६. त—राममप्युगु० । ल—राममप्रेर् ।
प भ—राममार्यगु० । रा ज—०श्रेष्ठैर्गु० ।
७. त ल ट—स्वयम् ।
८. प—अतः परमधिकः पाठः—
प्रकृतीनां हिते युक्तं प्रकृतिप्रियकाम्यया ।
९. रा प्र—महामतिः । ल—महाम्नुतिः । प—महीपतेः [०तिः ?] ।
१०. रा प्र प भ—पूर्वंदत्तवरा ।
११. ट—सत्यपाशेन ।
१२. रा त प प्र भ—संयतः । ल ट—संयुतः ।
१३. त ल प्र प भ—सम्यं ।

२७] पितुर्वचननिर्देशात् कैकेय्याः[1] प्रियकारणात् ॥२७॥ [२३

तं यान्तमनुजो धीमान् भ्रातरं[2] राममग्रजम्[2] ।

२८] लक्ष्मणो नाम[3] विनयादनुवव्राज वीर्यवान् ॥२८॥[4] [२४

सर्वलक्षणसंपन्ना भार्या चैनमनुव्रता[5] ।

२९] अनुवव्राज वैदेही सीता रामं[6] शुभव्रता ॥२९॥ [२६पू

रूपयौवनमाधुर्यशीलाचारसमन्विता ॥

३०] बभौ साऽनुगता रामं[7] निशाकरमिव प्रभा ॥३०॥ [२६उ

पौरैरनुगतो दूरं पित्रा दशरथेन च ।

३१] शृङ्गवेरपुरे[8] सूतं गङ्गाकूले[9] व्यसर्जयत् ॥३१॥ [२७

सोऽतीत्य वनदुर्गाणि सरितश्च सरांसि च ।[10]

---

१. ज प—कैकय्याः ।

२. रा—भ्राता भ्रातरम० ।

३. ट—राम— ।

४. प— अतः परं दाक्षिणात्यशाखास्थो ऽधिकः पाठः—

स्नेहाद्विनयसम्पन्नः सुमित्रानन्दवर्द्धनः ।
भ्रातरं दयितो भ्रातुः सौभ्रात्रमनुदर्शयन् ॥

५. प—चैवमनु० ।

६. ल प्र प भ—एवं ।

७. प—एवं ।

८. रा त क—शृङ्गवीरपुरे ।

९. भ —गंगातीरे ।

१०. प भ—अतः परं दाक्षिणात्यशाखास्थोऽधिकः पाठः—

गुहमासाद्य धर्मात्मा निषादाधिपतिं प्रियम् ।
गुहेन सहितो रामो लक्ष्मणेन च सीतया ॥*

प—अतोऽपि परमधिकः पाठः—

उत्ततार ततो गङ्गां वनं चैव विवेश ह ।

---

*प—अयं पाठः २१ श्लोकादेव परं निक्षेपः ।

३२] चित्रकूटं ययौ शैलं भरद्वाजस्य[1] शासनात् ॥२८॥ [२९
रम्यमावसथं तत्र कृत्वा रामः सलक्ष्मणः ।
३३] उवास सीतया सार्धं वल्कलाजिनसंवृतः[2] ॥२९॥ [३०
श्रीमद्भिस्तैस्त्रिभिः सार्धं चित्रकूटो रराज[3] सः ।
३४] अधिष्ठितो यथा मेरुः श्रीवैश्रवणशङ्करैः[4] ॥३०॥ [N
चित्रकूटं गते रामे पुत्रशोकार्दितस्तदा[5] ।
३५] राजा[6] दशरथः[6] स्वर्गमगमद्[7] विलपन् सुतम् ॥३१॥[8] [३१
गते[9] तु तस्मिन्[9] भरतो वसिष्ठप्रमुखैर्द्विजैः ॥
३७] प्रचोदितोऽपि राज्याय नैच्छद् राज्यं महायशाः ॥३२॥ [३२
मृते पितरि धर्मात्मा भरतश्च[10] महायशाः[10] ।[11]
३८] राज्यलोभं परित्यज्य रामं द्रष्टुमुपागतः ॥३३॥[12] [N

---

१. रा त ट भ—भारद्वाजस्य ।
२. ज रा ल त प्र प भ—०संवृतः ।
३. ल—ऽधिराज ।
४. रा—श्रीमुकुन्दहरीश्वरैः । प—श्रीनारायणशंकरैः ।
५. रा—राजा दशरथस्तदा ।
६. रा—पुत्रशोकार्दितः ।
७. प—स्वर्गं जगाम (अयं पाठो दाक्षिणात्यसम्मतः ।)
८. प्र—अतः परं वङ्गशाखासम्मतो ऽधिकः पाठः—
रामप्रवासनं श्रुत्वा पितुश्च निधनं तथा ।
भरतो विकलापार्वो मातृकादागतो बहुः ॥
९. रा ल —तस्मिंस्तु । प—गतेषु तेषु ।
१०. त ल—राजराष्ट्रपुरस्कृतः । प—राजत्वेन पुरस्कृतः,
प्र भ—राजत्वे स पुरस्कृतः ।
११. रा—नास्ति ।
१२. प्र— अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिक: पाठ:—
जगाम भ्रातरं राममार्यभावपुरस्कृतः ।
त्वमेव राजा धर्मज्ञ इति रामं वचोऽब्रवीत् ॥

पादुके चास्य राज्याय न्यासं दत्वा पुनः पुनः ।
४०] निवर्तयामास तदा भरतं भरताग्रजः ॥ ३८ ॥ [३६
स काममनवाप्यैव गृहीत्वा रामपादुके ।
४१] नन्दिग्रामेऽकरोद्राज्यं रामागमनकांक्षया ॥३९॥[1] [३७
आशङ्कमानश्च पुनः पौरजानपदागमम् ।
४२] रामोऽपि हित्वा तं शैलं प्रययौ[2] दण्डकं वनम् ॥४०॥ [३८
विराधं राक्षसं हत्वा शरभङ्गं ददर्श ह ।
४३] सुतीक्ष्णं चाप्यगस्त्यं[4] चाप्यगस्त्यभ्रातरं[5] तथा ॥४१॥ [३९
अगस्त्यवचनाच्चैव जग्राहैन्द्रं धनुस्तदा[6] ।
४४] लब्ध्वा[7] च परमप्रीतस्तूणी चाक्षयसायकौ ॥४२॥ [४०
४५ ज] वसतस्तस्य रामस्य वने वनचरैः सह ।

रामोऽपि परमोदारः सुमुखः सुमहायशाः ।
न चैच्छत् पितुरादेशाद्राज्यं रामो महाबलः ॥
प—अस्य स्थाने इत्थं पाठः—
राममेवाजगामाशु दर्शयन् विनयं स्वकं ।
गृहाण राज्ये धर्मोऽस्मिन्निति राममभाषत ॥
नियुज्यमानो राज्याय नैच्छद्राज्यं महायशाः ।

१. प—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
गते तु भरते श्रीमान् सत्यवाक्यो जितेन्द्रियः ।
२. रा—अगमत् ।
३. प्र—नास्ति ।
४. प्र—च तथागस्त्यं ।
५. रा त ल प भ ट—च अगस्त्यभ्रा० । प्र—अगस्त्यभ्रा० ।
६. ट —महद्धनुः ।
७. ल भ—आकल्प्य । प्र—खड्गे ।
प—सोऽभिवाद्य ययौ श्रीमाननुसूयां च सुव्रताम् ।
देशः पञ्चवटी नाम तत्र वासमकल्पयत् ॥
८. रा त ल प्र प भ ट—वसतस्तत्र ।
९. प—सोऽभिवाद्य ययौ श्रीमाननुसूयां च सुव्रताम् ।
देशः पञ्चवटीनाम तत्र वासमकल्पयत् ॥ इत्यधिकम् ।

रक्षोभ्यः कामरूपिभ्यं ऋषयो ऽभ्यागमन्भयार्दे ॥४३॥ [४२
४६] रामं कमलपत्राक्षं शरण्यं शरणैषिणः ।
महेन्द्रमिव दुर्धर्षं बाणखड्गधनुर्धरम् ॥ ४४ [N
४७] तेन तत्र सह भ्रात्रा जनस्थाननिवासिनी ।
विरूपिता शूर्पनखा राक्षसी कामरूपिणी ॥ ४५ ॥ [४४
४८] ततः शूर्पनखावाक्यादागतान् सर्वराक्षसान् ।
खरं च दूषणं चैव रक्षस्त्रिशिर एव च ॥ ४६ ॥ [४५
४९] निजघान वने रामो घोरांस्तान् सर्वराक्षसान् ।
तेषामनुबलं चैव सहस्राणि चतुर्दश ॥ ४७ ॥ [४६
५०] ततो ज्ञातिवधं श्रुत्वा रक्षस्त्रैलोक्यविश्रुतः । [४७पू
नामतो रावणो नाम कामरूपो महाबलः ॥ ४८ ॥ [N

१. रा ट—कामरूपेभ्यः ।
२. कै—ऽभ्यागमन्० ।
३. प्र—शरणार्थिनाम् । ट—शरणार्थिनः ।
४. रा—वारिधेरिव दुर्धरं ।
५. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
स तेषां प्रति शुश्राव राक्षसानां तदा वने ।
प्रतिज्ञातश्च रामेण वधः संयति रक्षसां ॥
ऋषीणामग्निकल्पानां दण्डकारण्यवासिनां ।
६. रा त भ ट—०निवासिनां ।
७. छ—०दागताः सर्वराक्षसाः ।
८. छ—नास्ति ।
९. भ प्र प—वने राम ।
१०. भ प्र प—एकस्तान् ।
११. छ—नास्ति ।
१२. प—तेषामनुचरांश्चैव ।
१३. व छ प्र प भ—०विश्रुत ।
१४. छ प्र भ—कामरूपी । प—कामरूप— ।

५१] राक्षसाधिपतिः शूरो रावणः क्रोधमूर्च्छितः ।
साहाय्ये वरयामास मारीचं नाम राक्षसम् ।। ४९।। [४७
५२] वार्यमाणोऽपि बहुशो मारीचेन स रावणः ।
न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते ।। ५० ।। [४८
५३] अनादृत्य तु तद्वाक्यं रावणः क्रोधमूर्च्छितः ।
जगाम सहमारीचो रामाश्रमपदं ततः ।। ५१ ।। [४९
५४] तेन मायाविना दूरमपसार्य नृपात्मजौ ।
रावणोऽन्तरमासाद्य सीतां सुरसुतोपमाम् ।
५५] जहार भार्यां रामस्य हत्वा गृध्रं जटायुषम् ।।५२।। [५०
गृध्रं च निहतं दृष्ट्वा हृतां भार्यां च दुर्लभाम् ।
५६] राघवः शोकसन्तप्तो विललापाकुलेन्द्रियः ।।५३।। [५१
ततः स तत्र काकुत्स्थो दग्ध्वा गृध्रं जटायुषम् ।
५७] कबन्धं ददृशे भूयो दनोः पुत्रं महाबलम् ।।५४।। [५२

---

१. ट—क्रूरो । प—वीरो ।
२. रा ल प्र भ—सहायम् ।
३. ब त—क्रोधचोदितः । प्र— कालचोदितः ।
रा ल भ—कालदेशितः । प—कालदर्शितः ।
४. रा ल प्र प भ—॰मपवाह्य ।
५. प्र भ—नृपात्मजौ ।
६. प्र—जटायुषं ।
७. प्र—रामोऽपि हतमारीचो निवृत्तो बहु चिन्तयन् ।
शून्यं दृष्ट्वाश्रमपदं विललाप सलक्ष्मणः ।। प—नास्ति ।
विचिन्वन् बहुधोऽरण्यं दृष्ट्वा गृध्रं जटायुषं ।
तस्यैव वचनाद्रामो दक्षिणाभिमुखो ययौ ।।
प—मार्गमाणो वने वीरो राक्षसं संवदर्शह (?) ।
८. ल—तु ।
९. ट—सु— ।
१०. भ—विललाप सुदुःखितः ।
११. ल—दृष्ट्वा ।
१२. कबंधवधं नाम ।

तं[1] स तेनैव कोपेन कबन्धं घोरदर्शनम् ।
५८] निहत्य काष्ठैरदहत् सोऽभूद् दिव्यवपुस्तदा[3] ॥५५॥[4] [N
पू५९] कथयामास रामाय[5] श्रमणीं शबरीं ततः ।[6] [५४पू
पू६०] तस्यैव वचनाद्रामो लक्ष्मणेन सहानघः ॥५६॥ [N
उ५९] शबरीं धर्मनिपुणामभ्यगच्छद्रघूद्वहः ।[7][8] [५४उ
पू६१] शबर्याऽर्थ श्रुतः[9] सम्यग्[10] रामो दशरथात्मजः ॥५७॥ [५५उ
उ६१] पम्पातीरे हनुमता सङ्गतो वानरेण ह[11] ।
पू६२] हनुमद्वचनाच्चैव सुग्रीवेण च[12] सङ्गतः ॥५८॥ [५६

१. भ—युतस्—।
२. प्र—स च ।
३. ज ट—घोरं वपुस्तदा।
४. त—वास्ति ।
५. ल भ—रामस्य श्रम० ।
त—रामायाश्रमायां ।
रा प —रामस्य श्रवणं । प्र—रामस्य श्रमणीं ।
६. ल—शबरीं ।
७. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
श्रमणीधर्म्मनिपुणां स निर्गम्य रघूत्तमः ।
८. रा ल प्र प—पूर्वापरपादविपर्यासः ।
के रा ल प्र—अतः परमधिकः समानार्थ एव पाठो दृश्यते—
अभ्यगच्छन्महातेजाः शबरीं* शत्रुसूदनः ।
९. रा व प भ—शबर्या पूजितः ।
१०. प—रामः सम्यग् ।
११. रा प भ—वानरेण स सङ्गतः ।
१२. रा ज त ल प्र प भ ट—समागतः ।

*ल—श्रमणीं ।

७२] सुग्रीवस्य च तत्सर्वं रामो ऽशंसन्महाबलः ।[2] [५७पू
पू६३] सुग्रीवस्तस्य रामस्य श्रुत्वा वाक्यं महात्मनः ॥५९॥ [५८पू
N] चकार सख्यं रामेण प्रीतश्चैवाग्निसाक्षिकम् ।[3] [५८उ
६३] ततो वानरराजेन वैरानुकथनं महत् ॥६०॥ [५९पू
रामे निवेदितं सर्वं प्रणयाद् दुःखितेन हि[6] । [५९उ
६४] वालिनश्च बलं तत्र कथयामास वानरः ॥६१॥ [६०उ
प्रतिज्ञातं तु रामेण तदा वालिवधं प्रति । [६०पू
६५] राघवे वालिवीर्येण सुग्रीवः शङ्कितोऽभवत् ॥६२॥[9] [६१
रामः संप्रत्ययं कर्तुं सुग्रीवे वानराधिपे । [N
६६] पादेन दुन्दुभेः कायं चिक्षेप शतयोजनम् ॥६३॥ [६३उ

१. ल—रामः पृष्टो महा० ।
२. प—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
आदितस्तद्यथावृत्तं सीतायाश्च विशेषतः ।
३. ज ब त ल भ ट—नास्ति ।
कै—उत्तरपार्श्वे शोधनरूपेण विन्यस्तः ।
४. त ल प्र भ —चक्रे ।
५. कै ज त ट—•राज्येन ।
६. त ज प्र ट—ह । रा ल भ प—च ।
७. प्र—प्रतिज्ञातं तु ।
प—प्रतिज्ञातं च ।
८. ल—ततो ।
९. प्र प—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिकः पाठः—
राघवस्य* प्रत्ययार्थं दुन्दुभेः कायमुत्तमम् ।
दर्शयामास रामाय† महापर्वतसन्निभम् ॥††
१०. रा ल प भ—रामोऽसंप्रत्ययं दृष्ट्वा ।

* प्र—राघवे ।
† प्र—सुग्रीवः ।
†† प्र—अतः परमप्यधिकः पाठः—
उत्स्म[त्य ?]यित्वा महाबाहुः प्रेक्ष्य[च ?] चास्थि महाबलः ।

बिभेद सप्ततालांश्च[1] शरेणानतपर्वणा[2] ।
६७] गिरिं[3] रसातलं चैव जनयंस्तस्य[4] विस्मयम् ॥६४॥ [६४
ततः प्रीतमनास्तेन[5] कर्मणा तस्य सोऽभवत् ।
६८] सुग्रीवो वानरश्रेष्ठः परं हर्षमवाप च ॥६५॥ [६५पू
ततो वानरराजेन कृत्वा सख्यं महाबलः ।[6]
६९] प्रत्ययं जनयामास तदाऽन्योन्यस्य वै मिथः ॥६६॥ [N
समयं तौ ततः कृत्वा नरवानरपुङ्गवौ ।
७०] किष्किन्धां[7] रामसुग्रीवौ जग्मतुर्वालिरक्षिताम्[8] ॥६७॥ [६५उ
ततोऽगर्जद्धरिवरः[9] सुग्रीवो भीमनिःस्वनः[10] ।
७१] तेन नादेन महता निर्जगाम हरीश्वरः ॥६८॥[11] [६६

---

१. प—सप्ततालञ्च ।
२. प—शरेणाद्भुतचेतसा ।
३. ब—गिरिसारं बलं ।
४. रा ल प्र प भ—०स्तस्य ।
५. रा ल प्र भ—तेन सो ।
प—व्यथसत्कपिः ।
६. ल—ततो वां नरराजेन्द्रः कृत्वा सख्यं महाबलः । इत्यपपाठः ।
७. के प ब त ल—किष्किन्द्यां । प्र—किष्किन्ध्यां ।
८. ट—०वालिपालिताम् । प्र भ—०तुस्तौ गुहां तदा ।
रा प—०तुस्तां गुहां तदा । ल—०तुस्तं गुहां तथा ।
९. भ—ततो गर्जन् हरिवरः ।
१०. रा ज त ल प्र प भ ट—मेघनिःस्वनः ।
११. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
अनुमान्य तदा तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च तत्रैनं शरेणैकेन राघवः ॥
प—अनुज्ञाप्य ततस्तारां सुग्रीवेण समागतः ।
निजघान च रामोऽपि शरेणैकेन वालिनम् ॥

ततः सुग्रीववचसा हत्वा[1] वालिनमाहवे ।
७२] सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघवः प्रत्यपादयत् ॥६९॥ [६८
अनुज्ञातस्तु रामेण किष्किन्धां[2] प्रविवेश ह ।
७३] चत्वारो वार्षिकान् मासानुवासं[3] समयेन सः ॥७०॥[4] [६
स च सर्वान् समानाय्य[5] वानरान् वानरर्षभः ।
७४] दिशः प्रस्थापयामास विचेतुं[6] जनकात्मजाम् ॥७१॥ [६९
ततो गृध्रस्य वचसा[7] सम्पातेर्हनुमान् कपिः ।
७५] शतयोजनविस्तीर्णं पुप्लुवे मकराकरम्[8] ॥७२॥ [७०
ततो[9] लङ्कां समासाद्य पुरीं रावणपालिताम् ।
७६] ददर्श[10] सीतां ध्यायन्तीमशोकवनिकां गताम् ॥ ७३॥ [७१
निवेद्य चाप्यभिज्ञानं प्रवृत्तिं विनिवेद्य च ।
७७] गृहीत्वा प्रत्यभिज्ञानं मर्दयामास नैर्ऋतान् ॥७४॥[11] [७२
पञ्च मन्त्रिसुतान् हत्वा पञ्च[12] सेनाऽग्रगानपि । [13]

---

१. रा ल प्र प भ—०वचनाद्धत्वा ।

२. कै ज ब त भ—किष्किन्धां ।

३. ज ट त प्र प—मासानुषित्वा ।

४. रा ल—नास्ति ।

५. प्र—समानीय ।

६. रा ल प्र प भ—दिदृक्षुः ।

७. ज रा त ल प्र प भ ट—वचनात् ।

८. रा ब ल प्र प भ—मकरालयम् ।

९. त—तत्र ।

१०. ज ब त ट—नास्ति ।

कै—उत्तरपार्श्वे शोधनक्रमेण पुनर्विन्यासः ।

११. रा—सप्तम० ।

प—पञ्च सेनाग्रगान् ।

१२. प—पञ्च मन्त्रिसुतानपि ।

१३. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

[illegible]

७८] कुमारमक्षं[1] निष्पिष्य ग्रहणं समुपागमत् ॥७५॥ [७३
अस्त्रादुन्मोक्ष्य[2] चात्मानं ज्ञात्वा[3] पैतामहान्[4] वरात् ।
७९] ममर्ष यन्त्रणां तत्र रक्षसां तां[5] यदृच्छया ॥७६॥ [७४
ततो दग्ध्वा पुरीं लङ्कां[7] पुनर्दृष्ट्वा[8] च मैथिलीम् ।
८०] समाश्वास्य च वैदेहीं पुनरायान् महाकपिः ॥[9]७७॥[10] [७५
सोऽभिगम्य महात्मानं कृत्वा रामं प्रदक्षिणम् ।
८१] निवेदयामास तदा दृष्टा सीता मयेति वै ॥ ७८ ॥ [७६
ततः सुग्रीवसहितो गत्वा तीरं महोदधेः ।
८२] समुद्रं क्षोभयामास शरैरादित्यवर्चसैः[11] ॥ ७९ ॥ [७७
दर्शयामास चात्मानं समुद्रो[12] राघवस्य हि[12] ।
८३] समुद्रवचनाच्चैव नलः सेतुमकारयत् ॥ ८० ॥ [७८
तेन गत्वा पुरीं लङ्कां हत्वा तं राक्षसेश्वरम् । [७९पू
८४] अभ्यसिञ्चत्[13] लङ्कायां राक्षसेन्द्रं विभीषणम् ॥८१॥[14] [८१पू

---

१. ट—०रमक्षं ।
२. रा ल प्र प भ—अस्त्राद्विमोक्ष्य ।
३. भ—स्मृत्वा ।
४. प्र—पैतामहात् । इत्यपपाठः ।
५. भ ट त ल प्र प—रक्षसां वीरौ यन्त्रणां ।
रा—यन्त्रणां वीरो राक्षसानां ।
६. प्र—च ।
७. कै ब रा—पुनर्लङ्काम् ।
८. प्र—[illegible] सीतां ।
९. प्र—रामाय प्रियमाख्यातुं पुनरायान् महाकपि ॥
१०. ल—नास्ति ।
११. ज ब रा त ल प्र प भ ट—०त्यसन्निभैः ।
१२. प्र—समुद्रः सरितां पतिः । अ त—०वस्य ह ।
ल प—०वस्य च । भ—०वस्य वा ।
१३. भ—अभ्यसिञ्चत ।
१४. ल—नास्ति । प—[illegible]
[illegible]

उ८६] सीतामूचे[1] ततो रामः परुषं जनसंसदि[2] ।
पू८७] अमृष्यमाणा तत्सीता[3] विवेश ज्वलनं ततः[4] ॥८२॥[5] [८०
उ८७] ततो वायुः प्रादुरासीद् वागुवाचाशरीरिणी ।
पू८८] देवदुन्दुभयो[6] नेदुः पुष्पवृष्टिः पपात च[7] ॥८३॥[8] [N
उ८८] स चाग्निवचनात्[9] सीतां ज्ञात्वा विगतकल्मषाम् ।[8] [८१पू
कर्मणा तेन महता देवा इन्द्रपुरोगमाः ।
८५] सदेवर्षिगणास्तुष्टा राघवं प्रत्यपूजयन्[10] ॥ ८४ ॥ [८२
पू८९] तथा परमसन्तुष्टैः पूजितः सर्वदैवतैः ।[11]
उ८९] कृतकृत्यस्तदा रामो विज्वरः समपद्यत ॥८५॥ [८३
देवेभ्यः[12] स[13] वरान् प्राप्य रामः[13] सीतामवाप्य च[13] ।[14]

---

१. प्र प—तामुवाच ।
२. प—तत् स संसदि ।
३. प्र—वैदेही । प—सा सीता ।
४. प्र—ततोऽग्निं प्रविवेश ह ।
५. ळ भ—नास्ति ।
६. प्र—दिवि दुन्दुभयो ।
७. प्र प—ह ।
८. ळ भ—नास्ति । प—अत: परमधिक: पाठ:—
अग्रहीदमलां रामो वचनाच्च गुरोस्तदा ।
९. ब—०विज्ञानात् ।
१०. प्र रा ळ प भ—तेऽभ्यपूजयन् ।
११. ट ळ प्र भ—अयं पाठ: ८० श्लोकादनन्तरमेव ।
कै—८० श्लोकादनन्तरं उत्तरपार्श्वे विन्यास: । इह च मूलरूपेणैव ॥
१२. प्र प—देवताभ्यो ।
१३. प्र प—समुत्थाप्य च वानरान् ।
१४. प्र प—अत: परं दाक्षिणात्यसम्मतो ऽधिक: पाठ:—
अयोध्यां प्रस्थितो रामः पुष्पकेन सुहृद्वृत: ।
भरद्वाजाश्रमं गत्वा रामः सत्यपराक्रम: (प—सीतामवाप्य च) ॥
भरतस्यान्तिकं रामो हनुमन्तं व्यसर्जयत् ।
पुनराख्यायिकां जल्पन् सुग्रीवसहितस्तदा (प—सुग्रीवसहिता वयौ) ॥

९०] पुष्पकं च समासाद्य नन्दिग्राममुपागतः ॥८६॥ [८६

नन्दिग्रामे जटाश्छित्त्वा भ्रातृभिः सह राघवः ।

९१] रामः सीतामनुप्राप्य राज्यं च पुनराप्तवान् ॥ ८७॥ [८७

९२] सीतया सहितः श्रीमान् रेमे च सुखितः सुखी ।

पालयामास चैवेमाः पितृवन्मुदिताः प्रजाः ॥८८॥ [N

९३] अयोध्याऽधिपतिः श्रीमान् राजा दशरथात्मजः । [N

हृष्टः प्रमुदितो लोकैस्तुष्टः पुष्टः सुधार्मिकः ॥८९॥ [८८पू

९४] निरामयोऽभिरामश्च दुर्भिक्षायासवर्जितः । [८८उ

न पुत्रमरणं किञ्चित् पश्यन्ति स्म नराः क्वचित् ॥९०॥ [८९पू

९५] नार्यश्चाविधवा नित्यं भर्तृशुश्रूषणे रताः । [८९उ

---

१. ज ब त ल प भ ट—च समारुह्य । प्र—तत् समारुह्य ।

२. प्र—नन्दिग्रामं ययौ तदा ।

३. भ—जटा हित्वा ।

४. प्र प—अयोध्यां नगरीं प्राप्य । भ—रामः सीतामवाप्याथ ।

५. ल प्र प भ ट—राज्यं पुनरवाप्तवान् ।

६. प्र प भ—ईजे च विविधैर्यज्ञैर्हत्वा तं लोककण्टकम् । इत्याधिकः पाठः ।

७. त प्र प भ ट—मुदितः ।

८. ल—रेमे ... श्रीमान् । इत्यन्तं नास्ति ।

९. प्र—रामो ।

१०. त प्र प भ ट—लोकस्तु॰ ; ल—लोकोस्तु॰ । इत्यपपाठः ।

११. ल प भ—निरोगश्च । वस्तुतस्तु रकारलोपे दीर्घत्वान्नीरोग इत्येव साधुपाठः । परन्तु छन्दोभङ्गभयादार्षत्वाच्च निरोगोऽपि स्यादेव । प्र—विशोकश्च ।

१२. प्र प—॰यापाय॰ ।
रा—॰यायामव॰ । अयं हि सकारमकारयोर्लिपिसाम्याद् भ्रमप्रसूतः पाठः

१३. ज त ल प्र प भ ट—पतिशु॰ ।

न वातजं भयं किञ्चिन्नाप्सु मज्जन्ति जन्तवः ॥९१॥ [१०उ
९६] न चाग्निजं भयं किञ्चिद्यथा कृतयुगं[1] तथा ।[2] [१०पू
न[3] तस्य राज्ये बधिरो नैवान्धस्तत्र नाबुधः ।[4]
९७] न दुःखितो[5] न कृपणो न व्याध्यार्तो ऽभवज्जनः[6] ॥९२॥ [N
अश्वमेधशतैरिष्ट्वा तथा बहुसुवर्णकैः ।
९८] गवां शतसहस्राणि बहूनि स हि[7] दास्यति ॥९३॥[8] [९२
बहून् वर्षांश्च[9] राज्यं सं[10] राघवो हि[11] विधास्यति । [N
९९] चातुर्वर्ण्यं च लोकेऽस्मिन् स्वधर्मे स्थापयिष्यति ॥९४॥[९३उ
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च ।

---

१. ल प भ—कृतयुगे ।

२. रा—अस्य श्लोकस्य प्रथमं पादं तुरीयेण संयोज्य द्वितीयं तृतीयञ्च पादं त्यक्त्वेत्थं श्लोको विन्यस्तः—

न वातजं भयं किञ्चिद्यथा कृतयुगं तथा ।

प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

न चापि क्षुद्भयं तत्र न तस्करभयन्तथा ।
नागराणि च राष्ट्राणि धनधान्ययुतानि च ॥

३. ट—न राज्ये तस्य । इति विपर्ययेण पाठः ।

४. ल प्र प भ—न तस्य राष्ट्रे विधवा नानाथस्तत्र नाबुधः ।

५. ल प—दुर्गतो । भ—दुर्मतो ।

६. ल प—ऽभवन्नरः । प्र भ—भवेन्नरः ।

७. प्र—तु ।

८. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

असंख्येयं धनं दत्त्वा ब्राह्मणेभ्यो महायशाः ।
राजवंशान् शतगुणान् स्थापयिष्यति राघवः ॥

९. ल—वर्षाणि । प्र—वर्षाणि ।

१०. ल प—राज्ञस्स । रा—राज्यञ्च ।

११. ल प्र प भ—वै करिष्यति ।

१००] रामो राज्यमुपास्यासौ[1] विष्णुलोकं[2] गमिष्यति॥९५॥ [९४
स सर्वगुणसम्पन्नः श्रीमानूर्जितशासनः ।
१०१] यन्मां पृच्छसि वाल्मीके[3] राम एभिर्गुणैर्युतः॥९६॥ [N
पू१०२] नारदस्य वचः श्रुत्वा वाल्मीकिरिदमब्रवीत् ।
उ१०२] देवर्षे ये त्वया प्रोक्ता गुणाः[4] पुरुषदुर्लभाः ।
पू१०३] तेषामेवं[5] समावायः[6] सांप्रतं[7] राममाश्रितः[8] ॥९७॥ [N
उ१०३] इदमाख्यानमायुष्यं यशस्यं बलवर्धनम्[9] । [९६पू
पू१०४] यः पठेद्रामचरितं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥[10]९८॥ [९५उ
उ१०४] इदं[11] पठेत्[12] सदाध्यायं[13] पुण्यश्रवणकीर्तनम् । [९५पू
पू१०५] सपुत्रपौत्रस्वजनो[14] नरः कृच्छ्राद्विमुच्यते ॥९९॥[15] [९६उ
उ१०५] रामायणमशेषं[16] च तेनैव[17] श्रावितं[18] भवेत् ।

---

१. क ब—०मपास्यासौ । प्र—मुपास्येह ।
२. प्र— लोके ।
३. ल—वाल्मीक । इत्यपपाठः ।
४. ट—गुणाः प्रोक्तास्त्वया ।
५. ल प भ—तेषाम्तु । प्र—तेषाञ्चैव ।
६. ल प भ—समवायस्तं । प्र—मसाम्नायः ।
७. त—संप्राप्तं ।
८. ल प्र—०श्रितम् ।
९. ल—बाहुवर्धनम् ।
१०. प—नास्ति ।
११. ट त ल प्र प—इमं ।
१२. रा त ल प्र प भ ट—पठन् ।
१३. ल—सदाध्याय । रा प्र—सदा ध्यायन् ।
१४. त ल—०त्रस्वज० । भ—०त्रपौत्रभावेन ।
१५. ज—नास्ति ।
१६. प—०मशेषेण ।
१७. ट त—तेन वै । ल प्र भ—तेन च । प—तेन ।
१८. प—संश्रावितं ।

१०६] य इदं[1] विदुषां मध्ये पठेच्छूद्रासमन्वितः ॥ १००॥ [N

पठन् द्विजो वागृषभत्वमीयात्

क्षत्रान्वयो भूमिपतित्वमीयात् ।

वणिग्जनः पण्यफलत्वमीयाच्[2]—

१०७] शृण्वं[3]श्च शूद्रोऽपि महत्वमीयात् ॥१०१॥ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[4] आदिकाव्यपर्याये[5] नारदवाक्ये[6]

संग्रहणं नाम प्रथमः[7] सर्गः[7] ॥१॥

---

१. ल प्र प भ—इदं ।

२. कै ब ल त रा—पुण्यफलत्व० । वणिजां पण्यसम्बन्धेन पण्यफलत्वस्यैवौचित्यात् ।

३. ल प्र प—०शृण्वन् हि ।

४. प—वाल्मीकिविरचिते बालकाण्डे । कै—आदिका० ।

५. ज ट ल प्र प त भ—नास्ति ।

६. ल प्र प भ—नारदवाक्यं नाम ।

७. ब त—सर्गः । ल—संग्रहणाध्यायः । भ—संग्रहणः सर्गः ।

नारदस्यार्थे तद्वाक्यं श्रुत्वा वाक्यविशारदः । [१पू
१] वाल्मीकिः शिष्यसहितो विस्मयं परमं ययौ ॥१॥ [N
मनसैव च रामाय पूजां चक्रे महामतिः । [१उ
२] तं चापि शिष्यसहितो नारदं प्रत्यपूजयत् ॥२॥ [N
यथावत् पूजितस्तेन देवर्षिर्नारदस्तदा ।
३] तमापृच्छ्याभ्यनुज्ञातो जगाम त्रिदशालयम् ॥३॥ [२
स मुहूर्तं गते तस्मिन् देवलोकाय नारदे ।
४] जगाम तमसातीरं वाल्मीकिर्मुनिसत्तमः ॥४॥ [३
स च तु तीर्थमासाद्य तमसायां महामुनिः ।
५] शिष्यमाह स्थितं पार्श्वे दृष्ट्वा तीर्थमकल्मषम् ॥५॥ [४
निःशर्करमिदं तीर्थं भारद्वाज निशामय ।
६] पुण्यं चैव प्रसन्नं च सज्जनानां यथा मनः ॥६॥ [५

---

१. ल—नारदस्य तथा वा० । रा—०स्य च तद्वा० ।
२. त ल प भ ट—महामुनिः ।
३. ल—जगाम त्रिदिवालयम् । मध्ये पादचतुष्टयं त्यक्त्वा पंचमेन सम्बन्धः कृतः ।
४. रा ज त प्र प भ—०र्नारदस्ततः ।
५. प भ त्रिदिवालयम् ।
६. ज—मुहूर्ते ।
७. ल—चरं तीर्थ० । प—वदं तीर्थ० ।
८. भ प्र– तमसाया: ।
९. प्र—उवाच शिष्यं पार्श्वस्थं ।
१०. ज ब त ल प्र प भ ट—तीर्थमकर्दमम् ।
११. ज ब ट त ल—भरद्वाज ।
१२. ज—मन इवं ।

इदं तीर्थवरं सौम्य[2] सुजलं सूक्ष्मवालुकम् । [N
७] अस्मिन्नेवावगाहिष्ये तीर्थेऽहं तमसाजलम् ॥[3]७॥ [६उ
वल्कलं त्वमिहादाय शीघ्रमेवाश्रमात् पुनः ।
८] यथा कालात्ययो न स्यात्तथा साधु विधीयताम् ॥८॥ [N
स गुरोर्वचनाच्छीघ्रमागम्य पुनराश्रमात् । [N
९] आनीय वल्कलं तस्मै गुरवे प्रत्यपादयत् ॥९॥ [७उ
स शिष्यहस्तादादाय परिधाय च वल्कलम् [८पू
१०] अवगाह्य जलं स्नात्वा जप्त्वा जप्यं च वाग्यतः ॥१० [N
तर्पयित्वा च विधिवत् तोयेन पितृदेवताः । [N
११] निरीक्षमाणो व्यचरत् तत्तीर्थं तमसां च ताम् ॥११॥ [N
ततः स तमसातीरे विचरन्तमभीतवत् ।
१२] ददर्श क्रौञ्चयोस्तत्र मिथुनं चारुदर्शनम् ॥१२॥ [९
तस्माच्च मिथुनादेकमागत्यानुपलक्षितः ।

---

१. ल प—तीर्थसमं । प्र भ —तीर्थं समं ।

२. ब—प्राप्य । ज—सोम्य ।

३. ज—नास्ति ।
प—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—
अस्यतां कक्ष्यास्तावद्दीयतां वल्कलं मम ।

४. रा– विगाह्यतां ।

५. ल—०च्छीघ्रं पुनरागत्य ।

६. ल—चाश्रमात् । प—पुनराश्रमं । प्र—पुनरागमात् ।

७. ल प्र प भ—प्रत्यवेदयत् ।

८. त—जले ।

९. प्र—सर्वं तत्तमसावनं । ल भ—सर्वतस्तमसावनं । प—नास्ति ।

१०. ज—विचरन्नभीतवत् । रा—व्यचरन्नभी० । ब ढ त—विचरंस्तदभी० ।

११. प—त्वचम् ।

१३] जघान कश्चिद्बद्धानुष्को निषादो मुनिसन्निधौ ॥१३॥ [१०
तं शोणितपरीताङ्गं वेष्टमानं[2] महीतले ।
१४] दृष्ट्वा क्रौञ्ची रुरोदार्ता कृपणं स्वपरिभ्रमौ[4] ॥१४॥ [११
तं तथा निहतं दृष्ट्वा निषादेनाण्डजं वने ।[5]
१५] मुनेः शिष्यसहायस्य कारुण्यं समजायत ॥१५॥ [१३पू
ततः करुणवेदित्वाद् धर्मात्मा स द्विजोत्तमः ।
१६] निशम्य करुणं क्रौञ्चीं क्रन्दन्तीं प्रजगाविदम् ॥१६॥ [१४
मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
१७] यत् क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥१७॥ [१५
तस्येदमुक्त्वा वचनं चिन्ताऽभूत्तदनन्तरम् ।
१८] शकुन्तीं[12] शोचतो[13] ह्येवं किमिदं[14] व्याहृतं मया ॥१८॥ [१६

---

१. ल प्र प भ—बद्धानुशयो ।
२. ब प्र प भ—चेष्टमानं ।
३. ल प्र प भ—करुणं ।
४. ट ज त—स्वपरिभ्रमा । प—च परिभ्रमात् । भ—स्वपराभ्रमत् ।
५. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—
विमुक्ता पतिना तेन द्विजेन सहचारिणा ।
ताम्रशीर्षेण मत्तेन पत्रिणा सहितेन वै ॥
६. प्र—कारुण्यं ।
७. प्र प—क्रौञ्ची क्रन्दन्ती ।
८. ब ट त ल प भ—तां जगाविदं । प्र—इदं जगाद च ।
९. ल—प्रतिष्ठास् ।
१०. ल—त्वमागमाः शा० । रा—त्वमगमच्छा० ।
११. प—तस्यैवं ब्रुवतश्चिन्ता बभूव तदनन्तरं ।
१२. ल प्र प भ—शकुनं ।
१३. ट ल—शोचतां ।
१४. ल—किमेवं । प्र भ भ—किमेतद् ।

मुहूर्तमिव च ध्यात्वा तद्वाक्यं प्रविमृश्य च ।

१९] शिष्यमाह स्थितं पार्श्वे भारद्वाजमिदं वचः ॥१९॥ [१७

पादैश्चतुर्भिः सहितमिदं वाक्यं समाक्षरैः ।

२०] शोचतोक्तं मया यस्मात्तस्माच्छ्लोको भविष्यति ॥२०॥ [१८

शिष्योऽथ तस्य तच्छ्रुत्वा मुनेर्वाक्यमनुत्तमम् ।

२१] तथेति प्रतिजग्राह गुरोः प्रीतिं प्रदर्शयन् ॥२१॥ [१९

संभाषमाणे एवाथ शिष्येण सहितस्तदा । [N

२२] तमेवं चिन्तयन्नर्थमाश्रमाय न्यवर्तत ॥२२॥ [२०

---

१. ब—मुहूर्तमिह ।

२. ल प्र—तद्ध्यात्वा ।

३. ल प्र प भ—वाक्यं तत् ।

४. प्र—परिमृश्य ।

५. ज त प—भरद्वाज० ।

६. ज ल प्र प भ—संयुक्तमिदं ।

७. भ—वाक्यैः ।

८. रा—०च्छ्लोको । इत्यसत् पाठः ।

९. प—शिष्योऽपि ।

१०. कै—श्रुवतो । पश्चादपरहस्तेन विन्यस्तम् ।

११. प—तथाति ।

१२. ल—प्रति० ।

१३. ल प—विदर्शयत् । प्र भ—विदर्शयन् ।

१४. ल प भ—स भाषमाण । ज ट त—स भाष्यमाण० ।

१५. कै—तमेवं ।

१६. ल—चिन्तयंश्चार्थं० । भ—चर्यमुपायात् ।

१७. भ—आश्रम श्रीमं: ।

तमन्वयाद् विनीतात्मा भारद्वाजो[1] महामतिः[2] ।
२३] पयःकलशमादाय[3] शिष्यैः परमसंमतैः[4] ॥२३॥ [२१
स[5] प्रविश्याश्रमपदं शिष्येण सह धर्मवित् ।
२४] उपविष्टस्ततस्तस्मिन् बभूव ध्यानमाश्रितः[6] ॥[7] २४॥ [२२
आजगाम स्वयं[9] ब्रह्मा लोककर्ता ततः[8] प्रभुः ।[10]
२५] तत्र स्वयंभूर्भगवान्[11] द्रष्टुं तमृषिसत्तमम् ॥[12] २५॥ [२३
वाल्मीकिरपि तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय वाग्यतः ।
२६] प्राञ्जलिः प्रणतो भूत्वा तस्थौ[13] परमविस्मितः[14] ॥२६॥ [२४
पूजयामास चैवैनं पाद्यार्घ्यासनवन्दनैः ।
२७] प्रणतो[15] विधिवच्चैनं पृष्ट्वाऽनामयमव्ययम् ॥२७॥ [२५
अथोपविश्य भगवानासने परमार्चिते[16] ।

---

१. रा ज त—भरद्वाजो ।
२. ज त ल प्र प भ ट—महामुनिः ।
३. ल प भ—कलशं पूर्णमादाय । प्र—पूर्णं कलशमा० ।
४. ल—पृष्ठतो मुनिसत्तम । भ-पृष्ठतोऽनुजगाम ह ।
५. ज ब ल ट—संप्रवि० ।
६. प्र प—ध्यानमास्थितः ।
७. ल भ—उपविश्यासने तूष्णीं ध्यानमेवान्वपद्यत ।
८. ज त प्र प ट—ततो ।
९. ज त प्र प ट—स्वयं ।
१०. ल—आजगामाश्रममथो ब्रह्मा लोकपितामहः ।
भ—अथाजगाम भगवान् ब्रह्मा लोकपितामहः ।
११. ल भ—स्वयं ।
१२. प्र प—चतुर्मुखो महातेजाः द्रष्टुं त० ।
१३. ल—तस्मै ।
१४. प्र—०विस्मृतः ।
१५. प—प्रणम्य ।
१६. रा—परमार्चिते । ल—परमोर्चिते । प्र—परमोर्चित ।

२८] वाल्मीकयेऽप्यासनं स दिदेशानन्तरं ततः ॥२८॥ [२६

उपविष्टे च[1] तस्मिंस्तु[2] साक्षाल्लोकपितामहे ।

२९] तद्गतेनैव मनसा वाल्मीकिर्ध्यानमास्थितः ॥२९॥ [२७

शोचन्निव स तां क्रौञ्चीं ततः श्लोकमिमं पुनः[3] ।

३०] जगादान्तर्मना[4] भूत्वा[5] दुःखशोकपरायणः ॥३०॥ [२९

कृतं पापात्मना कष्टं व्याधेनानात्मबुद्धिना[6] ।

३१] यत् सुचारुस्वनं क्रौञ्चमवधीदात्मकारणात् ॥[7] ३१॥ [२८

तमुवाच ततो ब्रह्मा प्रहसन् मुनिसत्तमम्[8] ।

३२] महर्षे यदयं[9] प्रोक्तस्त्वया क्रौञ्चवधाश्रयः ॥३२॥ [N

श्लोकः[10] स चास्त्वयं बद्धस्तव वाक्यस्य शोचतः । [३०उ

३३] स्वच्छन्दादेव[11] ते ब्रह्मन् प्रवृत्तेयं[12] सरस्वती ॥३३॥ [३१पू

---

१. ज —च । प— सं ।

२. ल प भ—-ततस्तास्मिन् ।

३. ल प्र प—मुहुः । भ—मुनिः ।

४. प्र प भ-- जगादान्तर्गतमनाः । रा त ट—जगादान्तर्मना भूत्वा ।

ल-—जगादान्त[:]कृतमनाः ।

५. ल प्र प भ—भूत्वा शोक० ।

६ ज त—०नानात्मबु० । प्र-०नानर्थि०० ।

ल—०बुद्धिनः । प—निषादेनाल्पबुद्धिना ।

७. ल यस्स कामात्त[तु?]रं क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

प—-यस्स क्रौञ्चं चारुरवमवधीत्तमकारणम् ।

भ—सुचारुरवं क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

प्र—०क्रौञ्चमवधीत्तमकारणम् ।

८. प—मुनिपुङ्गवं ।

९. प—यपदं । इत्यसत् पाठः ।

१०. ल प्र भ—श्लोक एवास्त्वयं ।

११. के ब भ—स्वच्छन्दाश्चैव । ट—स्वच्छन्दं चैव । त—स्वच्छन्दादेव ।

१२. ब ल प्र प भ ट—प्रवृत्तेयं ।

रामस्य चरितं कृत्स्नं कुरु त्वं मुनिसत्तम[1] । [३१उ
३४] धर्मात्मनो गुणवतो लोके रामस्य[2] धीमतः ।।३४।। [३२पू
वृत्तं प्रथय रामस्य यथा[3] ते नारदाच्छ्रुतम् । [३२उ
३५] रहस्यं च[4] प्रकाशं[5] च यद् वृत्तं[6] तस्य धीमतः ।।३५।। [३३पू
रामस्य ससहायस्य राक्षसानां च सर्वशः । [३३उ
३६] वैदेह्याश्चैव यद् वृत्तं प्रकाशं[7] यदि वा रहः ।।३६।। [३४पू
तच्चाप्यवितथं[8] सर्वं विदितं[9] ते भविष्यति ।[10] [३४उ
३७] सराष्ट्रेण[11] सदारेण[11] राज्ञा दशरथेन यत्[12] ।।३७।। [N
आसितं भाषितं चैव गतं[14] यच्चाप्यनुष्ठितम्[15] ।[16]
३८] यच्चाप्यविदितं[17] किञ्चिद् विदितं ते भविष्यति ।।[18] ३८।। [N

---

१. ब ट त ल प्र प भ—ऋषिसत्तम ।
२. ल—लोके वामस्य । प्र—लोकरामस्य । प भ—लोके रामस्य ।
३. प—यदा ।
४. प्र—रहश्चैव ।
५. ज ट त प्र भ—प्रकाशं ।
६. ल—वार्तां ।
७. कै—प्रकारयं ।
८. कै—तथाप्य० ।
प्र भ—तच्चाप्यविदितं सर्वं । प—यच्चाप्यविदितं किंचिद् ।
९. प्र प भ—विदितं ।
१०. प—अयं श्लोकार्धः ३८ श्लोकस्योत्तरार्धेन संबद्धः ।
११. ल प्र प भ—सदारेण सराष्ट्रेण ।
१२. प—च ।
१३. ट—नास्ति ।
१४. ल भ—मतं । प—मन्त्रं ।
१५. प—चाप्यनुतिष्ठितं ।
१६. ट नास्ति ।
१७. ट—तथाप्य० ।
१८. प्र—सर्वं विदितमेतत्ते मत्प्रसादा [द्] भविष्यति ।

न ते वागनृता काचिदत्र काव्ये भविष्यति ।[2]
३९] कुरु रामकथां पुण्यां श्लोकबद्धां मनोरमाम् ॥३९॥ [३५
यावत्स्थास्यन्ति गिरयः सरितश्च महीतले ।
४०] तावद् रामायणकथा लोकेषु विचरिष्यति ॥४०॥ [३६
यावद्रामस्य च कथा त्वत्कृता प्रचरिष्यति ।[8]
N] तावदूर्ध्वमधश्च त्वं मल्लोके विचरिष्यसि ॥४१॥ [३७
इत्युक्त्वा भगवान् ब्रह्मा तत्रैवान्तरधीयत ।
४१] ततः सशिष्यो वाल्मीकिर्विस्मयं परमं ययौ ॥४२॥ [३८
तस्य शिष्यास्ततः सर्वे गुरोः श्लोकमिमं तदा ।
४२] मुहुर्मुहुः प्रीयमाणाः प्राहुश्च भृशविस्मिताः ॥४३॥ [३९
समाक्षरैश्चतुर्भिर्यः पादैर्गीतो महात्मना ।

---

१. भ—कार्ये ।

२. ट—नास्ति ।

३. रा—कुरु ।

४. प—०ब्धमक० ।

५. ल प्र प भ—प्रचरिष्यति ।

६. ज त ल ट—यावच्च रामस्य क० ।
भ—यावद्रामायणकथा । रा—सराष्ट्रेषु सदारेषु ।

७. ज त—त्वत्कथा ।

८. प—नास्ति ।

९. ज त ल प भ ट—मल्लोकेषु । प्र—स्वर्गलोके ।

१०. ट—चरिष्यति । ज—विचरिष्यति । ल प्र प भ—निवत्स्यसि ।

११. प्र—०रधीयते ।

१२. त—सशाठो ।

१३. भ—ततः शिष्यास्तस्य ।

१४. प्र प भ—जगुः । ल—जंतुः (जगुः?) ।

१५. प्र—०रैश्चतुर्भिश्च ।

१६. त ल—महात्मनः ।

४३] सोऽनुव्याहरणाद्[1] भूयः शोकः श्लोकत्वमागमत्[2] ॥४४॥ [४०
तस्य बुद्धिरभूत्तत्र वाल्मीकेरर्थं धीमतः[3] ।
४४] कृत्स्नं रामायणं श्लोकैरीदृशैः[4] करवाण्यहम्[5] ॥४५॥ [४१
धर्मकामार्थसंबद्धं बहुचित्रार्थविस्तरम् ।
४५] समुद्रमिव रम्यार्थं[6] श्लोकेष्वतिरसायनम्[7] ॥४६॥ [N
उदारवृत्तार्थपदै[8] र्मनोरमै[9]स्ततः स रामस्य चकार कीर्तिमान्[10] ।
४६] समाक्षरैः श्लोकशतै[11]र्यशस्विनो यशस्करं काव्यमुदारमग्र्यधीः[12] ॥४७

इत्यार्षे रामायणे[13] आदिकाण्डे[14] ब्रह्मागमनं[15] नाम द्वितीयः[16] सर्गः[16] ॥२॥

---

१. के रा ब-ऽनुव्याहरणात् । २. प्र प भ-०मागतः । ३. प-०केर्भावितात्मनः ।
४. प—श्लोकैरीदृशं, अतः परमधिकः पाठः—
कृत्स्नं रामायणं काव्यमेष वै प्रकरोम्यहम् ।
जगौ स भगवान् कृत्स्नमेतद्वीक्ष्य निशाम्य वै ॥
५. करवाण्यं । इत्यपपाठः । ६. प्र प भ—रम्याख्यं ।
७. ज—श्लोकैः श्रुतिरसायणं ।
त ळ भ ट—श्लोकेश्रुतिरसायनम् । प्र प—श्लोकश्रुतिरसायनं ।
८. ळ—उदर्थवृत्तार्थप० । प्र—उदारवृत्तानुप० । प—उदात्तवृत्तार्थप० ।
रा—उदारवृत्तान्तप० । ९. ळ प्र प भ—मनोहरैः । १०. भ—कीर्तनं ।
११. प्र—श्लोकपदैर्य० ।
१२. ळ प भ—०मुदारधीर्मुनिः । प्र—०मुदारधीः परं । रा—०मग्रधीः ।
१३. ग ज त—रामायणे वाल्मीकीये आदिकाव्ये चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।
ट—रामायणे वाल्मीकीये चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।
प—वाल्मीकीये रामायणे ।
१४. ज प—बालकाण्डे । प्र—नास्ति ।
१५. ळ—ब्रह्माभिगमनं नाम । प्र—नास्ति ।
१६. ब त भ—सर्गः ।

प्राप्तराज्यस्य रामस्य वाल्मीकिर्भगवानृषिः ।
१] चकार चरितं चित्रं विचित्रपदमर्थवत् ॥१॥ [१
पवित्रं वैष्णवं दिव्यमिदमाख्यानमुत्तमम् ।
२] वेदैश्चतुर्भिः समितमितिहासं पुरातनम् ॥२॥ [N
श्रावयामास वै विप्रान् सुव्रतान् नियतेन्द्रियान् ।
३] धौम्यमाण्डव्यकुशिकान् सर्ष्टिष्णेनान् सकोहलान् ॥३॥ [N
तौ तु चेक्ष्वाकुदायादौ मुनिवेशौ कुशीलवौ ।
४] धन्यं यशस्यमायुष्यं परं स्वस्त्ययनं महत् ॥४॥ [N
कृतां च तत्वतः कीर्ति[12] राघवस्य महात्मनः ।
५] इहैवार्थश्च धर्मश्च निखिलेनोपपद्यते ॥[15] ५॥ [N

---

१. ल—वाल्मीकिश्च० ।
२. रा —०मुत्तमः । इत्यसत् पाठः ।
३. ज—संमित० । ट प्र भ—सहित० ।
४. ल—सांख्यिषेणान् । रा—सर्ष्टिषणे० ।
प्र—सर्विवसेषान् । प भ—सार्ष्टिषे० ।
५. प्र—सकाशकान् । भ—सकोसलान् ।
६. ल—भाव वैक्ष्वाकु० । प रा—तौ चवेक्ष्वाकु० ।
प्र—तौ वैवेक्ष्वाकुदायादा ।
७. भ—मुनिवेशो । ज—मुनिवेषौ ।
८. क—धान्यं ।
९. ल प्र प भ—स्वर्ग्यं ।
१०. रा ज व ट त—कृतं । ल प्र प—कृता । भ—कृत्वा ।
११. ज व ट त—तत्त्वता । भ —तद्वत: ।
१२. ल—कीर्ती । प्र प—कीर्तिः ।
१३. भ—कामश्च ।
१४. ट—दण्डनीतिश्च वर्तते । त ०केनोपलभ्यते ।
प्र—कामश्च परिकीर्तितः ।
१५. प—इहैवार्थरच निखिलो धर्मश्चैवोपलभ्यते ।

दण्डनीतिश्च विपुला त्रयीवार्ता च कृत्स्नशः ।[1]

६] य इदं शृणुयान् नित्यं यश्चेदं परिकीर्तयेत् ॥६॥ [N

इह भोगान् वरान् प्राप्य देवैर्गच्छति तुल्यताम् ।

७] इक्ष्वाकूणामिदं चैव जनकस्य च धीमतः ॥७॥ [N

पुलस्त्यस्य च देवर्षेः कीर्तनं समुदाहृतम् ।

८] अश्वमेधावसानेऽस्य राघवस्य महात्मनः ॥८॥ [N

कथितं पुष्टिजननमिदमाख्यानमादितः ।

९] अत्र धर्मार्थसंयुक्तं पापानां नाशनं शुभम् ॥९॥ [N

आदिकाण्डमिदं प्रोक्तं विस्तरश्चास्य कथ्यते ।

१०] प्रथमं नारदप्रश्नो नदीगमनमेव च ॥१०॥ [N

पू११] ब्रह्मणो दर्शनं चैव वरप्राप्तेश्च वर्णनम् ।[15]

---

१. ट—नास्ति ।

२. भ—यश्चैनं ।

३. ट—परिकल्पयेत् । ल–परिकीर्तितम् ।

४. प—रम्यं ।

५. त ल प्र प भ ट—च ।

६. ल प—तुष्टि० । प्र—तुष्ट० ।

७. ल—यत्र धर्मा० । प—सर्वधर्मा० । प्र—धर्मकामार्थ० ।

८. प—पावनानां च । ल–पापानां पावनं ।

९. प—पावनम् ।

१०. ल प—०काण्डमिह ।

११. रा भ—विस्तारश्चा० । प्र–विस्तार चा० ।

१२. प—वाल्मीके ।

१३. रा—नारदं प्रश्नो । प्र–नारदः प्रश्नो ।

१४. ल प्र प भ—वरप्राप्तिश्च पुष्कला ।

१५. ल प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—

श्लोकानां परिमाणं च यत्रैतत् परिकीर्त्यते ।
अयोध्यावर्णनं चैव राज्ञो दशरथस्य च ।
अमात्यवर्णनं चैव कौसल्यायाश्च वर्णनं ।

कै—उत्तरपार्श्वे पुनर्विन्यासः ।

पुत्रार्थं च नरेन्द्रस्य मन्त्रेणं समुदाहृतम् ।
१३] अश्वमेधक्रिया चैव वरप्राप्तिश्चं पुष्कला ॥१३॥ [N
भागार्थिनां च देवानामागमः परिकीर्तितः ।
१४] रावणस्य वधोपाये मन्त्रोऽर्थे परिकीर्तितः ॥१४॥ [N
दिव्या च पायसोत्पत्तिः पुत्रजन्म नृपस्य च ।
१५] अंशावतरणं चैवं सुराणां समुदाहृतम् ॥१५॥ [N
कौसल्यायां च रामस्य कैकेय्यां भरतस्य च ।
१६] यमयोश्च सुमित्रायां संभवः समुदाहृतः ॥१६॥ [N
वानराणां च सर्वेषामुत्पत्तिः परिकीर्तिता ।
१७] ततो दशरथस्येह विश्वामित्रेण सङ्गमः ॥१७॥ [N
प्रदानं चैव रामस्य रक्षणं च महाक्रतोः ।
१८] लक्ष्मणानुगमश्चैवं विद्याप्राप्तिश्च पुष्कला ॥१८॥ [N

---

१. के ल रा—मन्त्रेण । प्र प भ—मन्त्रणं । ज ब ट त—सत्रेण ।
२. ल—वरप्राप्तिस्तु पुष्कला । प—राज्ञो दशरथस्य च ।
३. ल प भ—समुदाहृत: ।
४. भ—वधोपायमन्त्रणं । ट त—वधोपाये मन्त्रणं ।
प्र प—वधोपायमन्त्रणं । ल—समुदाहृतम् ।
५. त ट—समुदाहृत: । ल प्र प भ—समुदाहृतम् ।
६. ल—चात्र । प—चापि ।
७. ट—नास्ति ।
८. प्र प भ—कौश० ।
९. ल—संभवा ।
१०. ल—समुदाहृतम् ।
११. ल प्र प भ—राज्ञो ।
१२. ज त ल प भ—रक्षणार्थं । प्र—रक्षणार्थो ।
१३. प्र—महामंत ।
१४. त—०श्चानुगतश्चै० ।

अनङ्गाश्रमवासश्च ताटकावनदर्शनम् ।

१९] ताटकानिधनं चैवं अस्त्रलाभश्च कीर्त्यते ॥१९॥ [N

सिद्धाश्रमनिवासश्च सत्ररक्षणमेव च ।

२०] सुबाहोर्मरणं चात्र मारीचस्य च भर्त्सनम् ॥२०॥ [N

विश्वामित्रस्य चैवर्षेः स्ववंशपरिकीर्तनम् ।

२१] गङ्गायाः संभवश्चैवं पवित्रः परिकीर्तितः ॥२१॥ [N

दिव्यगर्भावपतनं कार्तिकेयस्य संभवः ।

२२] विशालस्य च राजर्षे धर्मस्यं परिकीर्तनम् ॥२२॥ [N

अहल्याशापनिर्मोक्षो मिथिलायां[12]श्च दर्शनम् ।

२३] दर्शनं यज्ञवाटस्य मैथिलस्य च दर्शनम् ॥[13]२३॥[14] [N

चरितं चैव कार्त्स्न्येन कौशिकस्य महात्मनः ।

२४] कथितं चात्र रामस्य शतानन्देन धीमता ॥२४॥ [N

धनुषो भेदनं चैव कन्यायाश्च निवेदनम् ।[14]

---

१. ल—ताराकावनद० । प्र प भ—ताडकावनद० ।

२. ज—ताटकायाश्च निधनं । ल—ताराकायाश्च निधनं ।
त प्र प भ—ताडकायाश्च निधनं ।

३. ज त ल प भ—०र्निधनं ।

४. रा प्र—चैव ।

५. भ—भर्त्सनां ।

६. रा त ल भ—देवर्षेः । प्र—राजर्षेः ।

७. ल प्र प भ—प्रभवश्चैव ।

८. प्र—०गर्भावतरणं ।

९. ल—देवर्षेर् ।

१०. ल प्र प भ—वंशस्य ।

११. ज त ल प्र प भ—०शापमोक्षश्च ।

१२. के रा ब—मैथिलस्य च ।

१३. के रा ब—नास्ति ।

१४. प—नास्ति ।

१५. के ब—दर्शनं ।

२५] राज्ञो दशरथस्येह जनकस्य च सङ्गमः ॥२५॥ [N
सीतादीनां च कन्यानां विवाहः समुदाहृतः ।
२६] वधूर्गृहीत्वा नृपतेर्यानं दशरथस्य च ॥२६॥ [N
समागमश्च रामस्य जामदग्न्येन धीमता ।
२७] जामदग्न्यस्य लोकानां वधश्चैव परिकीर्तितः ॥२७॥ [N
अयोध्यासंप्रवेशश्च प्रवासो भरतस्य च ।
२८] अयोध्यावासिनां चैव प्रमोदः परिकीर्त्यते ॥२८॥ [N
इत्येतत् प्रथमं काण्डमादिकाण्डमिहोच्यते ।
२९] सर्गाश्चैव चतुःषष्टिः श्लोकानां चैव कीर्त्यते ॥२९॥ [N
द्वे सहस्रे शतान्यष्टौ श्लोकाः पञ्चाशदेव तु ।
३०] बालचर्या च यत्प्रोक्ता राघवस्य महात्मनः ॥३०॥ [N
N] काण्डः १ श्लोकाः २८५० सर्गाः ६४ ॥ [N
अतः परं द्वितीयं तु अयोध्याकाण्डसंज्ञितम् ।
३१] यत्राभिषेकसङ्कल्पो व्याघातश्चैव वर्ण्यते ॥३१॥ [N

---

१. ळ—सम्भवः । इत्यपपाठः ।

२. रा ब—वधूं ।

३. ज त ळ प भ—वधश्चात्रानुकीर्तितः ।

प्र—रोधस्य परिकीर्तितः ।

४. ळ प भ—परिकीर्तितः ।

५. प—०काण्डमिवोच्यते ।

६. ट—सर्गाश्चात्र । प—सर्गाना[णां] च ।

७. ट प्र—चात्र ।

८. ळ प्र प भ—हि ।

९. प्र प भ—तद् ।

१०. ज ब ळ प्र प भ ट—कीर्त्यते ।

कैकेय्यनुनयश्चैव शोको दशरथस्य च ।
३२] वनप्रयाणं रामस्य लक्ष्मणानुगमस्तदा[2] ॥३२॥ [N
विषादः प्रकृतीनां च तथैव च विसर्जनम् ।
३३] निषादाधिपसंवासः[3] सूतस्य च विसर्जनम् ॥३३॥ [N
गङ्गायाश्चाभिसन्तारो भारद्वाजस्य दर्शनम् ।[5]
३४] वास्तुकर्मनिवेशश्च चित्रकूटे महागिरौ ॥३४॥ [N
उपावृत्ते सुमंत्रे च राज्ञो मोहागमः पुनः ।
३५] स्वशापकथनं चैव स्वर्गप्राप्तिर्नृपस्य च ॥३५॥ [N
भरतागमनं तूर्णं तथा राजगृहादपि ।
३६] रामप्रसादनं चार्थे भरतस्य महात्मनः ॥३६॥ [N
गमनं कीर्त्यते चैव भारद्वाजस्य चाश्रमे ।[13]
३७] दर्शनं चैव रामस्य पितुश्च सलिलाक्रिया ॥३७॥ [N

१. के रा त—कैकेय्यानुन० । ल—कैकेय्यश्चनय० ।
ज प्र—कैकेय्यमुन० । प—कैकेय्यनुमतश्चैव ।
२. ल प भ—०णानुगतिस्तथा । रा ज त प्र ट —०णानुगमस्तथा ।
३. ज त ल प्र प भ—०पसंवादः ।
४. ल—नास्ति ।
५. ल प्र भ—अतः परमधिकः पाठः—
भरद्वाजाभ्यनुज्ञानाच्चित्रकूटस्य दर्शनम् ।
६. के—सुमित्रे ।
७. रा—तु ।
८. ल प भ—परः । ट—ततः ।
९. ज त ट—रामप्रसादनार्थे च । ल प्र प भ—रामप्रसादनार्थं च ।
१०. ट—भरतागमनं तथा ।
११. ल प्र प भ—वासो ।
१२. रा ब ज प्र प ट—भरद्वाजस्य ।
१३. ट—नास्ति ।

३८] प्रसादनं च रामस्य बहुशः परिकीर्त्यते[1] ।
जाबालेर्यत्र वाक्यानि वामदेवस्य[2] चोभयोः ॥३८॥[3] [N

३९] इक्ष्वाकूणां च वंशस्य कीर्तनं समुदाहृतम् ।[4]
प्रतिज्ञां[5] चैवं रामस्य[6] गमने कोसलान् प्रति ॥३९॥ [N

४०] पादुकाहरणं चैवं[7] भरतस्य[8] विसर्जनम् ।
नन्दिग्रामप्रवेशश्च मातॄणां च विसर्जनम् ।[9]॥४०॥[10] [N

४१] अयोध्यासंप्रवेशश्च शत्रुघ्नस्य महात्मनः ।
काण्डं द्वितीयमित्युक्तमयोध्याकाण्डसंज्ञितम् ॥४१॥ [N

४२] अशीतिः संख्यया[11] सर्गाः श्लोकानां चात्र कीर्त्यते[12] ।
त्रीणि श्लोकसहस्राणि नव श्लोकशतानि च ।

४३] श्लोकानां द्वे शते चैव पुनः[13] श्लोकाश्च सप्ततिः ॥४२॥ [N

N] काण्डः[14] २ सर्गाः ८० श्लोकाः ४१७०[15] ॥[16] [N

---

१. ज त ल प भ—परिकीर्तितं । ट—परिकीर्तितः ।

२. ल भ—रामदेवस्य चो० । इत्यपपाठः । ट—वंशस्य कथनं तथा ।

३. प्र—नास्ति ।

४. ट—नास्ति ।

५. ल प भ—अप्रतिज्ञा च । प्र—स्वप्रतिज्ञा च ।

६. ल—धर्मस्य ।

७. भ—चापि ।

८. कै—भरतस्यागमः पुनः ।

९. त—नास्ति ।

१०. ल—अतः परमधिकः पाठः—

प्रसादनं च रामस्य बहुशः परिकीर्तितम् ।

११. ल—संज्ञया ।

१२. ट—कीर्तनम् ।

१३. ल प्र प भ—भूयः ।

१४. त—अयोध्याकाण्डः ।

१५. त—४३७० ।

१६. ल प्र प भ ट—नास्ति ।

अतः परं[1] तृतीयं तु आरण्यकमिति स्मृतम् ।
४४] यत्र रामो महाबाहुर्दण्डकं[2] प्राविशद्वनम् ॥४३॥ [N
अनसूयासमस्यां[3] चाप्यङ्गरागस्य[4] चार्पणम् ।
४५] विराधदर्शनं चैव वधश्च समुदाहृतः ॥[5]४४॥ [N
ऋषीणां दर्शनं चैव मैथिल्याश्चैवं[6] सान्त्वनम् ।[7]
४६] शरभङ्गाश्रमप्राप्तिर्महेन्द्रस्य च दर्शनम् ॥४५॥ [N
सुतीक्ष्णाश्रमसंप्राप्तिः[8] संवादः सह सीतया ।
४७] मन्दकर्णेश्च कथितं शक्रस्य च[9] विसर्जनम् ॥४६॥ [N
इल्वलस्य[10] च संवादः कीर्तनं च दुरात्मनः ।
४८] अगस्त्याश्रमवासश्च[11] तथा संपरिकीर्तितः[12] ॥४७॥ [N
दर्शनं पञ्चवट्यास्तु[13] जटायोश्चैव दर्शनम् ।[14]

१. ळ भ—काण्डं । प्र प—काण्ड० ।

२. ट—०र्दण्डकान् ।

३. ळ प्र प—अनुसूया० । ट—०यासमस्यां ।

४. ट प्र प—च अङ्गरागस्य ।

५. ट—नास्ति ।

६. भ—वैदेह्याश्चापि । ळ प्र—मैथिल्याश्चापि ।

७. ट—शरभङ्गाश्रमे वासं वासवस्य ।

८. ळ—सतीक्ष्णस्याश्रमप्राप्तिः । भ—सुतीक्ष्णस्याश्रमप्राप्तिः ।

९. प्र प—यत्र शक्रवि० । रा ळ—यत्र शत्रुर्वि० ।

१०. रा—इल्वकस्य ।

११. रा—०श्रमसंवासः ।

१२. ट—अगस्त्याच विसर्जनम् ।

१३. ज त ळ प्र प भ—पञ्चवट्याश्च ।

१४. ट—समागमं कबंधेन वासं पंचवटे तथा ।

४९] जनस्थाननिवासश्च शिशिरस्य च वर्णनम् ॥[1]४८॥ [N

[2]स्मरणं भरतस्यार्थं कैकेय्याश्चैव गर्हणम् ।[3]

५०] संवादैः शूर्पणखया विरूपकरणं तथा ॥४९॥ [N

खरस्य च वधो घोरो दूषणत्रिशिरोवधः ।[5]

५१] लङ्काप्रवेशो राक्षस्याः शूर्पनख्याः प्रकीर्तितः ॥[4]५०॥ [N

सीताया लोभनं चैव रावणस्यानुशब्दितम् ।

५२] मारीचाश्रमसंप्राप्ती रावणस्य दुरात्मनः ॥५१॥[6] [N

मारीचश्च मृगो भूत्वा वैदेहीं समलोभयत् ।

५३] लोभयित्वा च वैदेहीं राघवस्यापकर्षणम् ॥५२॥[7] [N

मारीचस्य वधश्चैव लक्ष्मणस्य[8] विगर्हणम् ।[9]

५४] सीतायां हरणं चैव सौमित्रेश्चात्र सङ्गमः ॥५३॥[10,11,12] [N

---

१. ट—नास्ति ।

२. प—भरतस्यापि ।

३. ह—हासः ।

४. ल प भ—शूर्पनख्याश्च । ट—शूर्पनखायाश्च । कै रा ज ब त—०नखया ।

५. ज त—खरदूषणयोश्चैव वधस्त्रिशिरसस्तथा ।

ट—वधं खरत्रिशिरसोः कथनं रावणस्य च ।

६. प्र—रावणस्य च शा० ।

७. ज त—राघवस्याभिक० ।

८. भ—लक्ष्मणस्यापकर्षणम् ।

०स्यापगर्हणमिति दक्षिणपार्श्वे पुनर्विन्यस्तः पाठः ।

९. ज—नास्ति ।

१०. प—सीताप्रहरणं ।

११. ज त ल—संकरश्च महात्मनः ।

ब रा—सत्कारश्च महात्मनः । प—लक्ष्मणस्य च संगतः ।

१२. ट—मारीचप्रार्थनाशं च वैदेहीहरणं तथा ।

प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—

जटायुषो वधश्चासीत् सीतायाश्च प्रदेशनम् ।

लक्ष्मणस्य च संवादो राघवेण महात्मना ॥

कै—उत्तरपार्श्वे पुनर्विन्यासः ।

हृतां च जानकीं मत्वा विलापो राघवस्य च ।[1]

५६] जटायोर्दर्शनं चैव सत्कारश्च महात्मनः ॥[2]५४॥[3] [N

गृध्रराजस्य[4] रामेण कृता चैव जलक्रिया[5] ।

५७] कबन्धस्य वधः मोक्षः स्वर्गप्राप्तिस्तु[6] पुष्कला ॥[7]५५॥ [N

कबन्धस्य च वाक्येन सुग्रीवान्वेषणं परम्[8] ।

५८] शबरीदर्शनं[9] चैव पम्पायां[10] परिदेवनम्[11] ॥५६॥[12] [N

इति काण्डं[13] तृतीयं तु[14] आरण्यकमिति स्मृतम् ।

५९] सर्गाणां तु[15] शतं चैव सर्गाश्चैव चतुर्दश ॥५७॥ [N

चत्वारीह सहस्राणि श्लोकानां कथितानि[16] वै ।

---

१. ट—जटायोर्निधनं चैव विलापो राघवस्य च ।

२. ट—नास्ति ।

३. ज त भ—नास्ति ।

४. ज त—खगराजस्य । प्र—गजराजस्य ।

५. कै—भअलकिक्रियेति शोधितः पाठः ।

६. ज त प्र प भ—०प्राप्तिश्च ।

७. ट—कबंधदर्शनं [चैव] कबंधस्य वधं तथा ।

८. ज त—ततः ।

९. ट—शबर्या द० ।

१०. ज त ट—पंपायाः ।

११. रा प—परिवेदनम् ।
ज त—चैव दर्शनम् । ट—दर्शनं तथा ।

१२. ट—अतः परमधिकः पाठः—
विलापं चैव पंपायां राघवस्य महात्मनः ।

१३. रा प्र प—काण्डतृतीयं ।

१४. प—तद् ।

१५. ज त प्र ट—च ।

१६. ज त प्र प भ ट—कीर्तितानि च ।

६०] शतं चैवात्र विज्ञेयं श्लोकाः पञ्चाशदेव[1] तु ॥५८॥ [N

N] काण्डः ३ सर्गाः ११४ श्लोकाः ४१५०[2] ॥[3] [N

अतः[4] काण्डं चतुर्थं तु कैष्किन्धिकमिति स्मृतम्[5] ।

६१] ऋष्यमूकगिरिप्राप्ती[6] राघवस्य[7] महात्मनः[8] ॥५९॥ [N

हनुमद्दर्शनं चैव संवादश्चात्र[9] कीर्त्यते ।

६२] आरोहणं च शैलस्य ऋष्यमूकस्य कीर्तितम् ॥६०॥[10] [N

रामसुग्रीवसख्यं[11] च वालिपौरुषकीर्तनम् ।

६३] सप्ततालविभेदश्च प्रत्ययोत्पादनं तथा[12] ॥६१॥[13] [N

वालिसुग्रीवयुद्धं च[14] वालिनो वध एव च ।[13]

६४] अन्तःपुरविलापश्च ताराकारुण्यमेव[15] च॥६२॥[16] [N

---

१. त—पञ्चदशैव ।

२. त–४१५० ।

३. ल प्र प भ—नास्ति ।

४. ज त ट—अतः परं प्रवक्ष्यामि ।

प्र—चतुर्थं तु ततः काण्डम् ।

५. कै ब ल—कैष्किन्धिक० । प–किष्किन्धमिति संज्ञितम् ।

ट प—किष्किन्धाकाण्डसंज्ञितम् । प्र–किष्किन्ध्यां परिकीर्त्यते ।

६. ट—ऋष्यमूकाभिगमनं ।

७. ज—रामस्य च । ट—सुग्रीवेण ।

८. ठ—समागमः ।

९. प्र प भ—०श्चैव ।

१०. ट—नास्ति ।

११. कै—०सख्यं ।

१२. कै—हरेः ।

१३. ट—प्रत्ययोत्पादनं सख्यं वालिसुग्रीवविग्रहम् ।

वालिप्रमथनं राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम् ॥

१४. प्र—तु ।

१५. कै—०ष्य एव ।

१६. ठ—ताराविलापसमनं वर्षारात्रिनिवासनम् ।

सुग्रीवस्याभिषेकश्च करणं[1] चाश्रमस्य च ।

६५] विलापो राघवस्यात्र लक्ष्मणेन च सान्त्वनम् ॥६३॥[2] [N

प्रावृड्विलापश्चैवात्र शरद्वर्णनमेव च ।

६६] विलापश्चैव शरदि समयस्य च लंघनम् ॥६४॥[3] [N

सुग्रीवं प्रति रामस्य कोपो यत्र च कीर्तितः[4] ।

६७] रामस्य कोपं विज्ञाय लक्ष्मणस्य[5] च संभ्रमः ॥६५॥[6] [N

प्रशमो[7] लक्ष्मणस्याथ दौत्येन गमनं तथा[8] ।

६८] सुग्रीवस्य यथा चात्र गमनं राघवाश्रमे[9] ॥६६॥[10] [N

प्रसादनं[11] च रामस्य वानराणां च संग्रहः[12] ।

६९] पृथिव्या वर्णनं[13] सर्वं[14] सुग्रीवेण महात्मना ॥[15]६७॥ [N

प्रस्थापनं वानराणामङ्गुलीयस्य चार्पणम् ।

७०] हनुमत्प्रभृतीनां च विन्ध्यपर्वतलंघनम् ॥६८॥[16] [N

---

१. प्र—वालिपुत्रसमर्पणम् ।

२. ट—नास्ति ।

३. ट—नास्ति ।

४. ज त प भ—प्रकीर्तितः ।

५. प—लक्ष्मणेन ।

६. ट—कोपं राघवसिंहस्य बालानामुपसंग्रहं ? ।

७. प्र—प्रेषणं ।

८. त प्र प—तथा ।

९. प भ—०श्रमम् ।

१०. ट—नास्ति ।

११. त—प्रसादेन ।

१२. ज त—सङ्गमः ।

१३. ज त—वरणं ।

१४. ज त प्र प भ—चैव ।

१५. ट—दिक्षु प्रस्थापनं चैव पृथिव्याश्च निवेदनम् ।

स्वयंप्रभागुहायाश्च प्रवेश इह कीर्तितः ।[1][2]
७१] अप्रदृत्तौ च वैदेह्या विषादगमनं महत् ॥६९॥ [N
प्रायोपवेशनं चात्र वानराणां महात्मनाम् ।
७२] दर्शनं चात्र सम्पातेर्गृध्रराजस्य धीमतः ॥७०॥[4] [N
N] निवेदनं च लङ्काया गृध्रराजेन धीमता ।
चतुर्थमेतत् काण्डं तु कैष्किन्धिकमिति स्मृतम् ॥७१॥ [N
७३] सर्गाश्चैवात्रविज्ञेयाश्चतुःषष्टिस्तु संख्यया ।
श्लोकानां द्वे सहस्रेण अष्टौ श्लोकशतानि च ।
७४] श्लोकानां च शतं ज्ञेयं पञ्चविंशतिरेव च ॥७२॥ [N
N] काडः ४ सर्गाः ६४ श्लोकाः २९२५ ॥[13] [N
अतः परं प्रवक्ष्यामि काण्डं सुन्दरसंज्ञितम् ।

---

१५. ट— अङ्गुलीयप्रदानं च तथैव विकदर्शनम् ।
१. प्र—०गुहायाञ्च ।
२. ज त प्र— परिकीर्तितः । प—इह कीर्त्यते ।
३. भ—चैव ।
४. ट—प्रायोपवेशनं चैव सम्पातेश्चैव दर्शनम् ।
५. त—निदर्शनं ।
६. ज त ट—कीर्तितम् ।
७. प—वै ।
८. ब—कैष्किन्दिक० । ज त प्र भ—कैष्किन्ध्य० ।
ल—किष्किंदा० । प ट—किष्किधा० ।
९. ज त ल प्र प भ ट—संज्ञितम् ।
१० ज त ल—संख्यया ।
११. ज ब त ल प भ ट—सहस्रे च ।
१२. रा—वा ।
१३. प्र प भ -नास्ति ।

७५] हनुमत्प्लवनं यत्र सुरसायाश्च दर्शनम् ॥७३॥ [N
मैनाकस्य गिरेश्चैव दर्शनं परिकीर्तितम् ।
७६] निधनं सिंहिकायाश्च लङ्कादर्शनमेव च ॥७४॥ [N
प्रवेशश्चैवं लङ्कायां वर्णनं विचयस्तथा ।
७७] मार्गणं चैव वैदेह्या रावणान्तःपुरे शुभे ॥७५[8]॥ [N
N] दर्शनं पुष्पकस्येह आपानस्य च दर्शनम् ।[10]
दर्शनं राक्षसेन्द्रस्य रावणस्य दुरात्मनः ॥७६॥ [N
७८] विचयः पुष्पकस्येह जानक्याश्चैव मार्गणम् ।
अदर्शने च वैदेह्याः शोकोपगमनं तथा ॥७७॥ [N
७९] प्रविश्याशोकवनिकां वैदेह्याश्चैव दर्शनम् ।
प्रवेशो रावणस्येह रक्षसः प्रमदावनम् ॥७८॥ [N
८०] प्रलोभनं च सीताया रावणस्य च भर्त्सनम् ।

---

१. ल—हनुमल्लंघनं । कै—०प्लवणं । रा—०मत्प्लवनं ।
२. ज त प्र ट—चैव ।
३. ल—स्वरसायाश्च । ज त ट—सिंहिकायाश्च ।
४. प्र—मेनाकस्य ।
५. ब—प्रवेश एव ।
६. प्र—लङ्कायां ।
७. कै—विजय० । प्र—निचय० ।
८. ट—नास्ति ।
९. ब रा ल—रक्षसां प्रमदावनम् ।
१०. ट—नास्ति ।
११. ज त—प्रवेशः । ट—प्रवेशे ।
ब रा ल—नास्ति । कै—दक्षिणपार्श्वे अपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
१२. प्र—निचयः । भ—विजयः ।
१३. प्र—अदर्शनं च । ज त ट—अदर्शनेन ।
१४. कै—राक्षसेन्द्रस्य ।
१५. प्र—०दावने ।

पृ८१] तर्जनं राक्षसीनां च हनुमद्दर्शनं तथा ॥७९॥[3] [N
चूडामणिप्रदानं च प्रतिसन्देश एव च ।
८२] वनप्रभङ्गः क्रूराणां राक्षसीनां च गर्जनम् ॥[6]८०॥ [N
पृ८३] किंकराणां वधश्चैव मन्त्रिपुत्रवधस्तथा ।[8]
कीर्तितं दुर्गयुद्धं च हनुमन्मेघनादयोः ॥८१॥[9] [N
८४] ब्रह्मास्त्रेण च बन्धो वै[10] मारुतेः परमाद्भुतः ।
निवेदनं च दूतस्य भर्त्सनं च हनूमतः ॥८२॥[11] [N
८५] लाङ्गूलोद्दीपनं चैव लङ्कादाहस्तथैव च ।[12]
सीताया हर्षणं भूयः प्रत्यागमनमेव च ॥८३॥ [N
८६] जाम्बवत्प्रमुखैश्चैव हरिभिः सह संगमः ।
तथा मधुवनप्राप्तिर्मधूनां च विलोपनम् ॥८४॥ [N

---

१. भ—तर्जितं । प्र—गर्जितं ।
२. ब—राक्षसानां ।
३. ट—नास्ति ।
ज त प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—
अभिज्ञानप्रदानं च सीतासम्भाषणं तथा ।
४. ज रा त प्र प भ—राक्षसानां ।
५. ज त प्र भर्त्सनम् । प भ—तर्जनम् ।
६. ट—मणिप्रदानं सीताया वनभङ्गं तथैव च ।
७. रा—किंकरीणां ।
८. ट—राक्षसीविद्रवं चैव किङ्कराणां वधं तथा ।
९. ज त प्र प—द्वन्द्वयुद्धं ।
१०. रा—संबन्धो । प—०स्य ।
११. ट—प्रहर्षं वानरेन्द्रस्य लङ्कादाहाभिमर्दनम् ।
१२. त प भ—०संदीपनं ।
१३. ज त प्र प भ—दर्शनं ।
१४. प—सङ्गमस्तथा ।
१५. ज त—विलुंठनम् । ब—विक्षोभनम् । प—विक्षेपणम् । भ—विलापनम्

८७] दर्शनं देवमार्गस्य भंगो मधुवनस्य च ।
अंगदप्रमुखानां च हरीणां रामदर्शनम् ॥८५॥ [N

८८] हनूमतः परिष्वंगो राघवेण महात्मना ।
प्रवृत्तिश्चैव सीताया मणिदानं तथैव च ॥८६॥[5] [N

८९] लंकाया दर्शनं चैव दर्शनं रावणस्य च ।
सीताया दर्शनं चैव प्रतिसंन्देश एव च ॥८७॥[7] [N

९०] दुर्गकर्मविधानं च राक्षसानां विचेष्टितम् ।
अशोकवनिकाभंगं दुर्गस्य च विनाशनम् ॥८८॥[10] [N

९१] यत्रैतद् कथयामास हनूमान् राघवाय वै ।[11]
यत्र सुग्रीवसहितो राघवः सहलक्ष्मणः ॥८९॥ [N

९२] महता हरिसैन्येन प्रययौ दक्षिणामुखः ।
सर्वे च सहितो[12] यत्र निविष्टाः सागरं प्रति ॥९०॥ [N

---

१. रा ब ल--संगो ।
२. ब—राक्षसानां विचेष्टितम् ।
अयं हि पाठः ८८ श्लोकस्य द्वितीयः पादः ।
हनूमत इत्यादिर्दुर्गकर्मेत्यन्तो मध्यस्थः पाठो नास्ति ।
प—कपीनां राम० ।
३. ट—प्रतिप्रयाणमेवाऽपि मधूनां भक्षणं तथा ।
४. कै—हनुमतः ।
५. ट—राघवाश्वासनं चापि मणिनिर्यातनं तथा ।
६. प—राघवस्य ।
७. रा ल ट—नास्ति । कै—पश्चिमेपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
८. ल—०र्गकर्मद्वा० ।
९. त प—०कामङ्गो ।
१०. ट—नास्ति ।
११. ज त—यदेतद् ।
१२. ज त ढ—०स्तत्र ।

९३] इत्येतत् सुन्दरं काण्डं पञ्चमं परिकीर्तितम् ।
सर्गाणामत्र संख्या च काण्डे सुन्दरसंज्ञिते[3] ॥२१॥ [N
९४] चत्वारिंशत् त्रयश्चैव सर्गाश्च समुदाहृताः ।
पू९५] श्लोकानां द्वे सहस्रे च चत्वारिंशच्च पंचं च ॥९२॥ [N
N] कांडः ५ सर्गाः ४३ श्लोकाः २०४५ ॥ [N
उ९५] अतः परं तुं षष्ठं चं युद्धकाण्डमिति स्मृतम् ।
यत्र रामो महाबाहुः सागरं समुपस्थितः ॥९३॥ [N
९६] यत्र लंकां जिगंमिषु मंत्रयामास राघवः ।
प्राप्तं च राघवं श्रुत्वा मन्त्रयामास रावणः ॥[15]९४॥ [N
९७] शंमार्थी यत्र रामेण ज्येष्ठमाह विभीषणः ।
मुच्यतां मैथिली[17] राजन् स्वस्त्यस्तु नगरस्य नः ।

---

१. ज त प्र प ट—पंचमं ।
२. ज त प्र प ट—सुन्दरं ।
३. ल—संज्ञिके ।
४. ज त प्र प ट—सर्गाः सम्यगु० ।
५ ल—सहस्रं ।
६. रा—पंचक ।
७. त—सुन्दरकांडं । ल प्र प भ—नास्ति ।
८. ल प्र प भ—नास्ति ।
९. प्र प भ—नास्ति ।
१०. प्र भ ट—च ।
११. त—षष्ठे ।
१२. प्र भ—तु । प—वै ।
१३. रा—समरं ।
१४. ल प्र—लङ्काजिग० ।
१५. ट—नास्ति ।
१६. प्र—समर्थी । भ—समार्थे[र्थी ?] ।
१७. ज त—जानकी ।
१८. प्र—च ।

९८] एतद्धि परमं श्रेयो विपरीतो[1]ऽनयो भवेत् ॥९५॥[2] [N
एवमुक्तो दशग्रीवः क्रोधसंरक्तलोचनैः[3] ।
९९] जघान यत्र पादेन भ्रातरं वै विभीषणम् ॥९६॥[2] [N
रावणं च [4]परित्यज्य चतुर्भिः सचिवैः सह ।
१००] आगच्छद्राघवाभ्याशं[5] गदापाणिर्विभीषणः ॥९७॥[6] [N
अभिषिक्तश्च रामेण लंकाराज्ये विभीषणः ।[7]
१०१] सागरात्तोयमादाय प्रयतेन[8] महात्मना ॥[9] ९८॥ [N
यत्र रामस्य संरम्भः समुद्रस्य च दर्शनम् ।
१०२] नलसेतुक्रिया चैव सागरानुमते तथा ॥९९॥[10] [N
तरणं चैव घोरस्य सागरस्य महात्मनः[11] ।
१०३] सुवेलो[12]सादनं चैव चारप्रणिधिरेव च ॥१००॥[13] [N

१. ज त ल प्र प—विपरीतेऽन० ।

२. ट—नास्ति ।

३. रा—क्रोधः संरक्त० ।

४. प्र—परिसंत्यज्य । ज त–संपरि० । ळ–तु परि० ।

५. प्र प भ—०वाभ्यासं ।
ज ब–पुनः शोधनरूपेण शकारस्थाने सकारः कृतः । रा–०वाधिशं ।

६. ट—विभीषणेन संसर्गःवधोपाय निवेदनम् ।
अत्रान्यैः सह कथाव्यत्यय इति मूलेन विवेचनीयम् ।

७. ज ब रा त ळ—नास्ति । कै.–उत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।

८. ज त प्र—प्रयत्नेन । प–०यमादायाप्रंतेन ।

९. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
यत्र···सङ्गतोसौ महात्मना । ट—नास्ति ।

१०. ट—संग्रामं च समुद्रस्य नले सेतोश्च बंधनम् ।

११. ज त—महाद्भुतम् ।

१२. ळ—०कासादरं ।

१३. ट—नास्ति ।

शुकसारणवाक्यं च वानरानीकदर्शनम् ।
१०४] मन्त्रणं राक्षसेन्द्रस्य मायारामशिरः क्रिया ॥१०१॥ [N
वाक्यानि सरमायाश्च सीताऽऽश्वासनमेव च ।
१०५] यत्र माल्यवतो वाक्यं लङ्कायां गुप्तिरेव च ॥ १०२॥ [N
मन्त्रणं राघवबले चराणां च प्रवेशनम् ।
१०६] सुवेलारोहणं चैव तथा लंकाऽवरोधनम् ॥ १०३॥ [N
समारंभश्चं युद्धस्य द्वन्द्वयुद्धप्रवर्तनम् ।
१०७] ससुग्रयज्ञकोपाधिर्वधो यत्राशु शब्दितः ॥ १०४॥ [N
रात्रियुद्धविधानं च शरबन्धस्तथैव च ।
१०८] सुपर्णदर्शनं चैव अस्त्रबन्धस्य मोक्षणम् ॥१०५॥ [N

---

१. प्र—शुकसारण० ।
२. रा—०रानेकद० ।
३. ट—नास्ति ।
४. प—सीतानंदनमेव० ।
६. प्र—तत्र ।
५. प्र—वाल्यवतो । प—माल्यावता ।
७. ज ब त ल प भ—चाराणां ।
८. ब—प्रहर्षणम् ।
९. ट—प्रभावं च समुद्रस्य रौद्रं लङ्कोपमर्दनम् ।
१०. प—यत्रारंभ० । त ज—आरम्भश्चैव ।
११. प्र—युद्धस्य ।
१२. प—०द्धप्रवर्तने ।
१३. रा ब ल ट—नास्ति । कै—पुनरपरहस्तेनोत्तरपार्श्वे विन्यासः ।
१४. रा ब ल प्र भ—०यज्ञकोपादिवधो ।
प—सुसग्रयज्ञकोपादिवधो ।
१५. ज त—नास्ति ।
१६. ज त—सर्पबंधस्त० ।
१७. प्र—शरबन्धविमोक्षणम् ।

धूम्राक्षस्य वधश्चैव तथैवाकम्पनस्य[1] च ।
१०९] प्रहस्तस्य वधश्चैव प्रभङ्गो रावणस्य च[2] ॥१०६॥[3] [N
दुर्गकर्मविधानं च कुंभकर्णप्रबोधनम् ।
११०] दर्शनं कुंभकर्णस्य संप्रश्नो रावणस्य[4] च ॥ १०७॥[5] [N
निर्याणं कुंभकर्णस्य वानराणां च संभ्रमः ।
१११] सुग्रीवग्रहणं चैव प्रमोक्षश्चात्र कीर्त्यते ॥१०८॥ [N
वधश्च कुंभकर्णस्य राघवात् समुदाहृतः ।[1]
११२] नरकान्तवधश्चात्र[6] देवान्तकवधस्तथा[7] ॥१०९॥[8] [N
महापार्श्ववधश्चात्र[9] अतिकायवधस्तथा[10] ।
११३] मेघनादास्त्रमोहश्च[11] ससैन्ये राघवे तथा ॥११०॥ [N
ओषध्यानयनाच्चापि[12] प्रबोधश्च[13] हनूमतो[14] ।

---

१. प्र—०वानस्यकस्य ।
२. प्र—नास्ति ।
३. ट—नास्ति ।
४. ज त ल प्र प—रावबस्य ।
५. ट—अत आरम्य ११२ श्लोकान्तस्य पाठस्य स्थानेऽयं पाठो विज्ञेयः—
कुम्भकर्णस्य च वधं मेघनादवधं तथा ।
अतः परश्चेत्यपि पाठः—रावणस्य विनाशं च सीताप्राप्तिं तथैव च ।
अत्रायं पाठो विचारणीयः ॥
६. ज त—नरान्तकवधश्चैव ।
प्र प भ—नरांतकवधश्चात्र । रा—नरकांतवधश्चैव ।
७. ब—देवकान्तक० ।
८. ज त प्र प भ—अतः परमधिकः पाठः—
महोदरवधश्चैव वधस्त्रिशिरसस्तथा ।
९. प—महायश्ववधश्चात्र । त भ—०र्श्ववधश्चैव ।
१०. त—अग्निकायव० । भ—अतिपार्श्वव० ।
११. ल—मेघनादास्त्रमोहश्च । रा—मेघनादास्तमोहाश्च ।
ज त—मेघनादास्त्रमोहश्च ।
१२. कै ल—ओषध्यानयनाश्चापि । रा ज ब त—०ध्यानयनश्चापि ।
प्र—०नयनश्चापि । प—ओषध्यानयनं चापि ।
१३. ज त—संप्रबोधो ।
१४. ल—हनूमतः ।

११४] उल्कामिहारयुद्धं च वधः कुंभनिकुंभयोः ॥१११॥ [N

मकराक्षवधश्चात्र निर्गमो रावणेः पुनः ।

११५] मायासीतावधश्चात्र मेघनादवधस्तथा ॥११२॥ [N

क्रोधश्च राक्षसेन्द्रस्य तथाऽनिष्टानकं महत् ।

११६] रावणस्य च निर्याणं विरूपाक्षवधस्तथा ॥११३॥ [N

पू११७]मत्तस्यापि वधश्चात्र उन्मत्तवधं एव च ।

राघवस्य च वाक्यानि भर्त्सनं रावणस्य च ॥११४॥ [N

११८] रामरावणयोश्चैव अस्त्रयुद्धं महात्मनोः ।

लक्ष्मणस्य वधश्चैव विलापो राघवस्य च ॥११५॥ [N

११९] ओषध्यानयनं चैव लक्ष्मणोत्थानमेव च ।

---

१. ज त—उल्कानीहारयु० । प्र—उल्कामिहारयु० । प—उल्कानीतार यु० । भ—उल्काभीहारयु० ।

२. ज रा त—०धश्चैव ।

३. ब—निर्गमं ।

४. ज त प—रावणस्य च ।

५. प्र—०रिष्टानकं । भ—निस्सारणकं ।

६. रा ब—नास्ति । कै–पूर्वपार्श्वेऽपरहस्तेन विन्यासः । ट—अतः परं ११८ श्लोकान्तः पाठो नास्ति ।

७. ज—वधश्चैव ।

८. त—तन्मत्त० ।

९. त—रावणस्य ।

१०. ज त प्र भ—शस्त्रयुद्धं ।

११. रा ब—महात्मनः ।

१२. ज त—रावणस्य ।

१३. रा भ—औषध्यान० । प—ऊंषध्यान० ।

१४. प्र—लक्ष्मणोत्था० ।

१५. ज त—अतः परमधिकः पाठः—

मंदोदर्यास्तथा केशाकर्षणं चांगदेन च ।

भेदानं देवराजेन रथस्य च महात्मना ॥११६॥ [N
१२०] मातलेर्दर्शनं चैव शक्रवाक्यनिवेदनम् ।
संग्रामे राक्षसेन्द्रस्य प्रभङ्गो रावणस्य च ॥११७॥ [N
१२१] सारथेर्भर्त्सनं चैव रावणेन दुरात्मना ।
देवानां विग्रहश्चैव गगने दानवैः सह ॥११८॥ [N
१२२] द्वैरथं च महाघोरं संक्षाहं क्षितिकंपनम् ।
वधश्च राक्षसेन्द्रस्य त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥११९॥ [N
१२३] इति षष्ठमिदं काण्डं युद्धकाण्डमिति स्मृतम् ।
सर्गाणां तु शतं ज्ञेयं पञ्चसर्गास्तथैव च ॥१२०॥ [N
१२४] काण्डे ह्यस्मिंस्तथा संख्या श्लोकानां चात्र शब्द्यते ।[१८]

१. त—प्रधानं ।
२. कै—दैवराजेन । प्र प—देवराज्येन ।
३. ब ल—महात्मनः । रा—महात्मनाः ।
४. प—मातुले द० ।
५. त—राक्षस्येंद्र० ।
६. रा—रावणेन ।
७. प्र—विग्रहश्चैव ।
८. रा—गमने । ज—गहने । प्र—गगणे ।
९. त—द्वैरथे । प्र—द्वैरथश्च ।
१०. प्र—सक्षाहभूमिकम्पनं । ज त ट—०हं भूमिकं० ।
११. कै रा ज ब त ल—षष्ठमिदं । प्र—षष्ठिमिदं ।
१२. भ—श्रुतं ।
१३. प—सर्गानां ।
१४. ज त प्र ट—च ।
१५. प—सर्वं ।
१६. ज त—चैव । प्र प भ—चापि ।
१७. ल—शस्यते ।
१८. ट—चास्ति ।

पू१२५] चत्वार्यत्र[1] सहस्राणि पञ्च श्लोकशतानि च ॥१२१॥[2] [N

N] काण्डं[3] ६ सर्गाः १०५ श्लोकाः ४५०० ॥[4] [N

उ१२५] अतस्त्वभ्युदयं नाम सोत्तरं संप्रचक्षते[5] ।

यत्र रावणनारीणां[6] विलापः समुदाहृतः ॥१२२॥ [N

१२६] विभीषणाभिषेकश्च[7] सत्कारो[8] रावणस्य च ।[9]

हनुमत्संप्रवेशश्च[10] मैथिल्याश्चैव दर्शनम् ॥१२३॥ [N

१२७] सीताया निर्गमश्चैव रामेण च समागमः ।

भर्त्सनं चैव सीताया राघवेण[11] महात्मना ॥१२४॥ [N

१२८] परित्यागं[12] च वैदेह्यास्तथा[13] चाग्निप्रवेशनम् ।

अग्निप्रवेशे च तदा[14] अदाहं परमाद्भुतम्[15] ॥१२५॥ [N

---

१. ज त प भ ट—चत्वार्येव । प्र—चत्वार्येव ।

२. ट—अतः परमधिकः पाठः—

पुनस्तूर्यसहस्राणि युद्धकाण्डे निदर्शितौ ।

३. त—युद्धकांडं ।

४. ल प्र प भ—नास्ति ।

५. ब त ल प्र प ट—संप्रचक्ष्यते ।

६. ज त प्र प भ ट—०णदाराणां ।

७. ट—०भिषेकश्च ।

८. के ब ल—संस्कारो राव० ।

ज त—न्यक्कारो रावण० । ट-पुष्पकारोहणं तथा ।

९. ट—अत आरभ्य १३१श्लोकस्य पूर्वार्धान्तः पाठो नास्ति ।

१०. प्र प भ—हनूमत्सं० ।

११. रा ल ज—राघवेन ।

१२. ज त प्र भ—०त्यागञ्च ।

१३. प—सीतायास्त० । ज त प्र—तथैवाग्निप्र० ।

१४. ज त प—तथा ।

१५. ज त प—अदाहः परमाद्भुतः । प्र—ह्यदाहः परमाद्भुतः ।

१२९] ब्रह्मादीनां च सर्वेषां देवानामिह दर्शनम् ।
वृषध्वजस्य देवस्य दर्शनं चात्र कीर्त्यते ॥ १२६ ॥ [N

१३०] पितामहाद्वरश्चापि पितुर्दर्शनमेव च ।
कैकेय्याः शापनाशश्च तुष्टिर्दशरथस्य च ॥१२७॥ [N

१३१] शक्राद्वरस्य संप्राप्तिर्हरीणां प्रतिजीवनम् ।
रत्नानां संविभागश्च राक्षसेन्द्रेण धीमता ॥१२८॥ [N

१३२] पुष्पकारोहणं चैव राघवस्य महात्मनः ।
वानराणां च सर्वेषां राक्षसानां तथैव च ॥१२९॥[8] [N

१३३] प्रतियानं च कथितं विस्तरेण महात्मना ।[8]
भारद्वाजाश्रमप्राप्तिर्ऋषेर्दर्शनमेव च ॥१३०॥ [N

१३४] नन्दिग्रामप्रवेशश्च गुरूणां चैव दर्शनम् ।
अयोध्यायां प्रवेशश्चैव व्रतस्य च समापनम् ॥[12]१३१॥ [N

१३५] अभिषेकश्च रामस्य प्रसादो नगरस्य च ।[14]

---

१. ज त—विष्ण्वादीनां ।
२. ळ—पितामहवरश्चात्र ।
प भ—पितामहाद् वरश्चात्र । प्र—पितामहाद् वरः प्राप्तिः ।
३. त—पितृदर्शनमेव ।
४. भ—पितुर्दर्श० ।
५. प—शक्राद् वरस्य देवस्य ।
६. ज त—जीवनं तथा ।
७. प—रत्नानां ।
८. ज—नास्ति ।
९. ज त प्र भ—भरद्वाजाश्रम० ।
१०. ज त प्र प—अयोध्यासंप्रवे० ।
११. ळ—भ्रतस्य ।
१२. ट—अयोध्यायां च गमनं भरतेन समागमं ।
१३. ज त प्र प भ—प्रमोदो ।
१४. ट—रामाभिषेकाभ्युदयो हरिराज्ञोविसर्जनं ।

यौवराज्यप्रदानं च भरतस्य महात्मनेः ॥१३२॥[3] [N

१३६] मुनीनांमिह संप्राप्तिरुत्पत्तिश्चैव रक्षसाम् ।

त्रैलोक्यविजयाख्यानमहल्याकीर्तनं तथा ॥१३३॥[3] [N

१३७] सीताविवासनं चैव लक्ष्मणेन महात्मना ।[7]

वाल्मीक्याश्रमसंप्राप्ति मैथिल्याश्चात्र कीर्त्यते[10] ॥[3]१३४॥[N

१३८] कुशीलवसमुत्पत्तिरिक्ष्वाकुकुलवृद्धये ।

लवणस्य वधश्चात्र शत्रुघ्नेन प्रकीर्तितः[12] ॥१३५॥ [N

१३९] शम्बूकस्य वधश्चात्र कुम्भयोनिसमागमः ।[15]

अलङ्कारस्य संप्राप्तिः श्वेतोपाख्यानमेव च [3]॥१३६॥ [N

१४०] अश्वमेधसमारम्भो गीतश्रवणमेव च ।

---

१. ब—यौवराज्ये प्र० । प—यौवराज्यं प्रदानं ।

२. प्र—महात्मना ।

३. ठ—नास्ति ।

४. ज—मुनीनां चैव ।

५. ज त—रक्षसः । प—राक्षसाम् । ल—राक्षसम् ।

६. प्र—०निर्वासनं ।

७. ठ—सीतायाश्च परित्यागं रञ्जनं प्रकृतेस्तथा ।

८. ज प्र प भ—वाल्मीकाश्र० ।

९. रा ब ल भ—०स्याश्चात्तु ।

१०. ल—कीर्तते ।

११. रा ल—लवणस्य ।

१२. रा ब ल—नास्ति ।

१३. त—शम्भूकस्य ज—शम्बुकस्य । प्र—शम्बुकश्च । रा ब ल—नास्ति ।

१४. रा ब ल—नास्ति ।

१५. ठ—अगस्त्यप्रमुखानां च महर्षीणां समागमः ।

१६. त—अहंकारस्य ।

१७. के—११४ श्लोकस्य—मैथि०—इत्यारभ्य ११६ श्लोकस्य-संप्राप्तिरित्य-न्तस्य पश्चिमपार्श्वे पुनरपरहस्तेन विन्यासः ।

काव्यस्य गाने विज्ञेयौ स्वपुत्रौ तौ [3]कुशीलवौ ॥१३७॥ [N
१४१] वाल्मीकेश्चैव वाक्यानि विलापो राघवस्य च ।
रसातलप्रवेशश्च वैदेह्याः परमाद्भुतः ॥१३८॥ [N
१४२] राघवस्य च संरंभो दर्शनं परमेष्ठिनः ।
कालदुर्वाससोः प्राप्तिः सन्त्यागो लक्ष्मणस्य च ॥१३९॥ [N
१४३] सुहृदां चैव घोराणां वानराणां महात्मनाम् ।
महाप्रस्थानगमनं स्वर्गप्राप्तिस्तु पुष्कला ॥१४०॥[10] [N
१४४] इत्याभ्युदयिकं[11] काण्डं[12] संभविष्यं सहोत्तरम्[13] ।[14]
नवतिः संख्यया[15] सर्गाः[16] श्लोकानां चात्र कीर्त्यते[17] ॥१४१॥ [N

---

१. ज प्र प भ—चान्ते । त—कान्ते । ल—रागे ।
२. ज त प्र प भ—विज्ञाय ।
३. ज त—तौ सुपुत्रौ । रा—सुपुत्रौ तौ ।
ब—सुपुत्रौ तु । ल—सुमुत्रौ तौ ।
४. ज त—वाक्यान्ते ।
५. के रा ज ब त ल प्र प—परमेष्ठिनः ।
६. के रा त प्र—सत्यागो ।
७. ज त ल प्र प भ—पौराणां ।
८. ज त प्र प—राघवाणां ।
९. ज त प्र प भ—प्राप्तिश्च ।
१०. ट—११६ त आरभ्य नास्ति ।
अधिकश्चायं पाठः—
अनागतं च यत् किञ्चित् रामस्य वसुधातले । प्राप्तरा ……।
११. ज त—इत्याभ्युदयकं । ट—एतदभ्युदयिकं । भ—इत्याभ्युदायिकं ।
१२. भ—काण्डमभविष्यं ।
१३. त—सहोत्तुरम् । ल प्र—महोत्तरम् ।
१४. भ—अतः परमधिकः पाठः—
इति वै सप्तमं काण्डं समाविष्यमिहोत्तरम् ।
१५. रा ज ब प ट—नवतिसंख्यया ।
१६. त—सर्गाः । प—स्वर्गाः ।
१७. ज त—कथ्यते । ट—पठ्यते ।

१४५] त्रीणि श्लोकसहस्राणि नैव श्लोकशतानि च ।[1]
षष्टिः श्लोकास्तथा ज्ञेयाः काण्डेऽस्मिन् परिसंख्यया॥१४२॥[2]
१४६] सर्गाणां षट् शतानीह विंशतिश्चैव संख्यया ।[3][4]
इत्येतद्रामसम्बद्धमाख्यानमृषिसंयतम्[5] ॥१४३॥ [N
१४७] चतुर्विंशतिसाहस्रं[6] सर्वपापभयापहम्[7] ।
आख्यानं रुचिरं दिव्यं कृतं वाल्मीकिना स्वयम् ।
१४८] धन्यं यशस्यमायुष्यं पुत्रीयं[8][9] पुष्टिवर्धनम् ॥१४४॥ [N
पठेदिमां[10] पर्वणि यः समाहितः
१४९] कथां शुचिर्दाशरेथेर्महात्मनः[11] ।
विमुच्यतेऽसौ कलुषेण मानवः
सुखेन[12] गच्छेच्च मृतोऽपि सद्गतिम्[13] ॥१४५॥ [N
इत्यार्षे रामायणे[14] आदिकाण्डे[15] अनुक्रमणिकाऽध्यायः[16] ॥
काण्डं ७ सर्गाः ९० श्लोकाः ३३६० ॥[17]

---

१. ज त प्र ट—तावन्त्येव शतानि ।
२. त—अतः परमधिकः पाठः—
सुन्दरकाण्डं ७ । सर्गाः ३० । श्लोकाः ३९६० । ट—३३६० ।
ज—कांड ७ । सर्ग ९ । श्लोक ३३६० ।
३. के—षट्शतानीह । ४. प्र ट—नास्ति ।
५. ज—०सत्तमः । त—०सत्तमम् । प्र—०संस्तुतं ।
रा—०संयुतम् । प—०संस्कृतम् ।
६. त—पंचविंशतिसा० । ७. ज त—सर्वपापप्रणाशनम् ।
८. के रा ब ळ प्र प भ—वैष्णवं । ९. ज ळ—प्रजीयं । त—पूजीयं ।
१०. त—पठेद्यमां । ळ—पठेदिमं । ११. ज त ळ—शुचेर्दाश० ।
१२. रा ज ब त भ—सुखं च । प्र ळ—सुखं स० । १३. प्र—सद्गतिः ।
१४. रामायणे महर्षिवाल्मीकीये । १५. भ—नास्ति ।
१६. ज त ळ—अनुक्रमणिकाध्याये तृतीयः सर्गः ।
प्र—अनुक्रमणिकानाम तृतीयः सर्गः ।
प—अनुक्रमणिकासर्गः ४ । भ—अनुक्रमणिका ३ ।
१७. ज त ळ प्र प भ—नास्ति ।

श्रुत्वा पूर्वं काव्यबीजं देवर्षेर्नारदादृषिः ।
१] लोकादन्विष्य भूयश्च चरितं चरितव्रतः ॥१॥ [१
पू२] उपस्पृश्योदकं सम्यङ् मुनिः स्थित्वा कृतांजलिः । [२पू
तपोबलेन चान्विष्य चरितं भूरितेजसः ॥२॥ [N
३] जन्म रामस्य सुमहद् वीर्यं सर्वानुकूलताम् ।
लोकस्य प्रियतां क्षान्तिं सौम्यतां सत्यवाक्यताम् ॥३॥ [१०
४] मिथिलागमनं चैव धनुषश्चैव भेदनम् । [११उ

---

१. ल—पूर्णं ।
२. ज त ल—०दान्मुनिः ।
३. ज त—लोकमन्विष्य । ल—लोकमन्विष्य ।
४. ल—सत्यं ।
५. प—मुनिस्तथौ ।
६. ज त ल प्र—अतः परमधिकः पाठः—
प्राचीनाग्रेषु धर्मेषु काव्यस्यान्वेषयन् गतिम् ।
प— ,, ,, ०स्यान्वेषयो मतिम् ॥
७. ज त ल—चरितेन च तेजसा ।
८. ज त ल—चैवानुकूलताम् । भ— सर्वानुकम्पतां ।
९. प्र—सत्यशीलताम् ।
१०. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
विश्वामित्रस्य चरितं मन्त्रलंभं तथैव च ।
ताडकायाश्च निधनं यज्ञ...........
नाना चित्राः कथाश्चान्या विश्वामित्रमहामुनेः ।
११. प—मैथिल्यागम० ।
१२. प्र—धनुषश्च विभेदनम् ।

रामरामविवादं[1] च[2] गुणं दशरथस्य च ।।[3]४।। [१२पू

५] नाना चित्राः कथाश्चान्यो[4] विश्वामित्रमहामुनेः । [११उ

तथाऽभिषेकं रामस्य कैकेय्या दुष्टभावनम्[5] ।।५।। [१२पू

६] व्याघातश्चाभिषेकस्य[6] राघवस्य[7] विवासनम् ।

राज्ञः शोकं विलापं च मोहं मरणमेव च ।।६।। [१३

७] प्रकृतीनां विषादं[8] च[9] तथैव च विसर्जनम् ।[10]

निषादाधिपसंवादं सूतस्य च विसर्जनम्[11] ।।७।। [१४

८] गङ्गायाश्चैव सन्तारं भारद्वाजस्य[12] दर्शनम् ।[13]

भारद्वाजाभ्यनुज्ञानं[14] चित्रकूटस्य दर्शनम् ।।८।।[15] [१५

९] वास्तुकर्मनिवेशं च भरतागमनं तथा ।

प्रसादनं[16] च रामस्य पितुश्च सलिलक्रियाम्[17] ।।९।। [१६

---

१. ज त ल प्र—०मविवादश्च ।

२. ज त ल प्र—भयं । प—प्रीतिं । भ—वाक्यं ।

३. प्र—अयं श्लोकः ४र्थश्लोकात्पूर्वं विज्ञेयः ।

४. प—कथाश्चापि ।

५. ज त ल प्र प—दुष्टभावतां । भ—दुष्टभावना ।

६. के रा ब—व्याघातश्चाभि० । प—०श्च भिषेकश्च ।

७. ज—रामस्य सुमहात्मनः । त ल—रामस्य च महात्मनः ।

८. ज—विषादं च । त—विषादश्च । ल—विषादं च ।

९. भ—विषादश्च ।

१०. प—अतः परमधिकः पाठः—

तमसायां विवासं च प्रजानां च निवर्तनं ।

११. रा ज त ल—निवर्तनं । प्र—निवर्तते ।

१२. ज ब त ल प्र प भ—भरद्वाजस्य ।

१३. प—नास्ति ।

१४. त ल प्र—भरद्वाजाभ्यनुज्ञानात् । प—भरद्वाजाभ्यनुज्ञा च ।
भ—भरद्वाजाभ्यनुज्ञां च ।

१५. ज—नास्ति ।

१६. ज त ल—आश्वासनं ।

१७. के ज त ल प भ—०क्रियाम् । प्र—सलिलं क्रियाम् ।

१०] पादुकस्या[1]भिषेकं च नन्दिग्रामनिवेशनम्[2] ।
दण्डकारण्यगमनं सुतीक्ष्णेन समागमम्[3] ॥१०॥[4] [१७

११] अनसूयासमस्यां च अङ्गरागस्य चार्पणम् ।
शरभङ्गाश्रमाभ्याशं[5] वासवस्य च दर्शनम् ॥[6]११॥ [१८

१२] अगस्त्याश्रमवासं च अगस्त्यस्य[7] विसर्जनम् ।
समागमं विराधेन[8] वासं पञ्चवटे तथा ॥१२॥[9] [१९

१३] हासं शूर्पणखाया[10]श्च विरूपकरणं[11] तथा ।
वधं खरत्रिशिरसोः कथनं[12] रावणस्य च ॥१३॥ [२०

१४] मारीचस्य[13] विनाशश्च वैदेह्या हरणं[14] तथा ।

---

१. ज त प भ—पादुकास्वभिषेकं । ल—०कासु मि० ।
प्र—०कायभिषेकञ्च ।
२. ज त ल—०मप्रवेशनम् ।
३. प्र—विराधस्य वधं तथा ।
४. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
दर्शनं शरभङ्गस्य सुतीक्ष्णेन समागमे ।
५. ज त ल—शरभङ्गाश्रमे वासं । ब—०ङ्गाश्रमावासं ।
भ—शरभङ्गाश्रमाभ्यासे ।
६. प—नास्ति ।
७. ज त ल प्र भ—अगस्त्यात्त ।
८. ज—कबंधेन । ल—कबंधेन । त—विबंधेन ।
९. प्र—दर्शनं चाप्यगस्त्यस्य धनुषो ग्रहणं तथा ।
विसर्जनमगस्त्यात्त वासं पञ्चवटे तथा ।
१०. के रा ल त प—शूर्पनखा० ।
११. प्र—विरूपकरणम् ।
१२. प—व्युत्थानं ।
१३. ज ल—मारीचिप्रविनाशं च । त—मारीचिप्रविनाशे च ।
१४. ज त ल प्र—वैदेहीहरणं ।

जटायुषो[1] वधश्चैव[2] विलापो[3] राघवस्य च[3] ॥१४॥[4] [२१

१५] कबन्धग्रहणं[5] चैव कबन्धस्य वधं तथा ।

शबर्या[6] दर्शनं चैव पम्पाया दर्शनं तथा[7] ॥१५॥

१६] विलापं चैव पम्पायां राघवस्य महात्मनः ।[8] [२२

ऋष्यमूकाभिगमनं[9] सुग्रीवेण[10] समागमम्[11] ॥१६॥

१७] प्रत्ययोत्पादनं चैव बालिसुग्रीवविग्रहम्[12] । [२३

बालिप्रमथनं[13] राज्ये सुग्रीवप्रतिपादनम्[14] ॥१७॥

१८] ताराविलापसमये[15] वर्षारात्रिनिवासनम्[16] । [२४

१. ज त ळ प्र प भ—जटायोर्निधनं चैव ।

२. ज त ळ प्र भ—विलापं । प—कबन्धस्य ।

३. प—च दर्शनं । ज—रागवस्य च ।

४. ब रा—नास्ति ।

प—सीतायाश्च प्रक्षोभं च मारीचस्य वधं तथा ।
वैदेह्या हरणं चैव शोको वै राघवस्य च ॥
गृध्रराजेन संभासं धर्मज्ञेन महात्मना ।
जटायोर्निधनं चैव कबंधस्य च दर्शनम् ॥

५. ज त—कबंधदर्शनं । ळ—कबंभदर्शनं ।

६. ळ—सबर्या द० । भ—शबर्या द० ।

७. प—हनू [मद् ?] दर्शनं तथा ।

८. प्र—नास्ति ।

९. त—ऋषिमूकाभि० ।

१०. रा—सुग्रीवेन ।

११. ज त ळ प्र प भ—सख्यं ।

१२. ज ब त ळ प्र प भ— वालिसु० ।

१३. ज ब त प्र भ—वालिप्र० । प—वालिप्रथमनं ।

१४. सुग्रीवस्याभिषेचनं ।

१५. ज त ळ प—ताराविलापशमनं । प्र—०लापं समयं । भ—लापसमयं ।

१६. ळ भ—वर्षारात्रवि० । प—वर्षारात्रीवि० ।

कोपं राघवसिंहस्य बलानामुपसङ्ग्रहम्[1] ॥१८॥
१९] दिशः[2] प्रस्थापनं चैव पृथिव्याश्च[3] निवेदनम् । [२५
अंगुलीयप्रदानं[4] च तथैव[5] बिलदर्शनम्[6] ॥१९॥
२०] प्रायोपवेशनं चैव सम्पातेश्चैव दर्शनम् ।[8] [२६
पर्वतारोहणं चैव सागरस्य च लंघनम् ॥२०॥ [२७पू
२१] सिंहिका[9]दर्शनं चैव लङ्कानिलयदर्शनम्[7] ।[10]
रात्रिप्रवेशे[11] लङ्कायां चिन्ता[12] हनुमतस्तथा ॥२१॥ [२८
२२] आपानभूमिगमनं[13] अवरोधस्य[14] दर्शनम् ।[15] [२९पू

१. रा ज त—बाळानामुप० ।
२. ज त ल—दिक्षु ।
३. प—पृथिव्यारचैव वर्णनं ।
४. प्र—अंगुरीयप्र० ।
५. प्र—भ्रष्यस्य ।
६. रा—बलिदर्शनं ।
७. त—लंकानिळयदर्शनम् । भ्रमान्मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा २१श्लोक-
द्वितीयपादेन संबंध: कृत: ।
८. प्र—अत: परमधिक: पाठ:—
समुद्रवचनाच्चैव मैनाकस्य च दर्शनं ।
राक्षसीतर्जनं छायाग्राहिण्यारचैव दर्शनं ॥
९. प्र—सिंहकायाश्च निधनं ।
१०. रा ब त प भ—नास्ति । के—उत्तरपार्श्वे पुनर्विन्यासः ।
११. ज त ल—रात्रौ प्रवेशं । रा प्र—रात्रिप्रवेशं ।
प—रात्रिप्रवेशन० । भ—रात्रिप्रवेशो ।
१२. ल प—चिंतां । त—चिंतां ।
१३. रा ब—आपानुभूमिग० ।
१४. रा—अवरोधस्य ।
१५. प्र—अत: परमधिक: पाठ:—
दर्शनं रावणस्यापि पुष्पकस्य च दर्शनम् ।

अशोकवनिकायानं सीतायाश्चापि दर्शनम् ॥[3]२२॥ [३०पु

२३] राक्षसीदर्शनं चैव रावणस्य च दर्शनम् ।[5] [२९उ

संभाषणं च मैथिल्या अभिज्ञानस्य चार्पणम् ॥२३॥ [३०उ

२४] मणिप्रदानं सीताया वृक्षभङ्गं तथैव च । [३१उ

राक्षसीविद्रवं चैव किङ्कराणां निबर्हणम् ॥२४॥

२५] अमात्यपुत्रनिधनं सेनापतिवधं तथा । [३२

अक्षस्य निधनं चापि निर्याणेन्द्रजितस्तथा ॥२५॥

२६] ग्रहणं वानरेन्द्रस्य लङ्कादाहाभिमर्दनम् । [३३

प्रतिप्रयाणमेवापि मधूनां भक्षणं तथा ॥२६॥

२७] राघवाश्वासनं चापि मणिनिर्यातनं तथा । [३४

संगमं च समुद्रस्य नलसेतोश्च बन्धनम् ॥२७॥[14]

१. ज त—अशोकवनिकायां च ।

२. ज त प—सीतायाश्चैव ।

३. ल—नास्ति ।

४. त प्र प—राक्षसीतर्जनं चापि ।

५. ज—नास्ति ।

६. त—मणिप्रधानं ।

७. ज त प्र प—वनभङ्गं ।

८. ज त प—वधं तथा ।

९. ज प—निर्यातेन्द्रजि० । त–निर्याणेन्द्रजि० । प्र—निर्यानेन्द्रजि० ।

१०. भ—०हाभिमर्शनं । ल—लङ्कादाहे······ ।

११. ल—प्रतिप्रवणमे० ।

१२. प—चापि ।

१३. प—दर्शनं । ल—नास्ति ।

१४. रा—अतः परमधिकः पाठः—

प्रतिप्रयाणमे ।

२८] तरणं च समुद्रस्य रौद्रलोकोपरोधनम् । [३५
विभीषणेन संसर्गो वधोपायनिवेदनम् ॥२७॥
२९] कुम्भकर्णस्य च वधं मेघनादवधं तथा । [३६
रावणस्य विनाशं च सीताऽवाप्तिं तथैव च ॥२८॥
३०] विभीषणाभिषेकं च पुष्पकारोहणं तथा ।[8] [३७
अयोध्यायां च गमनं भरतेन समागमम् ॥[10] २९॥
३१] रामाभिषेकाभ्युदयं हरिरक्षोविसर्जनम् ।[12]
सीतायाश्च परित्यागं प्रकृतीनां च[13] रञ्जनम् ॥३०॥ [३८

---

१. त—प्रभावं च स० । प्र—प्रतारम्च स० । ल—नास्ति ।
२. त प्र प—रौद्रं कल्लोपरो० ।
३. ज ल—नास्ति ।
४. कै रा—संसंगो । ज त ल प्र—संसर्गं । प—संतु संसर्गो वधो(पा)यनि० ।
५. प—वधं घोरं ।
६. प्र—शोकं राक्षसयोषितां ।
७. प्र—सीतात्यागं तथैव च ।
८. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

ब्रह्मादिदेवतानाञ्च दर्शनं वचनं तथा ।
सीतायाः प्रत्ययं चैव सीताप्राप्तिमरे(:)पुरं ॥
जीवनं वानराणाञ्च पुष्पकारोहणन्तथा ।

९. प—अयोध्यागमनं चैव । भ—अयोध्यायाश्च ग० ।
१०. प्र—अयोध्यायाश्च गमनं भरद्वाजसमागमं ।

प्रेषणं वटु [वायु] पुत्रस्य भरतेन समागमे ॥

११. ज ल—ेकाभ्युदयो ।
१२. त—नास्ति ।
ज ल प—अतः परमाधिकः पाठः—

अगस्त्यप्रमुखानां च महर्षीणां समागमं ।

प्र—अगस्त्यप्रभृतीनाञ्च
राक्षसानां समुत्पत्ती रावणस्य जयं ततः ॥
१३. ज त ल—रंजनं प्रकृतेस्तथा ।

१३] अनागतं च यत्किञ्चिद्रामस्य वसुधातले । [३९पू
प्राप्तराज्यस्य रामस्य चरितं यच्च धीमतः ॥३१॥[4] [N
१४] अभ्यागममृषीणां च शत्रुघ्नस्य विसर्जनम् ।[6]
वनप्रसूतिं सीताया लवणस्य रणे वधम् ॥३२॥[8] [N
३५] कालदुर्वाससोः प्राप्तिं लक्ष्मणस्य विसर्जनम् ।
स्थापयित्वा सुतान् राज्ये यथा रामो दिवं गतः ॥३३॥[9] [N

---

१. त—तु ।

२. प—प्राप्तराजस्य । ब—प्राप्तं राज्यस्य ।

३. ज त ल—तस्य ।

४. ज त ल प—अतः परमधिकः पाठः—

तच्चकारोत्तरे कांडे चरितं भगवानृषिः ।

५. प्र—अभ्यागतमृ० ।

६. ज त ल—नास्ति ।

७. ज त ल प्र प भ—वने प्रसूतिं ।

८. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

मथुरायां निवासश्च मैथिल्यानयनं तथा ।
यज्ञस्यान्ते च सीतायाः प्रत्ययस्य निदर्शनं ॥
भूमौ प्रवेशं सीतायाः सन्तापं राघवस्य च ।

प—मथुराया निवेशं च यज्ञारंभस्तथैव च ।
यज्ञांते चैव सीतायाः पातालगमनं तथा ॥

९. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

ब्रह्मवानरगोपुच्छैः पौरजानपदैरपि ।
एतद् सुतपसा दृष्ट्वा निखिलेन महामतिः ।
चरितं सत्यसंधस्य सर्वं काव्ये चकार ह ॥
ततः पुनरहः किञ्चिदुपश्लोकायते मुनिः ।
तं ब्रह्मा संग्रहस्येव श्लोक इत्यब्रवीद् वचः ॥
ततः शिष्यांश्च धर्मज्ञान् सर्वान् काव्ये तपस्विनः ।
अभिवाद्य महात्मानमृषिं काव्यं व्यचारयत् ।

३६] त्रैलोक्यदर्शी तत् सर्वं तपोयोगबलेन च ।[1]
दद्दर्श चैव प्रत्यक्षं पाणावामलकं यथा ॥३४॥ [N

३७] दृष्ट्वा चानन्तरं चक्रे रामस्य चरितं महत् ।
धर्मकामार्थसंयुक्तं पुण्यश्रवणकीर्तनम् ॥३५॥ [N

३८] श्रुतिरत्नचयाकीर्णं काव्यसागरमद्भुतम् ।
कृत्वा चेदमशेषेण काव्यं रामायणाह्वयम् ॥३६॥ [N

पादबद्धश्चतुष्पादः शोकः श्लोकत्वमागतः ॥
तस्य बुद्धिरियं जाता वाल्मीकेर्भावितात्मनः ।
कृत्स्नं रामायणं काव्यं स्वयमेव करोम्यहम् ॥
प्रथमं ब्रह्मणा प्रोक्तं नारदस्य च दर्शनम् ।
श्रुत्वा स वक्ष [स्तु ?] मात्रं हि धर्मात्मा धर्मसंहितम् ॥
व्यक्तमन्विष्य भूयो वै यद् वृत्तं तत्तत: ।
गुणावासस्य रामस्य राज्ञो दशरथस्य च ॥
सभार्यस्य सराष्ट्रस्य शा [सा ?] न्तः पुरजनस्य च ।
हसितं भाषितं यच्च गतं यच्चाप्यनुष्ठितं ॥
तत् सर्वं धर्म्मवीर्य्येण यथावत् संप्रपश्यति ।
भरतस्य यथा वृत्तं शत्रुघ्नस्य च धीमतः ॥
वसिष्ठश्च [स्य ?] सुमन्तोश्च वामदेवस्य चैव हि ।
विश्वामित्रस्य देवर्षेः राज[र्षे]र्जनकस्य च ॥
रक्षसां वानराणां च यथा वीर्यं विचेष्टितं ।
सीतासहायेन किञ्चित् कथितं वसता वने ॥
महासत्त्वेन रामेण लक्ष्मणेन च धीमता ।
ततः पश्यति तत्सर्वं वाल्मीकिर्योगमास्थितः ॥

१. कै ब भ—त्रैकाल्यदर्शी ।

२. प्र—अत: परमधिकः पाठः—

तत् सर्वं सर्वतोऽन्विष्य रामवृत्तान्तमात्मवान ।

३. रा—मणावाम० ।

४. ज त ल—धर्मार्थकामसं० ।

५. रा ब— ०त्नमयाकीर्णं । त— ०त्नमयाकीर्णं ।

३९] चिन्तयामास क इदं लोकेऽस्मिन्प्रथयिष्यति । [४.३उ
अथ चिन्तयतस्तस्य महर्षेर्भावितात्मनः ॥३७॥

४०] तदा जगृहतुः पादौ मुनिवेषधरौ वने । [४.४
वाल्मीकिशिष्यौ तरुणौ रूपौदार्यगुणान्वितौ ॥३८॥

४१] कुशीलवाविति ख्यातौ सीतारामाङ्गसंभवौ ।[2] [४.५
स तौ मूर्धन्युपाघ्राय वाल्मीकि भगवानृषिः[3] ॥३९॥ [N

४२] उवाचेदं तदा वाक्यं प्रणतावग्रतः स्थितौ ।
आर्षं रामायणं काव्यमिदं तावन्मया कृतम् ॥४०॥ [N

४३] गृह्यतां मन्नियोगेन पुण्यश्रवणकीर्तनम् । [N
पौलस्त्यवधसंयुक्तं धर्मकामार्थसंहितम् ॥४१॥ [४.७उ

४४] पाठे गेये[10] च मधुरं प्रमाणैस्त्रिभिरुज्ज्वलम्[11] ।
तन्त्रीगीतैश्च[12] मधुरैरन्वितं[13] सप्तभिः स्वरैः ॥४२॥ [४.८

---

१. त ल—ततो । ज—तु तौ । प—मुने ।

२. प्र—अतः परमधिकः पाठः—

राजपुत्रौ यशस्विनौ ।

भ्रातरौ स्वरसम्पन्नौ ददर्शाश्रमवासिनौ ॥

स तु···विनौ दृष्ट्वा वेदेषु परिनिष्ठितौ ।

३. त ल—०गवान् मुनिः ।

४. प्र—प्रोवाचेदं ।

५. ज त ल—ततो ।

६. ज—प्रणतावग्रतौ ।

७. ज—गृहीतं । त ल प्र— गृह्णीतं ।

८. ज—०र्थसंविधं ।

९. प्र—पाठ्यं ।

१०. रा—योगे ।

११. ज त ल प्र प भ—०स्त्रिभिरन्वितं ।

१२. ज त ल प्र प भ—तन्त्रीगीतैश्च ।

१३. कै—मधुरमंधितं । रा व—मधुरमन्वितं ।

४५] जातिभिः सप्तभिर्युक्तं [1]श्रोत्रश्रुतिमनोहरम् । [४.८
शृंगारवीरबीभत्सरौद्रहास्य[2]भयानकैः ॥४३॥
४६] करुणाद्भुतशान्तैश्च[3] युक्तं काव्यरसैरपि । [४.९
एवमुक्त्वा तु[4] तौ बालौ भगवानृषिसत्तमः[5] ॥४४॥
४७] सम्यगध्यापयामास काव्यं रामकथाऽऽश्रयम्[6] ।
वाग्विधेयं [7]ततस्ताभ्यां कृतं तच्च विशेषतः[8] ॥४५॥ [N
४८] पुण्यं रामायणं[9] काव्यं तदा तौ मुनिरब्रवीत् ।
गीयतामिदमाख्यानं भवद्भ्यामृषिसंसदि ॥४६॥ [N
४९] राजर्षीणां पुण्यकृतां साधूनां च समागमे ।
गुरुणैवमनुज्ञातौ ततस्तौ देवरूपिणौ ॥४७॥ [N
५०] कुशीलवौ राजपुत्रौ[10] प्रकृत्या मधुरस्वरौ[11] ।
रूपानुरूपौ[12] रामस्य बिम्बाद्बिम्ब[13]मिवोद्धृतौ ॥४८॥ [४.११

---

१. ल प्र—श्रोतुः श्रुतिम० । प—मनः श्रुतिसुखावहं ।
२. प्र—०त्सरौद्रश्च सभयानकः ।
भ—शृङ्गारवीरकरुणाहास्यरौद्रभ० ।
३. प्र—करुणाद्भुतहास्यैश्च । भ—बीभत्साद्भुतशा० ।
४. ज त ल प्र—च ।
५. ज त ल—भगवान् मुनिसत्तमः ।
६. भ—रामायणाश्रयं ।
७. ज त ल—सदा ताभ्यां । ब— कृतस्ताभ्यां ।
प्र—तदा ताभ्यां । प—यदा ताभ्यां ।
८. प्र—तथाप्यशेषतः ।
९. ज—रामायणे ।
१०. प्र—रामपुत्रौ । प—रामसुतौ ।
११. रा त—मधुरस्वनौ ।
१२. ज ल—अनुरूपौ च । त—अनुरूपस्य । रूपानुरामो ।
१३. ज—०म्बमिवोधतौ । बिम्बाद्बिम्बमिवोदितौ ।
ल—० म्बमिवेद्धृतौ । प्र—०म्बामिवोद्धृतौ । प—सूर्यबिम्बादि० ।

५१] वेदवेदाङ्गेतिहासशास्त्रेषु परिनिष्ठितौ ।[3] [N
जगतुस्तौ ततः काव्यं मधुरं मधुरस्वरौ ॥४९॥
५२] यथोपदिष्टमृषिणा सन्निधौ ब्रह्मवादिनाम् । [४.१३
तयोर्ब्रह्माऽभवत् प्रीतः सेन्द्राश्च सुरसत्तमाः ॥५०॥ [N
५३] गन्धर्वाः पन्नगाश्चैव पतङ्गाश्च महर्षिभिः । [N
तौ कदाचित् समेतानामृषीणां देवरूपिणौ ॥५१॥[13]
५४] काव्यं रामायणं मध्ये सहितावभ्यगायताम् । [४.१४

१. प्र—०दाङ्गेतिहासे शा० । प—०दाङ्गेतिहासपुराण० ।
२. ल—०निष्ठतौ । प्र—०निष्ठुतौ ।
३. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
तौ तु गन्धर्वतत्त्वज्ञो [ौ ?] स्थानमार्च्छनकोविदौ ।
भ्रातरौ स्वरसम्पन्नौ गन्धर्वाविव रूपिणौ ॥
४. त—जगतो तु ।
५. ज त ल प्र प भ—तदा ।
६. रा ज त ल—मधुरस्वनौ ।
७. त ज—अथोपदि० ।
८. प्र—ब्रह्मवादिना ।
९. प्र भ—०पतगाश्चैव । प—०र्वाप्सरसश्चैव ।
१०. ज ल—पतगाश्च । प्र प भ—पन्नगाश्च ।
११. ज त ल—महर्षयः ।
१२. ज त ल—चैव सन्निधौ ।
१३. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
काव्यं तज्जगतुः प्रीतौ कुमारौ कलमद्भुतं ।
श्रुत्वा च मुनयः सर्वे परं विस्मयमागताः ॥
हर्षविस्मयसम्पन्नैर्नेत्रैरनिमिषैरिव ।
समीयुस्तत्र तत् काव्यं श्रोतुकामाः सहस्रशः ॥
१४. ज त ल—नाम ।
१५. रा—सहिता चाभ्यगा० । ज—सहितमभ्यगा० ।
कै ब त ल—संहितावभ्यगा० । प्र—साहितातुभ्यगायता ।

शृण्वतां तु तदा काव्यमृषीणां हर्षसंभवः ॥५२॥

५५] सहसाऽभून्महाशब्दः साधु साध्विति शंसताम् । [४.१५

सुप्रीतमनसश्चैव मुनयो धर्मवत्सलाः ॥५३॥

५६] शशंसु भ्रातरौ तत्र गायन्तौ तौ कुशीलवौ । [४.१६

अहो भावानुगं काव्यमहो गीतमविस्वरम् ॥ ५४॥ [४.१७पू

५७] अहो भगवतां सम्यग् रामस्य चरितं महत् । [N

चिरंवृत्तमिव ह्येतत् प्रत्यक्षमिव दर्शितम् ॥५५॥ [४.१७उ

५८] संस्कृतं मधुरं चैव समाक्षरपदक्रमम् ।

प्रयोक्ताराविमौ चापि सम्यगस्य कुशीलवौ ॥५६॥ [N

५९] कुमारौ देवगर्भाभौ तरुणौ मधुरस्वरौ ।

अहो द्रव्यमहो स्वाद्यमहो गीतमविस्वरम् ॥५७॥ [N

---

१. प—तच्छृण्वतां ।

२. प्र—संसता ।

३. ब त—भ्रातरं ।

४. ज त ल प्र—तौ ।

५. भ—भावानुसंगेयमहो ।

६. प्र—गीतमहो स्वरम् । प—गीतं सुविस्तरं ।

७. ज त ल—नास्ति ।

८. रा—अतो ।

९. प्र प—भगवतः ।

१०. प्र प भ—चिरवृत्तमपि ।

११. प्र भ—दृश्यते ।

१२. रा ब—चास्य ।

१३. प्र—सम्यगत्र ।

१४. रा त—०रस्वनौ ।

१५. ब ल—श्राव्य० । रा त प्र भ—श्रव्य० । प—आपमहद ? ।

१६. प्र—काव्यमहो ।

१७. ज त ल—गीतं सुविस्तरं । प—गीतमविस्तरं ।

युक्तं च मधुरं चैव परया स्वरसम्पदा । [४.१८उ

६०] पदवृत्तसमायुक्तं तालतानसमन्वितम् ॥५८॥ [N

संरक्तं चापि रक्तं च परया स्वरसम्पदा । [४.१९उ

६१] एवं प्रशस्यमानौ तौ श्लाघ्यमानौ महर्षिभिः ॥५९॥

भूयो रक्ततरं साधु मधुरं चाप्यगायताम् । [४.१९

६२] ताभ्यां प्रीतो मुनिः कश्चित् पानीयकलशं ददौ ॥६०॥

कश्चिद् वनैफलं स्वादु वल्कलं कश्चिदीप्सितम् । [४.२०

---

१. ज त ल—रक्तं । प्र—व्यक्तं ।

२. प—सुरसंपदा ।

३. के—पदवृत्तं समायुक्तं । रा—पदव्रतसमायुक्तं ।
ज त ल प्र—पदसंधिसमायुक्तं ।

४. ज त ल—ताकभाव० प्र—तालमान० ।

५. रा—सुरसम्पदा । प्र—स्वादुसंपदा ।

६. ज त ल—नास्ति ।

७. ज—प्रशंस्यमानौ ।

८. ज ब प—तु ।

९. रा—श्लाघ्यमाणौ । प—गीयमानौ ।

१०. रा ब—रक्तांतरं । प्र—ऽप्यनन्तरं ।

११. ज ल—स्वादु । त—स्वाद्य ।

१२. प्र—प्रीतः कश्चिन्मुनिस्ताभ्यां ।

१३. प्र – वन्यफलं । प—वण्यफलं ।

१४. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—
अन्यः कृष्णाजिनमदात् यज्ञसूत्रं तथापरः ।
कश्चित् कमण्डलुं प्रादात् मौञ्जीमन्यो महामुनिः ॥
बृसीमन्यस्तदा प्रादात् कौपीनमपरो मुनिः ।
ताभ्यां ददौ तदा हृष्टः कुठारमपरो मुनिः ॥
काषायमपरं वस्त्रं चीरमन्यो ददौ मुनिः ।
जटाबन्धनमन्यस्तु काष्ठरज्जुं मुदान्वितः ॥
यज्ञभाण्डमृषिः कश्चित् काष्ठभारं तथापरः ।

६३] एवं पूर्वमिदं काव्यं[1] मुनिभिः[2] प्रतिपूजितम् ॥६१॥ [N
जीव[3]भूतं मनुष्याणां कवीनामुपजीवनम्[4] । [४.२६उ
६४] प्र[5]शस्यमानौ तावेतौ[6] कदाचिद् देव[7]रूपिणौ ॥६२॥
राजधानीषु[8] राज्ञां च समीपेष्वभ्यगायताम्[9] । [४.२८
६५] अथा[10]श्वमेधे रामो[11]ऽपि तावुपश्रुत्य[12] गायनौ ॥६३॥ [N
सत्कृत्यैवानयामास[13] पुरुषैराप्तकारिभिः ।[14]

औदुम्बरीवृषीमन्यः स्वस्ति केचित्तदावदन् ॥
आयुष्यमपरे प्राहुर्मुदा तत्र महर्षयः ।
ददुश्चैवं वरान् सर्वे मुनयः सत्यवादिनः ॥
आश्चर्यमिदमाख्यातं मुनिना संप्रकीर्तितम् ।
परं कवीनामाधारं समासं च यथाक्रमं ॥

१. रा—वाक्यं ।
२. प—ऋषिभिः ।
३. ज त ल प्र प भ—बीजभूतं ।
४. ज—कवीनामार्षमद्भुतं । त—कवीणामार्षमद्भुतं ।
ल—कवीनां मतमद्भुतम् ।
५. प—प्रशंस्यमानौ ।
६. रा ब तं भ—तावेव । ज ल प्र भ—तावेवं ।
७. कै—तद्विगीयताम् इति पुनरपरहस्तेन विन्यासः ।
वस्तुतस्तु तत्रापि देवरूपिणावित्येव मौलिकः पाठः कीटभुक्तोऽपि दृष्टिपथमवतरत्येव ।
८. रा—राजधानेषु ।
९. ज ल—० ष्वप्यगायतां । त—० ष्यपि गायतां ।
१०. प—अश्वमेधे ।
११. प्र—राज्ञोऽपि ।
१२. प्र—तावुमावुपगायकौ ।
१३. ज त ल—सत्कृतावानयामास । प्र—सत्कृत्यानाययामास ।
१४ प—अतः परमधिकः पाठः—
पूजयामास पूतात्मा सत्कारैस्तावथं कृतौ ।

६६] ताविदं[1] जगतुस्तत्र काव्यं रामप्रचोदितौ ॥६४॥ [N
कर्मान्तरेषु विप्राणां रामलक्ष्मणसन्निधौ ।
६७] शत्रुघ्नभरतादीनामन्येषां च महीक्षिताम् ॥६५॥ [N
वसिष्ठात्रिपुरोगानां[2] सन्निधौ ब्रह्मवादिनाम् । [N
६८] रामस्तत्रासने[3] शुभ्रे शुद्धास्तरणसंवृते[4] ॥६६॥ [४.३०पू
उपविश्य तु शुश्राव तदाऽऽत्मचरितं महत् ।
६९] आर्षं[5] रामायणं सार्धं भ्रातृभि र्भरतादिभिः[6] ॥६७॥
पृ७०] पौरजानपदैश्चैव वृतः शतसहस्रशः ।[7] [४.३०उ
दृष्ट्वाऽथ[8] रूपसम्पन्नौ[9] तावुभौ वीणिनौ ततः[10] ॥६८॥
७१] उवाच लक्ष्मणं रामः सर्वांश्चैव[11] सभासदः ।[12] [४.३१
श्रूयतामिदमाख्यानमेतयो[13] र्देववर्चसोः ।

---

१. प—तावुभौ ।
२. प्र—वशष्टत्रि० । प—वशिष्टात्रि० ।
३. त—०तत्राश्रमे । प्र—०तत्राशने ।
४. ज त—स्पर्ध्योस्तरणसंयुते ।
ल—स्मस्यास्तरणसंयुतं । प्र—स्पर्ध्यस्तर० ।
प—मृद्वास्तरणसं० ।
५. प—काम्यं ।
६. प—भरतास्माभिः ।
७. प्र—अतः परमधिकः पाठः—
ताम्रगानीयसदृशो[ै?] कुमारौ देवरूपिणौ ।
८. त प्र—दृष्ट्वा तु ।
९, प्र—विनीतौ । भ—भ्रातरौ ।
१०. ज त ल—गायनौ तदा । प्र-तावुभौ ततः ।
प—चीरवाससौ । वीणिनौ तदा ।
११. प—सर्वं चैव ।
१२. ज त ल—नास्ति ।
१३. ज त ल प्र प भ—०ख्यानमनोर्दे० ।

७२] विचित्रार्थपदं[1] सम्यग्[2]गायतो मधुरस्वरम्[3] ॥६९॥[4] [४.१२

इमौ हि बालौ नृपलक्षणान्वितौ[5]

कुशीलवावेव[6] तपोवनाश्रयौ[7] ।

७३] ममेतिवृत्तं किल गेयम्[8]अद्भुतं

महर्षिवाल्मीकिकृतं प्रगायतः[9] ॥७०॥ [४.१५

ततस्तु तौ राघवसंप्रचोदितौ[10]-

वगायतां काव्यमिदं यथाक्रमम् ।

स चापि रामः संहितैः[11] समाहितैर्[12]

७४] बभूव तत्रार्पितचेतनस्तदा ॥७१॥ [४.३६

इत्यार्षे[13] रामायणे[14] आदिकाण्डे काव्यसंक्षेपो[15]

नाम चतुर्थः सर्गः ॥ ४ ॥

---

१. ज—विचित्रार्थमिदं । त—विचित्रार्थं पदं ।

२. रा—॰गायंतोर्म॰ । त—॰गायंतौर्म॰ ।

३. ल—॰र्दधुरस्वयम् । प्र प—मधुरश्वरं ।

४. प्र—अतः परं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—

तन्त्रीलयवदत्यर्थविश्रुतार्थमगायतां ।

ह्लादयत् सर्वगात्राणि मनांसि हृदयानि च ॥

श्रोत्राश्रयसुखं ज्ञेयं तदुभौ जनसंसदि ।

५. रा ज त—नृपलक्ष्मणान्वितौ ।

६. ज त—कुशो लवश्चैव । ल प्र भ—कुशीलवौ चैव ।

७. प्र—महातपस्विनौ ।

८. रा—गीयमद्भु॰ । प्र—गीतमद्भु॰ ।

९. ज प्र—प्रगास्यतः । त ल—प्रगास्यताम् । भ—प्रगायतौ ।

१०. ज त ल—॰प्रचोदितौ प्रगाय॰ । रा—॰दितौ वगाय॰ ।

११. ज त ल—सहितः । प भ—सह तैः ।

१२. ज त ल—सभागतै॰ । प्र—समागतै॰ । प—सभासदै॰ ।

१३. के—नास्ति ।

१४. त—श्रीरामायणे बालकांडे । ज ल—॰णे बालकांडे ।

१५. प्र प—काव्योपसंक्षेपो । भ—कथासंक्षेपो ।

सागरान्ता मही येषामासीद्वीर्यार्जिता किल ।[1]

१] आमनोः[2] पुण्यकीर्तीनां राज्ञाममिततेजसाम्[3] ॥१॥[4]   [१

सगरः[5] पूर्वजो येषां सागरो येन खानितः ।

२] षष्टिः[6] पुत्रसहस्राणि यं यान्तं पृष्ठतोऽन्वयुः[7] ॥२॥   [२

इक्ष्वाकूणामिदं तेषां वंशे[8] कीर्तिविवर्धनम् ।

३] निबद्धं पुण्यकीर्तीनां रामायणमिति श्रुतम्[9] ॥३॥   [३

तदिदं[10] श्रूयतामार्षं[11] पुण्यं पापभयापहम् ।

४] धर्मकामार्थसंयुक्तं[12] श्रुतिस्मृत्युपबृंहितम् ॥४॥   [४

---

१. ज त ल प्र प ट—अतः पूर्वमधिकः पाठः—

ततस्तौ स्वरसंपन्नौ कुमारौ तत्र संसदि ।
अगायतां नवं काव्यं रामायणमिति स्मृतम् ॥

भ—पुस्तकस्य पश्चिमपार्श्वेऽपरहस्तेन विन्यासः ।

२. ज त ल ट—भाहानां । के रा ब—आत्मनः ।

३. प्र—०ज्ञामितिततते० ।

४. प—अतः परमाधिकः पाठः—

प्रजापतिमुपादाय नरेन्द्राणां यशस्विनां ।

५. रा त प्र—सागरः ।

६. त प्र प भ—षष्टिपुत्रस० ।

७. ज ट—पृष्ठतो ययुः ।

८. त—वंशं ।

९. ज त ल ट—स्मृतं ।

१०. ल—उदिदं ।

११. भ—श्रूयतामार्यं ।

१२. त ल प्र ट—धर्मार्थकामसंयुक्तं ।

कोसलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदो महान् ।
१] निविष्टः सरयूतीरे पशुधान्यसमृद्धिमान् ॥१॥ [५
अयोध्या नाम तत्रासीन्नगरी लोकविश्रुता ।
२] मनुना मानवेन्द्रेण यत्नेनै परिनिर्मिता ॥२॥ [६
आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी ।
३] श्रीमती त्रीणि विस्तीर्णा नानासंस्थानशोभिता ॥३॥ [७
सुविभक्तान्तरद्वारा सुविभक्तमहापथा ।
४] शोभिता राजमार्गेण जलसंसिक्तरेणुना ॥४॥ [८
नानावणिग्जनोपेता नानारत्नविभूषिता ।
५] महाशालाऽन्विता दुर्गा उद्यानप्रवरैर्युता ॥५॥ [९

---

१. प्र प भ—कोशलो ।
२. ज त ल प्र ट—०धनर्धिमान् ।
३. ज त ल प्र ट—पुरैव । प—पुरा ।
४. प—समभिनिर्मिता ।
५. प—पकं च [पंच च ?] ।
६. रा—त्वं च ।
७. ट—जोजनानि ।
८. ज त ल ट—चातिविस्तीर्णा ।
९. ज त ल ट—रत्नसंस्थानशो० । प्र—नवसंस्था० ।
१०. त—०न्तरधारा । प्र—०क्तान्तरपथा ।
११. प्र—सुविभक्तापरायणा ।
१२. प—राजमार्गेण महता विस्तीर्णेनोपशोभिते [ता ?] ।
१३. रा—मानावर्णवि० ।
१४. ज त ल प्र ट—महाशालावृता ।
१५. ज ल—उद्यानास्तरणान्वि० । त—उद्यानास्तोरणा० ।
ट—उद्यानास्तरणावृता । प—उद्यानप्रवरैर्वृता ।

दुर्गगम्भीरपरिखां नानाऽऽयुधसमन्वितां ।
६] कपाटतोरणयुतां उपेता धन्विभिः सदा ॥६॥ [१०
राजा दशरथो नाम महात्मा राष्ट्रवर्धनः ।
७] तां पुरीं पालयामास स्वपुरीं मघवानिव ॥७॥ [९
दृढद्वारप्रतोलीकां सुविभक्तान्तरापणाम् ।
८] नानायन्त्रायुधवतीं नानाशिल्पिगणैर्युताम् ॥८॥
पू९] शतघ्नीपरिखोपेतांमुच्छ्रितध्वजतोरणाम् । [११उ

---

१. ज त ल—अतिगम्भीरप० ट—अतिगंभीरपरिषा ।
प—दुर्गगंभीरपरिपा ।
२. त—नानायुद्धस०
३. के ज ल प्र ट—कवाटतोरण० । ज—कथातटोरणयथा ।
४. युपेता । ल—तमेता । ट—चोपेता ।
५. प—कपाटतोरणवती हर्म्यप्रासादसंकुला ।
६. ज त ल ट—धर्मात्मा ।
७. ल—स्वः पुरीं ।
८. त ल ट—सुविभक्ततरापणां । ज—सुविभक्ततरायणां ।
प्र प—सुविभक्तांतरायणां ।
९. ज त ल ट—०शिल्पिगणान्विताम् । प्र—शिल्पगुणान्विताम् ।
भ—शिल्पिगणायुताम् ।
१०. ज त ल—अतः परमधिकः पाठः—
हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलाम् ।
नानापार्थिवभृत्यैश्च वणिग्भिश्चोपशोभिताम् ॥
प्र—सूतमागधसंबाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम् ।
११. प्र प भ—शतघ्नीपरिघोपेतामु० ।
१२. प—अतः परमधिकः पाठः—
सूतमागधसंयुक्तब्रह्मघोषनिनादितां ।
प्र—वधूनाटकसंघैश्च संयुक्तां सर्वतः पुरीम् ।
हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलां ।
नानापार्थिवभृत्यैश्च वणिग्भिश्चोपशोभितां ॥

नानारत्नचयाकीर्णां धनधान्यसमन्विताम् ॥[1]९॥[2]

१०] देवताऽऽयतनैश्चैव[3] विमानैरिव शोभिताम्[4] ।[5]

सभोद्यानप्रपाभिश्च[6] रुचिराभिरलङ्कृताम् ॥१०॥ [N

११] सुविभक्तमहाहर्म्यां[7] नरनारीगणान्विताम्[8] ।

बृहच्छूरार्यपुरुषैराकीर्णाममरोपमैः[9] ॥[10][11]११॥ [N

भ—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वे पुनरपरहस्तेनेत्थं पाठविन्यासः—

हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुलां ।

नानापथिकभूतैश्च वणिग्भिः ········ शोभितां ।

निधानशतसंबाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।

१. रा—०न्यसमान्विता ।

२. प—अतः परमधिकः पाठः—

हस्त्यश्वरथसंपूर्णां नानायानसमाकुला ।

नानापार्थिवभृत्यैश्च वणिग्भिश्चोपशोभितां ।

निधानशतसंबाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।

३. ज त ल—नास्ति ।

४. प्र—विमाने [नै ?] रभिशो० ।

ज त ल ट—विमानैरुपशो० ।

५. ज त ल—अतः परमधिकः पाठः—

निधानशतसंबाधां सर्वैश्च विभवैर्युतां ।

अत्र श्लोके पूर्वार्धापरार्धपादविपर्यासः ।

६. रा ज त ल ट—सभोद्यानप्रभाभिश्च ।

प्र—महोद्यानप्र० । प—सभोद्यानाश्रियाभिश्च ।

७. ज त ल प्र ट—प्रविभक्तमहावेश्मां । भ—सुविभक्तम० ।

८. ट—नरनारीसमाकुलां ।

९. ज त भ—विद्वच्छूरार्यपु० । प्र प—विद्वद्भिरार्यपु० ।

१०. ज—संकीर्णा० ।

११. ट—नास्ति ।

प—अतः परमधिकः पाठः—

योधैरमिमरस्तुले [स्यै ?] राहवेष्वनियन्तृभिः ।

गुप्तां पुरुषसिंहैश्च सिंहैरिव गिरेर्गुहां ॥

१२] [1]मेरोहमिव रत्नानां प्रतिष्ठानमिव श्रियः ।
महाप्रासाद[2]शिखरैः शैलाग्रै[3]रिव शोभिताम् ॥१२॥ [N
१३] विमानचयसम्बाधामिन्द्रस्येवामरावतीम् ।[4] [१५
अष्टापदपदालेख्यै रम्यामालिखितामिव ॥१३॥ [N
१४] नानारत्नच[5]याच्छन्नां हृष्टपुष्टजनायुताम्[6] ।
अवि[7]च्छिन्नान्तरगृहां समभूमिनिवेशिताम् ॥[8] १४॥ [M
१५] मृदङ्गवेणुवीणानां रम्यैः शब्दै[9]र्विनादिताम् ।
नित्योत्सवसमाजाढ्यां नित्यहृष्टजनायु[10]ताम् ॥[11] १५॥ [N
१६] अक्षघोषस्वनवतीं धनुः स्वनविनादिताम्[12] ।
वरान्नपान[13]सलिलां शालितण्डुलभोजनाम् ॥१६॥ [N
१७] धूपमाल्यहविर्गन्धैर्हृद्यैश्चै[14]वाधिवासिताम् ।

१. ज त ल प्र प ट—आरोहमिव । भ—आदोहमिव ।
२. ज त ल प्र—महाप्रसाद० ।
३. ज त ल ट—शैलाग्रैरुपशो० । प—शृङ्गैश्चोपशो० ।
४. प—विमानमिव सिद्धानां तपसाधिगतं भुवि ।
५. ज त ल प्र प भ—नानारत्नचयैरछ० । व—०नमयाच्छन्नां ।
६. ज त ल प्र—जनैर्युतां ।
७. ज त ल—अविच्छिन्नान्तरगुहां ।
८. ट—नास्ति । कै—पुस्तकस्य पूर्वपार्श्वे पश्चादपरहस्तेन विन्यासः ।
९. ज त प्र—शब्दैर्निनादितां ।
१०. त ल—नित्यपुष्टजनैर्युतां । प्र—नित्यहृष्टजनैर्यु० ।
११. ज—नास्ति ।
१२. ज त ल ट—धनुः शब्दनिनादितां । रा—धनुः स्वननिवादिनाम् ।
१३. ज त ल ट—वरान्नपानकलिलां ।
प्र—०पानकलिला । प—नानान्नपानकलिला ।
१४. ज त ल प्र प ट भ—हृद्यैश्चाप्यधिवासितां ।

लोकपालोपमैः शूरैः सर्वशास्त्रार्थपारगैः[1] ॥१७॥ [N

१८] गुप्तां योधशतैश्चापि नागै भोगवतीमिव[2] ।

स्वयं चैवेन्द्रकल्पेन[3] पुरीं[4] देवपुरोपमाम्[5] ॥१८॥ [N

१९] गुप्तामिक्ष्वाकुनाथेन[6] राज्ञा दशरथेन च[7] ।

वराग्निर्वद्भि[8] गुणवद्भिरन्विताम्[9]

द्विजोत्तमैर्वेदषडङ्गपारगैः[10] ।

सहस्रशैः[11] सत्यतपोदमान्वितै-[12]

२०] महर्षिकल्पैर्यतिभिर्यतात्मभिः[13] ॥१९॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे अयोध्यावर्णनं
नाम पंचमः सर्गः ॥५॥

---

१. ज त ल ट—सर्वशास्त्रविशारदैः ।
   प—सर्व्वशस्त्रास्त्रपारगैः ।

२. ज त ल प—॰भोगवतीं यथा ।

३. कै—चैवेन्द्रप्रभेण ।

४. ज ल प्र ट—पुरी ।

५. ज त ल प्र ट—देवपुरोपमा ।

६. ज ल प्र ट—सुगुप्तेक्ष्वाकु॰ । त—स्वगुप्तेक्ष्वा॰ ।

७. ज त ल प्र ट—सा ।

८. ज त ल प्र प ट—वराग्निमद्भि॰ ।

९. ज त ल प्र ट—॰र्गुणवद्भिरन्विता ।

१०. ज ल ट—॰वेदतदङ्गपा॰ ।
   ल—॰वेदतरंग॰ (वेदाङ्ग॰ इत्यपरहस्तेन) ।

११. ज त ल ट—सहस्रशः । प्र प भ—सहस्रदैः ।

१२. ज ब त ल प्र प ट भ—तपोदमान्वितः ।

१३. ज त ल ट—॰महात्मभिः ।

पुर्यां तस्यामयोध्यायां वेदवेदाङ्गपारगः ।
१] दीर्घदर्शी महातेजाः पौरजानपदप्रियः ॥१॥ [१
इक्ष्वाकूणामतिरथो यज्वा धर्मभृतां वरः ।
२] महर्षिकल्पो राजर्षिस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥२॥ [२
बलवान् विजितामित्रो नीतिमान् विजितेन्द्रियः ।
३] धनधान्यैश्च विविधैः शक्रवैश्रवणोपमः ॥३॥ [३
आदिराजो मनुरिव प्रजानां परिरक्षिता ।
४] राजा दशरथो नाम बभूव त्रिदशोपमः ॥४॥ [४
तेन सत्याभिसन्धेन त्रिवर्गमनुपश्यता ।
५] पालिताऽभूत् पुरी श्रेष्ठा शक्रेणेवामरावती ॥५॥ [५
हृष्टपुष्टजने तस्मिन् पुरे नैवाबहुश्रुतः ।

१. प्र—तस्यां । ट—पुण्यां ।
२. प्र—पूर्यामयोध्यायां ।
३. प्र—सत्यवागृषि ।
४. रा—नियतेन्द्रियः ।
५. ज त ल—धनधान्यादिविभवैः ।
६. त—०श्चशक्रवैश्रव० । ट—०रिन्द्रवैश्रव० ।
७. प्र—मुनिरिव ।
८. ब—त्रिदिवोपमः ।
९. प—पालिता सा ।
१०. ज त प्र ट—साथ । ल—नाथ ।
११. ब—शक्रस्येवमरा० । त—शक्रेणैवा० ।

६] कश्चिदासीन् नरो नाऽपि कश्चिदन्यायवृत्तिमान् ॥२६॥ [६
न चाल्पविभवैः कश्चिदासीत्तत्र जनैः पुरे ।
७] न चाप्यासीदसन्तुष्टः कुटुम्बी तत्र कश्चन ॥७॥ [७
न कदर्यः कश्चिदासीन् नानृती न शठोऽपि वा ।
८] न मानी न च संरंभी न नृशंसो न कुत्सितः ॥८॥ [८
नामहात्मा न पिशुनो न परस्वोपजीवकः ।
९] न चावर्षसहस्रायुर्नदीनो नाबहुश्रुतः ॥९॥ [N
नराः स्वदारनिरता नार्यश्चासन् पतिव्रताः ।
१०] सुव्रता धृतिमन्तश्च नरा आसंस्तथा स्त्रियः ॥१०॥ [९
नाकुण्डली नामुकुटी नास्रग्वी नाविलेपनी ।

---

१. ज—चापि ।

२. त—नास्ति ।

३. रा प्र प भ—चाल्पनिचयः ।

४. ज ल ट—पुरे नरः । त—पुरे नवः ।

५. रा—नानृते । ल—नाव्रती ।

६. ट—नृशंसी ।

७. ज त प्र ट—कश्यनः । ल—कस्सनः ।

८. प्र—नाप्युशनो ।

९. ब—परस्वोपजीविनः । ल—परं चोपजीवकः ।

प ट—परस्वोपजीविकाः ।

१०. प्र—०र्नामर्षी । कै प भ—०र्नामषी ।

११. कै प भ—नाबहुश्रुतः ।

१२. रा—नास्ति ।

१३. प्र भ—धृतिमंतश्च ।

१४. प्र प—नराश्चासं० ।

१५. ज व क ट—नामाल्यो ।

११] तत्र[1] दुष्प्रकृतिर्नासीद्दरिद्रो वा पुरोत्तमे ॥[2]११॥ [१०
नामृष्टभूषणधरो[3] न चाप्यासीदनिष्कधृक्[4] ।
१२] नाहस्ताभरणोपेतो नानृती[5] न च नास्तिकः ॥१२॥ [११
नानाहिताग्निर्नायज्वा विप्रो नाप्यसहस्रदः ।
१३] कश्चिन्नासीदयोध्यायां[6] सद्वृत्तरहितो जनः[7] ॥१३॥[8] [१२
स्वकर्मनिरताश्चासन्[9] सर्वे तत्र द्विजातयः ।
१४] यज्ञाध्ययननिष्ठाश्च[10] विरताश्च प्रतिग्रहात् ॥१४॥[8] [१३
न नास्तिको नास्तिकवाङ्[11] न कश्चित् क्रोधनो नरः ।
१५] न सूचको[12] न[13] चाशक्तो नाशुचिस्तत्र चाप्यभूत्[13] ॥१५॥[8][१४
नामृष्टभुङ्[14] न चादाता नास्रग्गन्धो[15] न चानृजुः[16] ।[17]

१. ज त ट—रक्तवस्त्रावृतो नासी० ।
ल—रक्तवस्त्रावृतो नाभू० ।
प्र—नाचारूआवृतो नासी० ।
२. प—न कश्चित्तत्र पुरुषः कश्चिद् दरिद्रपुरोत्तमे ।
३. ट—०भूषणधनो ।
४. ब रा—०निष्कधृत् । ज त ल ट—नैवाप्यासीच्च निष्टरः ।
५. ज त ल प्र ट—नानृजुर्न ।
६. रा प भ—कश्चिदासीदयोध्यायां ।
७. के ब—अश्रीमान् न महाशनः ।
८. ज त ल ट—नास्ति ।
९. रा—सुकर्मनिरतश्चासन् ।
१०. प भ—०यननित्याश्च ।
११. प्र—नानृतवाक् । प भ—नानृतवान् । भ—०तवाङ् ।
१२. प भ—न सूयको ।
१३. ब—नास्ति । के—पुस्तके ऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
१४. ब—चाम्रष्टभुक् ? ।
१५. प्र प—नासुगन्धो० ।
१६. प—नचानृजुः ।
१७. के—अतः परमधिकः पाठः—
न च वर्षसहस्रायुर्न दीनो नाबहुप्रजः । ज त ल ट—नास्ति ।

१६] न दुःखी पुरुषः कश्चिन्न चासीदनलङ्कृतः ॥१६॥ [N
चारुचातुर्यमाधुर्यशीलाचारगुणान्वितः ।
१७] नार्यश्चासन्नयोध्यायां मृष्टाभरणभूषिताः ॥१७॥ [N
नानात्मवान् न च क्रूरो न विरूपो न चालसः ।
१८] कश्चिदासीदयोध्यायां नाश्रीमान् नामहात्मवान् ॥१८॥ [N
न दीनो नापि चोद्विग्नो नातुरो न भयाकुलः । [१५उ
१९] द्रष्टुं शक्यो ह्ययोध्यायां नापि राजन्यभक्तिमान् ॥१९॥ [१६उ
वर्णश्रेष्ठान् पूजयन्तः पितॄन् देवातिथींस्तथा । [N
२०] आसन् दीर्घायुषस्तत्र नराः सत्यपरायणाः ॥२०॥ [१८
ब्रह्म पर्यचरत् क्षत्रं वैश्याः क्षत्रमनुव्रताः ।
N] शूद्रांश्चैवापि वर्णांस्त्रीन् शुश्रूषन्तोऽनसूयवः ॥२१॥ [१९
आसीत् क्षत्रं ब्रह्ममुखं विट्शूद्रं राजभक्तिमत् ।
२१] न योनिसङ्करश्चापि तत्र नाचारसंकरः ॥२२॥ [N

१. ज त ल प्र ट भ—रूपचातुर्य० ।
२. रा प्र भ—मृष्टाभरणवाससः । प—मृषाभरणवाससः ।
३. ज त प ट—वाक्शिशः । ल—वाशिलः ।
४. ज त ल ट—न महाशनः ।
५. ज—न करो । त ल—नाचरो ।
६. ज प्र प भ—भयातुरः ।
७. ल—शक्तो ।
८. ज त ल प्र ट—वर्णज्येष्ठान् ।
९. रा—पूरयन्तः ।
१०. प्र प ट—पितृदेवातिथींस्तथा । भ—देवातिथीनपि ।
११. रा—ब्रह्मचर्यचरत् । प—ब्रह्मचर्यचर० ।
१२. ब—चर्यं वैश्यस्तथैव च । हृस्वपरहस्तेन ।
१३. ज त ल प्र ट—नास्ति ।
१४. ल—चाननसंकरः ।
१५. प—श्लोके पूर्वापरार्द्धव्यत्ययः ।

एवमिक्ष्वाकुनाथेन पालिता साऽभवत् पुरी ।
२२] यथा पुरस्तान्मनुना मानवेन्द्रेण भूरियम् ॥ २३॥[1] [२०
योधानामग्निवर्णानां[2] संयुगेष्वनिवर्तिनाम्[3] ।
२३] गुप्ता पुरी सहस्रैः सा सिंहैरिव गिरेर्गुहा ॥२४॥ [२१
पू२४] कांभोजदेशजैश्चापि[4] हयैर्हरिहयोपमैः[5] ॥२५॥[6] [२२पू
विन्ध्यपर्वतजैश्चापि[7] गजैर्हैमवतैस्तथा[8] ।
२५] सत्त्ववीरगुणोपेतैः[9] शूरैरव्यालचेष्टितैः[10] ॥[11][12]२६॥ [२३
पू२६] पैराजनकुलोद्भूतै भद्रमन्द्रमृगौन्वयैः[13] ।[14]

---

१. प—श्लोके पूर्वापरार्धव्यत्ययः ।
२. ज त ल प्र प भ—॰मग्निकल्पानां । ट—॰कल्पानां ।
३. प्र—॰ष्वनुवर्तिनां । त ॰षु निवर्तिनां ।
४. प्र प ट—कांबोजदे॰ । भ—कबोजदे॰ ।
  ज—॰जदेशजैरिव । प त ल प्र ट—॰जैश्चैव ।
५. प्र—हयैर्वानायुजस्तथा । प—हयैर्वानायुजैस्तथा ।
  (अत्र वाणजैरिति संभाव्यते)
६. प्र प—अतः परमधिकः बहुसम्मतः पाठः—
  नदीजैर्बाह्लिजैश्चैव कीर्णा हरिहयोपमैः ।
७. प्र—॰तजैश्चैव ।
८. प्र—नागैर्हैमजैस्तथा । प भ—नागैर्हैम॰ ।
९. प्र—सत्त्ववीर्यगु॰ ।
१०. प—शूरैरचलसन्निभैः ।
११. ज त ल ट—नास्ति ।
१२. रा प—कुलोपेतै॰ ।
१३. कै—'भद्रमन्द्रमृगाम्वयै' रित्यपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
  ब—'॰भद्रमंद्रमृगाम्वयै' रित्यपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
१४. ज त ल प ट—नास्ति ।
  प्र—अतः परमधिकः बहुवाचनीयः पाठः—
  ऐरावतकुलीनैश्च वामनैरपि च द्विपैः [पैः?] ।
  भद्रैर्मन्द्रैर्मृगैर्मत्तैर्महापद्मगमहैश्च संवृता ॥

उ२७] सा पुरी बहुभिः कीर्णा तथाऽऽसीद्गन्धहस्तिभिः[1] ॥२७॥ [२४
सा[2] योजनद्वयं भूमेः[3] सत्यनामा[3] प्रकाशते[4] ।
२८] सा पुरी यत्र राजाऽऽसीद्[5]राजा दशरथस्तथा[6] ॥[7]२८॥ [२६
तां सत्पथां[8] वै[9] दृढतोरणार्गलां
महद्भि[10] र्वेश्मशतैरलङ्कृताम् ।
पुरीं[11] सभोद्यानवतीमनुत्तमां
२९] स[12] कोशलेन्द्रो नृपति र्व्यपालयत् ॥२९॥ [२८

इत्यार्षे रामायणे[12] दशरथसौराज्यवर्णनं
नाम [षष्ठः] सर्गः ॥ ६ ॥

---

१. ब—रथासी० । प भ—तदासी० प्र—तदासीद्द्वंद्वहस्तिभिः
२. ज त प्र ट—मयोजनाद्वा भूयो वा ।
ल—आयोजना वा भूयो वा ।
प—आयोजनत्वाद् भूमेः सा ।
भ—सा योजने द्वे तु भूमेः ।
३. ज ब त ल ट—सातिधामा । प्र—सत्यधामा ।
४. अ ब त ल ट—व्यकाशत । ट—व्यकाशयत् । प—प्रकाश्यते ।
५. प्र भ—राजासीत्पुरा ।
६. कै—०'थो महान्' इत्यपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
रा प्र—दशरथोनघः । भ—०थो नृपः ।
७. प—यस्यां दशरथो राजा वस्तोष्पतिरिवावसत् ।
अ त ल ट—नास्ति ।
८. रा—सत्यवादी ।—सत्यधाम्नी । प भ—सत्यनाम्नीं ।
९. ज त ल ट—दृढतोरणाकुलां ।
त—दृढतोरणां कुलां । प—दृढतोरणयोजनार्गलां ।
१०. ट—महर्षिभि० । प—गृहैर्विचित्रैरुपशोभितान्तरा ।
११. ल—पुरीं सभोद्यानव० ।
प—प्रियसामोद्यानव० ।
१२. प्र भ—कोशलेन्द्रो नृ० ज त ल ट—०व्यपाल० ।
प—शशास वै शक्रसमो नराधिपः ।

मन्त्रिणावृत्विजौ चैव तस्यास्तामृषिसत्तमौ ।[2]
१] वसिष्ठो[3] वामदेवश्च वेदवेदाङ्गपारगौ ॥१॥[4] [४
अष्टावन्ये बभूवुश्च तस्यामात्या महीपतेः ।[5]
२] शुचयश्चानुरक्ताश्च[6] नित्यं प्रियहिते[7] रताः ॥२॥[8] [२
धृष्टिर्जयन्तो[9] विजयः सिद्धार्थोऽर्थार्थसाधकः[10] ।

१. प्र—अतः पूर्वं दाक्षिणात्यसम्मतोऽधिकः पाठः—
तस्यामात्या गुणैरासन्निक्ष्वाकोः सुमहात्मन[:]
मन्त्रज्ञाश्चेङ्गितज्ञाश्च नित्यं प्रियहिते रता[:]
अष्टौ बभूवुर्वीरस्य तस्यामात्या यशस्विनः ।
शुचयश्चानुरक्ताश्च राजकार्येषु नित्यशः ।
धृष्टिर्जयन्तो विजयः सिद्धार्थोऽस्यर्थसाधकः ।
अशोको मन्त्रपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमो महान् ।
२. प्र—ऋत्व [त्वि ?] जौ द्वावभिमतौ तस्यास्तामृषिसत्तमौ ।
(अयं हि पाठः दाक्षिणात्यसम्मतः)
३. प्र प—वशिष्ठो ।
४. प्र—मन्त्रिणस्च तथापरे । दाक्षिणात्यसम्मतः पाठः ।
५. प्र—अतः परमधिकः दाक्षिणात्यसम्मतः पाठः—
सुयज्ञोऽप्यथ जाबालिः काश्यपोऽप्यथ गौतमः ।
मार्कण्डेयस्तु दीर्घायुस्तथा कात्यायनो द्विज [:] ॥
एतैर्ब्रह्मर्षिभिर्नित्यमृत्विजस्तस्य पौर्वकाः ।
६. प भ—शुचयस्त्वनुरक्ताश्च ।
७. प—सत्यप्रिय० ।
८. प्र—नास्ति ।
९. प—धृष्टिर्ज० । ज त ट—धृष्टिर्ज० ।
१०. प—०थोऽप्यर्थ० ।

३] अशोको धर्मपालश्च सुमन्त्रश्चाष्टमोऽभवत् ॥३॥[1] [३
ह्रीमन्तो विनयोपेता नीतिज्ञा विजितेन्द्रियाः । [६पू
४] मतिमन्तः सावहितो राजनिर्देशकारिणः ॥४॥[2,3]
तेजः क्षमा-वयः-प्राप्ताः स्मितपूर्वाभिभाषिणः ।[4,5] [७
५] अलुब्धा धृतिमन्तश्च सत्यधर्मपरायणाः ॥५॥ [N
नैषामविदितं किञ्चित्स्वेषु चैवं परेषु च ।[6]
६] चिकीर्षितं भवेद्राज्ञो मित्रोदासीनविद्विषाम् ॥६॥[7] [८
धर्माचारविवेकज्ञाः सर्वत्र समदर्शिनः । [N
७] कोशसङ्ग्रहणे युक्तास्तथा बलपरिग्रहे ॥७॥ [११पू
पुत्रेऽपि च प्राप्तदोषे धर्मतो दण्डपातिनः ।[8] [१०उ
८] अद्रोग्धारश्च धर्मेण शत्रोरप्यकृतागसः ॥८॥[9] [११उ
प्रागतज्ञानविज्ञाना पितृपैतामहोचिताः ।[10,11]
९] रक्षितारश्च वर्णानां नित्यं विषयवासिनाम् ॥९॥ [१२

---

१. प—सुमंत्रो मन्त्रकोविदः । ट—सुमित्रश्चाष्टमो० ।
२. त ल—०मन्तस्त्ववहिता ।
ज प्र ट—०मन्तः स्ववहिता० ।
भ—०मन्तः सुविहिता० ।
३. प—अयं श्लोकः १३ श्लोकात्परं विज्ञेयः ।
४. ट—तेजोवयः कृपाप्राप्ताः ।
५. त—०भिभाषणः । प्र—०पूर्वाविभाषिणः ।
६. ट—चैवापरेषु ।
७, ज त ल प्र प ट भ—कच्चिद्राज्ञो ।
८. त—दंडतो धर्मपातिनः ।
९. अद्रोग्धारः स्वधर्मेण ।
१०. ज त ल—प्रागतानागतज्ञामाः ।
प्र प भ—आगतज्ञा० । ट—प्रागतानानत० ।
११. प—०तामहोहिताः । ट—०तामहोदिताः ।

कोशसङ्ग्रहणे युक्ता बलस्यस्याविहिंसकाः ।

१०] अतीक्ष्णचण्डा नेतारः परार्थबलपौरुषाः ॥१०॥ [११

परस्परेणाविरुद्धाः प्रीतिमन्तः प्रियंवदाः ।

११] परापवादविरता गुणाढ्या नच गर्विताः ॥११॥ [N

आर्यवेषाः सुमनसो नच सन्दिग्धनिश्चयाः ।

१२] नरेन्द्रवचनासक्ताश्चेतसा तत्परायणाः ॥१२॥ [N

स्वगुणेषु परिख्याता नामरूपगुणान्वितैः ।

---

१. प्र—कोशसंरक्षणे ।

२. प्र—०स्यारहिंसकाः । प—स्यापि हिं० । भ—०स्याविहिं० ।

३. ज ट—अतीक्ष्णदंडा नेतारः ।

त ल प्र—अतीक्ष्णदंडनेतारः । ब—अतीक्ष्णदंडनेतारः ।

४. ज ल ट—०बलपौरुषम् । प—०स्मा बलपौरुषे ।

भ—परात्मबलपौरुष ।

५. त—परापवादविरुद्धाः ।

६. ज त ल ट—पुण्याख्या ।

७. ज त ल ट—आर्यवेशाः ।

८. ज त ट—सुवचसो । ल—सत्यवाचो ।

९. ज त ल प्र भ—नरेन्द्रवचनासक्तचेतसः ।

ट—नरेन्द्रवचनासक्तमानसः ।

१०. ज त ल ट—तत्पराक्रमाः ।

११. प—नास्ति ।

१२. दा ज ल प—स्वगुणेषु परि० । त—स्वगुणेष्वपरि० ।

प्र—स्वगुणेष्वपि विख्याता ।

ट—स्वगुणेषूपविख्याता ।

१३. ज त ल ट—नामरूपगुणान्विताः ।

प्र—नास्ति ।

१३] परराज्येऽपि विख्याता नयबुद्धिगुणांशुभिः ॥१३॥ [N

आसंस्तदाऽनुसंरक्ताः सर्वे वर्णाः स्वकर्मभिः ।

१४] नासीत् पुरे वा राष्ट्रे वा तस्करो नाऽशुचिर्नरः ॥१४॥[१४उ

न दुष्टः कश्चिदप्यासीत् परदाराभिमर्षकः ।

१५] कृत्स्नमासीदनुद्विग्नं राष्ट्रं तैः परिपालितम् ॥१५॥ [१६

प्रशस्तमेवमासीद्व तद्राष्ट्रं पुरवनानि च । [N

१६] अमात्यैरीदृशैस्तैस्तु राजा दशरथोऽन्वितः ॥१६॥ [१९उ

धर्मतः पालयामास पृथिवीमनुरञ्जयन् ।

अवेक्षमाणश्चारेण महीं सूर्य इवांशुभिः ॥१७॥ [२०

१७] नाध्यगच्छेत् क्वचित् कश्चिदैक्ष्वाकः शत्रुमात्मनः ॥१८॥[२२पु

१. ज त ल ट--परराष्ट्रेषु ।

प्र—नास्ति ।

२. ज त—नयबुद्धिगुणाः शुभाः । ल—नयबुद्धिगणा शुः ।

ट—नयबुद्धिगुणा शुभाः । भ—नामबुद्धिगु० ।

३. त ल—आसंस्तदनुसं० । प्र—आसंस्तत्र गृहीतास्ते ।

४. ज त—सुकर्मसु । ल प ट--स्वकर्मसु ।

५. रा—नाशुचिर्नराः । प्र प—नाशुचिर्नरः । भ ट—वाशुचिर्नरः ।

ट—वाशुचि० ।

६. भ--सर्वमासीदनु० ।

७. त—तं ।

८. प्र—प्रशस्तं सर्वमेवासीद्राष्ट्रे परवनानि च ।

प—प्रसस्तं सर्वमेवासीद्राष्ट्रेषु नगरेषु च ।

९. ज त ल ट—नास्ति ।

१०. के रा ज भ—अवेक्षमाण० ।

११. रा—नाभ्यगच्छत् । प्र—नाभिगच्छेत् ।

१२. रा प्र—किञ्चिदिक्ष्वाकुः । ब—कश्चिदैक्ष्वाकः ।

प--तुल्यं विशिष्टं । भ—कंचिदिक्ष्वाकुः ।

ट—कंचिदिक्ष्वाकुः ।

तैर्मन्त्रिभि[1]र्मंत्रहिते निविष्टैर्
विद्वद्भिराप्तैः कुशलैः समर्थैः[2] ।
स पार्थिवो दीप्तिमवाप युक्तस्[3]
१८] तेजोमयैर्गोभिरिवाम्बरेऽर्कः[4] ॥१९॥ [२४

इत्यार्षे रामायणे आदिकाण्डे[5] अमात्यवर्णनं
नाम सप्तमः सर्गः ॥७॥

१. ज त ल प ट—०र्मंत्रहिते ।
२. प्र—समस्तै [:]
३. कै—युक्तैस् ।
४. ज त ल ट—तेजोमयैरर्क इवांशुसंघैः ।
५. ज त ल प्र॰—बालकांडे ।

तस्य धर्मप्रधानस्य धर्मज्ञस्य महात्मनः ।
१] सुतार्थे तप्यमानस्य नाभूद्वंशकरः सुतः ॥१॥ [१
तस्य चिन्तयतो बुद्धिरुत्पन्नेयं महामतेः ।
२] सुतार्थं वाजिमेधेन किमर्थं न यजाम्यहम् ॥२॥ [२
सुनिश्चितां मतिं कृत्वा यष्टव्ये वसुधाधिपः ।
३] मन्त्रिभिः सह संमंत्र्य तैः स्वामिहितकारिभिः ॥३॥ [३
तत्राब्रवीदिदं राजा सुमन्त्रं मन्त्रिसत्तमम् ।
४] शीघ्रमानय सर्वांस्त्वं वसिष्ठप्रमुखान् गुरून् ॥४॥ [४
एवमुक्तो नृपतिना सुमन्त्रो वाक्यमब्रवीत् ।
५] नरेन्द्र श्रूयतां तावत्-पुराणे यन्मया श्रुतम् ॥५॥ [६.१
सनत्कुमारो भगवान् पुरा कथितवान् कथाम् ।
६] भविष्यं विदुषां मध्ये तव पुत्रसमुद्भवम् ॥६॥ [६.२

---

१. रा ज—मासीद्वंशकरः ।

२. ट—तस्य धर्मप्रधानस्य माभूद् वंशकरः सुतः ।

३. प—०त्पन्नैवं महात्मनः ।

४. प—स्वामिनो हितकारिभिः ।

५. के—भर्तृस्त्वां ।

६. ल प ट—द्विजान् ।

७. कै ब—सुमन्त्री ।

८. त ल ट—यथावत् प्रोक्तवान् पुरा ।

९. ब—भविष्ये ।

अस्तीह कश्यपसुतो विभाण्डकेे इति श्रुतः ।
७] ऋष्यशृङ्ग इति ख्यातस्तस्य पुत्रो भविष्यति ॥७॥ [९.३
स वने नित्यसंवृद्धो मुनिपुत्रो वनेचरः ।
८] नान्यं प्रज्ञास्यते कश्चिन्मार्नवं पितृवर्जितम् ॥८॥ [९.४
तस्य नूनं ब्रह्मचर्यं भविष्यति महात्मनः ।
९] लोकेषु प्रथितं चोग्रं तपस्तस्य भविष्यति ॥९॥ [९.५
तपोरतस्य तस्यैवं कालः समभिवर्त्स्यति ।
१०] अग्निं शुश्रूषमाणस्य पितरं च यशस्विनंः ॥१०॥ [९.६
एतस्मिन्नेव काले तु लोमपादः प्रतापवान् ।
११] अङ्गेषु प्रथितो राजा भविष्यति महाबलः ॥११॥ [९.७
तस्यं व्यतिक्रमभवा भविष्यत्यतिदारुणा ।
१२] अनावृष्टिर्जनपदे क्षयायें बहुवार्षिकी ॥१२॥ [९.८

१. प—विभाण्डकमिति ।
२. त ल ट—आतु संवृद्धो ।
३. रा ज व भ—नान्यत् ।
४. ट—किञ्चिन्मानवं ।
५. ल—तस्याद्भुतं । ट—तस्याप्यद्भुतं ।
६. भ—चापि ।
७. ल ट—तस्यैव ।
८. ज ल—समतिवर्त्स्यति । त—सम्प्रतिवर्त्स्यति ।
ट—समतिवर्त्स्यंति । भ—समाभिवर्तते ।
९. ज भ—यशस्विनं । त ट ल—तपस्विनः ।
प—तपस्विनं ।
१०. ल—रोमपादः (?) ।
११. प—तस्याप्यतिक्रमभवा ।
१२. कै व—क्षपा च ।

अनावृष्ट्या तया राजा तदा संपरिकर्षितः ।
१३] वक्ष्यंति ज्ञानिनो विमाननावृष्टिमतिक्रियाम् ॥१३॥ [९.९
भवन्तः श्रुतिदृष्टार्थो लोकवृत्तान्तवेदिनः ।
१४] ममाज्ञां दातुमर्हन्ति यथावत्प्रशमेदियम् ॥१४॥ [९.१०
ते तमाज्ञापयिष्यन्ति श्रुतवेदान्तवेदिनः ।
१५] विभाण्डकसुतं राजन् सर्वोपायैस्त्वमानय ॥१५॥ [९.११
आनाय्य च महाराजं ऋष्यशृङ्गमृषेः सुतम् ।
१६] प्रयच्छास्मै सुतां शान्तां विधिना सुसमाहितः ॥१६॥ [९.१२
तेषामेतद्वचः श्रुत्वा स राजा चिन्तयिष्यति ।
१७] येनोपायेन वै शक्य इहानेतुमिति प्रभुः ॥१७॥ [९.१३
स निश्चयं यदा राजा स्वयं नाधिगमिष्यति ।
१८] तदाऽमात्यान् समाहूय प्रतिवक्ष्यति निश्चयम् ॥१८॥ [९.१४
पुरोहितं जनांश्चान्यान्मन्त्रनिश्चयकोविदान् ।[12]

---

१. रा—तदा स परिकल्पितः। ज प—तदा स परिक० ।
ल ट—स तदा परिक० । म—तथा स परि० ।
२. ज ल ट—प्रक्ष्यति । त—प्रकृति० । प—प्रवृत्ति० ।
३. श्रुतिदृष्टास्ते । भ—श्रुतिसम्पन्ना ।
४. ङ—लोकवृत्तान्तवेदिनः ।
५. प—ब्र[ा?]ह्मणा ब्रह्मवादिनः ।
६. के ज ब—महाराजन् । त ल ट—महातेजा ।
प—महाराजा ।
७. प—तेषां तद्वचनं ।
८. प ट भ—केनोपायेन । के—शोधनरूपेण यकारस्थाने ककारः कृतः ।
९. ट भ—शक्यमिहानेतुमिति ।
१०. ब प भ—सदा ।
११. ब—पुरोहितां ।
१२. ट—पुरोहितानां चान्यानां मन्त्रनिश्चयकोविदान् (च?)

१९] ते चापि पृष्टा नैवास्य प्रतिपत्स्यन्ति निश्चयम् ॥१९॥[1] [N
पुरोहितममात्यांश्च प्रेषयामास[2] यत्नतः ।[3]
२०] आनयध्वं महाभागमृष्य[4]शृङ्गं सुसत्कृतम् ॥२०॥[5] [N
ते तु[6] राज्ञो वचः श्रुत्वा व्यथिता विक्लवाननाः ।
२१] न गच्छेम ऋषेर्भीता अनुनेष्यन्ति ते नृपम् ॥२१॥ [९.१५
वक्ष्यन्ति[7] चिन्तयित्वा ते तस्योपायान् बहूंस्ततः[8] ।
२२] वयं तमानयिष्यामो न च दोषो भविष्यति ॥२२॥[9] [९.१६
वेश्याभि[10]र्मुनिवेषाभिरानेष्यामं ऋषेः सुतम् ।
२३] भोजयित्वो[11]ऽभ्युपायेन स्वां पुरीं पितुराश्रमात् ॥२३॥ [N
भविष्यति ततो वृष्टि[12]स्तस्य राज्ञो[13] महात्मनः ।
२४] तस्याभ्यागमनादेव ऋषिपुत्रस्य[14] धीमतः ॥२४॥ [N

---

१. प ट—अतः परमधिकः पाठः—

यदा तदा स्वयं राजा मन्त्रिणास्तत्र वक्ष्यति ।

२. प—प्रेषयिष्यति ।

३. ट—नास्ति ।

४. ब—॰गमृषिशृङ्गं ।

५. ट—आनयध्वं वनात्तस्मादृष्य शृङ्गमृषेः सुतम् ।

६. ट—च ।

७. इति वक्ष्यन्ति ।

८. ट—बहूंस्तथा ।

९. भ—पश्चिमपार्श्वेऽतः परमधिकः पाठः—

इति तेषां वचः श्रुत्वा भूयः स पृथिवीपतिः ।

तृतीयेऽहनि निश्चित्य मन्त्रिभिर्मन्त्रनिश्चयम् ॥

१०. प—वेश्याभिर्मुनिवेष्याभिरानयिष्यन्ति ।

११. प ट भ—लोभयित्वाभ्युपायेन ।

१२. प—वृष्टी राष्ट्रे तस्य ।

१३. ट—वर्षिष्यति ततो देवस्तस्य राष्ट्रे महीपतेः ।

१४. रा ज ल प भ—मुनिपुत्रस्य ।

स राजा विधिवत् कन्यां[शान्तां]तस्मै प्रदास्यति ।
२६] स्वकां दुहितरं भार्यां रूपौदार्यगुणान्विताम् ॥२५॥ [N
एवं स तस्यै जामाता भविष्यति महायशाः ।
२७] लोमपादस्य राजर्षेर्ऋष्यशृङ्गः प्रतापवान् ॥२६॥ [N
राज्ञो दशरथस्यापि स पुत्रानभिकांक्षितान् ।
२८] विधास्यति महायज्ञे हविर्हुत्वा हुताशने ॥२७॥ [N
सनत्कुमाराद्वचनमिति वै[10] संश्रुतं मया ।
२९] ऋषिमध्ये कथयतस्तथा तदिति मे मतम् ॥२८॥[12] [N
अथ हृष्टो दशरथः सुमन्त्रं प्रत्यभाषत । [६.११पु
३१] तस्य पुण्यात्मनः सौधो ब्रह्मचर्यव्रतस्य हि[14] ॥२९॥ [N

---

१. ट—विधिवच्छांतां ।
२. के—स्वकीं । अपरहस्तेन विन्यासः ।
३. ट—तस्य स॰ ।
४. ट—महातपाः ।
५. भ—॰नभिकांक्षति ।
६. विधास्यते ।
७. ट—महातेजा॰ । भ-महायज्ञं ।
८. हविर्हुत्वाध्वराग्निषु ।
९. ज—सनत्कुमारव॰ । प-शनत्कुमारवचनमिति ।
१०. ब—चैवं श्रुतं मया । त-चैव मया श्रुतं ।
प—तत्र संश्रुतं मया । ट-चैवं मया श्रुतं ।
११. ल—ऋषिमध्ये कथयतस्ततस् ।
१२. भ—अतः परमधिकः बहुसम्मतः पाठः—

मन्त्रिभिः सहितश्चैव तथा स कृतवांस्तदा ।
अंगराजो महाप्राज्ञो लोमपादो महायशाः ॥

१३. भ—सर्वा ।
१४. ज ल प ट—ह । भ—च ।

आनीतिर्ऋष्यशृङ्गस्य विस्तरेण ममोच्यताम् ।[1] [६.१९उ

१२] मृगैः सार्धं प्रवृद्धस्य कौमारब्रह्मचारिणः ॥३०॥ [N

सुमन्त्रो नोदितो राज्ञा प्रोवाचेदं वचस्तदा ।[2]

६.१] आनीति ऋष्यशृङ्गस्य येनोपायेन मन्त्रिभिः ॥३१॥[१०.१

लोमपादं तमूचुस्ते सहामात्यपुरोहिताः ।

६.२] उपायोऽत्र निरापायो योऽस्माभिः परिचिन्तितः ॥३२॥[१०.२

ऋष्यशृंगो वनचरस्तपस्स्वध्ययने रतः ।

६.३] अनभिज्ञः स नारीणां विषयाणां सुखस्य च ॥३३॥[१०.३

इन्द्रियार्थैरभिरतै र्नरचित्तप्रमाथिभिः ।

६.४] पुरमावाहयिष्यामः क्षिप्रं च प्रविधीयताम् ॥३४॥ [१०.४

गणिकास्तत्र गच्छन्तु रूपवत्यः स्वलङ्कृताः । [१०.५पू

६.५] उपायज्ञाः कलाज्ञाश्च दैशिकोपरिनिष्ठिताः ॥३५॥[N

रहस्युपेत्य ता एवमानयन्तु शुभव्रतम् ।[1]

६.६] लोभयित्वा यथा योगं येनोपायेन शक्यते ॥३६॥[N

---

१. रा—ममोच्यताम् ।

२. प—नास्ति ।

३. ज ल भ—वचस्ततः ।

४. प—अनीत ऋष्यशृङ्गोऽभूद् । भ—आनीतिर्ऋष्यशृ० ।

५. प—सहामात्यं पुरोहिताः ।

भ—सहामात्यपुरोहितं ।

६. भ—तपस्येकरसे ।

७. ज—गुरुः ।

८. रा प—सुखस्य ।

९. प—०र्थैरभिमते० ।

१०. रा—०मावाहयिष्यामि । प—पुरं तमानयि० ।

११. प—वैशिके परि० । भ—वैसिके परि० ।

१२. प—रहस्युपेत्योपायेन आनयंतु पतिव्रतं ।

श्रुत्वा तथेदं राजा[1] स प्रत्युवाच पुरोहितम् ।
६.७] मन्त्रिणश्च स धर्मात्मा तथा चक्रुश्च ते तदा ॥[2]३७॥[१०.३
पू९.१०] वारमुख्याश्च[3] ता गत्वा वनं प्रतिभयं महत् । [१०.३
N] ऋषिपुत्रस्य धीरस्य नित्यमाश्रमवासिनः[4] ॥३८॥ [१०.७उ
पित्रा स नित्यं निर्दिष्टो[5] नातिचक्राम आश्रमात्[6] ।[१०.८
N] आश्रमस्याविदूरस्था यत्नं कुर्वन्ति दर्शने ॥३९॥ [१०.७पू
उ९.११] विभाण्डकभयोपेता[7] लतागुल्मसमावृताः ।
चारयित्वा[8] तु तमृषिमाश्रमादभिनिर्गतम् ॥४०॥[N
९.१२] तस्य संदर्शने नष्टा[9] ऋषिपुत्रान्तिकं ततः[10] ।[11] [N
उ९.२०] न तेन जन्मप्रभृति दृष्टपूर्वो[12] वनेचरः ॥४१॥

---

१. ज प भ—तं राजा । ल—राजा च ।

२. प—अतः परमधिको वङ्गसम्मतः पाठः—

फलवन्तश्च ये वृक्षाः समूलाविटपास्तथा ।
रोपयित्वा बृहन्नौषु सुरभीणि स पार्थिवः ॥
पानानि च सुगन्धीनि फलान्यास्वादवन्ति च ।
सुसम्भृतास्तथा नौभिः प्रयाता यत्र वै मुनिः ॥

३. कै थ ल—वारमुख्यश्च । ज-वधूमुख्यश्च ।

४. ज—नित्यमश्रमिणस्तथा ।

५. ज प भ—संदिष्टो ।

६. ज प—नौभिर्निर्याति चाश्रमात् ।

७. त ल प भ—विभाण्डकभयोद्विग्ना ।

८. ज प—चारयित्वा ।

९. प—तस्थुर्ऋषिपुत्रस्य तास् ।

१०. भ—गताः ।

११. भ—पुस्तके ऽतः परं वङ्गशाखीयस्य रामायणस्य नवमसर्गस्य १३ श्लोकात् २० श्लोकस्योत्तरार्द्धपर्यन्तः पाठः केनाप्युद्धृत्यो. त्तरपार्श्वे विन्यस्तः । स च तत्रैव द्रष्टव्यः ।

१२. प—दृष्टं पूर्वं ।

पू९.२१] स्त्री वा पुमान् वा यच्चान्यत्सर्वं नगरराष्ट्रकम् । [१०.९
ऋते पितुर्ऋषिश्रेष्ठात्तं स जगाम यदृच्छया ॥४२॥
N] वैभाण्डकिस्तत्र ताश्च प्राप चैव पुराङ्गनाः ।
ततः कदाचित् तं देशमाजगाम यदृच्छया ॥[4]४३॥
दृष्ट्वैव च सुचार्वङ्ग्यस्तास्तदा तनुमध्यमाः । [१०.१०
N] ताश्चित्रवेषाभरणा गायन्त्यो मधुरस्वराः॥४४॥[१०.११पू
उ९.२१] तं देशमुपसंगम्य जातकौतूहलो मुनिः ।
पू९.२२] विभाण्डकसुतो जिष्णुस्तस्थौ विस्मितमानसः ॥[8]४५॥[N
ऋषिपुत्रमुपागम्य सर्वा वचनमब्रुवन् । [१०.११उ
कस्त्वं किं वर्तसे चेह ज्ञातुमिच्छामहे वयम् ॥४६॥
९.२४] एकश्च विजने घोरे वने चरसि शंस नः ॥[१०.१२

१. ज—नास्ति ।

२. रा—पितृऋषिश्रे० ।

३. ज भ—वराङ्गनाः ।

४. रा व प—नास्ति । के—उत्तरपार्श्वे ऽपरहस्तेन ।

५. ज प—सुचार्वङ्गीस्तास्तदा ।

६. प—तद्देशमुपसं ।

७. प—धीमांस्तस्थौ ।

८. प—अतः परमधिको वङ्गसम्मतः पाठः—
ताश्च तं विस्मितं दृष्ट्वा जगुष्कलपदाक्षरम् ।
गीतं मधुरभाषिण्यो जहसुश्चायतेक्षणाः ।
अब्रुवंश्चैनमभ्यासमागम्य मदविह्वलाः ।

९. प—कस्य सुतश्चासि ।

१०. प—त्वं । भ—तत् ।

११. प—अतः परमधिकः वङ्गसम्मतः पाठः—
ज्ञातुं त्वां वयमिच्छाम तत्त्वमाचक्ष्व नः प्रभो ।

उ६.२५] अदृष्टपूर्वास्तास्तेन काम्यरूपधराः स्त्रियः ॥[2]४७॥
हार्दात्तस्य मतिर्जाता व्याख्यातुं पितरं ततः । [१०.१३
६.२६] विभाण्डको मम पिता पुत्रस्तस्याहमौरसः ॥४८॥
ऋष्यशृङ्ग इति ख्यातं नाम कर्म च मे[4] भुवि । [१०.१४
९.२७] इहाश्रमपदेऽस्माकं समीपे[5] शुभदर्शनाः ॥[6]४९॥
करिष्येऽतिथिपूजां वः सर्वेषां[7] विधिपूर्वकम् । [१०.१५
९.२९] ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा सर्वासामभवन्मतिः ॥[8]५०॥[१०.१६
तत्राश्रमपदं द्रष्टुं जग्मुः सर्वाश्च तत्र ह ।[8] [१०.१६
९.३०] गतानां तत्र वै पूजां चक्रे वैभाण्डिकस्ततः ॥५१॥
इदमर्घ्यमिदं पाद्यमिदं मूलं[12] फलं[12] च[13] नः[13] । [१०.१७
९.३१] प्रतिगृह्य तु तां पूजां सर्वा एव समुत्सुकाः ॥ ५२॥

---

१. प—अदृष्टपूर्वास्ता दृष्ट्वा चारुरूपधराः ।

२. प—अतः परमधिको वङ्गसम्मतः पाठः—
ऋषिपुत्रस्तदात्मानमाख्यातुमुपचक्रमे ।

३. के रा ज ब ल भ—ख्यातो ।

४. रा—मे प्रथितं ।

५. भ—समीपं ।

६. ज—इहाश्रमपदैः साकं समीपैः शुभदर्शनैः ।

७. ज ल—सर्वासां । प—सर्वाश्च ।

८. प—ताश्च तत्र ह ।

९. प—नास्ति ।

१०. ज ल—तमाश्रमपदं ।

११. के—वैभण्डिकिस्ततः । ज–वैभाण्डिकिस्तदा ।
ल प भ—वैभांडकिस्तदा ।

१२. ब—मूलफलं ।

१३. रा—चरः ।

१४. प—अतः परमधिको वङ्गसम्मतः पाठः—
ऋषिशापभयोद्विग्ना गमनाय मतिं दधुः ।

उ६.३२] गीतमाधुर्यभाषिण्यो जहृषुश्चायतेक्षणाः ।[2]
फलान्याश्रमजातानि यदि रोचन्ति वै द्विजं ॥५३॥
६.३३] अस्माकमपि मुख्यानि फलानीमानि सन्ति वै ।
N] प्रतिगृह्णाण भद्रं ते भक्षयैतानि मा चिरम् ॥[4]५४॥[१०.१९
अथास्मै प्रददुःस्वादून् मोदकान् फलसन्निभान् ।[१०.२०उ
६.३४] अन्यांश्च विविधान् भक्ष्यान् मधूनि मधुराणि च ॥[6]५५॥[N
तानास्वाद्य स तेजस्वी फलानीति त्वमन्यत ।
N] अनाचाराणि दीर्घाणि वने वननिवासिनाम् ॥५६॥ [१०.२१
N] ततस्तु तं समालिङ्ग्य सर्वा हर्षसमुत्सुकाः ।[11] [१०.२०पू
उ६.३५] परिषस्वजिरे चैनं हसन्त्यो मदविह्वलाः ॥५७॥[N
पू६.३६] परिपस्पृशिरे चैनं पीनैरुरसिजैः मुखैः ।[14] ५८ [N

१. ज—गीतं माधु० ।
२. प—अतः परमधिकः पाठः—
अथैनमूचुर्भीताश्च स्मयमाना इवं वचः ।
३. ज—द्विजाः ।
४. प—नास्ति ।
५. प—पूजां च ।
६. प—अतः परमधिकः वङ्गसम्मतः पाठः—
तीर्थोदकमिदं तावत् पीयतामिति भूसुर ।
७. ज ल प भ—तान्यास्वाद्य ।
८. कै प भ—अनास्वादितपूर्वाणि । ज—०णि दुर्गाणि ।
९. भ—धनं ।
१०. प—सहर्षं च समुत्सुकाः ।
११. ल—अतः परं २३ श्लोकस्य प्रथमः पादः पुनरावर्तितः ।
१२. ज—परिषष्वजिरे ।
१३. प—मुहुः ।
१४. प—अतः परमधिकः वङ्गसम्मतः पाठः—
मधूनि च सुगन्धीनि पीत्वा प्रमुदितो ऽभवत् ।
सुकुमारैश्च तैरंगैस्ताभिः स्पृष्टो व्यमुह्यत ॥
स्पृहया[मा]स तासां च स्पर्शस्य कांक्षितस्य च ।

आपृच्छय च तदा विप्रं व्रतचर्यां निवेद्य च॥५८[१०.२२पू
६.४०] स्वमाश्रमपदं तस्य व्यपदिश्याविदूरतः ।
N] गच्छन्ति स्मापदेशेन भीतास्तस्य पितुः स्त्रियः॥५९[१०.२२उ
पू९.४१] तासु मतिंगतास्वेव ऋष्यशृङ्गः समुत्सुकः ।
N] अस्वस्थहृदयस्तत्र दुःखं संपरिवर्तते ॥६०॥ [१०.२३
N] संस्मरन्नथ तं देशं स जगाम स्त्रियस्तथा ।
उ६.४१] तद्गतेनैव मनसा न निद्रामभिगच्छति ॥६१॥ [N
अथ सायंतने काले न्यवर्तत विभाण्डकः ।[८]

---

१. ब—तां ।

२. भ—व्यपदिश्य विदूरतः ।

३. ज—तास्वप्रतिगता० ' प—०गतास्वेवमृष्य० ।

४. ब प—स्म परिवर्तते ।

५. प—देशमाजगामाथ वीर्यवान् ।

६. ज—नो ।

७. ज ल भ—निद्रामधिग० । प—निद्रामभ्यगच्छत ।

८. प—६२ श्लोकात् ६६ श्लोकान्तस्य पाठस्य स्थाने ऽयं पाठो विज्ञेयः ।

अथाजगाम भगवान् काश्यपः स्वनिवेशनम् ।
ध्यायमानश्च तं दृष्ट्वा ऋष्यशृंगं समुत्सुकं ॥
पप्रच्छ काश्यपः पुत्रं कस्मान्मा नाभिनन्दसि ।
चिन्तासागरमध्यस्थमद्य त्वां तात लक्षये ॥
नहीदृशं तापसानां रूपं भवति कर्हिचित् ।
शीघ्रमाचक्ष्व मे पुत्र किमिदं विकृतं कृतम् ॥
एवमुक्तः काश्यपेन प्रोवाच पितरं तदा ।
भगवन्निह मे दृष्टाः पुरुषाः शुभलोचनाः ॥
सुकुमारैर्ललाटजैः पीनैरप्यद्भुतोपमैः ।
परिपस्पृशिरे मां च गात्रमालिंग्य सर्वशः ॥
गायन्ति सुकुमाराणि मनोज्ञानि मुहुर्मुहुः ।
क्रीडन्ति चाद्भुताकारैर्नयनभ्रूविचेष्टितैः ॥
अब्रवीद् भगवान् श्रुत्वा ऋष्यशृंगवचस्तदा ।

N] तदाश्रमं विलोक्यैव प्राह चास्वस्थमानसम् ॥६२॥ [N
N] पुत्रं चै क्रोधताम्राक्षः कोऽप्यागत इहाश्रमम् ।
एवं पृष्टस्तदा तेन ऋष्यशृङ्गः सगद्गदम् ॥६३॥ [N
ब्रूते स्मै पितरं पूज्यं भोः पितः श्रूयतां वचः ।
९.४५] तवाश्रमपदं प्राप्ताः शुचयो ब्रह्मचारिणः ॥६४॥ [N
शिखाविशिष्टा मुनयः प्रदीप्तानलतेजसः ।
N] तेभ्योऽदंदं पितः पाद्यमर्घ्यं चैवं महामुने ॥६५॥ [N
९.४६] ते मां सस्वजिरे स्नेहात् प्रीत्या वै ब्रह्मचारिणः ।
अथापरेऽहनि तदा आजग्मुर्वै पुनस्ततः ॥६६॥ [N
मनोज्ञा रूपवत्यश्च हृष्टास्ताश्चारुमध्यमाः । [N

रक्षांस्येतेन रूपेण तपसो नाशनाय वै ॥
विश्रंभस्ते न कर्तव्यस्तेषु पुत्र कथंचन ।
एवमुक्त्वा ऋष्यशृंगं समाश्वास्य च कश्यपः ॥
उषित्वा रजनीमेकामरण्यं स जगाम ह ।
अथापरेद्युस्तं देशं आजगाम ततस्त्वरम् ॥
मनोज्ञरूपास्ता यत्र हृष्टा वै चारुमध्यमाः ।

१. ज—तदाश्रमे ।
२. रा ज ल भ—पुत्रं ।
३. रा भ—चुक्रोध ता० ।
४. रा—इवाश्रमम् ।
५. रा ल—स ।
६. भ—पूज्यं ।
७. कै रा ज ल भ—वृद्धाः ।
८. भ—प्रदीप्तानललोचनाः ।
९. रा—तेभ्यो ददौ । ज—तेभ्यो ददौ । तेभ्यो दद्यां ।
१०. भ—चैवं ।
११. भ—अतः परमधिकः पाठो बंगशाखायाः नवमसर्गस्य ४८—५० श्लोकेषु द्रष्टव्यः ।
१२. ज—पुनस्तदा ।

९.५१उ] तांश्च दृष्ट्वा समायान्तं कश्यपस्यात्मजात्मजम् ॥६७॥
प्रत्युद्गम्याब्रुवन् सर्वाः प्रहसन्त्य[1] इदं वचः ।[2] [१०.२५
९.५२] एष्याश्रमपदं रम्यं पश्यास्माकमपि[3] प्रभो ॥६८॥
तत्राप्येष विधिः श्रीमान् विशेषेण भविष्यति[4] ।[१०.२६
९.५३] श्रुत्वा तु वचनं तासां सर्वासां हृदयङ्गमम् ॥[5]६९॥
गमनाय मतिं चक्रे तं च निन्युस्तदा[6] स्त्रियः । [१०.२७
९.५४] कृते आनीयमाने वै तस्मिन् विप्रे महात्मनि[7] ॥७०॥[4]
९.५५पू] प्रहृष्टः[8] सहसा देवो भगवान् पाकशासनः । [१०.२८
९.५९पू] वर्षणामृतकल्पेन विषयं[9] स्वं नराधिपः[10] ॥७१॥[11]

---

१. ज—प्रहसंत ।

२. प—प्रत्युद्गताब्रुवन् सर्वा आजग्मुर्वै पुनस्तदा ।
मनोज्ञरूपवत्यश्च प्रहसन्त्य इदं वचः ॥

३. भ—परपास्मा० ।

४. भ—श्रीमानस्मिन्विप्रे महात्मनि । मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा ७०श्लोकस्य चतुर्थेन पादेन सम्बन्धः ।

५. भ—नास्ति ।

६. रा ज ल प—तत । व- हत (?) ।

७. प—शरात्मनि ।

८. ज व भ—प्रवृष्टः । प—प्रविष्टः ।

९. ज—किमयं । प—विषये ।

१०. प—तस्य भूपतेः ।

११. प—अतः परमधिकः पाठः—
विभाण्डकश्च संध्यायां निवृत्तश्च वनांतरात् ।
वण्यं मूलं फलं चाप्य भारार्तः सोऽविशत्तदा ॥
शून्यमावसथं दृष्ट्वा पुत्रदर्शनलालसः ।
परिश्रान्तस्तथैवासीदकृत्वा पादधावनम् ॥
चुक्रोध च ततस्तत्र सर्वतः स विलोकयन् ।
न चापश्यत् सुतं तत्र काश्यपो भगवानृषिः ।

६.६५] मेने प्रत्युद्गतश्चैव शिरसाऽभिप्रणम्य तम् । [१०.२९
९.६६पू] अर्घ्यं च प्रददौ तस्मै पूजां कृत्वा चं शास्त्रतः ॥७२॥
९.६७उ] वव्रे प्रसादं विप्रेन्द्रान्मा विप्रं मन्युराविशत् । [१०.३०
अन्तःपुरं प्रवेश्यैनं कन्यां दत्त्वा यथाविधि ॥७३॥
९.६८] शान्तां शान्तेन मनसा राजा हर्षमवाप सः । [१०.३१
एवं स न्यवसंत् तत्र सर्वकामैः सुपूजितः ॥७४॥
९.६९] ऋष्यशृङ्गो महातेजाः शान्तया सह वीर्यवान् ।[१०.३२

निजाश्रमाच्च निःक्रान्तस्तदान्वेष्टुं सुतं ततः ॥
निःक्रम्य च वनात्तस्माद्विषयं च जगाम सः ।
श्रीमांस्तु परिपप्रच्छ गोकुलानि च सर्वशः ॥
कस्यैव विषयः सौम्यो ग्रामाश्च बहुगोकुलाः ।
ऋषेर्वचनमाज्ञाय सर्वे ते गोनुजीविनः ॥
बद्धाञ्जलिपुरा भूत्वा विनयेनाचचक्षिरे ।
अंगेषु प्रथितो राजा लोमपाद इतिश्रुतः ॥
तेनाभिदृष्ट्वा ब्रह्मर्षे ग्रामा ह्येते सगोकुलाः ।
पूजार्थमुपसंगम्य विभाण्डकसुतस्य वै ॥
एवमुक्तस्तु स ऋषिर्दृष्ट्वा ध्यानेन चक्षुषा ।
भविष्यमेतद् ज्ञात्वा च प्रीतात्मा स न्यवर्तत ॥
ऋषिपुत्रोपि धर्मात्मा विषयं प्राप्य वै तदा ।
मेघनादेन महता कृत्वा सतिमिरं नभः ॥
महाजलौघवर्षेण राजधानीमुपाययौ ।
वर्षेण चागतं विप्रं विषयं स्वं नराधिपः ॥

१. प—अर्घं ।
२. प—यथाविधि । जल भ—तु शाश्वतः ।
३. रा—विप्रेन्द्रो न । प भ—विप्रेन्द्राम्मा ।
४. भ—प्रवेश्यैवं ।
५. ज ल—यथाविधिम् ।
६. ज—स न्यवसंस्तत्र ।

९.६६] ऋष्यशृङ्गो महातेजाः शान्तया सह वीर्यवान्॥७५॥[१०.३२

संपूज्यमानः परया मुदान्वितो
महर्षिपुत्रो नरदेवसद्मनि ।
उवास तस्मिन् सह शान्तया सुखी

N] पुरे महेन्द्रस्य यथा बृहस्पतिः ॥[2]७६॥ [N

इत्यार्षे रामायणे आदिकाण्डे ऋष्यशृङ्गाभिगमनं
नामाष्टमः सर्गः ॥ ८ ॥

---

१ प—भार्यया ।

२ प—सर्वमेतदशेषेण श्रुत्वा ब्रह्मर्षिसत्तमः ।
जगाम तपसे चैव सुप्रीतेनांतरात्मना ।

भूय एवं[1] च राजेन्द्र शृणु मे वचनं हितम् ।
१] यथा स धर्मप्रवरः[2] कथयामास धर्मवित् ॥१॥ [१
इक्ष्वाकूणां कुले जातो भविष्यति सुधार्मिकः[3] ।
२] नाम्ना दशरथो वीरः श्रीमान् सत्यप्रतिश्रवः[4] ॥२॥ [२
सख्यं तस्याङ्गराजेन भविष्यति महात्मनः[5] ।
३] कन्या चास्य महाभागा शान्ता नाम भविष्यति ॥३॥ [३
अपुत्रस्त्वङ्गराजो वै लोमपाद इति श्रुतः ।
४] स राजानं दशरथं प्रार्थयिष्यति भूमिपः ॥४॥ [४
अनपत्योऽस्मि धर्मज्ञ कन्येयं मम दीयताम् ।
५] शान्तां शान्तेन मनसा पुत्रार्थी[6] वरवर्णिनीम्[7] ॥५॥ [५
ततो राजा दशरथो मनसा[8] ऽभिविचिन्त्य ताम् ।
६] दास्यते[9] तां तदा कन्यां शान्तामङ्गाधिपाय सः ॥६॥ [६
प्रतिगृह्य तु तां कन्यां स राजा विगतज्वरः ।

१. ल प भ—एव ।
२. प भ—देवप्रवरः ।
३. ज ब—स धार्मिकः ।
४. रा—सत्यपरिश्रवाः । ब—०श्रवः । भ—सत्यपराक्रमः ।
५. प—सुधार्मिकः । अस्य स्थाने महात्मन इति पुनर्विन्यस्तः पाठः ।
६. भ—पुत्रार्थे ।
७. भ—वरवर्णिनी ।
८. प—प्रकृत्या । प—कल्याणात्मकः ।
रा ज ब—०न्त्य सम् । भ—०न्त्य तत् ।
९. रा—दास्यामेतां ।

७] नगरं यास्यति क्षिप्रं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥७॥ [७
पृ८] कन्यां तामृष्यशृङ्गाय प्रदास्यति स वीर्यवान् ।
N] सत्यमेतिश्रवो राजा स च शुद्धो भविष्यति ॥८॥ [N
तं च राजा दशरथो यष्टुकामः कृताञ्जलिः ।
९] ऋष्यशृङ्गं द्विजश्रेष्ठं वरयिष्यति धर्मवित् ॥९॥ [८
यज्ञार्थं प्रसवार्थं च स्वर्गार्थं च नरेश्वरः ।[3]
१०] लप्स्यते च स तं[4] कामं द्विजमुख्याद्विशांपतिः ॥१०॥ [९
सुताश्चास्य भविष्यन्ति चत्वारो ऽमिततेजसः ।
११] वंशप्रतिष्ठानकराः सर्वलोकेषु विश्रुताः ॥११॥ [१०
एवं स देवप्रवरः पूर्वं कथितवान् कथाम् ।
१२] सनत्कुमारो भगवान् पुरा देवयुगे प्रभुः ॥१२॥ [११
पृ१३] सत्त्वं मन्त्रवंशो मूलं त्वमानय सुसत्कृतम् ।[8]

१. भ—॰तिश्रवो ।

२. ल—प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।

३. ल—पुस्तके ऽयं पाठ उत्तरपार्श्वे ऽपरहस्तेन विन्यस्तः ।
मूले त्वयं पाठः—कन्यां तामृष्यशृङ्गाय प्रदायस्य शेश्वरः

४. ल—सततं । भ—स च तं ।

५. प—देवपुरो ।

६. प—मनुजशार्दूल ।

७. रा प भ—तमानय । ल—समानय ।

८. ज—स्वसत्कृतं ।

९. प—अतः परमधिकः पाठः—
विभांडकसुतं गत्वा वरयित्वात्मनो गुरुम् ।
इति श्रुत्वा दशरथः सुमंत्रस्य सुमंत्रिणः ॥
वशिष्ठमुपगम्यैव इदं वचनमब्रवीत् ।
सुमंत्रो पश्चादत्येव तमनुज्ञातुमर्हसि ॥
वशिष्ठोपि च तच्छ्रुत्वा तथेति प्रत्यपद्यत ।

N] स्वयमेव महाराज सभृत्य[1]बलवाहनः ॥१३॥ [१२
सूतस्य[2] वचनं श्रुत्वा राजा संपूर्णमानसः । [१३
१४] अनुमान्य वसिष्ठं च[3] सूतवाक्यं निवेद्य[4] च[5] ॥[6]१४॥
पू१६] वसिष्ठेनाभ्यनुज्ञातो राजा दशरथस्तदा ।[7]
उ१७] सोऽन्तःपुरात्[8] सहामात्यः प्रययौ यत्र स द्विजः ॥१५॥ [१४
पू१८] वनानि सरितश्चैव व्यतिक्रम्य शनैः शनैः ।
N] व्यतिचक्राम तं देशं यत्रासौ मुनिपुङ्गवः ॥१६॥ [१५
उ१८] लोमपादपुरं प्राप्य प्रविवेश सुपूजितः । [N
तत्राससाद राजा तु लोमपादनिवेशनम्[9] ॥१७॥
१९] ऋषेः[10] पुत्रं ददर्शासौ दीप्यमानमिवानलम् । [१६
ततो राजा लोमपादः पूजां तस्य चकार ह[11] ॥१८॥
२०] सखित्वात् तस्य[12] राज्ञश्च प्रहृष्टेनान्तरात्मना । [१७
स एवं सत्कृतस्तेन वसंस्तत्र नरर्षभः ॥१९॥

१. प—गत्वा सबलवाहनः ।
२. प—स तस्य ।
३. रा—तु ।
४. प—न्यवेदयत् ।
५. भ—नास्ति ।
६. प—वशिष्ठेना० ।
७. प—अतः परमधिकः पाठः—
सुमंत्रवचनात्तूर्णं प्रयातुमुपचक्रमे ।
ऋष्यश्रृङ्गं वरयितुं लोमपादस्य वै पुरं ॥
८. प—सान्तःपुरः । ज—सोऽन्तः पुरः ।
९. प—०निवेशने ।
१०. प भ—ऋषिपुत्रं ।
११. ल—च कारयेत् । प—चकार सः ।
१२. ज ब भ—तत्र ।

२१] सप्ताष्ट दिवसान् राजा ततो वचनमब्रवीत् । [१६
शान्ता तव सुता वीर सह भर्त्रा विशांपते ॥२०॥

२२] मदीयं नगरं यातु कार्यं हि महदुद्यतम् । [२०
तथेति राजा संश्रुत्य गमनं तस्य धीमतः ॥२१॥ [२१पू

२३] लोमपादोऽगमद् वक्तुं ऋषिपुत्राय धीमते ।
सख्यं सांबन्धिकं चैव तत्सर्वं प्रत्यवेदयत् ॥२२॥ [N

२४] अयं राजा दशरथः सखा मे दयितः सुहृत् ।
अपत्यार्थं समानेन दत्तेयं वरवर्णिनी ॥२३॥ [N

२५] याचमानस्य मे ब्रह्मन् शान्ता प्रियतराऽऽत्मनः ।
सोऽयं ते श्वशुरो विप्र यथैवाहं तथा नृपः ॥२४॥ [N

२६] शरणार्थमनुप्राप्तः पुत्रार्थं द्विजसत्तम ।

१. रा ज ल भ—सप्तसप्तदि० । प—सप्ताष्टौ दि० ।
२. ब—तव ।
३. ल—महदुद्यतम् (?)
४. के—विशांपते । इत्यपरहस्तेन विन्यासः ।
५. के—साध्यं । साध्यमित्यस्य स्थाने केनापि सख्यमिति संशोध्य कृतम् ।
६. प—सांबंधकं ।
७. प—अङ्गराजा ।
८. ल—वरवर्णितम् । प—वरवर्णिना ।
९. के—याच्यमानस्य ।
१०. ज—प्रयतमात्मनः । प भ—०प्रियतरा मम ।
११. प—ब्राह्मण ।
१२. प—यथा वाहं ।
१३. प—शरणं त्वामनुप्राप्तः ।
१४. भ—पुत्रार्थे ।
१५. प—मुनिसत्तम ।

पुत्रकाममिमं तात सफलं[1] कर्तुमर्हसि ॥२५॥ [N
२७] तारयैनमितो गत्वा शान्तया सह भार्यया । [N
पू२८] ऋषिपुत्रोऽथ तच्छ्रुत्वा तथेत्याह नृपं तदा ॥२६॥ [२२पू
N] गच्छेति[2] विप्रवचनाद् राजोवाच ततो[3] नृपम् ।[4] [N
उ२८] ऋषिणा[5] चाभ्यनुज्ञातः प्रययौ सह भार्यया ॥२७॥ [२२उ
तावन्योन्यं च कुशलं संपृष्ट्वाश्लिष्य[6] चोरसा[7] । [२३पू
२९] गमने मतिमादत्त[8] राजा[9] दशरथस्तदा ॥२८॥
सोऽनुज्ञातो दशरथस्तेन राज्ञा महीपतिः ।
३०] प्रययौ स्वां पुरीं वीरः[10] शान्तामादाय सत्वरम् ॥२९॥
३१] ततो राजा दशरथः प्रेषयामास वै तदा । [२४
३२] क्रियतां[11] नगरं सर्वं[12] शीघ्रमेव स्वलङ्कृतम् ॥३०॥ [२५पू
पू३५] ततः प्रहृष्टाः पौरास्तु[13] श्रुत्वा राजानमागतम्[14] ।
उ३३] तथा चक्रुश्च तत्सर्वं राज्ञा यत्प्रेषितं तदा ॥३१॥ [२६
ततः[15] स्वलङ्कृतं राजा नगरं प्रविवेश ह ।

---

१. ज—सकलं ।
२. प—गत्वेति ।
३. प—तथा ।
४. भ—नास्ति ।
५. प—नृप[पे?]णैवाभ्यनुज्ञातः
६. प—पृष्ट्वा संश्लिष्य ।
७. भ—चेतसा ।
८. प—०वत्त ।
९. प—राजा स मतिं तदा ।
१०. प भ—महात्मा ।
११. रा—ध्रियतां ।
१२. रा—सर्वे ।
१३. प—पौरास्ते ।
१४. प—राजानुशासनं ।
१५. रा प भ—ततस्स्वलंकृतः ।

३४] शङ्खदुन्दुभिनिर्घोषैः पुरस्कृत्य द्विजर्षभम् ॥३२॥ [२७
ततः प्रमुदिताः सर्वे दृष्ट्वा वै नागरा द्विजम् ।
N] प्रवेश्यमानं सत्कृत्य नरेन्द्रेणेन्द्रकर्मणा ॥३३॥ [२८
अन्तःपुरं प्रवेश्यैनं पूजां कृत्वा तु शास्त्रतः ।
३६] कृतकृत्यं तदाऽऽत्मानं मेने तस्यागमात् प्रभुः ॥३४॥ [२९
अन्तःपुराणि सर्वाणि दृष्ट्वा शान्तां तथागताम् ।
३७] सह भर्त्रा विशालाक्षीं प्रत्यानन्दन् मुदा नतः ॥३५॥ [३०
संपूज्यमान स्तुतिभिर्यथा राज्ञा विशेषतः ।
N] उवास तत्र सम्मुखं किञ्चित्कालं द्विजर्षभः ॥३६॥ [३१
उपास्यमानः शुशुभे शान्तया दिव्यरूपया ।
N] अरुन्धत्या यथा युक्तो वसिष्ठो ब्रह्मणः सुतः ॥३७॥ [N
अथ काले बहुतिथे कस्मिंश्चित् सुमनोहरे ।
११.१]वसन्ते समनुप्राप्ते राज्ञो यष्टुं मनोऽगमत् ॥३८॥ [१२.१
ततः प्रसाद्य शिरसा तं विप्रं देववर्णिनम् ।
११.२] यज्ञार्थं वरयामास सन्तानार्थं च बुद्धिमान् ॥३९॥ [१२.१

१. ब—शंखदुंदुभि० ।
२. प—०णेन्द्रकर्मकृत् ।
३. प भ—प्रत्यनन्दन् ।
४. ज भ—मुदा युता: । प—मुदान्विताः ।
५. प—०भिस्तदा ।
६. ल प—राज्ञा ।
७. प—सुसुखं ।
८. प—वशिष्ठो ।
९. प—अत: परम्—इत्यार्षे रामायणे आदिकाण्डे ऋष्यशृङ्गागमनं नाम सर्गः ॥
१०. प—मनो दधे: ।
११. प—देववर्चसम् । भ—देवरूपिणं ।
१२. रा—यज्ञार्थं ।

तथेति च स राजानमुवाच प्राप्तसत्क्रियः ।
११.३] संभाराः संभ्रियन्तां ते सहायाश्च द्विजातयः ॥[1]४०॥
ततोराजाऽब्रवीत् सूतं ब्राह्मणान् सपुरोहितान्[2] ।
११.५] क्षिप्रमानय धर्मज्ञ यज्ञार्थं मम सुव्रतान्[3] ॥४१॥[4] [१२.४
वेदविद्याव्रतस्नातान् यज्ञकर्मसु[5] निष्ठितान् ।
११.६] सूत्रभाष्यविदश्चैव वेदवेदाङ्गपारगान् ॥४२॥ [N
गृहमेधिनो दरिद्रांश्च वृद्धानपि कलत्रिणः ।
११.७] श्रोत्रियांश्च विदेशस्थान् सत्कृत्य त्वमुपानय[6] ॥४३॥[N
श्रुत्वा तु राज्ञो वचनं सुमन्त्रस्त्वरितं[7] तदा ।
११.८] आनयामास तान् सर्वान्[8] ब्राह्मणान् वेदपारगान् ॥४४॥
सुयज्ञं[9] वामदेवं च जाबालिं[10] कश्यपं तथा ।
११.९] पुरोहितं वसिष्ठं[11] च तथैवान्ये[12] द्विजातयः ॥४५॥ [१२.५
तान् पूजयित्वा धर्मात्मा राजा दशरथस्तदा ।
११.१०] इदं धर्मार्थसहितं श्लक्ष्णं[13] वचनमब्रवीत् ॥४६॥ [१२.७

१. प—संभाराः संक्रियंतां स्वै सहायाश्च द्विजोत्तमाः
२. के प—सुपुरोहितान् ।
३. भ—सव्रत ।
४. प—नास्ति ।
५. ल—न्यायकर्मसु ।
६. ल—मासुपानय ।
७. ज प भ—०त्वरितस्तदा ।
८. रा भ—तत्सर्वान् ।
९. रा—स्वयज्ञं ।
१०. ज प—जाबालिं । प—जाबलिं ।
११. प—वशिष्टं ।
१२. प—तथैवान्यान् द्विजोत्तमान् ।
१३. प—तद्वचं ।

मम लालप्यमानस्य पुत्रार्थं नास्ति मे सुतः ।
११] तदर्थं हयमेधेन यक्ष्यामीति मतिर्मम ॥४७॥ [८
तदर्थं यष्टुकामोऽहं हयपूर्वेण कर्मणा ।
१२] ऋषिपुत्रप्रभावेण कामं प्राप्स्याम्यहं द्विजाः ॥४८[6]॥ [९
उ१३] ततः साध्विति तद्वाक्यं ब्राह्मणाः प्रत्यपूजयन् ।
वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे पार्थिवस्य मुखाच्च्युतम् ॥४९॥ [१०
१४] ऋष्यशृङ्गपुरोगास्ते प्रत्यूचुर्नृपतिं ततः ।
संभाराः संभ्रियन्तां ते तुरगश्च विमुच्यताम् ॥५०॥ [११
१५] सर्वथा प्राप्स्यसे पुत्रांश्चतुरो ऽमिततेजसः ।
यस्य ते धार्मिकी बुद्धिरियं पुत्रार्थमागता ॥[9]५१॥ [१२
१६] ततः प्रीतोऽभवद् राजा श्रुत्वा तद्द्विजभाषितम् ।
अमात्यांश्चाब्रवीत् तत्र हर्षवेगाकुलाक्षरम् ॥५२॥ [१३
१७] गुरूणां वचनाच्छीघ्रं संभाराः संभ्रियन्तु मे ।
पू१९] अमात्याधिष्ठितंश्चाश्वः सोपाध्यायो विमुच्यताम् ॥५३॥ [१४

१. प—सुतार्थं ।

२. भ—सतः ।

३. प—तदहं । भ—तदर्थे ।

४. प—यजानीति ।

५. प—यष्टुकामोऽहं हयमेधेन ।

६. प—अतः परमधिकः पाठः—
अनुगृह्णन्तु मामत्र भवंतः शरणागतम् ।

७. रा ल—सुरवाः च्युतं ।

८. प भ—०ऽमितविक्रमान् ।

९. ब—नास्ति ।

१०. कै—०त्याहिष्टित० । प—सुमन्त्राधि० ।

शान्तयश्चापि कल्प्यन्तां तन्त्रकल्पैर्[2]यथाविधि । [१५उ
२०] शक्यमाप्तुं महायज्ञं तत्सर्वं संविधीयताम् ।।[3]५४।।[4]
N] नापचारो भवेद्राष्ट्रे यथास्मिन् क्रतुपुङ्गवे । [१६
उ२१] छिद्रं हि मृगयन्ते तु विद्वांसो ब्रह्मराक्षसाः ।।५५।।[7]
विघ्ने[8] तु तस्य यज्ञस्य कर्ता[9] सद्यो विनश्यति । [१७
२२] तद्यथा विधिपूर्वं मे क्रतुरेष समाप्यते ।।५६।।
तथा विधानं क्रियतां समर्थैः सत्रकर्मणि । [१८
२३] तथेति तद्वचः श्रुत्वा मन्त्रिणः प्रत्यपूजयन् ।।५७।।
पार्थिवेन्द्रस्य तत् सर्वं तथाज्ञां[10] प्रत्यपालयन् । [१९
२४] ततो द्विजास्ते धर्मज्ञा वर्धयित्वा च तं[11] नृपम् ।।५८।।
अनुज्ञातांस्तदा[12] राज्ञा प्रतिजग्मुर्यथागतम् । [२०
गतेषु द्विजमुख्येषु मन्त्रिणोऽपि नराधिपः ।।५९।।

---

१. कै—०श्चाधिक० ।

२. रा ज ब ल प भ—तत्र कल्पैर्य० ।

३. प—शक्योवाप्तुमयं यज्ञो नाशक्तेन महीक्षिता ।

४. ज प भ—अतः परमधिकः पाठः—

सरस्वत्याः सरितः पारे यज्ञभूमिर्विधीयताम् ।

कै—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।

५. प—भवेत्कश्चिद् ।

६. प—०ऽत्र यज्ञ्ञा ।

७. कै—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वेऽतः परमपरहस्तेन लिखितोऽधिकः पाठः—

शक्यो ह्याप्तुमयं यज्ञो नाशक्तेन महीक्षिता ।

न त्वेवाश्रद्दधानेन न चाल्पद्रविणेन च ॥

८. भ—विघ्नं तु त० । प—विघ्नितस्य तु त० ।

९. रा ज ब ल—वार्ता ।

१०. प—यथाज्ञां ।

११. प—ते ।

१२. रा ब ल—अनुजग्मुस्तदा । प—०ज्ञातास्ततो ।

२५] विसृज्य[1] सर्वान् स्वं वेश्म प्रविवेश महाद्युतिः [२१
N] प्रजार्थं समभिप्रेतं निर्वृत्तं[2] चाभ्यमन्यत[3] ॥६०॥ [N
पुनः प्राप्ते वसन्ते तु पूर्णः संवत्सरोऽभवत् । [१३.१पू
१२.१] अभिवाद्य वसिष्ठं तु न्यायतः प्रत्यपूजयत्[4] ॥६१॥
अब्रवीत् प्रश्रितं[5] वाक्यं प्रसवार्थं द्विजोत्तमम् ।
२] यज्ञः[6] संस्क्रियतां[7] शीघ्रं यथाशास्त्रं सुनिश्चितम् ॥६२॥ [२
यथा न विघ्नः क्रियते यज्ञघ्नैर्[8] केनचित् । [३
३] भवान् स्निग्धः सुहृन्मह्यं गुरुश्च परमो महान्[9] ॥६३॥
वोढव्यो भवता चेहं[10] यज्ञार्थे[11] भार उद्यतः[12] । [४
४] तथेति च[13] स[13] राजानमब्रवीद्[14] द्विजसत्तमः ॥६४॥
करिष्ये सर्वमेवैतद् भवतो यदभीप्सितम् । [५
५] ततोऽब्रवीद् द्विजान् वृद्धान्[15] यज्ञकर्मसु निष्ठितान् ॥६५॥

---

१. ज प भ—विसर्ज्य ।
२. रा ज ल—निवृत्तं । प—निर्वर्तं ।
३. प—चाप्यमन्यत ।
४. ज—प्रत्यपूपुजत् ।
५. ज भ—प्रसृतं । प—मधुरं ।
६. प—स यज्ञः ।
७. रा—संक्रियतां । प–क्रियतां । भ–संस्थीयतां ।
८. प—यज्ञेस्मिन् केनचित् क्वचित् ।
९. भ—भवान् ।
१०. प—चैव । भ–भारो ।
११. रा ब—यज्ञार्थो । प–भारो । भ–यज्ञार्थम् ।
१२. प—यज्ञस्य चानघ । भ—ममनघ नः ।
१३. प—स च ।
१४. प—राजानमुवाच ।
१५. प—सर्वान् ।

स्थाप्यन्तां चेह स्थाप्यन्तां वृद्धान् परमधार्मिकान् । [६
६] कर्मान्तिकान् लेपकरान् खनकान् वर्धकानपि ॥६६॥
गणकान् शिल्पिनश्चैव तथैव नटनर्तकान् ।
७] ततोऽब्रवीच्छास्त्रविदः पुरुषान् सुबहुव्रतान् ॥६७॥ [७
यज्ञकर्मसमारंभाद् भवन्तो राजशासनात् ।
८] इष्टिं च बहुसाहस्रीं शीघ्रं चाह्वयत द्विजान् ॥६८॥ [८
उपकार्याः क्रियन्तां च राज्ञो बहुगुणान्विताः ।
९] ब्राह्मणावसथाश्चैव क्रियन्तां शतशः शुभाः ॥६९॥ [९
भक्ष्यान्नपानैर्बहुभिः समुपेताः सुनिष्ठिताः ।
१०] तथा पौरजनस्यापि कर्तव्या बहुविस्तराः ॥७०॥ [१०
आवासा बहुभक्ष्याढ्याः सर्वकामैः सुपूजिताः ।

---

१. के भ—स्थाप्या । ज—स्थापत्ये । प—स्थाप्यतां ।

२. प—वै । भ— ये चेह ।

३. प—स्थपतयो ।

४. ज प भ—सर्वत्र श्लोके प्रथमान्तः पाठः । के—पुस्तकस्य प्रथमे पाद एव ।

५. प—शिल्पिनश्चान्ये ।

६. रा ब ल—पूरुषान् सु० । ज भ—०षान् सुबहुश्रुतान् ।
प—पुरुषांश्च बहुश्रुतान् ।

७. ज ल—०समारंभान् । प भ—०समीहंतां ।

८. प—यष्टिं ।

९. प—राज्ञां ।

१०. रा—०वसथश्चैव ।

११. ज—शुभान् ।

१२. प—प्रतिष्ठिताः । भ—सुसंस्कृताः । अपरहस्तेनोत्तरपार्श्वे ।

१३. ल—नास्ति ।

१४. प—आभासा बहुभक्ष्याश्च ।

१५. ल—नास्ति ।

११] तथा जानपदस्येह[1] कर्तव्यं बहुभोजनम् ॥७१॥ [१२
कर्तव्यमन्नं[2] विधिवत् सत्कृत्य न तु पीडया[3] । [१३
१२] सर्ववर्णा[4] यथा पूजां प्राप्नुवन्ति सुसत्कृताः ॥७२॥
नावमानः प्रयोक्तव्यः कामक्रोधवशैः[5] क्वचित् । [१४
१३] यज्ञकर्मसु ये व्यग्राः पुरुषाः शिल्पिनस्तथा ॥७३॥
पूजा कार्या विशेषेण तेषामपि यथाक्रमम् । [१५
१४] यथा सर्वं सुविहितं[6] न किञ्चित् परिहीयते ॥७४॥
तथा भवन्तः कुर्वन्तु प्रीतिस्निग्धेन चेतसा । [१६
१५] ततः सर्वे समागम्य वसिष्ठमिदमब्रुवन् ॥७५॥ [१७पू
यथाकृत्यं[7] करिष्यामो न किञ्चित्परिहास्यते । [१८
१६] ततः सुमन्त्रमाहूय वसिष्ठो वाक्यमब्रवीत् ॥७६॥
निमन्त्रयस्व नृपतीन् पृथिव्यां ये च धार्मिकाः । [१९
१७] ब्राह्मणान् क्षत्रियान् वैश्यान् शूद्रांश्चापि सहस्रशः[8] ॥७७॥
समानयस्व सत्कृत्य सर्वदेशेषु[9] मानवान् । [२०
१८] मिथिलाधिपतिं शूरं[10] जनकं दृढविक्रमम् ॥७८॥
निष्ठितं सर्वशास्त्रेषु सर्ववेदेषु[11] निष्ठितम् । [२१

---

१. ज प भ—जनपदस्येह ।
२. प भ—दातव्यमन्नं ।
३. प—पीडय ।
४. रा ज ब ळ प—सर्वे वर्णा ।
५. के रा ज भ—कामक्रोधवशः । प—कामक्रोधकृतः ।
६. ब—सुखं ।
७. प—यथोक्तं तत् ।
८. भ—शूद्रांश्चापीह सर्वशः ।
९. ब—सर्वदेवेषु ।
१०. प—शूरं (?) ।
११. प भ—तथा वेदेषु ।

१९] समानय महाभागं स्वयमेव सुसत्कृतम् ॥ [2]७९॥
पूर्वं सांबन्धिकं ज्ञात्वा ततो वाक्यं ब्रवीमि ते । [२२
२०] तथा काशिपतिं शूरं सततं प्रियवादिनम् ॥८०॥ [२३पू
वयस्यं राजसिंहस्य तमानय यशस्विनम् । [२५उ
२१] तथा केकयराजानं वृद्धं परमधार्मिकम् ॥८१॥
श्वशुरं राजसिंहस्य तमानय यशस्विनम् । [२४
२२] अङ्गेश्वरं तथा स्निग्धं लोमपादं सुसत्कृतम् ॥८२॥ [२५पू
सुव्रतं देवसङ्काशं स्वयमेनं त्वमानय । [N
२३] प्राच्यांश्च सिन्धुसौवीरान् सुराष्ट्रां ये च मानवाः ॥८३॥
दाक्षिणात्यान् नरेन्द्रांश्च सर्वानानय मा चिरम् । [२८
२४] अतिस्निग्धाश्च येऽन्येऽपि राजानः पृथिवीश्वराः ॥८४॥
तानप्यानय वै क्षिप्रं सानुगान् सहबान्धवान् । [२९
२५] वसिष्ठवाक्यं तच्छ्रुत्वा सुमन्त्रस्त्वरितस्तदा ॥८५॥
व्यादिशत् पुरुषांस्तत्र राज्ञामानयने बहून् । [३०

१. प भ—तमानय ।
२. ल—नास्ति ।
३. रा—काशपतिं ।
४. ल—तथा मानय ।
५. अ प—सपुत्रं त्वमिहानय । भ—सुमंत्र त्वमिहानय ।
६. ल—स्वसत्कृतं ।
७. प—स्वयमेव ।
८. प -सुराष्ट्रावन्त्यमागधान् ।
९. प—सुव्रत ।
१०. प—ये चान्ये ।
११. ल—पृथिवीपते ।
१२. अ प भ—सह बान्धवैः ।
१३. प—सुमंत्रुकामाथ चोत्सुकः ।

२६] स्वयमेव च धर्मात्मा प्रययौ राजशासनात् ॥[1]८६॥
सुमन्त्रः प्रयतो भूत्वा समानेतुं महीक्षितः । [३१
२७] ततः कर्मान्तिकाः सर्वे वसिष्ठाय महात्मने ॥८७॥
सर्वे[2] निवेदयन्ति[3] स्म यज्ञियानुपकल्पितान्[4] । [३२
२८] ततः प्रीतो द्विजश्रेष्ठस्तान् सर्वान् पुनरब्रवीत् ॥८८॥ [३३
भवद्भिर्न यथा यज्ञे परिहास्येत[5] किञ्चन ।
२९] नावज्ञया प्रदातव्यं किञ्चिद्[6] वा केनचित् क्वचित् ॥८९॥
अवज्ञया हि यद्दत्तं तद्दातुर्[7]दोषमावहेत् । [३४
३०] ततः कैश्चिदहोरात्रैरुपायाता[8] महीक्षितः ॥९०॥
रत्नान्यादाय सुबहु[9] राज्ञो दशरथस्य च[10] । [३५
३१] ततो वसिष्ठः सुप्रीतो राजानमिदमब्रवीत् ॥९१॥
उपायाता[11] नरव्याघ्र राजानस्तव शासनात् । [३६
३२] मयाऽभिसंत्कृताः[13] सर्वे[12] यथावत् पूजिताश्च[14] ते[15] ॥९२॥

---

१. प—नास्ति ।
२. प—सर्वान् ।
३. ज—निवेदयंते ।
४. रा ज—यज्ञेयानु० । ब ल—याज्ञेया० ।
५. रा—परहास्येति । ज ल भ—परिहास्यति ।
६. रा—किञ्चित्का ।
७. ज—तद्दत्तं दोष० । प— दातुस्तद्दो० ।
८. कै—०रात्रैरुपायातां । ब—०त्रैरुपयाता ।
९. रा ज ल भ—सुबहून् । प—बहवो ।
१०. ज प भ—ह ।
११. प—उपयाता । भ—उपायातास्तु ।
१२. भ—ते सर्वे । उत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन ।
१३. प—मयापि सत्कृता । मयाभिपूजिता ।
१४. भ—सत्कृताश्च ।
१५. रा—वै ।

यथावद् संभृतं सर्वं पुरुषैः स्वैः[1] समाहितैः । [३७
३३] संप्राप्ते च भवेद्धृष्टो[2] यज्ञे संभारसंभृते ॥[3]९३॥ [N
सर्वकामैरुपहृतैरुपपन्नं[4] समन्ततः । [३८उ
३४] क्रियतां वचनान्मह्यमृष्यशृङ्गस्य[5] चैव हि ॥९४॥
शुभे दिवसनक्षत्रे[6] निर्यातुं जगतीपतिः[7] । [४०
ततो वसिष्ठप्रमुखाः सर्व एव द्विजातयः ।
३५] अश्वमेधं पुरस्कृत्य यथाकर्मारभंस्तदा ॥[8]९५॥ [४२

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे
यज्ञारंभो नाम नवमः सर्गः ।

१. प—सुसमाहितैः ।
२. कै—भवेद्दृष्टो ।
३. प—सुमन्त्रश्चावहृष्टो यज्ञसंभारसंभृतः ।
४. ज—सर्वकामैरुप॰ । प—सर्वकामैरुपहृतैरुपपन्नः ।
५. प—वचनं न्याय्यमृष्य॰ ।
६. रा—दिवसि नक्षत्रे । ज—नक्षत्रादिवसे । प—दिने च नक्षत्रे ।
७. प—निर्यातुं पृथि [वी ?] पतिः ।
८. प—अरण्यश्चैव पुरस्कृत्य यज्ञकर्मारभंस्तदा ।
यज्ञवाटगताः सर्वे यथाकामं यथाविधि॥

अथ संवत्सरे पूर्णे प्राप्ते तस्मिंस्तुरङ्गमे ।[1]
१] सरय्वा उत्तरे कूले[2] राज्ञो[3] यज्ञोऽभ्यवर्तत ॥१॥ [१
ऋष्यशृङ्गं पुरस्कृत्य कर्म चक्रुर्द्विजर्षभाः[4] ।
२] अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञस्तस्य महात्मनः ॥२॥ [२
पू३] कर्म[5] कुर्वन्ति विधिवद् यज्ञाङ्ग[6]विधिपारगाः ।
N] यथाविधि यथान्यायं परिक्रामन्ति[7] शास्त्रतः ॥३॥ [३
उ३] प्रवर्ग्यं[8] शास्त्रतः[9] कृत्वा तथैवोपसदं द्विजाः ।
N] चक्रुश्च विधिवत् सर्वं तथैवोद्वास्य कर्म ते ॥४॥ [४
N] अभिष्टुत्यं[10] ततो हृष्टाः सर्वे चक्रुर्यथाविधि ।
उ४] सवनानि[11] यथान्यायं[12] सोमसोमपसत्तमाः[13] ॥५॥[14] [५

---

१. प—अथ प्रदक्षिणं कृत्वा भूमिं प्राप्ते तुरङ्गमे ।
अथ संवत्सरे पूर्णे प्राप्ते तस्मिंस्तुरङ्गमे ॥

२. ल—तीरे ।

३. भ—यज्ञो राज्ञोऽभ्य० ।

४. प—०र्द्विजोत्तमाः ।

५. कै—कर्म कुर्वत । रा—कर्माकुर्वन्त । ब—कर्माकुर्वन्तु ।

६. ब—यज्ञार्था विधिपारगाः ।

७. ब—पर्यक्रामन्त ।

८. प—प्रवर्ग्यान् ।

९. भ—शास्त्रतश्चक्रुस् ।

१०. प—अभिष्टुत्यं ।

११. ब—सस्नानानि ।

१२. ल—यथान्याय्यं ।

१३. ज प भ—सोमे सोमपस० ।

१४. प—अतः परमधिकः पाठः—

नानाहुतमभुत्[1] तत्र संस्मितं[2] वापि[3] किञ्चन ।
८] दृश्यते ब्रह्मवत् सर्वं क्रमयुक्तं च[4] चक्रिरे ॥८॥[5] [१०

प्रायश्चित्तविधानानि चक्रुर्ज्ञानवशेषतः ।
सवनानि च सर्वाणि यथाकालं प्रचक्रिरे ॥
नासीदसत्कृतं तेषां स्खलितं वापि किञ्चन ।
परेण अवधानेन ते क्रतुं वै प्रचक्रिरे ॥
न तेष्वहस्सु कृपणः क्षुधितो वापि दृश्यते ।
तिर्यक्ष्वपि कुतोऽन्येषु भूतेषु परिकर्षितः ॥
कोटिशो ब्राह्मणास्तत्र तथा शतसहस्रशः ।
तस्मिन् यज्ञमुपावृत्ता नानादेशनिवेशिनः ॥
ब्राह्मणानां सहस्राणि तत्र तानि महामखे ।
पृथग्बुभुजिरेऽन्नानि स्वादूनि विविधानि च ॥
रुक्मपात्रीष्वनेकासु राजतीषु तथैव च ।
द्विजातयोऽन्नपानानि तत्राभुञ्जन्त चासकृत् ॥

१. रा ज ळ—नानाहूताम॰ । प—नचायुक्तमं ?
२. कै रा—सम्मितं । ळ—सहितां । प—समितं ।
३. कै प भ—चापि ।
४. प्रचक्रिरे ।
५. कै—पुस्तकस्योत्तरपार्श्वे ऽतः परमपरहस्तेन विन्यस्तोऽधिको यज्ञ-
सम्मतः पाठः—

न तेष्वहःसु कृपणः क्षुत्क्षामो वाप्यदृश्यत ।
तिर्यक्ष्वपि कुतोऽन्येषु भूतेषु परितर्पितः ॥
कोटिशो ब्राह्मणास्तत्र तथा शतसहस्रशः ।
तस्मिन् यज्ञे तु ये वृत्ता नानादेशनिवासिनः ॥
नाविद्वान् ब्राह्मणस्तत्र नादाताप्युपरोपि वा ।
नानाहिताग्निर्नायज्वा नाव्रती पतितो न च ॥
ब्राह्मणानां सहस्राणि शतानि च महामखे ।
पृथग्बुभुजिरेऽन्नानि स्वादूनि विविधानि च ॥
रुक्मपात्रीष्वनेकासु राजतीषु च सर्वशः ।
द्विजातयोऽन्नपानानि तत्राभुञ्जंत सत्कृताः ॥

पू६] न तेष्वहःसु ब्राह्मण्यं क्षुभितं दृश्यते क्वचित्[1] ।
पू८] नाविद्वान् ब्राह्मणः कश्चिद् दृश्यते तत्र वै तदा[2] ॥७॥ [११
अनाथा भुञ्जते नित्यं नाथवन्तश्च भुञ्जते ।
११] तापसा भुञ्जते चापि[3] भुञ्जते श्रमणा[4] अपि ॥८॥ [१२
अनाथानां तथा स्त्रीणां बालवृद्धस्य चैव हि ।
१२] बुभुक्षितानां दीनानां सुतृप्तिरुपलभ्यते ॥९॥ [१३
पू१३] दीयतां दीयतामन्नं वासांसि विविधानि च ।
N] यथोचितसमाख्यानैः कर्म चक्रुरतन्द्रिताः ॥१०॥ [१४
अन्नपानं च सुबहु दृश्यते पर्वतोपमम् ।[5]
१४] दिवसे दिवसे तत्र भक्षन्तु विधिवत्तदा ॥११॥ [१५
अन्नं हि रसवत् स्वादु प्रशंसन्ति द्विजर्षभाः ।[6]
१५] अहो स्म तृप्ता भद्रं व इति[7] स्म श्रूयते भृशम्[8] ॥१२॥[8] [१७
अलङ्कृताश्च राजानो ब्राह्मणान् पर्यसेवयन्[9] ।[10]
१६] सुप्रीतमनसः सर्वे सुमृष्टमणिकुण्डलाः ॥१३॥ [१८

---

१. प—क्षुधितं ।

२. प—गतोन्युगतस्तथा ।

३. प—चैव ।

४. प—चारणा ।

५. भ—दिवसे तत्र भक्षन्तु विधिवद् विधिवत्तदा ।
दिव से दिवसे कृते न्यंजनानां चयस्तथा ॥
ल—नास्ति ।

६. प—अहो स्वादु प्रभूतं च विविधनसमीदृशम् ।

७. प—शसंसुरिति वै द्विजाः ।

८. ल—नास्ति । प—पुस्तके ऽत आरभ्य २८ श्लोकान्तः पाठः ४० श्लोकात्परं टिप्पण्यां द्रष्टव्यः ।

९. भ—पर्यवेशयन् ।

१०. प—राजानोऽभ्यागतास्तत्र स्वयमेव स्वलंकृताः ।

कर्मान्तरे तु संप्राप्ते हेतुवादान् बहूंस्तदा ।
१७] प्राहुः सुवाग्मिनो वीरा:[2] परस्परजिगीषवः ॥[3]१४॥ [१६
दिवसे दिवसे चक्रुः संस्तरे कुशले द्विजाः ।
२०] सर्वं कर्म यथावत्तद् यथा शास्त्रेण नोदितम् ॥१५॥ [२०
पू२१] नाषडङ्गविदत्रासीन्नाव्रतो नाबहुश्रुतः ।
N] सदस्यास्तत्र वै राज्ञो नावादकुशला द्विजाः ॥१६॥ [२१
प्राप्ते यूपोच्छ्रये तस्मिन् षड् बैल्वाः खादिरास्तथा ।
२२] तथा पर्णमयाश्चैवं षडन्ये बिल्वसंमताः ॥१७॥ [२२
श्लेष्मातकमयाश्चान्ये पूतिदारुमयास्तथा ।
२३] द्वावास्तां तत्र विहितौ बाहुभ्यामुपरिग्रहौ ॥१८॥[11] [२३
विन्यस्ता विधिवत् सर्वे शिल्पिभिः सुकृता दृढा:[12] ।

---

१. ज—च ।
२. भ—धीरा: ।
३. कै—अत: परमपरहस्तेन विन्यस्त: वङ्गशाखासम्मतोऽधिक: पाठ:—

ऋष्यश्रृङ्गादयो मंत्रैः शिक्षाक्षरसमन्वितै: ।
आह्वयांचक्रिरे तत्र शक्रादिविबुधोत्तमान् ॥
सर्पिभिर्मधुरैः स्निग्धैर्मन्त्राह्वानैर्यथार्हत: ।
होतारो जुहियामासुर्हविर्भागैर्दिवोकस: ।

४. कै ज—कुशला ।
५. ज—यथावत्तु ।
६. ज—चैला । ल—वैला ।
७. ल—स्वर्णमया० ।
८. भ—तथान्ये ।
९. कै—श्लेष्मातकमथाप्नोति । रा—श्लेष्मांतकमथान्येपि ।
ज—श्लेष्मांतकमयाश्चान्ये । भ—श्लेष्मांतकयश्चान्यः ।
१०. ज—प्रतिदारुम० । भ—०रुमयस्तथा ।
११. कै—अत: परमुत्तरपार्श्वेऽपरहस्तविन्यस्तोऽधिक: पाठ:—

यामोच्छ्रायपरिणाहो यूपान्य: सर्वकांचन: ।
यज्ञे समभवत्तत्र शोभार्थमुपकल्पित: ॥

१२. रा—द्विजा: ।

२५] अष्टाश्रयो[1]ः सर्व एवं[2] श्लक्ष्णरूपसमन्विताः ॥१९॥ [२६
आच्छादितास्ते वासोभिः कुशलैः शिल्पिकर्मणि[3] । [२७पू
२६] स चैत्यो[4] राजसिंहस्य सञ्चितैः[5] कुशलैर्द्विजैः ॥२०॥
उ२८] गरुडो रुक्मपक्षो[6] वै त्रिगुणोऽष्टादशात्मकः[7] । [२९
नियुक्तास्तत्र पशवस्तास्ता उद्दिश्य देवताः ॥२१॥ [३०पू
२९] जलेचराः स्थलेचराः[8] अन्तरिक्षचरास्तथा । [३१पू
पतङ्गाः पक्षिणश्चैव तथा वनचराश्च ये ॥२२॥ [३०उ
३०] ऋषभाः सर्व एवैते नियुक्ताः शास्त्रतस्तथा । [३१उ
उ३१] पशूनां त्रिशतं[9] त्वासीद् यूपेषु[10] नियतं तदा ॥२३॥
N] स यज्ञो वर्त्तते[11] तत्र राज्ञो दशरथस्य ह[12] । [३२
उ३२] कौसल्या[13] तं हयं तत्र परिचार्य समन्ततः ॥२४॥
विषाणैर्विसंसारै[14]नं त्रिभिः परमया मुदा । [३३

---

१. ज—अष्टापदाः । कै—अष्टास्वाश्र० । इति केनाचित्संशोधितः पाठः ।
२. कै—एवैते । इति शोधितः पाठः ।
३. ज—शिल्पकर्मणि ।
४. ज—सुवैद्यो ।
५. रा ल—संचितैः ।
६. रा—पद्मपक्षो ।
७. ज ल भ—०णो द्वादशात्मकः ।
८. ल—स्थलचरा ।
९. ब ल—त्रिशतं ।
१०. ल—०सीद्यूपेषु ।
११. ज भ—ववृधे । कै—पुस्तके च ववृते इति पाठस्थाने संशोध्य ववृधे इति पाठः कृतः ।
१२. कै ज भ—च ।
१३. ज भ—कौशल्या ।
१४. कै रा—विषसानैनं । ज—विषसान्नेन । भ—विषसासैनं ।

N] पतत्रिणा तदा सार्धं तदामूले समाविशत् ॥२५॥
पू३४] अवसद्रजनीमेकां कौसल्या धर्मकांक्षया । [३४
N] होताऽध्वर्युस्तथोद्गाता संग्रहं समयो यथा ॥२६॥
N] महिष्यः परिचर्या च तामवापुस्तथाऽपराः । [३५
उ३५] सत्रिणस्तस्य तु वपामुद्धृत्य नियतेन्द्रियम् ॥२७॥
पू३६] ऋत्विजश्च सुसंपन्नाः श्रपयाञ्चक्रिरे वपाम् । [३६
उ३७] हयस्य यानि चाङ्गानि तानि सर्वाणि ते द्विजाः ॥२८॥
पू३८] अग्नौ प्रास्यन्ति विधिवत् समस्तं वै हयं तदा । [३८
N] प्लक्षशाखासु यज्ञानामन्येषां क्रियते स्रुवः ॥२९॥
अश्वमेधस्य चैकस्य वैतसः स्रुवः इष्यते । [३९
N] त्र्यहोऽश्वमेधः संख्यातः कल्पसूत्रेषु वै द्विजैः ॥३०॥
चतुर्थो यस्त्वहस्तस्य प्रथमं परिकल्पितम् । [४०

---

१. कै––'गुदमूले' इत्यपरहस्तेन शोधितः पाठः ।
ल––तदामूलो । भ–तत्र मूले ।
२. रा ल––मम यो यथा । भ–समयोचितं ।
३. ज––०पुस्तथापरां ।
४. ज ल––मंत्रिणस्त० ।
५. ल––वुद्धित्यजते । रा ज ब–···वुद्धृत्य
६. ज––०न्द्रियां । भ–नियतेन्द्रियाः ।
७. ज––सुसस्पर्शाः ।
८. कै––नुपयांच० । रा––स्रपयांच० । ज–श्रमयांच० ।
९. ज––कृपां ।
१०. प––जुहिविरे सम्यक् ।
११. प––अतः परमधिकः पाठः––
आगत्य देवताः सर्वा जगृहुर्भागमीप्सितं
१२. प––हविः । भ–स्रुवः ।
१३. प––अंश । भ–अंग ।
१४. ज––यस्तुहस्तस्य ।

N] उक्थ्यो[1] द्वितीयं[2] संख्यातमतिरात्रं[3] तथोत्तरम् ॥३१॥ [४०
विचारास्तत्र बहवो विहिताः शास्त्रदर्शनात् । [४१
N] ज्योतिर्नामायुषी[4] चैव अतिरात्रौ विनिर्मितौ ॥३२॥
N] अभिजिद्विश्वजिच्चैव अप्तोर्यामो[5] महाव्रतः[6] ।[7] [४२
उ३९] प्राचीमध्वर्यवे राजा दिशं स्फीतां ददौ तदा ॥[8]३३॥
दक्षिणां ब्रह्मणे[9] होत्रे प्रतीचीमददाद्दिशम् ।[10] [४३
४०] उद्गात्रे च [11]तथोदीचीं दक्षिणैषा विनिर्मिता ॥३४॥
पू४१] अश्वमेधे महायज्ञे पुराकल्पे स्वयंभुवा ।[12] [४४
N] क्रतुं संस्थाप्य[13] तु तदा न्यायतः पुरुषर्षभः[14] ॥३५॥
ऋत्विग्भ्यः प्रददौ राजा धरां तां क्रतुवर्धनः । [४५

---

१. ज—तक्ष्णो । ब ल—उक्थो । प—उक्थो । भ—उक्थो ।
२. के रा ज ब ल—द्वितीयः । रा—द्वितीयाः ।
३. ल—०तं सहरात्रं त० । प भ—०मतिरात्रमथोत्तरं ।
४. ब ल प—ज्योतिर्ग्रामायुषी । भ—ज्योतिर्गवायुषी ।
५. के—प्राप्तो वामो । रा ज ब ल—प्राप्तोर्यामो ।
प भ—आप्तोर्यामो ।
६. रा ज—महाव्रताः ।
७. प—अतः परमधिकः पाठः—
ततो राजा यथान्यायं दक्षिणां व्यदधत्तदा ।
८. प—प्राचीं होत्रे ददौ स्फीतां दिशं बहुबलार्जिताम् ।
९. रा ज ब ल—ब्राह्मणे (इत्यपपाठः) ।
१०. प—अध्वर्यवे प्रतीचीं च दक्षिणां [।] ब्रह्मणे तथा ।
११. भ—ततोदीचीं ।
१२. प—अतः परमधिकः पाठः—
समग्रा पृथिवी दत्ता चातुर्होत्रस्य दक्षिणा ।
१३. प—समाप्य ।
१४. के रा ज ब— ऋषभाः ।

N] ऋत्विजोऽथाब्रुवन् सर्वे[1] राजानं गतकल्मषम् ॥३६॥
भवानेव महीं स्फीतामेकः शासितुमर्हति[2] । [४७
N] विपाप्मा भव राजेन्द्र अस्माकं पुष्टिमावह[3] ॥३७॥ [N
न भूम्या कार्यमस्माकमशक्ताः[4] पालने वयम् ।
N] रताः स्वाध्यायकरणे वयं नित्यं हि भूमिप ॥३८॥
निष्कृतिं त्वं नरश्रेष्ठ ह्यस्मभ्यं[5] दातुमर्हसि ।[6] [४८
N] गवां शतसहस्राणि दश तेभ्यो ददौ नृपः ॥३९॥ [५०उ
दशकोटीः[7] सुवर्णस्य[8] रजतस्य चतुर्गुणम् ।[9] [५१

---

१. प—ऋत्विजस्तेऽब्रु० ।

२. रा—शासितुमर्हसि ।

३. प भ—तुष्टिमावह ।

४. भ—कार्यमस्माकं न शक्ताः ।

५. ज ल भ—अस्मभ्यं ।

६. प—अस्याश्च निःकृतिः राजन्नस्मभ्यं दातुमर्हसि ।
तेषां श्रुत्वा वचस्तथ्यं राजा वै राष्ट्रवर्धनः ।

७. कै रा ज ल—कोटि ।

८. ज—सहस्रस्य ।

९. प—पुस्तके त्रयोदशश्लोकात्परः पाठोऽत्रेत्थं द्रष्टव्यः—
भृत्यवत् प्रयतो यज्ञे ब्राह्मणान् परिवेषयन् ।
सुप्रीतमनसः सर्वे प्रमृष्टमणिकुण्डलाः ॥
सवया वाग्मि[नो]वीराः परस्परजिगीषिवः ।
ऋग्यजुःश्च्यादयो मन्त्रैः शिक्षास्वरसमन्वितैः ॥
आह्वयांचक्रिरे तत्र शक्रादीन् विबुधोपमान् ।
ध्वयिभिर्मधुरैः स्निग्धैर्मन्त्राह्वानैर्यथार्हतः ॥
होतारो जुहवामासुर्हविर्भागं दिवोकसां ।
दिवसे दिवसे चक्रुः संस्कारकुशला द्विजाः ॥
सर्वं कर्म यथावत्तथ्यथा शास्त्रेण चोदितम् ।
नाषडंगविदत्रासीत्सदस्यो नाबहुश्रुतः ॥

४३] ऋत्विजस्ते ततः सर्वे आददुः संहिताः वसु ॥४०॥

४४] ऋष्यशृङ्गाय महते वसिष्ठाय च धीमते । [५२

१. कै रा ब—आददुर्मंहिताः ।

न सूत्रं कल्याकुशला नवाकुशलस्तथा ।
उच्छ्रिताश्चाभवन् यूपाः षड् बैल्वाः खादिराश्च षट् ॥
तावन्त एव पालाशास्तथैवोदुम्बराः पृथक् ।
श्लेष्मातकमयश्चैको देवदारुमयस्तथा ॥
द्वावास्तां तत्र विहितौ बाहुभ्यामपरिग्रहौ ।
महोच्छ्रायपरीणाहो यूपोन्यः कांचनस्तथा ॥
यज्ञे समभवत्तत्र शोभार्थमुपकल्पितः ।
विन्यस्ता विधिवत् सर्वे शिल्पिभिः सुकृता दृढाः ॥
महाश्रयाः सर्व एव श्लक्ष्णरूपसमन्विताः ।
आच्छादितास्ते वासोभिः कुशलैः शिल्पिकर्मणि ॥
विततश्चाभवंस्तस्यो ब्राह्मणैर्यज्ञकर्मणि ।
महायूपोच्छ्रयस्तेऽस्तु सर्वतः समलंकृतैः ॥
रराज सुभृशं यज्ञः कल्पवृक्षैरिवोच्छ्रितैः ।
विविधाश्चाभवन् घोषा ब्राह्मणैर्यज्ञकर्मभिः ॥
अग्निवक्रः कृतश्चापि गरुडः कांचनेष्टकः ।
नियुक्तस्तत्र पशवस्तास्ता उद्दिश्य देवताः ॥
जलेचराः स्थलचरा अंतरिक्षचराश्च ये ।
ऋषभाः सर्व एवैते नियुक्ताः शास्त्रतस्तथा ॥
नानासत्त्वार्षभाश्चैव हयमेधे महाक्रतौ ।
नानासरीसृपाश्चैव नानौषध्यश्च कल्पिताः ॥
पशूनां त्रिशतं चासीद्यूपेषु नियतं तदा ।
अश्वरत्नं चावभृथे प्रोक्षितं विश्वदैविकं ॥
स यज्ञो ववृधे तत्र राज्ञो दशरथस्तथा ।
कौसल्या तं हयं तत्र परिगम्य प्रदक्षिणम् ।
सम्यगभ्यर्चयांचक्रे गन्धमाल्यविभूषणैः ॥
अध्वर्युसहिता चैनं समालभ्य शुचिस्मिता ।
रजनीं व्युर्युपोष्का कौशल्या पुत्रकाम्यया ॥

N] ततस्ते न्यायतः कृत्वा प्रतिभागं द्विजोत्तमाः ॥४१॥ [५३पु
दीनान्धकृपणानां च वृद्धानां चैव कलत्रिणाम् ।
N] स्त्रीणां हतप्रवीराणां वृद्धानां बालपुत्रिणाम् ॥४२॥ [N
व्याधिकर्षितगात्राणां गुर्वर्थं चाभियाचताम् ।
N] यियक्षूणां दरिद्राणां परराष्ट्रनिवासिनाम् ॥४३॥ [N
सुप्रीतमनसः सर्वे प्रत्यूचुर्मुदितास्तदा । [५३उ
N] ततस्तु सर्वलोकेभ्यो हिरण्यस्य समुद्यताम् ॥४४॥

१. प भ—प्रविभागं ।
२. प—विकलानां ।
३ रा—बालपुत्रिणां । उ—बालिपुत्रियां ।
४. रा ज—चाभियाचितां । प—चाभिजाचतां.
५. ज—ययक्षूणां ।
६. प – समूचा मुदितास्तदा । भ—प्रददुर्मुदितास्तदा ।
७. स भ—समुद्यतं । प—समुद्यता ।

तामश्वमुपतिष्ठन्त्याः कौशल्यायास्ततो द्विजाः ।
ऋष्यशृङ्गादयः प्रीताः प्रायुञ्जन्त तदाशिषः ॥
अश्वस्य विधिवत्तत्र परिवार्य समन्ततः ।
विप्राशीर्भिशशासैनं त्रिभिः परमया मुदा ॥
पतत्रिणा तदा सार्धं तत्रामूले समाविशन् ।
अवसद्रजनीमेकां कौशल्या धर्मकांक्षया ।
होताध्वर्युस्तथोद्गाता मंत्रवत्समयोजयन् ॥
महिष्यः परिचर्य्यां च तामवापुस्तथा पराम् ।
ऋत्विजस्तस्य वचसा वपामुद्धृत्य नियतेन्द्रियाः ॥
ऋत्विङ्मंत्रार्चितामग्नौ जुहावाह्वयन् सुरान् ।
धूमं तस्य नृपो घ्रात्वा जिघ्रन्तिस्म वराशिषः ॥
यथाकालं यथान्यायमवर्तत स क्रतुः ।
हुयस्य यानि चांगानि तानि सर्वाणि वै द्विजाः ॥

कोटीशतं सुवर्णस्य कुलस्योद्भावनं शुभम् । [५४
N] ततः प्रीतमना राजा प्राप्य यज्ञमनुत्तमम् ॥४५॥[3]
स्वर्ग्यं पाप्मापहं चैव दुष्प्रापं सर्वपार्थिवैः । [५८
ततोऽब्रवीदृश्यशृङ्गं राजा दशरथस्तदा ॥४६॥
४६] पुत्रानिच्छाम्यहं विप्र कुलस्योद्भावनान् शुभान् । [५९
पु४७] तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ॥४७॥
भविष्यन्ति सुता राजंश्चत्वारस्ते कुलोद्वहाः । [६०
N] लोकपालोपमा वीराः परदर्पविनाशनाः ॥४८॥ [N
ऋष्यशृङ्गस्तु मेधावी राजानं पुनरब्रवीत्। [१५.१
१५.१]इष्टिं करोमि पुत्रीयां भवतः पुत्रकारणम् ॥[7]४९॥ [२पु
पु२] ततः प्रचक्रे तामिष्टिमृषिपुत्रः समृद्धये ।

---

१. प—कोटीः शत० ।

२. प—कुशलेभ्यो ददौ नृपः ।

३. प—अतः परमधिकः पाठः—

दक्षिणां च प्रगृह्याथ सुप्रीतमनसो द्विजाः ।
ततश्च यानकाः सर्वे ऋषयश्च तपोधनाः ॥
ऊचुर्दशरथं तत्र कामं ध्यायेति वै तदा ।
तानब्रवीद्द्रष्टुमना राजा दशरथो द्विजान् ॥
इच्छामि चतुरः पुत्रानुदारान् ख्यातविक्रमान् ।
तथेति चैव राजानं तमूचुर्ब्रह्मवादिनः ।
यथाभिलषितान् पुत्रानचिरात्त्वमवाप्स्यसि ॥
इत्यार्षे रामायणे आदिकाण्डे त्रयोदशः सर्गः ।
ऊचुर्दशरथं तत्र कामं प्राप्नुहि पार्थिव ॥

४. म—०थस्तत: ।

५. ज—परदर्पवि० ।

६. के म—पुत्रकारणे ।

७. प—इष्टिं तेऽद्य करिष्यामि पुत्रीयां पुत्रकारणे ।

८. ज—तामिष्टिं मुनिपुत्रः । म—०ष्टिमृषिः पुत्रलब्धये ।

N] दीप्तेऽग्नावजुहोद्धव्यं विधिदृष्टेन[1] कर्मणा ॥५०॥ [३

ततो देवाः सगन्धर्वाः[2] सिद्धाश्च ऋषिभिः सह ।

३] भागप्रतिग्रहार्थं वै[3] पूर्वमेव समागताः ॥५१॥ [४

पु६] अश्वमेधे महायज्ञे राज्ञस्तस्य[4] महात्मनः ।

पु४] ब्रह्मा सुरेश्वरः स्थाणुस्तथा नारायणः प्रभुः ॥५२॥ [N

आजगाम महायज्ञे राज्ञो दशरथस्य तत्[5] ।[7]

N] देवांस्तानागतान सर्वानब्रवीद्द्विजसत्तमः ॥५३॥ [N

प्रसादः क्रियतां राज्ञः प्रसवार्थं हि देवताः ।

N] राजाऽयं धार्मिकः शूरः कृतविद्यः[8] परन्तपः ॥५४॥ [N

प्राप्तवानश्वमेधं च शुद्धात्मा गतकल्मषः ।[9]

N] पुंत्रार्थं[10] तप्यते चैव दीर्घकालं महाद्युतिः ॥५५॥ [N

१. ल—विधिसृष्टेन ।

२ प—सुगंधर्वाः ।

३. ल—०प्रतिग्रहार्थे ।

४. प—ते ।

५. ल—राज्ञो दशरथस्य तत् ।

६. प—च । भ—ते ।

७. ल—नास्ति । प—अतः परमधिकः पाठः:—

तथैव लोकपाल [ा]श्च देवतानां च मातरः ।
यज्ञास्तथैव सर्वे च वेदाश्च साहितास्तथा ॥
इन्द्रश्च भगवान् साक्षान्मरुद्भिरावृतः प्रभुः ।

८. रा—कृतविद्यः । प—कृतविद्यः ।

९. प—अतः परमधिकः पाठः:—

इष्टिं च पुत्रकामोऽन्यां पुनः कर्तुं समुद्यतः ।
तदस्य पुत्रकामस्य प्रसादं कर्तुमर्हथ ॥
अभियाचे स वः सर्वानस्यार्थेऽहं कृताञ्जलिः ।

१०. प—पुत्रार्थे ।

N] प्रयच्छत सुतानस्मै चतुरः कुलवर्धनान् ।
तं तथेत्यब्रुवन् देवा द्विजमुख्यं कृताञ्जलिम् ॥५६॥ [N
१०] भवान् मान्यश्च पूज्यश्च राजा चायं विशेषतः ।
पू११] लप्स्यसे च परं कामं पुत्रार्थं द्विजसत्तम ॥[2]५७॥ [N
N] इष्टिर्हि विधिवत् प्राप्ता राज्ञा दशरथेन वै । [N
११] तथा तमुक्त्वा देवास्तु सर्व एव महाद्युतिम् ॥५८॥[3]
पू१२] अब्रुवंल्लोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं शुभम् ।[4] [५
उ१३] भगवंस्त्वत्प्रसादेन रावणो नाम राक्षसः ॥[5]५९॥
सर्वान् नो बाधते वीर्याद् बाधितुं तं न शक्नुमः । [६
१४] त्वया तस्मै वरो दत्तः प्रीतेन भगवन्पुरा ॥[6]६०॥
उ१५] मानयन्तश्च त्वद्वाक्यं तस्य सर्वं क्षमामहे । [७
पू१७] उद्वेजयति लोकांस्त्रीनुच्छ्रितान् द्वेष्टि दुर्मतिः ॥६१॥
N] शक्रं सुरगणेशं च स दीपयितुमिच्छति । [८
उ१६] ऋषीन् सयक्षगन्धर्वानसुरान् ब्राह्मणांस्तथा ॥६२॥

---

१. के रा ज—चत्वारः ।
२. प—लप्स्यते परमं काममेतदिष्ट्या नराधिपः ।
३. प—इत्युक्त्वान्तर्हिता देवास्तत्र शक्रपुरोगमाः ।
तं दृष्ट्वा विधिवत्ख्यातं क्रियमाणं महर्षिणा ॥
४. ल भ—महत् ।
५. प—उपेत्य लोककर्तारं ब्रह्माणं वचनं महत् ।
ऊचुः प्राञ्जलयः सर्वे प्रजापतिमिदं तदा ॥
६. के प—अतः परमधिकः पाठः—
देवदानवयक्षाणामवध्योऽस्मीति कामतः ।
के—पुस्तकस्याधः पार्श्वेऽन्यतरमपरहस्तेन विन्यासः ।
७. के रा ज भ—तद्वाक्यं । प—ते वाक्यं ।
८. प भ—सर्वं ।
९. रा—उद्वेजयति ।
१०. के प भ—धर्षयितुमिच्छति ।

३१७] अतिक्रामति दुर्धर्षो वरदानेन मोहितः ।[1] [१०
३१८] जलोर्मिमाली तं दृष्ट्वा सागरोऽपि च कंपते ॥६३॥[3] [१०३
उत्पन्नं नो भयं तस्माद्राक्षसो भीमदर्शनात् ।
N] वधार्थं तस्य भगवन्नुपायं वक्तुमर्हसि ॥६४॥ [११
N] एवमुक्तः सुरैः सर्वैर्ब्रह्मा ध्यात्वा ततोऽब्रवीत् ।
हन्तायं विहितस्तस्य वधोपायो दुरात्मनः ॥६५॥ [१२
२१] नागगन्धर्वयक्षाणां देवताऽसुररक्षसाम् ।
अवध्योऽस्मीति तेनोक्तं तथेत्युक्तं च तन्मया ॥६६॥ [१३
२२] अवज्ञाय तु रक्षस्तान् व्याहरन् मानुषाद् वधम् ।[8]
तेनासौ मानुषैर्वध्यो मृत्युर्श्चान्यो न विद्यते ॥६७॥ [१४
२३] तच्छ्रुत्वा तु प्रियं वाक्यं ब्रह्मणा समुदीरितम् ।
गन्धर्वर्षिसमायुक्ताः प्रहृष्टा ऋषिदेवताः ॥६८॥ [१५

१. प—अतः परमधिकः पाठः—

देवर्षियक्षगंधर्वान् सुवाणरान् मानुषांस्तु सः ।
अभ्यायतः पीडयति वरदानेन दर्पितः ॥
न तत्र सूर्यस्तपति न भयाद्वाति मारुतः ।
नाग्निर्ज्वलति वै तत्र यत्र तिष्ठति रावणः ॥

२. प—समुद्रोऽपि ।
३. प—अतः परमधिकः पाठः—

नष्टो वैश्रवणस्त्यक्त्वा लङ्कां तद्वीर्यपीडितः ।
तस्मान्नः पाहि भगवन् रावणाल्लोकरावणात् ।

४. प—भीमकर्मणः ।
५. प—कर्तुमर्हसि ।
६. अ—दुरात्मना ।
७. कै—रक्षास्तान् ।
८. प—अवज्ञाय तु तद्रक्षो नोदाहरत मानुषान् ।
९. प—मृत्युर्नान्योऽस्य ।
१०. भ—वाक्यमब्रवन् ।

२४] एतस्मिन्नन्तरे विष्णुं विधिना सर्व एव ते[1] ।[2] [१७पू
N] देवता ब्रह्मणा सार्धं तस्थुस्तत्र समाहिताः ॥६९॥
अब्रुवंस्ते तदा सर्वे सुराः संपूर्णमानसाः । [१८
N] त्वां नियोक्ष्यामहे[3] विष्णो लोकानां क्रियतां[4] हितम्॥७०॥[१९
एवमुक्तोऽब्रवीद् विष्णुस्तथेति सुरमण्डलम् ।
N] तस्य ते[5] तद्वचः श्रुत्वा व्यक्तमूचुरिदं सुराः ॥७१॥ [N
एष राजा दशरथो हयमेधने दीक्षितः[6] ।[7]
N] धर्मशीलो गुणश्लाघ्यः सत्यवादी दृढव्रतः ॥७२॥ [N
अस्य भार्यासु तिसृषु ह्रीश्रीकल्पासु धीमतः[8] ।
३०] विष्णो पुत्रत्वमागच्छ कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ॥७३॥[9] [२१

१. प—विष्णुस्तत्रायं भगवान् स्वयं ।
२. प—अतः परमधिकः पाठः—
ब्रह्मणा मनसा ध्यातस्तद्भावाभिसंधितः ।
अब्रवीत्तं ततो ब्रह्मा विष्णुं सुरगणैः सह ॥
अत्तानामस्मि लोकानामार्तिघ्नो मधुसूदनः ।
याचामहेऽतस्त्वामार्ताः शरणं नो भवाच्युत ॥
अत किं करवाणस्मि विष्णुस्तानब्रवीत्ततः ।
३. रा—त्वं नि० । भ—त्वानि । प—त्वा नि ।
४. ल—क्रियते ।
५. प—तद्वचनं ।
६. प—पुत्रार्थं दीक्षितः वशी ।
७. प—अतः परमधिकः पाठः—
अश्वमेधेन यज्ञेन देवतानामनुग्रहात् ।
८. प—ह्रीश्रीकीर्तिषु धर्मतः ।
९. प—चतुर्धा त्वं विभज्य स्वं प्रादुर्भवितुमर्हसि ।
स विज्ञप्तस्तदा देवैः साक्षान्नारायणः प्रभुः ॥
तानुवाच ततो देवानिदं वचनमर्थवत् ।
किं मया तत्र कर्तव्यं प्रादुर्भूतेन वः सुराः ॥
कार्यं कुतो वापि भयं युष्माकमिदमीदृशम् ।

त्वं तत्र मानुषो भूत्वा प्रवृद्धं लोककण्टकम् ।
N] अवध्यं दैवतैर्विष्णो समरे जहि रावणम् ॥७४॥ [२२
स हि देवर्षिगन्धर्वान् सिद्धानसुरमहोरगान् ।
N] राक्षसो रावणो नाम वीर्योत्सेकेन बाधते ॥७५॥ [२३

इति तस्य वचः श्रुत्वा विष्णोरूचुरिदं सुराः ॥
राक्षसान्नो भयं विष्णो रावणाल्लोकरावणात् ।
मानवीं तनुमास्थाय समुद्धर्तुं त्वमर्हसि ॥
त्वत्तो हि नान्यस्तं पापं शक्तो हन्तुं दिवौकसाम् ।
स दीर्घं तप्तवान् कालं तपोऽत्युग्रमरिंदम ॥
तेनायं परितुष्टोऽस्य बभूव प्रपितामहः ।
तस्मास्मै प्रददौ तुष्टो वरदो भगवान् पुरा ॥
अभयं सर्वभूतेभ्यो वर्जयित्वा तु मानुषान् ।
ततो नृपवरस्यैवं तस्य नान्यत्र मानुषात् ॥
वधात्त्वयमतश्चैनं गत्वा मानुषतां जहि ।
स हि देवर्षिगंधर्वांस्तपः सिद्धांश्च मानुषान् ॥
वरदानमदोन्मत्तो बाधते राक्षसाधमः ।
यज्ञहा ब्रह्महा चैव ब्रह्मद्विट् पुरुषादकः ।
अवध्यो वरदानेन रावणो लोककण्टकः ॥
तेनाक्रान्ता नृपतयः सरथाः [सह] कुंजराः ।
हता विप्रद्रुताश्चान्याः प्राद्रवंत दिशो दश ॥
भक्षिता ऋषयश्चैव तथैवाप्सरसां गणाः ।
रक्षः सत्त सदा लोकान् क्रीडन्निव स बाधते ॥
तेन तप्तं तपस्तीव्रं दीर्घकालमरिंदम ।
येन तुष्टोऽभवद् ब्रह्मा लोककृल्लोकपूजितः ॥
स तुष्टः प्रददौ तस्मै राक्षसाय ह्यवध्यताम् ।
अवज्ञाताः सुरास्तेन वरदानेन मानवाः ॥
तस्मात्तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः परंतप ।

१. कै—देवतेद् । ज—देवते ।

तमुत्तवणं रावणमुग्रमाहवे
प्रवृद्धदर्पं त्रिदशेश्वरद्विषम् ।
तं रावणं देवगणस्य कण्टकं
N] पराक्रमादुद्धरतां भवानिति ॥७६॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे रावणवधोपायो
नाम दशमः सर्गः ।

१. प—रावणमुग्रतेजसं ।
२. प—विवृद्धदर्पं ।
३. ग—त्रिदशेश्वरद्विषाम् ।
४. प—विरावणं ।
५. ज—बुधग० । ल—बुद्धगण० ।
प—सर्वतपस्वि० । भ—विबुधगणस्य ।
६. प—मनुष्य[ता]मेत्य निहंतुमर्हसि ।
७. भ—रामायणे वाल्मीकिविरचिते ।
८. भ—आदिकाण्डे ।
९. प—चतुर्दशः ।

स नियुक्तः सुरैः सर्वैर्विष्णुर्नारायणस्तथा ।
३१] उपगम्य सुरान् सर्वान् श्लक्ष्णं वचनमब्रवीत् ॥१॥[1] [१
क उपायो वधे तस्य राक्षसाधिपतेः सुराः ।
३२] यदहं तं समास्थाय निहन्यामृषिकण्टकम् ॥२॥ [२
पृ३३] एवमुक्ताः सुराः सर्वे प्रत्यूचुर्विष्णुमव्ययम् ।
पृ३४] मानुषं रूपमास्थाय तद् रक्षो जहि संयुगे ॥३॥ [३
तेन तप्तं तपस्तीव्रं चिरकालमरिन्दम[2] ।
३५] येन तुष्टोऽभवद्[3] ब्रह्मा लोककृल्लोकपूजितः ॥४॥[4] [४
सन्तुष्टः प्रददौ तस्मै राक्षसाय वरं प्रभुः ।
३६] नानाविधेभ्यो भूतेभ्योऽभयमन्यत्र मानुषात् ॥५॥ [५
N] स पूर्वं हि वरं प्राप्तो राक्षसाधिपतिः प्रभो ।
पृ४२] तस्मात् तस्य वधो दृष्टो मानुषेभ्यः[5] परं तदा ॥६॥ [७
इत्येतद् वचनं श्रुत्वा सुराणां[6] विष्णुरव्ययः ।
१५.१]पितरं रोचयामास तदा दशरथं नृपम् ॥७॥ [८
अजस्य पुत्रो नृपतिस्तस्मिन् काले यदृच्छया ।
२] याज्यैने[7] द्विजमुख्येर्न[8] पुत्रार्थमरिमर्दनः[9] ॥८॥ [९

१. ल—पुस्तके प्रथमश्लोकस्य द्वितीयेन विपर्ययः ।
२. ज ल भ—दीर्घकालम० । के—०ममरिंदम ।
३. रा—तुष्टोऽब्रवीद् ।
४. ज—ससंतु ।
५. रा—मनुषेभ्यः । ज—मानुष्येभ्यः ।
६. के—स्वराणां ।
७. भ—यजते ।
८. भ—द्विजमुखेन ।
९. ज ल—०मरिसूदन ।

तस्यैव यजमानस्य पावकाद्द्भुतप्रभम् ।
3] प्रादुर्भूतं महद् भूतं महावीर्यं महाबलम् ॥९॥ [११
कृष्णाजिनधरं कृष्णं रक्ताक्षं दुन्दुभिस्वनम् ।
४] हरिं स्निग्धेक्षणं रम्यं श्मश्रुप्रवरमूर्धजम् ॥१०॥ [१२
शुभलक्षणसंपूर्णं दिव्याभरणभूषितम् ।
५] मेरुशृङ्गसमुत्सेधं दृप्तशार्दूलविक्रमम् ॥११॥ [१३
दिवाकरनिभाकारं दीप्तवह्निसमप्रभम् । [१४पू
N] तप्तजाम्बूनदमयीं राजितां नियतच्छदाम् ॥१२॥
६] दिव्यपायससंपूर्णां पात्रीं पत्नीमिव प्रियाम् ।
प्रगृह्य विमलां दोर्भ्यां मयो मायामिवासुरीम् ॥१३॥ [१७
अब्रवीत् प्रश्रितं वाक्यमिदं द्विजवरं तदा ।
७] प्राजापत्यं नरं विद्धि मामिहाभ्यागतं स्वयम् ॥१४॥ [१८
८,९] ततोऽब्रवीद् द्विजश्रेष्ठः प्राजापत्यं नरोत्तमः ।
प्रयच्छ पात्रीं राज्ञे त्वं स्वयमेव समुद्यताम् ॥१५॥ [N
१०] ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा प्राजापत्यो नरोत्तमः ।
N] ददौ नृपतये पात्रीं स्वयमेव समाहितः ॥१६॥ [N

१. भ—महावीर्यं ।
२. भ—महातेजो ।
३. ल—सुर्मुभिस्वनम् ।
४.—रा ल भ—हरिस्निग्धेक्षणं ।
५. भ—०लक्षणसंपन्नं ।
६. के—सूतशा० ।
७. ल—नास्ति ।
८. रा ज ब भ—प्रसूतं ।
९. ज भ—द्विजश्रेष्ठं ।
१०. भ—राज्ञे पात्रीं ।

उ१२] ततस्तं स नरं ज्ञात्वा प्रत्युवाच कृताञ्जलिः ।
भगवन् स्वागतं तेऽस्तु किमहं करवाणि ते ॥१७॥ [१९
१३] ततो नृपवरं वाक्यं प्राजापत्यो नरोऽब्रवीत् ।
N] राजन्नर्चयतो देवान् सद्यः प्राप्तं फलं त्वया ॥ १८॥ [२०
उ१४] इदं तु नरशार्दूल पायसं देवनिर्मितम् ।
प्रजाकरं गृहाण त्वं धर्म्यमारोग्यवर्धनम् ॥१९॥ [२१
१५] भार्याणामनुरूपाणामशनार्थं प्रयच्छ वै ।
तासु त्वं प्राप्स्यसे प्रीतिं यदर्थं यजसे नृप ॥२०॥ [२२
१६] बाढमित्येवं नृपतिः सन्तुष्टः प्रतिपूज्य च । [२३पू
पू१७] अब्रवीत् तं महद्भूतं श्रेष्ठमात्महितं वचः ॥२१॥ [N
उ१७] ततः स भगवांस्तस्मै पात्रीं पात्रवराय वै ।
पू१८] नृपाय दत्त्वा तत्रैव क्षिप्रमन्तरधीयत ॥२२॥ [N
अदृश्यं तत्क्षणाद् भूतं दीपवत् प्रजगाम ह ।
N] गते तस्मिन् महाभूते विस्मयं नृपसत्तमः ॥२३॥ [N
जगाम स महातेजा राजा दशरथस्तदा ।
N] खद्योतवच्चापि ततः संभूतो भूत उत्तमः ॥२४॥ [N

---

१. भ—राजा ।
२. क—पुस्तकस्य पूर्वपार्श्वे ऽपरहस्तेन विन्यासः ।
३. रा ज ब—॰र्चयतो ।
४. ज—पूजाकरं ।
५. ज—तं । भ–हि ।
६. रा—प्रीतिर्य॰ । ब–॰ऽप्स्यं ।
७. रा—॰मित्येवं । भ–॰मित्यं च ।
८. भ—नृपतिं भद्रहाः ।
९. ज—अदृश्यत च्यवाद् ।
१०. रा—नास्ति ।

N] न[1] विज्ञातो गतिस्तस्य[2] येन मार्गेण संप्लुतः । [N
उ१८] ततो दशरथः प्राप्य पायसं देवनिर्मितम् ॥२५॥[3]
बभूव परमप्रीतः प्राप्य वित्तमिवाधनः । [२५
१९] सोऽन्तःपुरं प्रविश्यैव कौसल्यामिदमब्रवीत् ॥२६॥[4]
पू२०] गृहाणार्धमितो देवि पुत्रीयं हितमात्मनः[5] । [२८
उ२१] अर्धादर्धं ददौ चापि कैकेय्याः स नराधिपः[6] ॥२७॥[4]
चतुर्भागं द्विधा कृत्वा सुमित्रायै ददौ तथा । [२९
प्रददौ च विशिष्टं च पायसं देवनिर्मितम् ॥२८॥[4]
२२] अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव नराधिपः । [३०
N] ततः प्राश्य तु तत् सर्वं पृथक पायसमुत्तमम् ॥२९॥ [N
श्रुत्वा पुत्रीयमित्येव प्रहृष्टमनसोऽभवन् ।
N] अन्तर्वत्न्यश्च ताः सर्वाः सर्वाश्च[7] सुसमाहिताः ॥३०॥ [N
राजा संलक्ष्य धीरो हि प्रहसन्मुदितोऽभवत् ।
N] ततः प्रादात् सुविपुलं[8] धनं बहुविधं तदा ॥३१॥ [N
ऋष्यशृङ्गाय मेधावी राजा देवसमद्युतिः ।
N] प्रतिगृह्य च तत् सर्वं धनं द्विजवरस्तदा ॥३२॥ [N
N] श्वश्रूभ्यः प्रददौ गत्वा सर्वाभ्यः प्रीतिपूर्वकम् ।
राज्ञस्ततोऽभ्यनुज्ञातुं सर्वानेव प्रचक्रमे ॥३३॥ [N

---

१. ल—अविज्ञाता ।
२. रा—गतस्तस्य येन ।
३. ब—अतः परमधिकः पाठः—
अनुचिन्त्य सुमित्रायै पुनरेव नराधिपः ।
४. पै—पुस्तकस्य पश्चिमभागे ऽपरहस्तेन विन्यासः ।
५. रा—प्रियमात्मनः ।
६. रा—धनाधिपः ।
७. ल—सर्वाश्चैव समाहिताः । ब—अभूवु सुस ।
८. ब—रथविपुलं ।

१६.३] प्रीतियुक्तेन मनसा राजा दशरथस्तदा ।
स्वं स्वं राष्ट्रं यथाकामं गच्छन्तु वसुधाधिपाः ॥३४॥ [N
४] प्रीतोऽहमत्र भद्रं वः स्वस्ति प्राप्नुत मा चिरम् ।
सर्वे भवन्तः पश्यन्तु कार्यं विषयरक्षणम् ॥३५॥ [N
५] भ्रष्टो हि विषयाद् राजा मृतकल्पः प्रदृश्यते ।
तस्मात् स्वविषये रक्षा कर्तव्या भूतिमिच्छता ॥३६॥ [N
६] यत्नै र्नावाप्यते स्वर्गो रक्षणात् प्राप्यते यथा ।
यथा हि पुरुषः कुर्याच्छरीरे यत्नमुत्तमम् ॥३७॥ [N
७] बुद्ध्या च चेतमानस्तु तथा राज्ये नराधिपः ।
अनागतविधानं च कर्तव्यं विषये नृपैः ॥३८॥ [N
८] आगमश्चापि कर्तव्यस्तथा दोषो न जायते ।
एवं संदिश्य राज्ञः स नुत्वा ते च नराधिपाः ॥३९॥ [N
९] अन्योन्यं संविदं कृत्वा प्रयाताः सर्वतो दिशम् ।
समाप्तदीक्षानियमैः पत्नीगणसमन्वितैः ॥४०॥ [N
१०] संप्रहृष्टमना भूत्वा राजा दशरथस्तथा ।
गतेषु पार्थिवेन्द्रेषु सभृत्यबलवाहनः ।
११] प्रविवेश पुरीं श्रीमान् पुरस्कृत्य द्विजोत्तमान् ॥४१॥[१८.५

इत्यार्षे रामायणे वाल्मीकीये बालकाण्डे
पायसोत्पत्तिर्नाम एकादशः सर्गः ।

---

१. भ—चिरां ।
२. के—प्रभुरयते ।
३. रा—भूमिमिच्छता । ४. भ—०र्नैवाप्यते ।
५. रा—यत्नमुत्तमं । ६. रा—बुध्वा ।
७. रा ज—चेतयामस्तु । ८. रा—कर्तव्यस्तद्वा ।
९. रा ज ल भ—भुत्वा । १०. ज—अनन्यसंविदं ।
११. के—समाप्तदीक्षः नियमः । १२. भ—०गणसमर्पितः ।

ततः कालस्य महतं ऋष्यशृङ्गः सुपूजितः ।　　[N
१] शान्तया प्रययौ सार्धं ब्राह्मणैश्च कृताञ्जलिः ॥१॥
अन्वीयमानो राज्ञौ वै सानुयात्रेर्ण धीमतो ।　　[६
२] वसिष्ठेन च वीरेणं तथा पौरजनेन च ॥२॥　　[N
यानेन महता शान्ता कम्बलावततेनं हि ।
३] गोभिः श्वेतैस्तुं युक्तेनं प्रेष्यवर्गान्वितेन च ॥३॥　　[N
संगृह्य रत्नं सुबहु मणिरत्नमजादिकम् ।
४] विविधैश्चाप्यलङ्कारैर्भूषिता श्रीरिवापरा ॥४॥　　[N
मुदा चं पेरंयोपेता प्रययौ वरवर्णिनी ।
५] भर्तारमनुसंरक्ता पौलोमीव पुरन्दरम् ॥५॥　　[N
उषित्वा सुखसंवासं सर्वकामैः सुपूजिता ।
६] लालिता ज्ञातिभिश्चापि तथा स्त्रीभिश्च सर्वशः ॥६॥　　[N

---

१. रा भ—महतो ।
२. रा भ—कृताग्मभिः ।
३. रा—राजा ।
४. रा—सानुमात्रेण धीमतः ।
५ रा भ—धीरेण ।
६. ब—कम्बलावर्तनेन ।
७. ल—शंतस्तु यु० । ब—श्वेतैश्चयुक्तेन । भ—श्वेता सयुक्तेन ।
८. ल—०रत्नमथादिकम् । ब—०रत्नमआदिकं । भ—०रत्नमआदिकं ।
९. ज—भूषितैः ।
१०. रा ल—परमयोपेता ।
११. ज ल भ—सुखवासं ।

श्राविता वनवासं च भर्त्रा सा तु सुशोभना ।
७] तमेव मन्यते सार्धं तथाऽपि सुखिता सती ॥७॥ [N
सान्तःपुरो नृपश्चापि सोऽन्वगच्छन्महाव्रतम् ।
८] ऋषिपुत्रं महाभागं शान्तां चैवात्मजां सुताम् ॥८॥ [N
ऋषिपुत्रस्य वचनात् ततो वासः प्रकल्पितः ।
९] सुखवासाः सुगच्छन्ति सर्वकामैः सुपूजिताः ॥९॥ [N
ततोऽभिवाद्य राजानमृषिपुत्रः प्रतापवान् ।
१०] विज्ञापयामास तदा निवर्ततु भवानिति ॥१०॥ [N
ऋषिपुत्रवचः श्रुत्वा राजा सान्तःपुरस्तदा ।
११] उच्चैः प्रमुदितस्तत्र वचनं चेदमब्रवीत् ॥११॥ [N
कौसल्यां च सुमित्रां च कैकेयीं च मनस्विनीम् ।
१२] सर्वाः सुदृष्टां कुरुत शान्तां दुर्लभदर्शनाम् ॥१२॥ [N

---

१. भ—भर्त्रे ।

२. ल—सुशोभनं ।

३. भ—सा तु ।

४. भ—सुखिता । रा—सुखितः ।

५. ज—सोन्तःपुरे ।

६ भ—चैवात्मिजां ।

७. भ—अतः परमधिकः पाठः—
कुर्वन्ति प्रसमामल्यां वसतिं वे निराकुलाः ।

८. ज ल—सुपूजितः ।

९. भ—सुखं वासाम् प्रगच्छन्ति सर्वकामैस्तु पूजितः ।

१०. रा—निवर्तस्व ।

११. ज ल—सुदृष्टाः ।

१२. के—सुदृष्टी । रा—दुर्लभदर्शनात् ।

तत आलिङ्ग्य सर्वास्ताः शान्तां बाष्पाविलेक्षणां ।

१३] ऊचुः स्वस्त्ययनं तस्य सभार्यस्य द्विजस्य वै ॥१३॥ [N

वायुश्चाग्निश्च सूर्यश्च पृथिवी चन्द्रमा दिशः ।

१४] वने रक्षन्तु सततं त्वां भर्तृव्रतचारिणीम् ॥१४॥ [N

श्वशुरः पूजनीयस्ते स हि मान्यो विशेषतः ।

१५] पूजाभिरनुकूलाभिरग्निशुश्रूषणादिभिः ॥१५॥ [N

भर्ता च पूजनीयस्ते सर्वाऽवस्थास्वनिन्दिते ।

१६] प्रियवादेन रहसि स्त्रीणां भर्ता हि दैवतम् ॥१६॥ [N

प्रेषयिष्यति राजा तु कुशलार्थं तवाबले ।

१७] ब्राह्मणान् नित्यशः पुत्रि मोत्सुका भूः कदाचन ॥१७॥ [N

एवं शान्तां समाश्वास्य मूर्ध्नि चाघ्राय चासकृत् ।

१८] न्यवर्तन्त ततः सर्वाः स्त्रियो राज्ञा प्रचोदिताः ॥१८॥ [N

प्रदक्षिणं द्विजश्रेष्ठं कृत्वा राजा स वीर्यवान् ।

१९] व्यादिशत् सैनिकान् कांश्चिदृष्यशृङ्गाय धीमते ॥१९॥ [N

अभिवाद्य स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ।

२०] स्वस्ति तेऽस्तु महाराज धर्मेणाराधय प्रजाः ॥२०॥ [N

---

१. रा—बाष्पाविलेक्षणां । ज ब—बाष्पाविलेक्षणाः ।
ल—तां बाष्पविलेक्षणाः ।

२. भ—सभार्यस्याह आशिषः ।

३. ज ल भ—सोमश्च ।

४. ज ल भ—सविता ।

५. ज ल भ—नित्यसंप्रीतो ।

६. रा ब—सोत्सुका ।

७. के—शान्तां ।

८. ल—समाश्वस्य ।

९. रा—राजप्रचोदिताः ।

१०. भ—स ।

व्यवहारेषु ते धर्मः कर्तव्यो हृदि नित्यशः ।

N] धर्मं श्रयेथाः सर्वेषु कालेषु पुरुषर्षभ ॥२१॥[1] [N

पू२१] एवमुक्त्वा तु राजानं ययावृषिसुतस्तदा ।

N] मनस्तस्मिन समाधाय स्नेहभावसमन्वितम् ॥२२॥[2] [N

उ२१] अदृश्योऽभूद् यदा विप्रस्तदा राजा न्यवर्तत ।

प्रविष्टश्च पुरीं राजा सभृत्यबलवाहनः ॥२३॥ [N

२२] न्यवसत् तत्र मुदितः पुत्रजन्मप्रतीक्षकः ।

ऋष्यशृङ्गः सुतेजस्वी प्रययौ क्रमशस्तदा ॥२४॥ [N

२३] लोमपादस्य नगरीं चम्पां चम्पकमालिनीम् ।

श्रुत्वैव लोमपादोऽपि तमायान्तमृषिं तदा ॥२५॥ [N

२४] सब्राह्मणः सहामात्यः प्रत्युद्गम्य तमब्रवीत् ।

स्वागतं ते द्विजश्रेष्ठ दिष्ट्याऽसि कुशली प्रभो ॥२६॥ [N

२५] इहागतो महाभागः सभार्यः सपरिच्छदः ।

पिता ते कुशली ब्रह्मन प्राहिणोमित्यशश्च मे ॥२७॥ [N

२६] कुशलार्थं तव विप्रो सभार्यस्य विशेषतः ।

---

१. रा—धर्मा: कर्तव्ये ।

२. भ—नास्ति ।

३. कै रा ज ब—समाधाय ।

४. भ—श्लोके पूर्वापरार्द्धव्यत्यय: । अत: परमधिकश्च पाठः—

तं यान्तमनुवव्राज स्थितो निश्चलचक्षुषा ।

५. रा—यथा ।

६. कै—सुभृत्यबल० ।

७. भ—यत्र ।

८. रा—स्वतेजस्वी ।

९. रा—क्रमशस्तथा ।

१०. ज—चम्पां ।

११. ज ब—चम्पकमा० । कै—पुस्तके च चम्पामिति पाठं संशोध्य चंपामिति कृतम् ।

स्वलङ्कृतं च नगरं कारयामास बुद्धिमान् ॥२८॥ [N
२७] [1]पूजार्थमृष्यशृङ्गस्य राजा हृष्टेन चेतसा ।
ऋष्यशृङ्गः प्रहृष्टस्तु सह राज्ञा पुरोत्तमम् ॥२९॥ [N
२८] पुरोहितं पुरस्कृत्य पूजितः प्रविवेश ह ।
एवं स न्यवसत् तत्र द्विजपुत्रः प्रतापवान् ॥३०॥ [N
२९] राज्ञा सान्तःपुरेणैव पूज्यमानो यथाक्रमम् ॥३१॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे ऋष्यशृङ्गप्रयाणं[2]
नाम द्वादशः सर्गः[2] ॥ १२ ॥

---

१. कै—पूजार्थं ऋषिशृ० । ज ब—पूजार्थमृषिशृ० ।
२. रा छ—०प्रयाणो नाम सर्गः ।

ऋष्यशृङ्गे तु संप्राप्ते राजा ब्राह्मणमब्रवीत् ।
१] ऋषेर्गच्छ समीपं त्वं निवेदय यतव्रतम् ॥१॥
आगतं परमोदारमृष्यशृङ्गं दुरासदम् ।
२] ऋषये सुव्रताय त्वं कश्यपात्मजसंभवम् ॥२॥
अभिवाद्यैव शिरसा यत्कृते द्विजसत्तम ।
३] प्रसाद्यश्च सुतार्थं मे सर्वावस्थं यतात्मना ॥३॥
श्रुत्वैवं राज्ञो वचनं स तदा द्विजसत्तमः ।
४] जगाम तत्र यत्रासौ वर्तते कश्यपात्मजः ॥४॥
प्रसाद्य च द्विजश्रेष्ठं शिरसाऽभिप्रणम्य च ।
५] अब्रवीत् प्रश्रितं वाक्यं राज्ञा यदभिचोदितः ॥५॥
पुत्रस्ते समनुप्राप्तो यज्ञं कृत्वा महात्मनः ।
६] राज्ञो दशरथस्यैव श्वशुरस्य महामनाः ॥६॥

---

१. रा—तु ।
२. ज—०रमृषिशृंगं ।
३. रा ज ल भ—काश्यपस्यात्मसंभवं ।
४. ज भ—मत्कृते । ल—सत्कृते ।
५. के ज ल भ—सर्वावस्थो । रा—सर्वावस्तां ।
६. ज ल—महात्मनः । भ—महामुनिः ।
७. ल—श्रुत्वा वै ।
८. के—राज्ञो स तदा । ल—वचनं राज्ञस् ।
९. के—वचनं । ज ल भ—तदा स द्वि० ।
१०. भ—सुमध्यम ।
११. ज भ—प्रसृतं ।
१२. ज ल भ—यदभिचोदितं ।
१३. ज ल—श्वशुरस्य ।

पूर्वमेव तु तत् सर्वं श्रुत्वा सांबन्धिकं कृतम् ।
७] यज्ञकर्म च वीरस्य राज्ञो दशरथस्य तत् ॥ ७॥
श्लाघनीयस्तु सम्बन्धी राजा देवसमो हि सः ।
८] ततो मर्षितवान् वीरस्तस्य राज्ञो महात्मनः ॥८॥
श्रुत्वा तु वचनं तस्य द्विजस्य सुमहायशाः ।
९] गमने मतिमाधत्त पुत्रस्यानयने तथा ॥९॥
स हि शिष्यवृतस्तत्र प्रयातो द्विजसत्तमः ।
१०] लोमपादस्य नगरीं चम्पां पुत्रदिदृक्षया ॥१०॥
संपूज्यमानो धर्मात्मा ग्रामैर्घोषैश्च सर्वतः ।
११] उपायनमुपादाय नरास्तं समुपागमन् ॥११॥
किङ्कराः समुपातिष्ठन् रात्रिन्दिवमतन्द्रिताः ।
१२] ऊचुः प्रणम्य शिरसा किं मुने करवामहे ॥१२॥
तानब्रवीत् स विप्रेन्द्रः सर्वानेव समागतान् ।
१३] किमर्थं क्रियते पूजा श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥१३॥
तत ऊचुर्महात्मानं संबन्धी ते नराधिपः ।

---

१. भ—च ।
२. भ—विधिं ।
३. ज ल भ—यज्ञकर्म च वै राज्ञः कृतं दशरथस्य तत् ।
४. ज ल—हि महा० । भ—तु महा० ।
५. ल—मतिमादत्त ।
६. ज ल भ—तदा ।
७. ल—ह ।
८. रा ब—शिष्यवृतस्तस्य । ज ल भ—शिष्यैर्वृतस्तत्र ।
९. ज ल भ—सर्वशः ।
१०. रा ज भ—भक्ष्यभोज्यमुपादाय । ल—बहु भोज्यमु० ।
११. ल—समुपागतम् ।
१२. ज भ—रात्रौ दिनमतन्द्रिताः ।
१३. ज ल भ—मुने किं ।

१४] तस्याज्ञा क्रियते ब्रह्मन् व्येतु ते मानसो ज्वरः ॥१४॥
श्रुत्वा तु वचनं तेषां मनःप्रह्लादकं शुभम् ।
१५] प्रसादमकरोद् राज्ञः सहामात्यपुरस्य है ॥१५॥
विभाण्डकवचः श्रुत्वा किङ्करा हृष्टमानसाः ।
१६] परितो जग्मुराख्यातुं राज्ञः प्रियनिवेदकाः ॥१६॥
तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां मनःप्रीतिविवर्धनम् ।
१७] मन्त्रिभिः सह धर्मात्मा प्रत्युद्गम्य नराधिपः ॥१७॥
दृष्ट्वा च मुनिशार्दूलं प्रणम्य च पुनः पुनः ।
१८] अब्रवीत् स इदं वाक्यं हर्षसंफुल्ललोचनः ॥१८॥
अद्य मे सफलं जन्म दर्शनात् तव सुव्रत ।
१९] तथेति च स राजानमुवाच द्विजसत्तमः ॥१९॥
मा ते भयं भूद् राजेन्द्र प्रसन्नोऽस्मि तवानघ ।
२०] ततः प्रहृष्टो नृपतिः पुरस्कृत्य द्विजर्षभम् ॥२०॥
प्राविशन् नगरीं श्रीमानर्चितां सर्वमङ्गलैः ।
२१] स्वलङ्कृतं गृहं चैव प्रावेशयदरिन्दमः ॥२१॥

---

१. ज ल भ—तस्यार्थं ।
२. ज ल भ—तेषां वचनं ।
३. ज ल भ—मनः प्रह्लादनं ।
४. रा—च ।
५. ज ल भ—त्वरिता ।
६. ज ल भ—प्रियहिते रताः ।
७. ज—मन्त्रिमुख्यः प्रसन्नात्मा । ल भ—मंत्रिमुख्यैः प्रसन्नात्मा ।
८. ज ल—तु ।
९. ज भ—अब्रवीच्च ।
१०. ज ल भ—प्रसन्नो ।
११. ज ल—नगरं
१२. के रा ब ल—श्रीमानर्चितं । ज-श्रीमानन्वितं ।

पुरोहितेन सहितः प्रगृह्यार्घमुपाद्रवत् ।

२२] अभिवाद्य तथा चैनं न्यायतः प्रतिपूज्य च ॥२२॥

तस्थुः प्राञ्जलयः सर्वे समासाद्य द्विजोत्तमम् ।

२३] ततः शान्तां पुरस्कृत्य ताः स्त्रियः समलङ्कृताम् ॥२३॥

न्यवेदयन्त विप्राय स्नुषेयं तव मानद ।

२४] प्रतिगृह्य स तां शान्तां समालिङ्गय च धर्मवित ॥२४॥

पू२५] अङ्के निवेश्य च तदा विस्मयं परमं गतः ।

प्रायश्चित्तं च कृतवान् पुत्रस्य द्विजसत्तमः ॥२५॥

२७] महर्षिभिः पूज्यमानः सपुत्रश्च वनं ययौ ॥२६ ॥

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे ऋष्यशृङ्गोपाख्यानं

नाम त्रयोदशः सर्गः ॥१३॥

---

१. रा—प्रगृह्यार्घ्यमु० । ज ल भ—प्रगृह्यार्घ्यं समाहितः ।

२. ज ल भ—मुनिं चैव ।

३. रा—स्नुषैवं ।

४. ज ल—परिगृह्य ।

५. ज—सुतां । भ—तु तां ।

६. भ—अंकं ।

७. रा—भगवान् ।

८. ज ल—महर्षिः पूज्यमानश्च । भ—महर्षिः पूज्यमानस्तु ।

९. के—वाल्मीकीये ।

राजोपि धर्मेण तदा रञ्जयन सुनयैः प्रजाः ।
N] इक्ष्वाकुवंशजः श्रीमान दीप्तयाप्यायितः श्रिया ॥१॥ [N
यशसा रञ्जयंल्लोकान कृतात्मा सर्वधर्मवित् ।
N] धर्ममेव च सत्यं च संपश्यञ्जीविते फलम् ॥२॥ [N
तिस्रो महिष्यो राजर्षे र्बभूवुर्स्तस्य धीमतः ।
N] गुणवत्योऽनुरूपाश्च चारुमोष्ठपदोपमाः ॥३॥ [N
सदृशी तत्र कौसल्या कैकेयी चाभवच्छुभा ।
९.] सुमित्रा वामदेवस्य बभूव करिणी सुता ॥ ४॥ [N
ततोऽस्य जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारोऽमितविक्रमाः ।
१०] रामलक्ष्मणशत्रुघ्ना भरतश्च महाबलः ॥५॥ [N

---

१. ज ल भ—स च चारोत्तमं धर्मं ।
२. ज ल—सुनय: ।
३. रा—० प्यायतः ।
४. ज ल भ—राज्ञो वै बभू० ।
५. भ—० ऽनुरूपा वै ।
६. कै—मत्यशी (?)
७. भ—कोशल्या ।
८. रा ब—करणी ।
९. रा ज ब ल—शुभा ।
१०. भ—सुमित्रा वा नृदेवस्य बभूवानंदकारिणी ।
अतः परमस्य टीकापि मूले दृश्यते । यथा-
सुमित्रा वामदेवस्य बभूव करणी शुभा । इति पाठे वामः सुंदरः ।
स चासौ देवश्चेति व्युत्पत्त्या दशरथस्य राज्ञ इत्यर्थः ।
करं नयतीति करणी राज्ञः करस्पर्शविषया बभूव ।
अथवा वामदेवस्य करणी संज्ञका पत्नी यथा शुभा तथा
राज्ञः सुमित्रा बभूव ।

तेषां ज्येष्ठं महाबाहुं वीरमप्रतिमौजसम् ।
११] कौसल्याऽजनयद् रामं विष्णुतुल्यपराक्रमम् ॥६॥
कौसल्या शुशुभे तेन पुत्रेणामिततेजसा ।
१२] अदितिर्देवराजेन यथा बलनिघातिना ॥७॥ [१२
स हि देवैः सगन्धर्वैर्याचितोऽथ महात्मभिः ।
N] विष्णो पुत्रत्वमेहीति कृत्वाऽऽत्मानं चतुर्विधम् ॥८॥ [N
रावणस्य हि रौद्रस्य वधार्थाय दुरात्मनः ।
N] विष्णुः स हि महाभागः सुराणां शत्रुमर्दनः ॥९॥ [N
स हि शीलोपपन्नश्च वीर्यवान् गुणवानपि ।
N] बभूव मानवे लोके गुणैर्दशरथाधिकः ॥१०॥ [N
अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ जनितौ तौ सुमित्रया । [१४पृ.
N] उत्तमौ दृढभक्तीनां रामस्यानवमौ गुणैः ॥११॥ [N
तावप्यास्तां चतुर्भागौ विष्णोः संपिण्डितावुभौ ।
N] चतुर्भागस्य यस्यार्धमेकैकः पायसोऽभवत् ॥१२॥

१. रा ज—ह ।
२. ज—याचितः स । ल भ—याचितश्च ।
३. रा—महर्षिभिः । भ—महामतिः ।
४. ज ल भ—पुत्रत्वं गच्छ विष्णो वै ।
५. ज ल भ—रावणस्येह ।
६. ज ल भ—वधार्थं तु ।
७. ज—विष्णुर्हि स महाभागः । भ—विष्णुर्हि सुमहा० ।
८. ल भ—वीर्योपपन्नश्च ।
९. ल भ—श्रीमान् ।
१०. ल—मानवो ।
११. ज—वासि ।
१२. ज—विष्णुसंपिंडितावुभौ ।
१३. ज—पायसोऽभवत् । भ—पायसोऽभवत् ।
१४. ल—एक एव चतुर्भागादपरस्मादभावत ।

पृ.१७] भरतो नाम कैकेय्या जज्ञे सत्यपराक्रमः ।
साक्षात् विष्णोश्चतुर्भागः सर्वैः समुदितो गुणैः ॥१३॥ [१३
ते दीप्तयशसः सर्वे महेष्वासा नरर्षभाः[1] ।
१८] आपूरयन्तो[2] वै कामान् पितुर्धर्मविशारदाः ॥१४॥ [N
स चतुर्भिर्महाभागैः पुत्रैर्दशरथो वृतः ।
१९] बभूव परमप्रीतो वेदैरिव[3] पितामहः ॥१५॥ [N
तेषां केतुरिव श्रेष्ठो रामो रतिकरः पितुः ।
२०] बभूव भूयो भूतानां स्वयंभूरिव धर्मतः ॥१६॥ [२६
ते यदा ज्ञानसंपन्नाः सर्वज्ञा दीर्घदर्शिनः ।
N] सर्वशास्त्रार्थविद्वांसो[4] ह्रीमन्तः सत्यवादिनः ॥१७॥ [N
आसन वेदविदः शूराः सर्वे सर्वास्त्रकोविदाः[5]
३०] धीमन्तः[6] कृतविद्याश्च सर्वैः समुदिता गुणैः ॥१८॥ [N
अथ राजा[7] यथाकालं राजवर्यसुताः शुभाः ।
N] सर्वेषामवहद्[8] भार्यास्तुल्यलक्षणवर्चसः ॥१९॥ [N
जनकः श्वशुरो राजा रामस्य भरतस्य च ।
N] कुशध्वजसुताभ्यां च सुमित्रानन्दनौ पती ॥२०॥ [N
तेषामतियशा[9] लोके रामः सत्यपराक्रमः ।

---

१. ज भ—महर्षभाः ।

२. ज ल भ—अपूरयंत ते ।

३. ज ल भ—देवैरिव ।

४. ज ल भ—सर्वशास्त्रार्थविदुषो ।

५. ज ल—शास्त्रार्थकोविदाः । भ—शस्त्रास्त्रको० ।

६. ज ल—श्रीमन्तः । भ—ह्रीमन्तः ।

७. ज—राज्ञा ।

८. ज—सर्वेषामभवद् । ल—सर्वेषामभवं । भ—सर्वेषामकरोद् ।

९. रा—तेषामतियशो ।

N] स्वयंभूरिव भूतानां बभूव गुणवत्तरः ॥२१॥ [N
तस्य भूयो विशेषेण मैथिली जनकात्मजा ।
N] देवताभिः समा रूपे सीता श्रीरिव रूपिणी ॥२२॥ [N
प्रिया तु सीता रामस्य दाराः प्रियकृता इति ।
N] गुणै रूपगुणैश्चापि पुनः प्रियतराऽभवत् ॥२३॥ [N
भर्ता तु तस्या द्विगुणं हृदये परिवर्तते ।
N] अनाख्यातमपि व्यक्तमाचष्ट हृदयप्रियम् ॥२४॥ [N
बाल्यात् प्रभृति हि स्निग्धो लक्ष्मणो लक्ष्मिवर्धनः [३०पृ
२१] सर्वाभिरामं रूपेण भ्राता भ्रातरमग्रजम् ॥२५॥ [N
स च प्रियतरस्तस्य प्राणेभ्योऽप्यरिमर्दनः ।
२२] लक्ष्मणो लक्षणोपेतो रामस्य रिपुघातिनः ॥२६॥ [११
मृष्टमन्नमुपानीतमश्नाति न हि तं विना ।
२३] प्रीतिर्न तस्य जायेत प्रीतिकालेषु तं विना ॥२७॥ [३२
यदा हयमुपारूढो मृगयां याति राघवः ।

---

१. ब—देवताभ्यः ।
२. ज—स्त्री रव । इत्यपपाठः ।
३. ल—लोकस्य ।
४. ज ल—दारा ।
५. भ—इव ।
६. के—व्यक्तं मादृष्ट । भ—व्यक्तमाचष्ट ।
७. के ब भ—हृदयं प्रियं ।
८. ज ल भ—च ।
९. रा ब—लक्ष्मवर्धनः । भ—रूपसंवर्धनः ।
१०. रा—सर्वाभिरूपेण रामं ।
११. भ —वै ।
१२. भ—ऽप्यरिसूदनः ।
१३. ज—लक्ष्मणोपेतो ।
१४. रा ब—मिष्टमन्न० ।

२४] तदैनं पृष्ठतोऽन्वेति सधनुः परिपालयन् ॥२८॥ [३३

भरतस्यापि शत्रुघ्नो राघवस्येव लक्ष्मणः ।

२५] प्राणैर्बहुमतो नित्यं तस्यापि स तथाऽभवत् ॥२९॥ [१४

स तु केकयराजेन स्नेहानुप्रेषितैर्हयैः ।

N] ह्यहोपनीतो धर्मात्मा नीतः स्वनगरं प्रति ॥३०॥ [N

कृतदाराः कृतास्ताश्च सधनाः ससुहृद्गणाः ।

N] शुश्रूषमाणाः पितरं वर्तन्ते ते[8] नरोत्तमाः ॥३१॥ [N

रामश्च सीतया सार्धं विजहार बहूनृतून् ।

N] मनश्च तद्गतं तस्य तस्याः स हृदये स्थितः ॥३२॥ [N

तया स राजर्षिवराभिकामया

समेयिवानुत्तमराजकन्यया ।

अतीव रामः शुशुभेऽभिरामया

N] विभुः श्रिया शक्र इवामराधिपः ॥३३॥ [N

इत्यार्षे रामायणे[14] बालकाण्डे पुत्रजन्म नाम

चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

---

१. ज ल भ—पथि पालयन् ।

२. ज ल—राघवस्य च ।

३. ज—कैकीय॰ । ल—कैकय॰ । भ—कैकेय॰ ।

४. ज ल भ—स्नेहाच्च प्रे॰ ।

५. रा—ग्रहोपनीतो ।

६. रा—स्वं नगरं । ल—सुनगरं ।

७. ल—सुधनाः ।

८. ल—स्म ।

९. कै—बहून्प्रभून् ।

१०. रा—तन्मनं (यं ?)

११. भ—राजर्षिवरोभिकामया ।

१२. ल—समीयिवानु॰ ।

१३. रा—श्रिया शत्रु ।

१४. कै—वाल्मीकीये ।

पुत्रत्वं तु गते विष्णौ राज्ञस्तस्य महात्मनः ।
१] उवाच देवताः सर्वाः स्वयंभूर्भगवानिदम् ॥१॥ [१
सत्यसन्धस्य वीरस्य सर्वेषां नो हितैषिणः ।
२] विष्णोः सहायान् सृजत बलिनः कामरूपिणः ॥२॥ [२
मायाविनश्च वीरांश्च वायुवेगसमाञ्जवे ।
३] अतिबुद्धिसमायुक्तान् विष्णोस्तुल्यपराक्रमान् ॥३॥ [३
असंहार्यानुपायज्ञान् दिव्यसंहननान्वितान् ।
४] सर्वास्त्रगुणसंपन्नानमृतप्राशकोपमान् ॥४॥ [४
अप्सरःसु च मुख्यासु गन्धर्वीणां तनूषु च ।
५] ऋषिपन्नगकन्यासु विद्याधरसुतासु च ॥५॥ [५
किंनरीणां च देहेषु वानरीणां तथैव च ।
६] सृजध्वं हरिरूपेण हरितुल्यपराक्रमान् ॥६॥ [६
ते तथोक्ता भगवता तत् प्रतिश्रुत्य शासनम् ।

---

१. रा—ऊचे च ।
२. भ—च । अपरहस्तेन ।
३. ज ल भ—मतिबु० ।
४. भ—०र्यानुपायज्ञायां ।
५. ज ल—सर्वास्त्र गुण० ।
६. ज ल भ—गन्धर्वाणां ।
७. ज भ—किंनराणां ।
८. ज भ—वानराणां ।
९. कै—हारिरूपेण ।
१०. ज—०ल्यपरिक्रमान् ।

७] असृजन् देवगन्धर्वान् पुत्रान् वानररूपिणः ॥७॥ [८
ऋषयश्च महात्मानः सिद्धाश्च किन्नरैः सह ।
८] चारणांश्चासृजन घोरान् वानरान् वनचारिणः ॥८॥ [९
९] ते सृष्टा बहुसाहस्रा दशग्रीववधोद्यताः ।
अप्रमेयबलाः शूरा वानराः कामरूपिणः ॥९॥ [१७
१०] ते गुञ्जानलसङ्काशा वीर्यवन्तो महाबलाः ।
ऋक्षवानरगोपुच्छाः क्षिप्रमेवं विजज्ञिरे ॥१०॥ [१८
११] यस्य देवस्य यद्रूपं वेषस्तेजश्च तद्विधम् ।
जज्ञे स सदृशस्तेन तस्य तस्य सुतस्तदा ॥११॥ [१९
१२] गोलाङ्गूलीषु चोत्पन्नाः केचित् त्वमितविक्रमाः ।
ऋक्षीषु च तथा घोरा वानरीकिन्नरीषु च ॥१२॥ [२०

---

१. ज ल भ—अनयन् ।
२. ज ल भ—देवगन्धर्वाः ।
३. रा भ—पुत्रावान् नररू० । भ—पुत्रा वानररू० ।
४. ज ल भ—सह किन्नरैः ।
५. के—चारणांश्चाभजन् । रा—चारणाश्च सृजन् ।
भ—चारणाश्चासृजन् ।
६. भ—घोरा ।
७. ज ल भ—वनवासिनः ।
८. ल—सृष्ट्वा ।
९. रा ज ल—दशसाहस्रा ।
१०. ज—वधोद्यताः । के—वधोद्धृताः । भ—वधोद्यता ।
११. ज ल भ—क्षिप्रमेवाभिजज्ञिरे ।
१२. के रा ज ल—वेषस्ते० । व—वंशस्ते ।
१३. भ—गोलाङ्गुलेषु ।
१४. रा—यथा ।
१५. ल—वीरा ।

१३] शिलाप्रहरणाः सर्वे सर्वे पादपयोधिनः ।
नखदंष्ट्रायुधाः सर्वे सर्वे च कामरूपिणः ॥१३॥ [२५
१४] उत्पाटयेयुश्च गिरीन् भिन्द्युः कोपात् तथा द्रुमान् ।
क्षोभयेयुश्च वेगेन समुद्रं सरितां पतिम् ॥१४॥ [२६
१५] दारयेयुः क्षितिं पादैराप्लवेयुर्नभस्तलम् ।
धुनुयुः श्वसनाविद्धानं सजलानपि तोयदान् ॥१५॥ [२७
१६] गृह्णीयुरपि नागेन्द्रान् मत्तान् प्रजनितश्रमान् ।
नदन्तोऽपि तथा व्योम्नि पातयेयुर्विहङ्गमान् ॥१६॥ [२८
१७] ईदृशानां प्रसूतानां हरीणां कामरूपिणाम् ।
पृ१८] शतं शतसहस्राणां यूथपानां महात्मनाम् ॥१७॥ [२९
ईदृशं कीर्तितं जन्म फुल्लकिंशुकरोचिसार्थं । [N
N] ते प्रधानेषु यूथेषु हरीणां हरियूथपाः ॥१८॥
बभूवुर्यूथपश्रेष्ठास्ते चाप्यजनयन् सुतान् । [३०
१९] अन्येऽर्कशक्रयोः पुत्रावुपतस्थुः सहस्रशः ॥१९॥

१. क रा ब भ—भिद्युः ।
२. ज—चारयेयुः ।
३. क—धुन्वयुः । ज—ध्वनयुः । ब—धन्वयुः ।
४. ब—श्वसनाद्विद्धान् ।
५. क—नागेन्द्र दंतान् प्रजवितान् जवान् ।
रा—नागेन्द्रांस्तान् प्रजवितां जवात् ।
ब—नागेन्द्रदन्तान् प्रजवितां हयान् ।
६. भ ल—हरिणां ।
७. रा—फुल्लतकिंशुकरो॰ ।
८. रा—प्रधान्येषु ।
९. ब ल—यूथपश्रेष्ठास्ते ।
१०. रा—अन्योर्कश॰ । भ—अन्ये केशक॰ ।
११. रा भ—॰त्रावुपतस्थः । ज ल—पुत्रावुपतस्थुः ।

अन्ये नानाविधान् शैलान् काननानि च भेजिरे[1] । [२१

२०] सूर्यपुत्रं च सुग्रीवं शक्रपुत्रं च वालिनम् ॥२०॥

पू२१] भ्रातरावुपतस्थुश्च ते[2] च सर्वे हरीश्वराः । [१२

तथा दशग्रीववधे स्वयंभुवा

निशम्य सर्वं विहितं[3] शतक्रतुः ।

मनुष्यलोके प्रभुरप्रसा ययौ

N] दिदृक्षुरिक्ष्वाकुकुलं[4] सुरेश्वरः[5] ॥२१॥

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे वानरोत्पत्ति-

र्नाम पञ्चदशः सर्गः ॥१५॥

१. भ—विभेजिरे ।

२. ज ल भ—तेपि सर्वे ।

३. ज ल—विहितं ।

४. भ—॰रिक्ष्वाकुसुतं ।

५. व—सुरेश्वराः ।

निवृत्ते तु क्रतौ तस्मिन हयमेधे महात्मनः ।
१] प्रतिगृह्य सुरा भागं प्रतिजग्मुर्यथागतम ॥१॥ [१
पू११] प्रविवेश पुरीं राजा सभृत्यबलवाहनः । [५३
N] तस्य पुत्रा महात्मानश्चत्वारो जज्ञिरे पृथक् ॥२॥ [N
रूपवन्तो ऽनुरूपाश्च लोकपालोपमा गुणैः । [N
N] कौसल्याऽजनयद् रामं राजर्षिवरलक्षणम् ॥३॥
साक्षाद् विष्णोस्तदर्धं च पुत्रं त्रिकुलनन्दनम । [११
N] अथ लक्ष्मणशत्रुघ्नौ जनितौ तौ सुमित्रया ॥४॥ [१४पू
कैकेयी जनयामास भरतं धर्मवत्सलम् । [१३पू
N] अथ राजा दशरथस्तेषां दारक्रियां प्रति ॥५॥
चिन्तयामास धर्मात्मा सोपाध्यायः सबान्धवः । [३९
N] तस्य चिन्तयतः कार्यमृषिमध्ये महात्मनः ॥६॥ [४०पू

१. ज—सुभृत्यब० ।
२. रा—अतः परं पूर्वपार्श्वेऽपरहस्ताङ्कितोऽधिकः पाठः—
ततो यज्ञे समाप्ते तु ऋतूनां षट् समत्ययुः ।
ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ ॥
नक्षत्रे दितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पंचसु ।
ग्रहेषु कर्कटके च वाक्पतीन्दुना सह ॥
प्रोच्यमाने जगन्नाथः सर्वलोकनमस्कृतः ।
३. कै—रूपवंत्योनु० । ज ल—गुणवन्तः सुरूपा० । भ—गुणवन्तोनु० ।
४. ज ल—लोकपालोपमैर्गुणैः ।
५. ल—राजर्षिरिव लक्षणं ।
६. ज ल—०स्तदर्धे हि । भ—०स्तदर्धं हि ।
७. कै ज ल भ—पुत्रमिक्ष्वाकुनन्द० ।

एतस्मिन्नेव काले तु विश्वामित्र इति श्रुतः ।
२१.१] महर्षिरभ्ययाद् द्रष्टुमयोध्यायां नराधिपम् ॥७॥ [N
तस्य यज्ञोऽथ रक्षोभिस्तदा विलुलुपे किल ।
२] मायावीर्यबलोन्मत्तै धर्मकामस्य धीमतः ॥८॥ [N
रक्षार्थं तस्य यज्ञस्य द्रष्टुमिच्छन् स पार्थिवम् ।
३] न हि शक्नोत्यविघ्नेन तं समाप्तुं मुनिः क्रतुम् ॥९॥ [N
ततस्तेषां विनाशायाभ्युद्यतस्तपसां निधिः । [N
N] विश्वामित्रो महातेजा अयोध्यामगमत् पुरीम् ॥१०॥ [४०उ
स राज्ञो दर्शनाकांक्षी द्वाराध्यक्षानुवाच ह ।
४] शीघ्रमाख्यात मां प्राप्तं कौशिकं गाधिनन्दनम् ॥११॥ [४१
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजवेश्म प्रदुद्रुवुः ।
५] संभ्रान्तमानसाः सर्वे तेन वाक्येन नोदिताः ॥१२॥ [४२
ते गत्वा राजभवनं विश्वामित्रमृषिं ततः ।
६] प्राप्तमावेदयामासुर्नृपतेर्धर्मदर्शिनः ॥१३॥ [४३

१. रा - विलुलुपे । ल—विलुलुपे ।
२. रा—मयावीन्यव० ।
३. ज ल—द्रष्टुमिच्छामि । भ-द्रष्टुमिच्छति ।
४. रा ल भ—स ।
५. ज ल भ—महाक्रतुम् ।
६. रा—०य उद्यतः तपसां । ज भ—०य उद्यतस्तपसो ।
ल—०य चोद्यतस्तपसो ।
७. भ—०ध्यामभ्यगात ।
८. ल—स: ।
९. रा—मा ।
१०. ज ल भ - गाधिनः सुतम् ।
११. कै ज व ल—संभ्रान्तमनस: ।
१२. रा—प्राप्तं निवेदयामासुर्नृ० । प्राप्तमावेदयाञ्चक्रुर्नृ० ।

तेषां दशरथः श्रुत्वा सोपाध्यायः सबान्धवः ।
७] प्रत्युज्जगाम तमृषिं[1] ब्रह्माणमिव वासवः ॥१४॥ [४४
स दृष्ट्वा ज्वलितं लक्ष्म्या प्रीतस्तमृषिमागतम् ।
N] प्रहृष्टवदनो[2] राजा स्वयमर्घ्यं न्यवेदयत् ॥[3]१५॥ [४५
उ८] तं राजा प्राञ्जलिर्भूत्वा चकाराभिप्रदक्षिणम् ।[4]
पू९] राज्ञो संपूजितस्तेन[5] प्रत्युद्गम्य स्वयं तदा ॥१६॥ [N
N] राज्ञश्च प्रतिगृह्यार्घ्यं शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ।
उ९] कुशलानामयं[6] प्रीतः पप्रच्छ वसुधाधिपम् ॥१७॥ [४६
वसिष्ठेन समागम्य[7] प्रहसन् मुनिपुङ्गवः । [४७
१०] यथार्थं[8] चार्चयंश्चैनं पप्रच्छानामयं ततः ॥१८॥ [N
ततो यथार्थमर्घ्येनं[9] पूजयित्वा समेत्य च । [N
११] सर्वे प्रहृष्टमनसो राज्ञस्तस्य निवेशनम् ॥१९॥
विविशुः सहिता राज्ञा निषेदुश्च यथार्हतः । [५०
१२] उपविष्टाय ते तस्मै विश्वामित्राय धीमते ॥२०॥ [N
वसिष्ठसहितो राजा स्वयमेव महायशाः ।
१३] पाद्यमर्घ्यं तथा गां च विधिवत् प्रत्यवेदयत् ॥२१॥ [N
अर्चयित्वा ततो राजा विश्वामित्रमभाषत ।
१४] प्राञ्जलिः प्रयतो वाक्यमिदं प्रीतमनास्तदा ॥२२॥ [N

---

१. ज ल भ—नृपतिर् ।
२. रा—०वचनो ।
३. ज ल भ—नास्ति ।
४. ज ल भ—प्रणम्य प्राञ्जलिर्भूत्वा चक्रे चाभिप्रदक्षिणम् ।
५. ज ल भ—स राजा पूजितस्तेन ।
६. रा—०लानामयीं ।
७. ज ल—सहागम्य ।
८. रा ज भ—यथार्थं चार्चयच्चैनं । ल—यथार्थमर्चयंश्चैनं ।
९. ज—०र्थमाप्येनं ।

यथामृतस्य संप्राप्तिर्यथा वर्षमवर्षके ।
१५] यथा सदृशनारीभ्यः पुत्रजन्माप्रजस्य हि[3] ॥२३॥ [५२
N] यथेप्सितस्य संप्राप्तिरिष्टस्यागमनं यथा ।
पू१६] प्रणष्टस्य यथा लाभो भवेद्धर्षो महोदयः ॥२४॥ [५३
उ१६] हर्षानन्दकरं मेऽद्य तवाभ्यागमनं तथा ।
N] स्वप्ने यथाऽर्थलाभः स्यान्मृतस्य पुनरागमः ॥२५॥ [N
ब्रह्मलोकनिवासश्च कस्य न प्रीतिमावहेत् ।
N] मुने तवागमस्तद्वत् सत्यमेव ब्रवीमि ते ॥२६॥ [N
N] यथाऽभिलषितं कामं किं ते कुर्मोऽभिकांक्षितम् । [N
कश्च ते परमः कामः किमृषे करवाण्यहम्[13] ॥२७॥
१७] पात्रभूतोऽसि मे विप्र चिरस्याभ्यागतोऽतिथिः । [५४
त्वं हि राजर्षिकुलजस्तपोभिर्नियमैस्तथा ॥२८॥
१८] ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तस्तस्मात् पूज्यतमोऽसि मे । [५६
साक्षादिव ब्रह्मणो मे तवाभ्यागमनं मतम् ॥२९॥

---

१. भ—वर्षो अवर्षके ।
२. ल—सदृश्यना॰ ।
३. ज भ—ह । ल—च ।
४. ज ल भ—भवेद्धर्मो ।
५. के रा—सहोदयः ।
६. ज—हर्षानन्दोत्तरं । हर्षानन्दोत्तरं ।
७. ज ल भ—तथाभ्यागमनात्तव ।
८. रा ब—ब्रह्मलोके निवा॰ ।
९. रा—प्रीतिमावहत् ।
१० रा ल—मुनेम् ।
११. ल भ—सत्यमेतद् ।
१२. ज ल भ—कार्यं ।
१३. भ—नास्ति ।
१४. भ—तवाभ्यागमनाच्छ्रुतः ? ।

१९] पूतोऽस्म्यनुगृहीतश्च तवाभ्यागमनान्मुने । [N

पू२०] अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् ॥३०॥ [५८

गङ्गाजलाभिषेकेण यथा प्रीतिर्भवेन्मम ।

N] तथा तवागमे विप्र परमप्रीतिमानहम् ॥३१॥ [N

N] तदद्भुतमिदं ब्रह्मन् पवित्रं परमं मम । [N

शुभक्षेत्रगतश्चाहं तवाभ्यागमनेन वै ॥३२॥ [N

त्वामिहाभ्यागतं दृष्ट्वा प्रतिपूज्य प्रणम्य च ।

यत् कार्यं तेन चार्थेन प्राप्तोऽसि मुनिपुङ्गव ॥३३॥

२१] कृतमित्येव तद् विद्धि मान्योऽसि हि भृशं मम । [५९

स्वकार्येण विमर्षं त्वं कर्तुमर्हसि कौशिक ॥३४॥

२२] भगवन् नास्त्यदेयं मे तव प्रीतं हि विद्यते । [६०

इति हृदयमनोगतं तदा वै नरपतिनाऽभिहितं वचो निशम्य ।

२३] प्रथितगुणयशास्ततो महर्षिर्मुदितमना निजगाद तं नरेन्द्रम् ॥[६१

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रागमनो

नाम षोडशः सर्गः ॥ १६ ॥

---

१. रा ल—०ऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि ।

२. कै ब—०तिवानहं । रा—०तिवाहनम् ।

३. ज—शुभक्षेत्र गत० ।

४. ज ल भ—तव संदर्शनेन । कै–पुस्तकेऽस्य स्थाने भ्रान्त्या ३० श्लोकस्य द्वितीयः पादो लिखितः । ततोऽपि परं ३०–३१ श्लोकौ पुनर्लिपीकृतौ ।

५. रा—त्वमिहाभ्यागतं ।

६. कै—यः ।

७. भ—येन ।

८. रा—सुकार्येण । भ—स्वकार्यस्य ।

९. रा—विमर्षस्त्वं । ज—विसर्गस्त्वं । ल भ—विसर्गं त्वं ।

१०. भ—प्रीतिर्हि ।

११. ज—विरयते ।

१२. ज ल—०यमनोनुगं ।

तच्छ्रुत्वा नरसिंहस्यं वाक्यमद्भुतविस्तरम् ।
१] हृष्टरोमा महातेजा विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥१॥ [१

सदृशं राजशार्दूल तवैवाद्भुतनाम तत् ।
२] महावंशप्रसूतस्य वसिष्ठवशवर्तिनः ॥२॥ [२

पू३] यत् तु मे हृद्गतं वाक्यं तस्य कार्यविनिश्चयम् ।
N] कुरुष्व नरशार्दूल धर्मं समनुपालय ॥३॥ [३

पू४] अहं नियममातिष्ठे सिद्ध्यर्थं पुरुषर्षभ ।
N] तस्य विघ्नकरौ द्वौ मे राक्षसौ कामरूपिणौ ॥४॥ [४

N] मारीचश्च सुबाहुश्च तस्मिंस्तौ राक्षसाधमौ ।
उ५] तावभ्यकिरतां वेदिं मांसेन रुधिरेण च ॥५॥ [५

अवधूते तथाभूते तस्मिन् नियमविस्तरे ।
६] कृतश्रमो निरुत्साहस्तस्माद्देशादपाक्रमम् ॥६॥ [६

१. भ—राजसिंहस्य ।
२. ज ल भ—तवैतद्भवि नाम्यतः ।
३. ज भ—कार्यं वाक्यं तस्य विनिश्चयं ।
ल—कार्यं-वाक्यमद्भुतविस्तरम् ।
४. ल—हृष्टरोमा महातेजा ।
५. ज ल भ—हि यज्ञमातिष्ठन् ।
६. ल—पुरुषाधमौ ।
७. ल—तावत्याकिरतां ।
८. ल—तस्मिन्नियमविस्तरे ।
भ—तस्मिन्नियमवियते । मध्यस्थं पाठं त्यक्त्वा अश्लोकस्य चतुर्थपादस्थेन वियत इति पदेन सम्बन्धः कृतः ।
९. ज—कृतश्रमविरु० ।
१०. ल—०तस्माद्देशादुपाक्र० ।

पू७] न च क्रोधं समुत्स्रष्टुं बुद्धिर्भवति पार्थिव ।

N] तथाभूतं हि तत्कर्म न कोपस्तस्य विद्यते ॥७॥ [७

उ७] ईदृशी यज्ञदीक्षा सा मम तस्मिन् महाक्रतौ ।

त्वत्प्रसादादविघ्नेन प्रापयेयं क्रियाफलम् ॥८॥ [N

८] त्रातुमर्हसि मामत्र शरणार्थिनमागतम् । [N

स्वपुत्रं राजशार्दूल रामं सत्यपराक्रमम् ॥९॥

९] काकपक्षधरं शूरं ज्येष्ठं त्वं दातुमर्हसि । [८

पू१०] शक्तो ह्येष मया गुप्तो दिव्येन स्वेन तेजसा ॥१०॥

रक्षसां येऽपि कर्तारस्तेषामपि विनिग्रहे । [९

N] श्रेयश्चास्मै प्रवक्ष्यामि बहुरूपममत्सरः ॥११॥

उ११] त्रयाणामपि लोकानां येन कामो भविष्यति । [१०

न च ते राममासाद्य स्थातुं शक्ताः कथञ्चन ॥१२॥

१२] तेषां रामान्नान्यो वै योद्धुमुत्सहते पुमान् । [११

वीर्योत्सिक्ता हि ते पापाः कालकूटोपमा रणे ॥१३॥ [१२

---

१. भ—प्रापयेऽहं ।

२. रा—कर्तुमर्हसि । ज—पातुमर्हसि ।

३. के—मां सत्र० । रा—सा तत्र ।
ज ल भ—मां राजन् ।

४. ज ल भ—शरणागतमागतम् ।

५. ज ल भ—वीरं ।

६. रा—ह्यमर्ष ।

७. ज ल—रक्षसामपि ।

८. ल—विनिग्रहं ।

९. ज—रामे । ल भ—रामो ।

१०. रा—शक्ताः ।

११. रा ब—नान्यः काकुत्स्थाद् ।

१२. रा ब—द्विषाम् ।

१३. ज ल भ—कालकूटसमा ।

१३] रामस्य राजशार्दूल न सहिष्यन्ति सायकान् ।
न च पुत्रकृतं[1] स्नेहं कर्तुमर्हसि पार्थिव ॥१४॥ [१२
१४] अहं ते प्रतिजानामि हतांस्तान्[2] विद्धि राक्षसान् । [१३
अहं वेद्मि[3] महात्मानं रामं राजीवलोचनम् ॥१५॥
१५] वसिष्ठश्च महातेजा ये चान्ये तपसि स्थिताः । [१४
यदि ते धर्मलोभश्च[4] मनश्च यशसि स्थितम् ॥१६॥ [१५
१६] अभिप्रेतमसंयुक्तमात्मजं[5] योक्तुमर्हसि ।
दशरात्रेण यज्ञस्य विघ्ना रामेण राक्षसाः ॥१७॥ [१७
१७] हन्तव्या राजशार्दूल मम यज्ञस्य वैरिणः । [N
यद्यभ्यनुज्ञां काकुत्स्थ ददन्ति[6] तव मन्त्रिणः ॥१८॥
१८] वसिष्ठप्रमुखाः सर्वे ततो रामं विसर्जय । [१६
नात्येति[7] कालः कालज्ञ यथाऽयं[8] मम राघव ॥१९॥
१९] तथा कुरुष्व भद्रं ते मा च शोके मनः कृथाः[9] । [१८
इत्येवमुक्त्वा धर्मात्मा धर्मार्थसहितं वचः ॥[10]

१. भ--पुत्रगतं ।

२. ज ल भ—हन्ताऽयं राक्षसान् रणे ।

३. ज ल भ—वेद ।

४. ल—धर्मलोभाच्च ।

५. ज ल भ—अभिप्रेतं महाबाहुमात्मजं मोक्तुमर्हसि ।

६. ज ल भ—वदन्ति ।

७. रा ज --नाभ्येति ।

८.—ज ल—यथा मे बहु । भ—तथा मे वद ।

९. ज—मज्जाः कृशाः ? ।

१०. ज—नास्ति ।

N] विरराम महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥२०॥ [१.९

इत्येवमुक्त्वा विरते मुनीन्द्रे
जगाद[1] भूयो रघुवंशकेतुः ।
N] वक्षःस्थले[2] दन्तमयूखजालै-
र्हारावलीरम्यमिव[3] प्रकुर्वन् ॥२१॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रवाक्यं
नाम सप्तदशः सर्गः ॥ १७ ॥

१. ल—अगाम ।

२. रा ज ल—वक्षःस्थले ।

३. ल—हारावलीं रम्य० ।

तच्छ्रुत्वा राजशार्दूलो विश्वामित्रस्य भाषितम् ।
१] मुहूर्तमासीन्निश्चेष्टः सदीनमिदमब्रवीत् ।।।।१।। [१
ऊनषोडशवर्षोऽयं रामो राजीवलोचनः ।
२] न युद्धे योग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसैः ।।२।। [२
इयमक्षौहिणी पूर्णा यस्याः पतिरहं प्रभो ।
३] तया परिवृतो युद्धं दास्यामि पिशिताशिनाम् ।।३।। [३
इमे हि शूरा विक्रान्ता भृत्या मेऽस्त्रविशारदाः । [४पू
४] अहमेषां धनुष्पाणिर्गोप्ता समरमूर्धनि ।।४।।
पू५] यावत्प्राणा वहिष्यन्ति युध्यतो मे निशाचरैः । [५
उ६] बालो ह्ययमनीकेषु न जानाति बलाबलम् ।।५।।
न चास्त्रैः परमैर्युक्तो न च बुद्धिविशारदः । [७
७] न चापि रक्षसां योग्यः कूटयुद्धा हि राक्षसाः ।।६।। [८

---

१. भ—०पवर्षस्तु ।
२. रा—योग्यता ह्यस्य । ल—योग्यता चास्य ।
३. ल—युद्धे ।
४. रा—मे सुविशारदाः । ज ल भ—शस्त्रविशारदाः ।
५. ज ल—अहं चैव । भ—अहं च ।
६. ज ल—यावत्प्राणं ।
७. ज ल भ—धरिष्यन्ति ।
८. ज—ह्ययमनेकेषु ।
९. ल—जानाति ।
१०. ज—शस्त्रैः । भ—चास्त्रे ।
११. भ—परमे युक्तो ।
१२. ल—बुद्धविशारदः ।
१३. ज—कूटयुद्धं हि रक्षसम् ।

विप्रयुक्तो हि रामेण मुहूर्तमपि नोत्सहे ।
८] जीवितुं नरशार्दूल[1] न रामं नेतुमर्हसि ॥७॥ [९
नववर्षसहस्राणि[2] मम जातस्य कौशिक ।
९] दुःखेनोत्पादिताश्चेमे[3] न रामं नेतुमर्हसि ॥८॥ [११
चतुर्णामात्मजानां वै[4] प्रीतिरत्र हि[5] मे परा ।
उ१३] ज्येष्ठं धर्मप्रधानं च[6] न रामं नेतुमर्हसि ॥९॥ [१२
यदि[7] वा राघवं ब्रह्मन्[8] नेतुमिच्छसि[9] सुव्रत ।
१४] चतुरङ्गबलोपेतं[10] मया सार्धममुं नय ॥१०॥ [१०
किंवीर्या राक्षसास्ते हि कस्य पुत्राः कथञ्चैने[11] ।
१५] कथंप्रमाणाः के चैने राक्षसा मुनिपुङ्गव ॥११॥ [१३
कथं च प्रतिकर्तव्यं तेषां रामेण रक्षसाम् ।
१६] मामकैर्वा[12] बलैर्ब्रह्मन् मया[13] वा कूटयोधिनाम् ॥१२॥ [१४
पू१७] सर्वं मे शंस भगवन् यथा तेषां[14] महारणे ।

---

१. ल—मुनिशार्दूल ।
२. ल—०र्षसहस्रासु ।
३. भ—दुःखेनोत्पादितं त्वतं ।
४. ज ल भ—हि ।
५. ज ल भ—परा मम ।
६. ज ल भ—हि ।
७. भ—यहि ।
८. भ—राघवं नेतुं ।
९. कै रा ब—नेतुमर्हसि । भ—ब्रह्मन्निच्छसि ।
१०. ब— ० बलं नेतुं ।
११. ज ल भ—कथं च ते ।
१२. ज भ—सायकैर्वा ।
१३. ल—मायया ।
१४. ल—ते राक्षसा मुने ।

N] स्थातव्यं दुष्टभावानां वीर्योत्सिक्ता हि राक्षसाः ॥१३॥ [१५
श्रूयते हि महावीरो रावणो नाम राक्षसः ।
१८] साक्षाद्वैश्रवणभ्राता पुत्रो विश्रवसो मुनेः ॥१४॥ [१६
न खल्वसौ यज्ञविघ्नं तवाचरति दुर्मतिः ।
N] न शक्तास्तस्य सङ्ग्रामे वयं स्थातुं दुरात्मनः ॥१५॥ [N
तस्मात् प्रसादं धर्मज्ञ कुरुष्व मम पुत्रके ।
२०] यदि वा चाल्पभाग्योऽहं भवान् हि मम दैवतम् ॥१६॥ [२२
देवदानवगन्धर्वा यक्षाः पतगपन्नगाः ।
२१] न शक्ता रावणं सोढुं किं पुनर्मानुषा युधि ॥१७॥ [२३
महावीर्यवतां वीर्यमाददाति सुवारितम् ।
२२] तेन सार्धं न शक्ताः स्मः संयुगे तस्य वा[illegible]ः ॥१८॥ [२४
अथवा लवणं ब्रह्मन् यज्ञघ्नं मधुनः सुतम् ।
२३] कथयस्वामरप्रख्य नैव प्रेक्ष्यामि पुत्रकम् ॥१९॥ [२५
पू२४] सुन्दोपसुन्दयोश्चैव पुत्रौ वैवस्वतोपमौ ।
N] यज्ञविघ्नकरौ ब्रूहि न ते दास्यामि पुत्रकम् ॥२०॥ [२६

---

१. ज ल भ—महावीर्यो । ब-मया वीरो ।

२. ज—साचाद्विश्रवणभ्राता ।

३. ल—मुने ।

४. ल—तवाचरति । ब—उ वा चरति ।

५. ज ल भ—मम वै मन्दभाग्यस्य ।

६. कै ब—वीर्यमादधाति ।

७. कै रा—०स्वामरप्रख्यं । ज-०स्वामरप्रेक्ष्य ।
ल—० स्वासुरमरप्य ।

८. ल—परयामि । भ-मोक्ष्यामि ।

९. कै—वैवस्वतोपमम् । रा-वैवसुतोपमौ ।

उ२४] मारीचश्चै सुबाहुश्चै विघ्नं वै कुरुतस्तव । [२७पू
पू२५] तथाऽपि न च मोक्ष्यामि पुत्रं रामं प्रसीद मे ॥२१॥[N
एतदन्यतमौ यौ तु योद्धाऽस्मि सम्युतो मुने ।
२६] अन्यथा न तु यास्यामि भगवन जयमात्मनः ॥२२॥

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे दशरथवाक्यं
नाम अष्टादशः सर्गः ॥ १८ ॥

१. ल—मारीचः शस्वराहुश्च ।
२. ज ल भ—कुरुतः सह ।
३. ज—तथा च ।
४. रा—पुत्रं राज्य प्र० । अ—न ते दास्यामि पुत्रकं ।
५. भ—एते ह्यन्यतमौ ।
६. ज ल भ—वा यौ । ल-सयुतो ।
७. कै—रामायणे वाल्मीकीये ।
८. कै—बालकाण्डपर्याये ।

तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य स्नेहपर्याकुलाक्षरम् ।
१] समन्युः कौशिको वाक्यं प्रत्युवाच महीपतिम् ॥१॥ [१
करिष्यामि प्रतिज्ञाय प्रतिज्ञां हातुमिच्छसि ।
२] राघवाणामयुक्तोऽयं कुलस्यास्य विपर्ययः ॥२॥ [२
यदि त्वं न क्षमो राजन् गमिष्यामि यथागतम् ।
३] हीनप्रतिज्ञः काकुत्स्थ सुखी भव सबान्धवः ॥३॥ [३
तस्य रोषपरीतस्य विश्वामित्रस्य धीमतः ।
४] चचाल वसुधा कृत्स्ना सुरांश्च भयमाविशत् ॥४॥ [४
क्रोधाभिभूतं विज्ञाय जगन्मैत्रो महानृषिः ।
५] धृतिमान् सुव्रतो धीमान् वसिष्ठो नृपमब्रवीत् ॥५॥ [५
इक्ष्वाकूणां कुले जातः साक्षाद्धर्म इवापरः ।
६] धृतिमान् सत्यवान् वीरो न धर्मं हातुमर्हसि ॥६॥ [६
पू७] त्रिषु लोकेषु विख्यातो धर्मात्मेति यशोधनः । [पू७
N] नातिविक्लवयाँ बुद्ध्या पृष्ठतः कर्तुमर्हसि ॥७॥ [N
स्रष्टा धर्मव्यवस्थाऽर्थं तपस्यारक्षणाय च ।

---

१. रा—ज्ञातुमर्हसि । ब–हातुमर्हसि । भ–हंतुमर्हसि ।
२. ल—०णाममुक्तोयं ।
३. ज भ—रघवे ।
४. रा—सुबांधव ।
५. ज ल—सुराश्च भयमाविशन् ।
६. कै—महामृषिः ।
७. भ—न तद्विक्लवया ।
८. ज—वक्तुमर्हसि ।
९. ज—धर्मार्थव० । भ–धर्मव्यवस्थायां ।
१०. रा—तपसो रक्ष० । भ—तपसां रक्ष० ।

N] क्षत्रियाः क्षत्रियश्रेष्ठ तथा भवितुमर्हसि ॥८॥ [N
नान्यो धर्मः क्षत्रियाणां रक्षणात् तातं इष्यते ।
N] स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व न धर्मं हातुमर्हसि ॥९॥ [७३
पू८] करिष्यामीति संश्रुत्य नैद्वै राजन्नकुर्वतः ।
N] इष्टापूर्तं हरेद्धर्मं तस्माद्रामं विसर्जय ॥१०॥ [८
कृतास्त्रमकृतास्त्रं वा नैनं ध्वंक्ष्यन्ति राक्षसाः ।
१०] गुप्तं कुशिकपुत्रेण ज्वलनेनामृतं यथा ॥११॥ [९
एष विग्रहवान् धर्म एष वीर्यवतां वरः ।
११] एष बुद्ध्याऽधिको लोके तपसश्च परायणम् ॥१२॥ [१०
एषोऽस्त्रं विविधं वेत्ति त्रैलोक्ये सचराचरे ।
१२] नैतदन्यः पुमान् वेत्ति न च वेत्स्यति कश्चन ॥१३॥ [११
१२] न देवा नर्षयः केचिन नासुरा न च राक्षसाः ।
N] गन्धर्वयक्षप्रवरा न किन्नरमहोरगाः ॥१४॥ [१२
अस्त्रं ह्यस्मै कृशाश्वेन परैः परमदुर्जयम् ।
१३] कौशिकाय पुरा दत्तं यदा राज्यं समन्वशात ॥१५॥ [१३

१. व—तत । कै–तप ।
२. भ—उच्यते ।
३. कै—प्रति पद्यस्व ।
४. ज—हातुमिच्छसि ।
५. भ—तवे ।
६. ल—कृतास्त्रमस्त्रास्त्रं ।
७. ब—प्रधर्षयति । भ-शक्ष्यन्ति ।
८. ज—तपस्तथ ।
९. ल—सचराचरैः ।
१०. ल भ—ह्यस्मिन् ।
११. रा—परं ।
१२. कै रा ज—समन्वयात् । ल–स सर्वशात् ।

ते हि पुत्राः कृशाश्वस्य प्रजापतिसुतोपमाः ।
१४] नैकरूपा महात्मानो दीप्तिमन्तो जयावहाः ॥१६॥ [१४
जया च सुप्रभा चैव दाक्षायिण्यौ सुमध्यमे ।
१५] तयोस्तु यान्यपत्यानि शतं परमदुर्जयम् ॥१७॥ [१५
पञ्चाशतं सुतानं जज्ञे जयाँ लब्धवरा पुरा ।
१६] वधाय परसैन्यानामक्षयान् कामरूपिणः ॥१८॥ [१६
सुप्रभा जनयामास पुत्रान पञ्चाशतं वरात् ।
पृ१८] सर्वास्तांल्लब्धवान वीरँ दुर्धर्षान सुबलीयसः ॥१९॥ [१९
N] एवंवीर्यो महातेजा विश्वामित्रो महातपाः ।
पृ२०] न रामगमने बुद्धिं वैक्लव्याद्रोद्धुमर्हसि ॥२०॥ [२०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे वसिष्ठवाक्यं
नाम एकोनविंशः सर्गः ॥ १९ ॥

१. ल—जितम्द्रियः ।
२. कै रा ज—दाक्षायिन्यौ । ब-दाक्षायन्यौ ।
३. ज—जया
४. ज ल—सुतान् ।
५. कै रा ज ब—०न्यानामक्षयाः ।
६. ज ल—वरान् ।
७. ज—वीरः ।
८. ज—विक्लवाद्रोद्धु० । ल—विक्लवाद्रोद्धुमर्हति ।
९. कै—रामायणे वाल्मीकीये ।

तथा वसिष्ठे ब्रुवति राजा दशरथः सुतम् ।
१] प्रहृष्टवदनं राममाजुहाव सलक्ष्मणम् ॥१॥ [१

कृतस्वस्त्ययनो मात्रा पित्रा दशरथेन च ।
२] पुरोधसा तथा वाग्भिर्मङ्गलैरभिवन्दितौ ॥२॥ [२

ततो मूर्ध्नि समाघ्राय राजा दशरथः सुतौ ।
३] ददौ कुशिकपुत्राय विश्वामित्राय धीमते ॥३॥ [३

N] तं[3] दृष्ट्वा देवगन्धर्वाः पुष्पवृष्टिं मुदा ददुः ।
उ४] विश्वामित्रगतं दृष्ट्वा रामं राजीवलोचनम् ॥४॥ [N

सपुष्पवृष्टिः पटहध्वनिरासीद्दिगन्तरे ।
५] शङ्खदुन्दुभिघोषश्च प्रयाते रघुनन्दने ॥५॥ [६

विश्वामित्रो ययावग्रे तं रामः पृष्ठतोऽन्वयात् ।
६] काकपक्षधरो धन्वी तं च सौमित्रिरन्वयात् ॥६॥ [७

विश्वामित्रगतं रामं दृष्ट्वा देवाः सवासवाः ।
७] प्रहर्षमतुलं प्रापुर्दशग्रीववधैषिणः ॥७॥ [N

---

१. ल—प्रहृष्टवदनौ ।
२. ल भ—मंगलैरभिनन्दितौ ।
३. रा—ते ।
४. ल—पुरा ।
५. भ—विश्वामित्रागतं ।
६. ल—०ध्वनिरासीद्दिगन्तरे । भ—०ध्वनिरासीद्दिगम्बरे ।
७. ज—प्रवाद्यत महास्वनः । ल भ—प्रवाद्यत महास्वनः ।
८. ज ल भ—विश्वामित्रो प्रयात्यग्रे ततो रामो महायशाः ।
९. ज ल भ—ततः ।
१०. ज ल भ—सौमित्रिरन्वगात् ।
११. ज ल भ—कलापिनौ धनुष्पाणी शोभमानौ महापथे ।

विश्वामित्रं महात्मानं तावुभौ रामलक्ष्मणौ ।
८] तदानुययतुर्वीरौ यथेन्द्रं देवमश्विनौ ॥८॥[1] [N
बद्धगोधाङ्गुलित्राणौ[2] खड्गतूणधनुर्धरौ[3] । [९उ
९] तदाऽनुजग्मतुः स्थाणुं[4] कुमाराविव पावकी[5] ॥९॥ [१०उ
अध्यर्धयोजनं गत्वा सरय्वा दक्षिणे तटे ।
१०] रामेति मधुरां वाणीं विश्वामित्रोऽभ्यभाषत॥१०॥ [११
वत्स राम जलं तावद् विधिवत् स्प्रष्टुमर्हसि[6] । [१२पू
११] उपदेक्ष्यामि ते श्रेयो मा भूत् कालस्य पर्ययः ॥११॥ [N
गृहाण द्वे इमे विद्ये बलामतिबलां तथा[7] । [१२उ
१२] न ते श्रमो जरा नाऽपि भविता नाङ्गवैकृतम्[8] ॥१२॥
न च सुप्तं प्रमत्तं वा धर्षयिष्यन्ति नैर्ऋताः[9] । [१३
१३] न च ते सदृशो राम वीर्येणान्यो भविष्यति ।
सदेवनरनागेषु लोकेष्विह पुमांस्त्रिषु ॥[10]१३॥[11] [१४
१४] न सौभाग्ये न दाक्षिण्ये न[12] बुद्धिश्रुतपौरुषे ॥१४॥

---

१. ज ल भ—विश्वामित्रं समन्वेतां त्रिशीर्षाविव पन्नगौ ॥
२. रा—०धाङ्गुणित्राणौ । ल—बद्धगोपाङ्गुलि० ।
३. ज ल भ—खड्गवन्तौ महाद्युती ।
४. ज ल—स्थाणुं देवमिवाचिंत्यो । भ—स्थाणुं देवमिवाचिंत्यं ।
५. कै रा—पावकम् । ब—पावकीं ।
६. ज ल भ—गृहाण वत्स सलिलं ।
७. ज ल भ—मंत्रग्रामं गृहाणेमं बलामतिबलां तथा ।
न श्रमो न जरा तुभ्यं न रूपस्योपसंप्लवः ॥
८. ज ल भ—त्वां ।
९. कै रा ब—नैनृताः । ल—नैनृताः । इत्यपपाठः ।
१०. ब—नास्ति ।
११. ज ल भ—न बाह्वोः सदृशो वीर्ये पृथिव्यां तव कश्चन ।
भविष्यति महाबाहो त्रिषु लोकेषु कश्चन ॥
१२. रा—न बुद्धिमति० । ज ल भ- न च बुद्धिविनिश्चये ।

नोत्तरे प्रतिकर्तव्ये त्वत्तुल्योऽन्यो भविष्यति ।[3] [१५
१५] एतद्विद्याद्वयं प्राप्य यशश्चाव्ययमाप्स्यसि ॥१५॥
बलामतिबलां चैव ज्ञानविज्ञानमातरौ । [१६
१६] क्षुत्पिपासे च ते राम नात्यर्थं पीडयिष्यतः ॥[6] १६॥[7] [
तथैव दुर्गकान्तारप्रदेशेष्वटवीषु च ।
१७] सारतां त्रिषु लोकेषु गमिष्यसि च राघव ॥१७॥ [
पितामहसुते चेमे विद्ये ह्यायुर्बलप्रदे ।[9]
१८] पात्रं त्वमसि काकुत्स्थ विद्ययोर्ग्रहणेऽनयोः ॥१८॥[10] [१९
स्वभावात् त्वं गुणैर्युक्तो कामैरप्यतुलैर्मतः ।[11]
१९] भूयस्तव गुणोत्कर्षमेने विद्ये करिष्यतः ॥[12] १९॥[13] [२०

१. ज ल भ—प्रतिपत्तव्ये ।

२. ज—समस्तेन वितानने । ल भ—समस्तैर्भविता न ते ।

३. ब—नास्ति ।

४. ज ल भ—राम गृहीत्वा नास्ति ते समः ।

५. ज ल भ—सर्वज्ञानस्य मातरौ ।

६. ज ल—क्षुत्पिपासे न ते राम मासादूर्ध्वं भविष्यतः ।
भ— ,, ,, ,, ,, मासादूर्ध्वे ,,

७. ज ल भ—बलामतिबलां चैव पठतो रघुनन्दन ।
गृहाण सर्वलोकस्य मातरौ बहुमानद ।
विद्याद्वयमधीयानः सर्वमेवाप्नुकं भुवि ॥

८. रा—ह्यायुर्बलप्रदे ।

९. ज ल भ—पितामहसुते ह्येते विद्ये तेजोमये शुभे ।

१०. ज ल—सदृशो तव काकुत्स्थ प्रदातुं त्वं हि धार्मिकः ।
भ— ,, ,, ,, ,, स्त्विह धार्मिकः ॥

११. ज ल—कामं खलु गुणाः सर्वे तवैवैते न संशयः ।
भ— ,, ,, ,, ,, तवैवैते न ,,

१२. ज ल—तपोभिः संभृते ह्येते बहुरोपे भविष्यतः ।
भ— ,, ,, ,, बहुपोपे ,,

१३. ज—अतः परमधिकः पाठः—बहुसमसहायिन्यो विद्या ह्ये ते भविष्यतः ।

ततो रामो जलं स्पृष्ट्वा प्राञ्जलिः प्रणतः स्थितः ।[1]
२०] प्रतिजग्राह ते विद्ये विश्वामित्रात्[2] तपोधनात्[3] ॥२०॥ [२१
गृहीतविद्योऽनुज्ञातस्ततो रामो महायशाः ।[3]
२१] तत्रोवास निशामेकां सरय्वां सहलक्ष्मणः ॥[4]२१॥[5] [२३उ

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[6] विद्याप्रदानं[7]
नाम विंशः सर्गः ॥ २० ॥

१. ज ल भ—ततो रामोऽञ्जलिं कृत्वा प्रहृष्टवदनः शुचिः ।
२. ज ल भ—महर्षेर्भावितात्मनः ।
३. ज—गुरुकार्याणि प्रयुज्य ततस्तु कुशिकात्मजे ।
ल—गुरुकार्याणि कार्याणि प्रयुज्य ,,
भ—गुरुकार्याणि सर्वाणि ,, ,,
४. ज—उषुस्तां रजनीं तत्र सरय्वां सुसुखं ततः ।
ल— ,, ,, ,, ,, सम्मुखास्ततः ।
भ— ,, ,, ,, ,, सुखतस्ततः ।
५. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
कथयंतः कथाश्चित्राः प्रीयमाणाः परस्परं ।
६. कै ब—आदिकांडे ।
७. रा—विद्यादानं । ज—विद्याप्रदानिको । ल भ—विद्याप्रदानिको ।

प्रभातायां तु शर्वर्यां विश्वामित्रो महामुनिः[1] ।
१] प्रत्यभाषत काकुत्स्थं शयानं[2] पर्णसंस्तरे ॥१॥ [१
कौसल्यामातरुत्तिष्ठ पूर्वा सन्ध्यामुपास्व[3] हे ।
२] पौर्वाह्णिकं विधिं कर्तुं तात कालोऽयमागतः ॥२॥[4] [२
तस्यर्षेः परमोदारं वचः श्रुत्वा तु[5] राघवौ ।
३] स्नात्वा कृतोदकौ[6] वीरौ जेपतुर्जप्यमाह्निकम्[7] ॥३॥ [३
कृताह्निकक्रियौ तत्र विश्वामित्रं तपोनिधिम् ।[8]
४] अभिवादयितुं चापि सहितावुपतस्थतुः ॥४॥[9] [४
ततः[10] प्रययतुश्चापि दिव्यां त्रिपथगां नदीम् ।
५] गङ्गां देवनदीं द्रष्टुं सरय्वा अविदूरतः[11] ॥[12] ५॥ [५

---

१. ज ल भ—महानृषिः ।
२. ज ल भ—अभ्यभाषत काकुत्स्थौ शयानौ ।
३. रा—सन्ध्यामुपास्महे ।
४. ज ल भ—कौसल्यासुप्रजा राम पूर्वसंध्या प्रवर्तते ।
५. ज ल भ—मनोनुगम् ।
६. ब—कृत्वोदकौ । ज ल भ—कृतान्हिकौ ।
७. ज ल—जपतुः परमं जपं । भ–जेपतुः परमं जपं ।
८. ज ल भ—कृताह्निकौ महावीर्यौ विश्वामित्रमृषिं ततः ।
९. ज ल—अभिवाद्य ततो वीरौ गमनाय प्रचक्रमे ।
भ—अभिवाद्य ततो वीरौ सह तेनोपजग्मतुः ।
१०. रा—तत्र प्र० । ज ल भ–तौ प्रयातौ महात्मानौ ।
११. ब—सरय्वामविदूरतः ।
१२. ज ल—ददृशाते सरय्वा वै संगमे पुण्यसंमिते ।
भ—दृष्ट्वा परमसरय्वावै संगमे पुण्यसंमते ।

तस्याराद्‌आश्रमपदमृषीणां पुण्यकर्मणाम् ।[1]

६] रम्यं ददृशतुः पुण्यं तप्यतामुत्तमं तपः ॥[2] ६॥ [६

दृष्ट्वा तदाश्रमपदं जातकौतूहलं मुनिम् ।[3]

७] पप्रच्छतुस्तदा तत्र तावुभौ रामलक्ष्मणौ ॥७॥[4] [७

कस्यायमाश्रमो ब्रह्मन् कश्चापि कुशलो मुनिः ।[5]

८] भगवन् श्रोतुमिच्छामि परं कौतूहलं हि नौ ॥८॥ [८

तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा प्रहसन् मुनिरब्रवीत् ।[6]

९] उभाभ्यां श्रूयतां राम[7] यस्यायं पुण्य[8] आश्रमः[9] ॥९॥ [९

कन्दर्पो मूर्तिमानासीत् काम इत्यभिविश्रुतः ।[10] [१०

१०] स्थाणुं स इह तप्यन्तं पुरा किल महत्तपः ॥[11] १०॥

---

१. ज—तमाश्रममिदं पुण्यं मुनीनां भावितात्मनाम् ।
ल भ— तमाश्रपदं ,, ,, ,,

२. ज—बहुवर्षसहस्राणि तत्र तेपिरे तपः ।
ल— ,, यत्र ते तेपिरे ,,
भ— ,, तत्र ,, ,, ,,

३. रा—जातकौतूहलौ ।

४—ज ल भ—तं दृष्ट्वा परमप्रीतौ राघवौ पुण्यमाश्रमं ।
ऊचतुर्मधुरं वाक्यं विश्वामित्रं महामुनिम् ॥

५. ज ल भ—पुण्यः कोऽन्वस्ति कुलपः पुमाम् ।

६. ज ल भ—विश्वामित्रो महामुनिः ।

७. ज ल—भगवन् । भ—उवाच ।

८. ज ल भ—वत्सौ ।

९. ज—पूर्वमाश्रमः । ल—पूर्वमाश्रयः । भ—पूर्वमाश्रमः ।

१०. ज ल भ—मूर्तिमानाम कंदर्पः काम इत्युच्यते बुधैः ।

११. ज—स चकार तपोविघ्नं स्थाणुं वेदुमनिर्मितम् ।
ल— ,, ,, ,, योद्धुमनिर्वितम ।
भ— ,, ,, ,, ,, वेदमार्गविदितम् ।

प्रवेष्टुमभ्ययात् तूर्णं कृतोद्वाहमुमापतिम् ।[2]

११] स बुध्वा तत्र रुद्रेण शप्तः किल महात्मना ॥[3] ११॥ [११

अथ शप्तस्य रुद्रेण तस्य वै रघुनन्दन ।[4]

१२] रुद्रशापाग्निनिर्दग्धं तच्छरीरं व्यशीर्यत ॥[5] १२॥ [१२

तस्याङ्गान्यपतन्[6] राम सर्वं[7] सर्वाण्यशेषतः ।

१३] अशरीरः कृतः काम एवं कोपान्[8] महात्मना[9] ॥१३॥ [१३

अनङ्ग इति विख्यातस्तदाप्रभृति राघव ।

१४] अनङ्ग इति देशोऽयं ख्यातः कामाङ्गनाशनात् ॥[10] १४॥ [१४

तस्यायमाश्रमः पुण्यः कामस्य रघुनन्दने ।

१५] तस्यायतनमत्रेदं तस्येमे परमर्षयः[11] ॥१५॥ [१५

तपोदमरताः सर्वे पुराणा ब्रह्मवादिनः ।

---

१. कै – कृतोत्साहमु० ।

२. ज ल—कृतोद्वाहं तु देवेशं गच्छन्तं समरुद्गणम् ।

भ— „ „ देवेशमातिष्ठत् „

३. ज—वेहुकामश्च दुर्मेधाः सोपाख्यातो महात्मना ।

ल— „ „ सोपाध्यातो „

भ—वहुकामश्च „ „ „

४. ज ल—अपध्यातस्य रुद्रेण चक्षुषो रघुनन्दन ।

भ— „ स्यारुद्रेण चक्षुषो „

५. ज ल—व्यशीर्यतास्य सहसा ततो गात्राणि धीमतः ।

भ— „ „ „ मात्राणि „

६. रा भ—०न्यपतद् ।

७. ज ल ल भ—हिमशैलसमीपतः ।

८. ज ल भ – क्रोधात्तेन ।

९. कै रा—महात्मनः ।

१०. ज ल—स चांगविषयः श्रीमान् यत्रांगानि मुमोच ह ।

भ—सांगविषयं „ यत्रांगं प्रमुमोच ह ।

११. ज ल भ—तस्येमे मुनयः पुरा ।

१६] निवसन्त्यत्र[1] नियतास्तपोनिर्धूतकल्मषाः ॥१६॥ [N
इहाद्य रजनीमेकां[2] वसामः शुभदर्शन ।
१७] पुण्ययोः सरितोर्मध्ये भविष्यामः[3] परेद्यवि[4] ॥१७॥ [१६
अभिगच्छाम च स्नात्वा शुचयः पुण्यमाश्रमम् ।[5]
१८] इह कामाश्रमे[6] राम[7] सुखं वत्स्यामहे निशि[8] ॥१८॥ [१७
तेषां संवदतामेवं तपोदीर्घेण चक्षुषा ।
१९] विज्ञाय परमप्रीता मुनयो हर्षमागमन्[9] ॥१९॥ [१८
तेऽर्घ्यपात्रं[10] च विधिवत् प्रयुज्यं कुशिकात्मजे[11] ।
२०] रामलक्ष्मणयोरेवमकुर्वन्नतिथिक्रियाम्[12] ॥२०॥ [१९
सत्कारं परमं प्राप्य कथाभिरभिरञ्जय[13] च । [२०पू
२१] अवसंस्ते महात्मानः कामाश्रमपदे सुखम् ॥[14]२१॥ [२१उ

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[15] कामाश्रमनिवासो[16]
नाम एकविंशः सर्गः[17] ॥ २१ ॥

---

१. रा—०स्तपोनिम्नतक० ।
२. ज ल—शिष्टा धर्मपराधीना नैषां पापं हि विद्यते ।
भ— ,, कर्मपराधीना नैषा ,, ,, ,,
३. ज—रजनीं नाम । ल भ-रजनीं राम ।
४. ज ल भ—तरिष्यामः । ५. ज ल—प्रपद्य वै । भ-परेऽहनि ।
६. ज ल भ—नास्ति । ७. रा ब—कामाश्रमो ।
८. ज ल भ—वत्स्यामः सुसुखं निशाम् ।
९. ज ल भ—द्रष्टुमागताः ।
१०. ज—अर्घ्यं पाद्यं तथातिथ्यं निवेद्य । ल भ—पाद्यमथातिथ्यं निवेद्य-
११. ज—कुशकात्मजे ।
१२. ज ल भ—०णयोः पश्चादकु० । १३. ब—०भिरभिगम्य ।
१४. ज ल भ—न्यवसंस्ते सुखं तत्र कामाश्रमपदे तदा ।
१५. कै—आदिकांडे । ब—नास्ति ।
भ—महर्षिवाल्मीकिविरचिते बालकाण्डे ।
१६. रा—०श्रमनिवासं । १७. रा—षड्विंशः ।

ततः प्रभाते विमले कृत्वाऽऽह्निकमरिन्दमौ ।
१] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य नद्यास्तीरं प्रजग्मतुः ॥१॥ [१
ते च सर्वे महात्मानो मुनयः सूर्यवर्चसः ।
२] उपस्थाप्य शुभां नावं विश्वामित्रमथाब्रुवन् ॥२॥ [२
आरोहतु भवान् नावं राजपुत्रपुरस्कृतः ।
३] अरिष्टं गच्छ पन्थानं मा ते कालात्ययो भवेत् ॥३॥ [३
विश्वामित्रस्तथेत्युक्त्वा तानृषीन् प्रतिपूज्य च ।
४] ततार सरितं पुण्यां सरयूं विमलोदकाम् ॥४॥ [४
ततो रामः सरिन्मध्ये पप्रच्छ मुनिपुङ्गवम् ।
५] वारिणो भिद्यत इव किमयं बलवान् स्वनः ॥५॥ [६
इति रामवचः श्रुत्वा कौतूहलसमन्वितः ।

---

१. ज भ—कृताह्निक ० ।
२. ज ल भ—०स्तीरमुपागतौ ।
३. ज ल भ—सर्व एव ।
४. ज ल—ऋषयः । भ-श्रेयः ।
५. ज ल भ—उपतस्थुः ।
६. ज ल भ—०त्रपुरःसरः ।
७. ज ल भ—माभूत् कालस्य पर्ययः ।
८. कै—प्रतिपूजयत् । ज ल भ- प्रत्यपूजयत् ।
९. रा—पुण्यं ।
१०. ज ल भ—सागरंगमाम् ।
११. ज ल भ—राघवस्तु ।
१२. ज ल भ—वारीणां भिद्यमानानां किमेष विमलो ध्वनिः ।
१३. ज ल भ—राघवस्य तु तच्छ्रुत्वा ।
१४. ज ल—आतकौतूहलं वचः ।

६] कथयामास भगवांस्तस्य[1] शब्दस्य विस्तरम्[2] ॥६॥ [७
कैलासशिखरे[3] राम मनसा निर्मितं सरः ।
७] ब्रह्मणा प्रागिदं तस्मात्[4] तदभून्मानसं सरः ॥[5]७॥ [८
सरसो मानसात् तस्मादयोध्यामनु शोभना ।
८] नदी प्रसूता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता ॥[8]८॥ [९
जाह्नवीमतिवर्तिन्यस्तस्याः शब्दोऽयमीदृशः ।[10]
९] वारिसंघर्षजो[11] राम प्रणामं प्रयतः[12] कुरु ॥९॥ [१०
चक्रतुस्तौ नमस्ताभ्यां[13] नदीभ्यामथ राघवौ ।[14]
१०] तीरं परं[15] समासाद्य जग्मतुर्लघुविक्रमौ ॥१०॥ [११

१. ज ल भ—धर्मात्मा तस्य ।
२. ज ल भ—निश्चयं ।
३. ज ल भ—कैलासपर्वते ।
४. रा—यस्मात् ।
५. ज ल भ—ब्रह्मणा रघुशार्दूल मानसं नाम तेन तत् ।
६. ज ल भ—नास्ति ।
७. ज ल भ—तस्मात् ।
८. भ—साचोध्यामभ्यभावयत् । ज—० सरश्च्युता ।
९. भ—अतः परमाधिकः पाठः—
सरःप्रसूता सरयूः पुण्या ब्रह्मसरःच्युता ।
१०. ज—शब्दोऽयं विमलस्तस्या जाह्नव्यामभिवर्तते ।
ल— ,, विपुलस्तस्यां जाह्नव्यामभिवर्तते ।
भ— ,, विमलस्तस्या
११. रा—वारिसंघर्षणो ।
१२. ल—प्रयुतः ।
१३. ब—ततस्ताभ्यां ।
१४. ज ल भ—उभाभ्यां तावुभौ कृत्वा प्रणाममतिधार्मिकौ ।
१५. ज ल भ—दक्षिणमासाद्य ।

अथानुपदमेवान्यद्वनं घोरमरिन्दमौ ।[1][2]
११] दृष्ट्वा पप्रच्छतुर्भूयो मुनिं तं[3] नृवरात्मजौ ॥११॥ [१२
कस्येदं मेघसङ्काशं वनं घोरं प्रचक्षते । [N
१२] दुर्गं पक्षिगणाकीर्णं झिल्लिकागणनादितम् ॥[4]१२॥ [१३पू
नानामृगगणैर्जुष्टं शकुनैश्च निनादितम् ।[5]
१३] सिंहव्याघ्रवराहर्क्षबर्हिकुञ्जरसेवितम् ॥[6]१३॥ [१४
धवाश्वकर्णकुटजपाटलातिन्दुतिन्दुकैः ।
१४] द्रुमैः कण्टकिभिश्चैव कीर्णं किमिदमुच्यताम् ॥१४॥[6] [१५
तावुवाच तयोर्वाक्यं श्रुत्वेदं भगवान् मुनिः ।[7]
१५] श्रूयतामित्युपामन्त्र्य भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥[8]१५॥ [१६
अयं जनपदः श्रीमान् पूर्वमासीन्महर्द्धिमान् ।[9]
१६] मालवाश्च करूषाश्च देवनिर्माणनिर्मिताः ॥[10]१६॥ [१७

---

१. कै—० मरिदमौ ।

२. ज ल भ—तद्वनं घोरसंनादं दृष्ट्वा नरवरात्मजौ ।

३. कै—नृपवरात्मजौ ।

४. ज ल—अहो वनमिदं घोरं झिल्लीकगण नादितम् ।

भ—,, ,, ,, झिल्लिकागणनादितं ।

५ ब—नास्ति ।

ज ल भ—भैरवैश्च समाकीर्णं शकुनैर्दारुणस्वनैः ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. ज ल—तयोस्तद्वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रो महानृषिः ।

भ— ,, ,, विश्वामित्रोभ्यभाषत ।

८. ज ल भ—श्रूयतां वत्स काकुत्स्थ यस्येदं भैरवं वनम् ।

९. ज भ—शिवौ जनपदौ श्रीमान् पूर्वमास्तां नरोत्तम ।

ल— ,, ,, ,, ,, नरोत्तमौ ।

१०. ज ल भ—मालवश्च करूषश्च देवनिर्माणनिर्मितौ ।

सखायं नमुचिं हत्वा मलेन समभिप्लुतः ।

१७] क्रोधाचैव सहस्राक्षो मित्रध्रुग् भगवान् किल ॥[2] १७॥ [१८

तमिह स्थापयामासुर्देवाः सर्षिगणाः पुरा ।[3]

१८] कलशैः पूर्णसलिलैः पुण्यैर्मलविशोधनैः॥[4] १८॥ [१९

सोऽस्मिन् देशे मलं त्यक्त्वा देवैः कालुष्यमेव च ।[6]

१९] मित्राभिद्रोहसंयुक्तं परं हर्षमवाप्तवान् ॥[7] १९॥ [२०

निर्मलो निष्करूषश्च शुचिरिन्द्रो यदा ह्यभूत् ।

२०] ततो देशस्य सुप्रीतो[11] ददौ वरमरिन्दमः ॥२०॥ [२१

इमौ जानपदौ स्फीतौ[13] ख्यातिं लोके गमिष्यतः ।

१. ज ल भ—पुरा वृत्रवधे राम ।

२. ज ल भ—क्षुधया च सहस्राक्षो ब्रह्महत्या यदाविशत्

३. ज—तमिन्द्रस्य वयः सर्वे सर्वदेवगणैः सह ।

ल भ—तमिन्द्रमृषयः ,, ,, ,, ।

४. ज ल भ—स्नपयांचक्रुरमलैः सलिलैर्मलमुक्तये ।

५. रा—देवाः ।

६. ज—तस्यां भूमौ मलं देवाः दत्त्वा करूषमेव च ।

ल— ,, भूम्यां ,, ,, ,, ,,

भ— ,, ,, ,, ,, ,, कालुषमेव च

७. ज ल भ—शरीरजं महेन्द्रस्य ततो हर्षं प्रपेदिरे ।

८. ज ल—निष्करूपश्च ।

९. ज ल भ—यदाभवत् ।

१०. ज ल भ—ददौ ।

११. ज ल भ—सुप्रीतस्ततो ।

१२. व—वरमारिन्द्रमौ ।

१३. ज व ल भ—जनपदौ ।

१४. ज ल भ—ख्यातिं कृत्स्ने ।

२१] मालवश्च करूषश्च अङ्गजेने ममाङ्किंतौ ॥२१॥ [२२
एवमस्त्विति तं देवाः पाकशासनमब्रुवन् ।[2]
२२] देशस्य नामनिर्वृत्तिः श्रूयतां वासवेरिता ॥[3]२२॥ [२३
एवमेतौ जनपदौ पूर्वमेव च शब्दितौ ।[4]
२३] मालवश्च करूषश्च मुदितौ वृद्धिसंयुतौ ॥[5]२३॥ [२४
अथ कालस्य महतो यक्षिणी कामरूपिणी ।[7]
२४] बलं नागसहस्रस्य धारयन्ती महाबला ॥२४॥
ताटका नाम सुन्दस्य भार्या दैत्यपतेरभूत् ।[9] [२५
२५] मारीचो राक्षसः पुत्रो यस्याः शक्रपराक्रमः ॥२५॥ [२६
सेमं जनपदं राम समुच्छादय सुदारुणा ।[10]

---

१. ज ल भ—ममाङ्गसहचारिणौ ।
२. ज ल भ—साधु साध्विति तं देवाः शशंसुः पाकशासनम् ।
३. ज ल—देशपूजां तु तां कृत्वा कृतां चक्रेण धीमता ।
भ— „ च „ दृष्ट्वा „ शक्रेण „ ।
४. ज—एवं जनपदो श्रीमांस्तुल्यकाल्यमारिन्दम ।
ल— „ जनपदौ श्रीमंस्तुल्यकाल „ ।
भ— „ „ श्रीमत्तुल्यकाल „ ।
५. रा—मुदितावृद्धिस • ।
६. ज—मालवश्च कुरूषश्च समृद्धौ धनधान्यतः ।
ल— „ करूषश्च समृद्धौ „ ।
भ „ „ संपन्नौ „ ।
७. ज ल भ—कस्य चित्त्वथ कालस्य यक्षी दुष्टप्रचारिणी ।
८. ज ल भ—धारयंत्यमितं युधि ।
९. ज ल—ताडका नाम भद्रं ते भार्या सुंदस्य धीमतः ।
भ—ताटका „ „ „ „ ।
१०. ज ल भ—उत्सादयति सा नित्यमेतौ जनपदौ विभो ।

२६] अद्यापि साऽधिवसति ताटका नाम यक्षिणी[1] ॥२६॥ [N
एषा पन्थानमावृत्य[2] निवसत्यर्धयोजने ।
२७] अत एव च[3] गन्तव्यं ताटकाभवनं[4] प्रति[5] ॥२७॥ [२९
स्वबाहुबलमाश्रित्य[6] जहि तां दुष्टयक्षिणीम् ।
२८] मन्नियोगादिमं[7] देशं कुरु निष्कण्टकं पुनः ॥२८॥[8] [३०
न हि कश्चिदिमं देशं शक्नोत्यागन्तुमीदृशम् ।
२९] यक्षिण्या घोररूपिण्या तत्सादितमनार्यया[9] ॥२९॥ [३१
इति[10] ते सत्यमाख्यातं यथेदं[11] दारुणं वनम् ।
३०] यक्षिण्योत्सादितं[12] पूर्वमद्याप्युत्साद्यते[13] सदा[14] ॥३०॥ [३२

इत्यार्षे रामायणे[15] बालकाण्डे[15]
ताटकावनप्रवेशो नाम द्वाविंशः[16] सर्गः ॥२२॥

१. ज भ—मखवांश्च करूपांश्च यत्नी पिशितभक्षिणी ।
ल— ,, ,, ,, वै पिशिताशिनी ।
२. ज ल भ—पन्थानमावार्य ।
३. ज ल भ—न ।
४. ज—ताडकायोजनं । ल—ताडकायोवनं । भ—ताडकाभवनं ।
५. ज ल भ—यतः ।
६. रा ल—सुबाहुबलमा० ।
७. ब—मन्नियोगादिमं ।
८. ज ल भ—नास्ति । ल—अपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
९. रा ल—तत्सादितमनार्यया ।
१०. ज ल भ—एतते सर्वमाख्यातं ।
११. ल—यद्वर्थे ।
१२. ज—यक्षण्युत्सादितं । ल—यक्षिण्युत्सा० । भ—यक्ष्यायुत्सादितं ।
१३. ज—सर्वमद्याप्यु ० । ब—० मद्याप्युसादिते ।
ल—सर्वमद्याप्युत्सध्यते ।
१४. ज ल भ—तथा ।
१५. भ—महर्षिवाल्मीकिविरचिते ।
१६. रा—सप्तविंशः ।

इति तस्याप्रमेयस्य मुनेर्वचनमद्भुतम् ।
१] श्रुत्वा रामस्ततो भूयः परिपप्रच्छ संशयम् ॥१॥ [१
अल्पवीर्या यदा यक्षाः श्रूयन्ते मुनिपुङ्गव ।
२] कथं नागसहस्रस्य धारयन्त्यबला बलम् ॥२॥ [२
विश्वामित्रस्ततो रामं श्रुत्वेति पुनरब्रवीत् ।[7]
३] शृणु राम यथा चैषा धारयन्त्यबला बलम् ॥३॥ [४
पूर्वमासीन्महायक्षः सुकेतुरिति विश्रुतः ।
४] अनपत्यः प्रजाकामः स तेपे[13] सुमहत्तपः ॥४॥ [५
तस्मै साक्षात् स्वयं ब्रह्मा तपसा परितोषितः ।[15]

---

१. ज ब ल भ—अथ ।
२. ल—मुनेर्वचनमब्रवीत् । भ— ०चनमुत्तमं ।
३. ज ल भ—पुरुषशार्दूल: ।
४. ज ब ल भ—प्रत्युवाच शुभां गिरम् ।
५. भ—सदा ।
६. रा ज ल भ—धारयत्यबला ।
७. ज ल भ—एतच्छ्रुत्वा वचस्तस्य विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।
८. ब—क्षेमे ।
९. रा—धारयत्यबला ।
१०. ज ल भ—वरदानान्महाबाहो यथैषा कामरूपिणी ।
११. ज ल भ—सुकेतुर्नाम धार्मिकः ।
१२. ज ल भ—शुभाचारः ।
१३. कै—तत्तेपे । रा–तेतपे । ज ल भ– स च तेपे ।
१४. रा—समहत्तपः । ज ल भ–महत्तपः ।
१५. ज ल भ—पितामहस्तु सुप्रीतस्तस्य यक्षपतेस्तदा ।

५] कन्यारत्नं ददौ राम ताटकां नाम नामतः ॥५॥ [६
बलं नागसहस्रस्य ददौ चास्याः पितामहः ।[2]
६] कांक्षतोऽप्यस्यै पुत्रं हि यक्षाय न ददौ मभुः ॥[4]६॥ [७
वर्धमानां तु तां दृष्ट्वा रूपयौवनशालिनीम् ।
७] कुम्भपुत्राय सुन्दाय ददौ भार्यामनिन्दिताम् ॥७॥ [८
कस्यचित्त्वथ कालस्य यक्षीपुत्रो व्यजायत ।
८] मारीचं नाम विख्यातं शापाद्राक्षसतां गतम् ॥८॥[10] [९
सुन्दे तु निहते तस्मिन्नगस्त्यं मुनिसत्तमम् ।[11]
९] ताटकां[12] पुत्रसहितौ मधर्षयितुमुद्यतौ ॥९॥ [१०

---

१. ज—ताडका । घ—त टकां । भ—ताडकां ।
२. ज ल भ —ददौ नागसहस्रस्य बलं तस्याः पितामहः ।
३. कांक्षतोप्यस्मै ।
४. ज ल—नन्वेय पुत्रं यक्षाय ददौ पुत्रं महायशाः ॥
भ— ,, ,, ,, ,, प्रभा ,, ॥
५. ज ल भ— हि तां राम ।
६. ज ल भ—भार्यां यशस्विनीं
७. रा ज ब ल भ—यक्षी पुत्रं ।
८. ज ल भ—दुखपं ।
९. ज भ—शापाद्राक्षसतां ।
१०. कै—अतः परमाधिकोऽपरहस्तविन्यस्तः पाठः—
सोपेत्य नियतं मोहादगस्त्यमृषिसत्तमं ।
ताडका सह पुत्रेण प्रधर्षयितुमिच्छति ॥
राक्षसस्त्वं भवत्वेवं मारीचं व्याजहार सः ।
अगस्त्यः परमक्रुद्धस्ताडकां चापि शप्तवान् ॥
११. ज—सोऽभ्येत्य नियतं मोहादगस्त्यमृषिसत्तमं ।
ल—सोपेति ,, मोहादगम्यं मृषिसत्तमम् ।
भ—साभ्येत्य ,, मोहदगस्त्यमृषिसत्तमं ।
१२. ज भ—ताडका ।
१३. ज ल भ—सह पुत्रेण ।
१४. कै—प्रधर्षयितु० । रा—प्रधर्ष० । ज ल भ—० यितुमिच्छति ।

राक्षसस्त्वं[1] भवेत्येवं[2] मारीचं व्याजहार सः । [१२

१०] अगस्त्यः परमक्रुद्धस्ताटकां[3] चेदमब्रवीत् ॥१०॥ [१३

पुरुषादा घोररूपा यक्षी त्वं विकृतानना ।[4]

११] इदं रूपं परित्यज्य विकृता त्वं भविष्यसि ॥[5][6] ११॥ [१४

सैषा शापसमाविष्टा ताटका दुष्टयक्षिणी ।[7]

१२] देशमुत्सादयत्येनमगस्त्याध्युषितं पुरा ॥[8] १२॥ [१५

एवं तां राम[9] दुर्वृत्तां यक्षीं परमदारुणाम् ।

१३] गोब्राह्मणहितार्थाय जहि घोरपराक्रमाम् ॥[10][11] १३॥ [१६

न हि वीर्यमदोन्मत्तामेतां परमदारुणाम् ।[12]

१४] निहन्तिं[13] त्रिषु लोकेषु त्वामृते रघुनन्दन ॥१४॥ [१७

१. कै—राक्षसस्त्वेव मुक्तातु ।

२. रा—भवत्वेवं । भ—भवेत्युक्त्वा र् ।

३. ज भ— ०स्ताडकां ।

४. ज ब ल भ—चापि शस्त्रवान् ।

५. ज ल—पुरुषादां महायक्षी विकृतां विकृताननाम् ।
    भ—पुरुषादा महायक्षीं विकृता विकृतानना ।

६. ज ल—शुभं रूपं परित्यज्य दारुणां रूपमास्थिता ।
    भ—शुभरूपं ,, ,, ,, ।

७. ज भ—सा वै पापकृतामर्षात्ताडका नाम राक्षसी ।
    ल— ,, ,, ,, ताटका ,, ,, ।

८. ज ल—देशमुत्सादयत्येतदगस्त्याचरितं तदा ।
    भ— ,, ,, त्येतमगस्त्या ,, ,, ।

९. ज ल भ—राघव ।

१०. ज ल भ—दुष्टप० ।

११. रा—नास्ति ।

१२. ज ब ल भ—न ह्येनां शापसंदुष्टां कश्चिदुत्सहते पुमान् ।
    रा—नास्ति ।

१३. ज ब ल भ—निहंतुं ।

न च ते स्त्रीवधकृते[1] घृणा कार्या कथञ्चन[2] ।
१५] प्रजानां च हितं नित्यं कर्तव्यं राजसूनुभिः ॥[3]१५॥ [१८
राजवंशाभिजातानामेष[4] धर्मः सनातनः ।
१७] अधर्मं जहि काकुत्स्थ कुरु धर्मं प्रजाहितम् ॥[5] १६॥ [२०
नृशंसमनृशंसं वा प्रजारक्षणकारणात्[6] ।
१६] पावनं वा सदोषं वा कर्तव्यं नात्र संशयः ॥१७॥[7] [१९
श्रूयते हि पुरा राम विरोचनसुता किल[8] । [२१उ
१८] राक्षसी दीर्घजिह्वेति विख्याता कामरूपिणी ॥१८॥ [N
विकृतं सुमहद्वक्त्रं[9] कृत्वा कालानलोपमम् ।
१०] ग्रसन्ती पृथिवीं कृत्स्नां[10] शक्रेण विनिपातिता ॥१९॥ [N
विष्णुना च पुरा राम शक्रतुल्यपराक्रमा ।
२०] अपीन्द्रलोकमिच्छन्ती[11] काव्यमाता निपातिता[12] ॥२०॥ [२२
एवमन्यैरपि पुरा राजधर्मविचारिभिः[13] ।
२१] अधर्मनिरता नार्यो हताः पुरुषसत्तम ।
N] तस्मादस्या वधाद्राम प्राणिनः सन्तु निर्भयाः ॥२१॥[14] [२३
इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[15] ताटकोत्पत्ति[16] र्नाम[17] त्रयोविंशः[18] सर्गः॥ २३॥

१. रा—स्त्रीवधं कृत्वा । ज—स्त्रीवधत्वे वै । ल भ—स्त्रीवधेत्येवं ।
२. ज ल भ—नरोत्तम ।
३. ज ल भ—चातुर्वर्ण्यहितं तात कर्तव्यं राजसूनुना ।
४. ज ल भ—राज्यभारनियुक्तानामेषः ।
५. ज ब ल भ—तस्मात्त्वं जहि काकुत्स्थ धर्मो ह्यस्या न विद्यते ।
६. ज ल—प्रजाकारणकारणात् ।
७. ज भ—नास्ति । ल—उत्तरपार्श्वेऽपरहस्तेन पुनर्विन्यासः ।
८. ज—भवेत् । ब ल भ—सुताभवत् ।
९. ज ल भ— ०सुमहत्कृत्वा वक्त्रं ।
१०. ज ल भ—जिघांसुः पृथिवीं सर्वां ।
११. रा—अप्येन्द्रलो० । ज—अपीन्द्रं लो० ।
ब—अनिन्द्रमिन्द्ररहितं । ल भ अनिन्द्रं लोकमि० ।
१२. ज ब ल भ—निषूदिता । १३. ज ब भ—राजर्षिर्द्धर्मचारिभिः ।
१४. रा—नास्ति । १५. कै आदिकाण्डे ।
१६. ब—तारकोत्प० । १७. रा—०र्नामाष्टाविंशः ।
१८. ज ल भ—पुस्तकेषु सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

मुनेर्वचनमक्लीबं श्रुत्वा नृपवरात्मजः ।[1]
१] राघवः प्राञ्जलिर्भूत्वा[2] प्रत्युवाच धृतव्रतम्[3] ॥१॥[4] [१
अहं पित्रा समादिष्टो मात्रा चैव महामुने ।
२] विश्वामित्रस्य वचनं त्वया कार्यमिति प्रभो ॥२॥[5] [३
सोऽहं पितृनियोगेन तव चैव महामुने ।[6]
३] करिष्ये दुष्टयक्षिण्यास्ताटकाया वधं प्रभो ॥[7]३॥[8] [४
गोब्राह्मणहितार्थाय देशस्य च सुखावहम्[9] ।
४] तदेतच्चैव प्रीतेन कर्तव्यं वचनं मुने ॥[10]४॥ [६

१. ज भ—वरनृपात्मजः
२. ज ल भ—०लिर्वाक्यं ।
३. ज ल भ—दृढव्रतं । ब—महामुने ।
४. ज ल भ—पुस्तकेषु सर्गसमाप्त्यभावाद् द्वाविंशः श्लोको ज्ञातव्यः द्वात्रिंशत्सर्गस्यैव ।
५. ज ल भ—पितुर्वचननिर्देशो ममायमृषिसत्तम ।
वचनं कौशिकस्येति कर्तव्यमविशंकया ॥
अनुशिष्टोस्म्ययोध्यायां गुरुमध्ये महात्मना ।
पित्रा दशरथेनैवमनुरुध्ये च तद्वचः ॥
ल—,, ,, वमनुध्यो ,, ,
ब—अतः परमधिकः पाठः—
अनुशिष्टोऽस्म्ययोध्यायां गुरुमध्ये महात्मना ।
पित्रा दशरथेनैवमनुद्ध्ये च तद्वचः ॥
६. ज भ— सोहं पितुर्वचः कुर्वन् शासनं ते महामुने ।
ल— ,, ,, कुर्याम् ,, ,, ,,
७. ज भ—निस्संदेहं करिष्यामि ताडकावधमुत्तमम् ।
ल— ,, ,, ताटकावध ,,
८. ब—नास्ति ।
९. ज ल भ—गोब्राह्मणहितं चैव यशस्यं च सुखावहं ।
१०. ज—उवाचैवाप्रमेयस्य वचनं कृतमस्तु मे ॥
ल भ—तव चैवा ,, ,, ,, ,,

एवमुक्त्वा[1] धनुः सज्यं कृत्वोद्यम्य च राघवः[1] ।[2]

५] ज्याशब्दमकरोत्[3] तीव्रं दिशः[4] शब्देन पूरयन् ।।५।। [६

तेन शब्देन वित्रस्ता मृगा वननिवासिनः[5] ।

६] ताटका चापि संभ्रान्ता ज्यास्वनप्रतिबोधिता ।।[6] ६।। [७

नन्दमाना भृशं क्रुद्धा विकृता[7] विकृतानना ।[8]

७] श्रुत्वैवाभ्याद्रवत्[9] तीव्रं[10] यतः शब्दोऽभिनिःसृतः[11] ।।७।। [९

तां दृष्ट्वा राघवः क्रुद्धां विकृतां विकृताननाम् ।

८] अतिप्रमाणामायान्तीं रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ।।[12] ८।। [१०

पश्य लक्ष्मण राक्षस्या दारुणं विकृतं मुखम् ।[13] [११ पू

९] अतिप्रमाणं क्रुद्धाया रूपं चातिभयावहम् ।।[14] ९।। [N

---

१. रा—राघवाः ।

२. ज ल भ—एवमुक्त्वा धनुर्मध्ये कृत्वा मुष्टिमरिंदमः ।

३. ज ब ल भ—ज्याघोषम० ।

४. ज ल भ—देशं ।

५. ज भ—ताडकावनवा० । ल—ताटकावनवा० ।

६. ज भ—ताडका च सुसंरब्धा तेन शब्देन कोपिता ।
    ल—ताटका ,, ,, ,, ,, ।

७. के रा—विकृताविकृता० ।

८. ज ल भ—तं शब्दं भीमनिर्ह्रादं यक्षी कोपाभिमूर्छिता ।

९. ब—श्रुत्वैवाभ्यागमत् । ल—श्रुत्वैवाभ्यभवत् ।

१०. ज ल भ—वेगाद् ।

११. रा—शब्दो विनिःसृतः । ज ल भ—शब्दो हि निःसृतः ।

१२. ज ल भ—प्रमाणेनातिवृद्धां च लक्ष्मणं वाक्यमब्रवीत् ।

१३. ज ल भ—यक्ष्या लक्ष्मण पश्यैतद्रूपं परमदारुणम् ।

१४. ज ल भ—भिद्यते दर्शनेनास्या हृदयं कातरस्य च ।
    ल— ,, ,, ,, ,, हि ।

एतां पश्य महाबाहो मद्बाणेन हृदि क्षताम्।[1]
१०] निहतां पतितां भूमौ रुधिरेण परिप्लुताम् ॥[2]१०॥ [N
इयं हि राक्षसी घोरा महादुष्कृतकारिणी।
११] मच्छरेण विनिर्दग्धा धूतपापा भविष्यति ॥११॥[3] [N
एवं तस्य ब्रुवाणस्य ताटका[4] क्रोधमूर्च्छिता।
१२] उद्यम्य बाहू गर्जन्ती वेगेनाभ्याशमाययौ[5] ॥१२॥ [१.५
तामापतन्तीं वेगेन[6] विक्रान्तामशनीमिव[7]।
१३] ताटकां विकृताकारां जिघांसन्तीं सुदारुणाम् ॥१३ [N
महाभ्रचयसङ्काशां समुच्छ्रितभुजद्वयाम्।
१४] विव्याधोरसि बाणेन चन्द्रार्धाकारवर्चसा ॥१४॥[8] [N
सा तेन वज्ररूपेण बाणेन भृशविक्षता।
१५] ववाम रुधिरं भूरि पपात च ममार च ॥१५॥[8] [२८
तां हतां पतितां[9] भूमौ दृष्ट्वा सुरपतिस्तदा।
१६] साधु साध्विति काकुत्स्थं सुराश्च[10] समनादयन् ॥१६॥ [२९

---

१. ज—एनां पश्य दुराधर्षां निर्भिन्नहृदयां क्षितौ।
ल—एतां ,, ,, त्रिभिन्नहृदयां ,, ।
२. ज ल—शयानां शयने धन्ये धूतपापां मया हताम्।
भ— ,, ,, ,, पूतपापां ,, ,, ।
३. ज ल भ—नास्ति।
४. ज भ—ताडका।
५. ज ल भ—काकुत्स्थं समभिद्रुता।
६. ज ल भ—आपतंतीं तदा रामो।
७. रा—विभ्रांतामसनी०। ज ल भ—विचक्रामाशनीमिव।
८. ज ल भ—शरेणोरसि विव्याध पपात च ममार च।
९. ज ल भ—भीमसंकाशां।
१०. ज ब ल—०समपूजयन्। भ—सुराः समभिपूजयन्।

उवाच च भृशं प्रीतः सहस्राक्षोऽम्बरे स्थितः ।[1]
१७] सह सर्वामरगणैर्विश्वामित्रमिदं वचः ॥[2] १७॥ [३०
मुने कौशिक भद्रं ते सेन्द्राः सुरगणास्त्वया ।
१८] तोषिताः कर्मणानेन रामस्यामिततेजसः ॥[3] १८॥ [३१
अस्मन्नियोगाद् भद्रं ते स्नेहं दर्शय राघवे ।[3]
१९] तपोयोगबलेनैनमाप्यायययितुमर्हसि ॥[4] १९॥
प्रजापतिसुतांश्चैव कृशाश्वाद्राजसत्तमात् । [३२
२०] यान्यवाप्तानि तेऽस्त्राणि तान्यस्मै प्रतिपादय ॥२०॥[7] [N
पात्रभूतो हि ते शिष्यो रामो दशरथात्मजः ।[8]
२१] कर्तव्यं च महत् कार्यमस्माकं [9] सूनुना ॥२१॥ [३३
एवमुक्त्वा सुरगणा विश्वामित्रं पुनर्ययुः

---

१. ज ल—उवाच वासवः प्रीतः सहस्राक्षः पुरन्दरः ।
भ—नास्ति ।
२. ज ल भ—सुराश्च सर्वे संप्रीता विश्वामित्रमिदं वचः ।
३. ज ल भ—तोषिताः कर्मणानेन स्नेहं दर्शय राघवे ।
४. रा ब—०बलेनैवमाप्य०० ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. ब—शस्त्राणि ।
७. ज भ—प्रजापतेः कृशाश्वस्य पुत्रान् दिव्यपराक्रमान् ।
ल— ,, ,, सुतं दिव्य ,, ।
ज ल—तेजोबलयुतान् ब्रह्मन् राघवाय प्रदापय ।
भ— ,, ,, ,, दयस्व च ।
८. ज—पात्रभूतो ह्ययं तेषां तवानुगमने गतः ।
ब— ,, ,, ,, ,, रतः ।
ल— ,, ,, ,, भुवानुगमने वृतः ।
भ— ,, ,, ,, तवानु० ,, ,, ।
९. ज भ—च महत्कर्म सुराणां । ब—सुमहत्कार्य० ।
ल—सुमहत्कर्म सुराणां ।

२२] यथागतेनैव[1] पथा ततः सन्ध्याऽभ्यवर्तत ॥२२॥ [३४
विश्वामित्रोऽपि भगवांस्ताटका[2]वधतोषितः ।[3]
२३] रामं मूर्धन्युपाघ्राय वचनं चेदमब्रवीत ॥[4]२३॥ [३५
इहाद्य रजनीं वीरं[5] वसामं[6] शुभदर्शन ।[7]
२४] श्वः प्र[8]भाते गमिष्यामस्तदाश्रमपदं[9] मम[10] ॥२४॥ [३६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] ताटकावधो[12]
नाम[13] चतुर्विंशः[13] सर्गः ॥२४॥

१. ज ब ल——एवमुक्त्वा सुराः सर्वे जग्मुर्हृष्टा यथागतं ।
भ—— ,, ययुः सर्वे ,, ,, ।
रा——यथागतेनैव पथा ततः साध्वा ·········· ।
ज ल भ——विश्वामित्रं समाधाय ततः संध्याभ्यवर्तत ।
ब—— ,, समादाय ,, ,, ।
२. कै—— ० स्तारका० ।
३. ज भ——ततो मुनिवरः प्रीतस्ताडकावधतोषितः ।
ल—— ,, ,, प्रीतस्ताटका ,, ।
४. ज ल——मूर्ध्नि राममुपाघ्राय मधुरं वाक्यमब्रवीत् ।
भ——मूर्ध्नि राममुपघ्राय ,, ,, ।
५. ज——नाम । ल भ——राम ।
६. ज ल——वसामि ।
७. कै——अतः परमपरहस्तेन विन्यस्तोऽधिकः पाठः——
अयं सिद्धाश्रमो राम यत्प्रसादाद्भविष्यति ।
भ——अयं सिद्धाश्रमो नाम यत्प्रसादाद्भविष्यति ।
८. ज ल भ——प्रभाते च ।
९.——ज ब ल भ—— ०स्तथाश्रमपदं ।
१०. ज ल——निजं । भ——निजां ।
११. कै——आदिकांडे । ब——नास्ति ।
१२. ज भ——ताडकावधो ।
१३. कै——नामोनत्रिंशः । रा ब ल भ——नाम ।
ज——नाम त्रयोविंशः ।

प्रभातायां तु[1] शर्वर्यां विश्वामित्रो महामुनिः ।
१] प्रहसन् राममाभाष्य मधुरं वाक्यमब्रवीत् ॥[2]१॥ [१
तुष्टोऽस्मि राम भद्रं ते कर्मणा ह्यद्भुतेन वै ।
२] प्रीतिदायं च दास्यामि सर्वाण्यस्त्राण्यशेषतः ॥२॥[3] [२
यान्यहं वेद्मि[4] काकुत्स्थ पात्रभूतो[5]ऽसि मे यतः[6] ।
३] ब्रह्मास्त्रं प्रथमं[7] राम दिव्यमेतद्[8] ददामि ते ॥३॥ [N
त्रयाणामपि[9] लोकानां पीडितानां[10] भयापहम् ।
४] तथैव दण्डमस्त्रं ते[11] प्रजासंहारकारकम् ॥[12]४॥ [N

---

१. भ--नु ।

२. ज ल भ--प्रहसन्वाक्यतत्त्वज्ञमुवाच मधुराक्षरम् ।

३. ज ल भ—परितुष्टोऽस्मि भद्रं ते राजपुत्र महाबल ।
प्रीत्या परमया युक्तः सर्वास्त्राणि ददामि ते ॥

४. ज ल भ—वेद ।

५. ज—पात्रीभूतोसि ।

६. ज ब ल भ—मतः ।

७. ज ल भ—परमं ।

८. ज ल भ—दिव्यमस्त्रं ।

९. ज ल भ—सर्वेषामेव ।

१०. रा—भयावहम् ।

११. रा—दंडमस्त्रं मे । ब—चंडमस्त्रं ते ।

१२. ज ल—दण्डमस्त्रं महच्चोग्रं ददामि रघुनंदन ।
भ-- ,, महच्चोर्ग्रं ,, ,, ।

ददानि राम शत्रूणां येनाधृष्यो भविष्यसि । [N
५] धर्मास्त्रं च महाबाहो कालकल्पं तथैव च ॥[4] ५॥ [५पू
कालास्त्रमपि वाऽस्त्रं ददानि दयितं विभोः ।[5] [N
६] विष्णुचक्रं च ते दिव्यमिन्द्रवज्रं च दुर्जयम् ॥[6] ६॥ [८उ
वज्रमस्त्रं च दुर्धर्षं शैवं[7] शूलवरं तथा ।[8]
७] अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चोग्रमैषीकं च ददानि ते ॥[10] ७॥ [६
शङ्करास्त्रं च दीप्तास्यं गृहाणेदं मयोदितम् ।[12] [N
८] गदाद्वयं वामतिमं गृहाणारिभयावहम् ॥८॥[13]

---

१. कै--ददामि । ज ल भ—सर्वदा ।
२. ज ल भ—येनाजेयो ।
३. कै--अथाब्रवीत् । अपरहस्तेन पुनर्लिखित: । रा—ददामि ते ।
४. ज ल भ--धर्मचक्रं ततो राम कालचक्रं तथैव च ।
५. ज भ—विष्णुचक्रं तथास्त्युग्रमिन्द्रचक्रं तथैव च ।
ल— ,, ,, मिन्द्रशाक्रं ,, ,, ।
६. ज—वज्रमस्त्रं नरश्रेष्ट शैवं पशुपतं तत:
ल— ,, ,, ,, पाशुपतं ततः ।
भ-- ,, नरश्रेष्ठ ,, ,, ,, ।
७. कै—दैवं ।
८. ज ल—गदे द्वे चापि काकुत्स्थ कौमोदकिशिखोदके ।
भ— ,, ,, ,, कौमोदकिशिखोदकी ।
९. रा—ब्रह्मवराश्चोग्र० ।
१०. ज ल—अस्त्रं ब्रह्मशिरश्चैवमैषीकमपि राघव ।
भ— ,, ,, श्चैव ऐषीकमपि ,, ।
११. कै—गृहाणेदं ।
१२. ज ल—ददामि ते महाबाहो शस्त्रं शस्त्रधरं तथा ।
भ—,, ,, महोग्रास्त्रं श्वेतं दरवरं तथा ।
१३. ज—शांकरास्त्रं च दीप्तास्यं गृहाणेदं ममोद्यतां ।
ल— ,, ,, ,, ,, ममोद्यतम् ।
भ—शंकरास्त्रं ,, ,, ,, मयोद्यतं ।

कौमोदकीं वाऽस्त्रमतिमां तथेमां लोहि[1]तामुखीम् ।[2] [७
९] धर्मपाशं तथैवास्त्रं कालपाशं च दुर्जयम् ॥[3] ९॥
वारुणं चापि ते पाशं ददानि परमार्चितम् ।[4] [८
१०] शुष्कार्द्रे चाश[5]नी राम गृहाणेमे मयोदिते ॥[6] १०॥
पैनाकम[7]पि चैवास्त्रमस्त्रं नारायणं तथा । [९
११] आग्नेयम[8]पि वाऽस्त्रं वायव्यं च ददा[9]नि ते ॥[10] ११॥
प्रमर्दनं प्रमथनं तथैवारिविदारणम् ।[11] [१०
१२] अस्त्रं हय[12]शिरो नाम क्रौञ्चास्त्रं वाऽपराजितम् ॥[13] १२॥
शक्ती च द्वे गृहाणेमे अमोघां विजयां तथा ।[14] [११

१. कै—लोहितामसीम् ।
२. ज भ—अपि ते नरशार्दूल प्रयच्छामि नृपात्मज ।
 ल—,, ,, ,, ,। नृपात्मजे ।
३. ज ल भ—धर्मपाशमिमं कालपाशं तथैव च ।
४. ज ल भ—वारुणं पाशरत्नं च ददाम्येतदनुत्तमम् ।
५. कै—लुप्तः पाठः । रा—वाशनी ।
६. ज—अशने द्वे प्रयच्छामि शुष्कार्द्रे रघुनंदन ।
 ल—अशनी ,, ,, शुष्कार्द्रे ,, ।
 भ— ,, ,, ,, शुष्कार्द्रो , ।
७. ज—दैवास्त्रमपि नागास्त्र० । ल भ—देवास्त्रमपि नागा० ।
८. रा—आग्नेयमपि वा मद्यं । ब—आग्नेयमस्त्रं दयितं ।
९. कै—ददामि । पुनरपरकरणोधितः ।
१०. ज ल भ—आग्नेयमस्त्रं दयितं दैवतास्त्रं तथैव च ।
११. ज ल— वायव्यास्त्रं च दयितं ददामि तव राघव ।
 भ—वायव्यमस्त्रं दयितं विसृजामि रघूत्तम ।
१२. कै रा—हयशिरश्चैव कूटास्त्रं ।
१३. ज ल भ—अस्त्रं हयशिरो नाम क्रौञ्चमस्त्रं तथैव च ।
१४. ज ल भ—शक्ती द्वे पुरुषव्याघ्र विसृजामि रघूत्तम !

१३] तथैव कालं मुशलं[1] कङ्कालमथ किङ्किणी ॥[2] १३॥
धारय त्वं नरव्याघ्र[3] ददाम्येतानि तेऽनघ । [१२
N] अस्त्रं वैद्याधरं[4] नाम नन्दकं[5] नाम चापरम् ॥१४॥[6] [१.३पू
प्रस्वापनं प्रमथनं[7] स्तंभनं च ददानि ते[8] । [१.४उ
१.४] धर्षणं[9] शोषणं चैव तथा वारिनिकृन्तनम्[10] ॥[11] १५॥
मदनोन्मादने चैव कन्दर्पदयितावुभौ ।[12] [१५

---

१. कै—सुमलं ।

२. ज ल—कंकालं मुसुलं घोरं कपालमथ किंकिणी ।
भ—कंकालमुशलं ,, ,, किंकिणीं ।

३. ज ल भ—त्वं हि वीरघ्न ।

४. ज ल भ—विद्याधरं ।

५. ज ल भ—नन्दिकं ।

६. कै रा—नास्ति ।

अतः परमधिकः पाठः—
ज ल भ—असिरत्नं महाबाहो ददामि मनुजाधिप ।
गान्धर्वमस्त्रं दयितं मोहनं नाम नामतः ॥
भ— ,, ,, मोहनं नामतः पुनः ॥
इति द्वितीयार्धस्य पाठान्तरम् ।

७. कै—मोहनं च ।

८. ज ल भ—वितरामि तवानघ ।

९. कै—वर्षणं शो० । ज ल—दर्पणं शो० । ल—दर्पं शोषणे ।

१०. ज भ—संतापनमिति श्रुतं । व ल—संतापनमिति स्मृतं ।

११ रा—प्रस्वापनं मोहनं च स्तंभनं च ददामि ते ।

१२. ज—दमनं चैव दुर्धर्षं कंदर्पदयितामिव ।
ल—दमने ,, ,, कंदर्पदयितानि तु ।
भ—दमनं ,, ,, ,, वै ।

१५] गन्धर्वास्त्रं तथैवेदं मोहनं च ददानि ते ॥[1]१६॥ [१४पू
तेजोऽभ्याहरणं[2] शौर्यमरिपक्षप्रतापनम्[3] ।
१६] रुधिरामिषपैशाचकौवेरं च ददानि ते ॥१७॥[4] [N
राक्षसं चापि शत्रूणां श्रीधृतिमाणनाशनम् ।
१७] मूर्च्छनं स्वापनं चास्त्रं कम्पनं चारिकंपनम्[6] ॥१८॥[7] [N
उ१८] सत्यं चैवानृतं चास्त्रं महामायास्त्रमेव च ।[8]
अमोघतैजसं चैव परतेजोऽपकर्षणम् ॥[9]१९॥ [N
१९] सोमास्त्रं शिशिरं राम त्वाष्ट्रं चारिव्यथाकरम्[10] ।[11]
मानवं चास्त्रमजितं दैत्यदानवमेव च ॥[12]२०॥ [N

१. ज—पैशाचमथं दयितं मानवं नाम नामतः ।
ळ भ—पैशाचमस्त्रं ,, ,, ,, ,, ।
२. कै—तेजोभ्याहरणं । रा—तेभ्योभ्याहरणं ।
३. कै—शौचमरिपक्ष० । ब—शौ...मरिपक्षप्रयातनं ।
४. ब—पैशाचमस्त्र दयितं कौबेरं ।
५. ज ळ भ—नास्ति ।
६. कै—चारिकुंस्यमम् । पुनरपरकरशोधितः ।
७. ज ळ भ—गृहाण नरशार्दूल सर्वाण्येतानि राघवं ।
वामनं नरशार्दूल सौमनं च महाबलं ॥
८. ज ळ—संवर्तं चैव दुर्धर्षं मौसलं च नृपात्मज ।
भ— ,, ,, ,, मौशलं ,, ,, ।
९. ज भ—सत्यमस्त्रं महाबाहो मायाधरमथापि च ।
ळ— ,, ,, ,, वा ।
१० रा—चारिवृथाकरम् ।
११. ज भ—मोघतेजोबकं राम परतेजोपकर्षणं ।
१२. ज ळ भ—सोमास्त्रं शिशिरं नाम तथा त्वाष्ट्रं सुदारुणं

२०] एवमादीनि चान्यानि ददानि दयितोऽसि मे ।
गृहाणैतानि मत्तस्त्वमस्त्राणि नृवरात्मज ॥२१॥[1] [N
२१] अथासौ[2] प्राङ्मुखो भूत्वा शुचिर्मुनिवरस्तदा ।
ददौ रामाय सुप्रीतश्चास्त्र[3]ग्राममनुत्तमम् ॥२२॥ [N
२२] जपतोऽथ मुनेस्तस्य मन्त्रग्राममशेषतः ।[4]
उपतस्थुर्महास्त्राणि मूर्तिमन्ति नृपात्मजम् ॥[5]२३॥ [N
२३] ऊचुश्च राममभ्येत्य[6] तान्यस्त्राणि समन्ततः ।[7] [N
प्राञ्जलीनि महाबाहो शाध्यस्मानिति राघवम् ॥[8]२४॥ [N
२४] तान्यवेक्ष्य ततो रामः[9] समालभ्य[10] च पाणिना ।
[11]मां भजध्वं स्मृतानीति सर्वाण्येवाभ्यभाषत ॥[12] २५॥ [N

---

१. ज ल भ––दारुणं च भवस्यापि रौद्रमस्त्रं तथापि च ।
एतानि कामतेजांसि कामरूपबलानि च ॥
गृहाण चारुरूपाणि प्रीतात्माहं ददामि ते ।

२. ज ल भ—अथास्य ।

३. ज ल भ––सुप्रीतो दिव्यास्त्रग्राममनुत्तमं ।

४. ज ल भ––जपतस्तस्य तु मुनेर्विश्वामित्रस्य धीमतः ।

५. ज—अभ्युपेयुर्महाभागमस्त्राणि मुनिपुंगव ।
ल भ—„ „ मुनिपुंगवं ।

६. ब—राममभ्येति ।

७. ल ज—ऊचुश्च रामं सर्वाणि प्राञ्जलीनि नृपात्मजं ।
भ—अमुश्च „ „ „ „ ।

८. ज ल—इमानि च महोदार किंकराणि च सुव्रत ।
भ—„ स्म „ „ „ „ ।

९. ज ल भ—प्रतिगृह्णीष्व काकुत्स्थ ।

१०. कै—समालभ्य ।

११. कै—मा ।

१२. ज ल भ—सर्वाणि मे मानसानि भवन्त्वित्यभ्यभाषत ।

तान्यवाप्य ततो रामो विश्वामित्रं महामुनिम् ।
२५] प्रणिपत्य यथान्यायं गमनाय मनो दधे॥[2]२६॥ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[3] अस्त्रप्रदानं[4]
नाम पञ्चविंशः[5] सर्गः[5] ॥२५॥

१. ज ल भ—ततः प्रीतमना ।

२. ज ल भ—अभिवाद्य महातेजा गमनायोपचक्रमे ।

३. कै—आदिकाण्डे ।

४. ज ल भ—अस्त्रग्रहणं ।

५. कै—विंशोऽध्यायः । ज—चतुर्विंशः सर्गः ।
रा च ल भ—सर्गः

प्रतिगृह्य ततोऽस्त्राणि दिव्यानि प्रीतमानसः ।
१] गच्छन्नेव ततो रामो विश्वामित्रमुवाच ह ॥१॥ [१
गृहीतास्त्रोऽस्मि भगवन्नजेयस्त्रिदशैरपि ।
२] अस्त्राणां तु ममैतेषां संहारं वक्तुमर्हसि ॥२॥ [२
इत्युक्तवति रामेऽथ विश्वामित्रो महामुनिः ।
३] आचख्यौ परमास्त्राणां सरहस्यं निवर्तनम् ॥३॥ [३
उक्त्वा संहारमस्त्राणां रामायामिततेजसे ।
४] ददौ मन्त्रं जृम्भकानां वशीकरणमुत्तमम् ॥४॥ [N
सत्यवाक् सत्यकीर्तिश्च हृष्टोऽदंभस्तथैव च ।
५] प्रणिपातरसो नाम अवाङ्मुखपराङ्मुखौ ॥५॥ [४

---

१. ज ल भ—गच्छन्निव ।

२. ज ल भ—तदा ।

३. ज ल—अस्त्राणामथ चैतेषां ।
 भ—अस्त्राणामथ चैतेषां ।

४. ज—रामेथ । ल भ—रामे तु ।

५. के—परमस्त्राणां ।

६. ज ल भ—उक्त्वा तु परमास्त्राणां संहारं च निवर्तनं ।

७. रा—संहारमंत्राणां ।

८. ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल भ—ददावस्त्रं । व—ददौ अस्त्रं ।

१०. रा व ल भ—जंभकानां । ज—जंबकानां ।

११. ज ल भ—ह्टारंभस्तथैव ।

१२. रा—प्रणिपातरसां । ल—प्रणिपाता रसो ।

वृषांक्षो वृषचर्मा च रेणुकः पुरुषादकः ।[२] [N
६] दशाक्षो दशशीर्षश्च दशशंकुः शतोदरः ॥ ६॥ [५उ
पद्मनाभो महानाभः सुनाभो दुन्दुभिस्वनः । [६पू
७] ज्योतिनाभः क्रथः कुंभो मकरः क्रकरोऽङ्गदः ॥७॥[६] [N
युगन्धरस्तथानिद्रो[८] भर्ता प्रमथनः स्थिरः ।[१०] [७पू
८] धरो धान्यः कुण्डधरो रतिभूरतिरेव च ॥[११]८॥ [N

---

१. ब—वृषाख्यो ।

२. ज—विपाको विश्वकर्मा च गौरो नाम प्रभो नभः ।
ल भ—विपाको ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

३. ज—दशाक्षो दशवक्त्रश्च दशा[?]ो दशोदरः ।
ल— ,, दशवक्त्रश्च दशशीर्षे दशोदरः ।
भ— ,, ,, दशशीर्षो दशोदरः ।

४. ज ल भ—रत्ननाभः सुनामकः ।

५. रा—शक्रोंगदः । ब—क्रकरोंगदः ।

६. ज ल—ज्योतिषः कथनश्चैव नैकासुचविज्ञावुभौ ।
भ— ,, ,, नैकासवविज्ञावुभौ ॥

७. ज ल—अगंधरस्वरिन्द्रश्च ।
भ—युगन्धरस्वरिन्द्रश्च ।

८. रा—भेत्तः । ज ल भ—भेत्ता ।

९. ज ल भ—तथा ।

१० अतः परमधिकः पाठः—
ज ल भ—शुचिर्बाहु महाबाहुः सर्वबाहुस्तथैव च ।
ज ल—वक्रसौमनसश्चैव विभूममकरावुभौ ॥ इति द्वितीयार्धम् ।
भ—वक्रः सौमनसश्चैव विभूमसकरावुभौ ॥

११. ज—करोति करती चैव धनं धान्यं च राघव: ।
ल—बारतिः ,, नैकासु च विज्ञावुभौ ।
भ—करतिः करती चैव धनधान्यो तथैव च ।

कामरूपः कामगमः कामहा कामनन्दनः ।
९] जंभकः स्वर्णनाभश्च स्यन्दनो वारुणिस्तथा ॥९॥[1] [९
कृशाश्वतनया ह्येते[2] जंभकाः कामरूपिणः । [१०पू
१०] भासुरा रिपुसैन्यानां तेजोज्योतिहरास्तथा ॥[3]१०॥ [N
नायका विग्रहकराः प्रयोक्तुर्विजयावहाः ।
११] एतानपि गृहाण त्वं संप्रयोगनिवर्तनान् ॥११॥[4] [N
इत्युक्तो बाढमित्युक्त्वा विश्वामित्रात् तपोधनात् । [१२
१२] जग्राह तानपि तथा जंभकान् रिपुजंभकान् ॥१२॥
दिव्यमूर्तिधरास्ते हि दिव्याभरणभूषिताः ।
१३] ऊचुः प्राञ्जलयो रामं तदा मधुरभाषिणः ॥१३॥[6] [१३उ
पू१४] इमे स्म वशगा राम शाधि नस्त्वमिति स्थितान् ।[7] [१४

१. ज ल भ—कामरूपी कामरुचिर्मोह आवयारस्तथा ।
जंभकः सर्वनाभश्च* संतरावरणौ+ तथा ।

२. ज ल भ—राम ।

३. ज भ—भास्वराः । ल—भास्कराः ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज ल भ—प्रतिगृह्णीष्व भद्रं ते पात्रभूतोसि मे यतः ।
बाढमित्येव काकुत्स्थः सुप्रीतेनान्तरात्मना ।

६. ज ल भ—दिव्यभास्करदेहास्तु दिव्यमूर्तिसुखावहाः ।
राम प्राञ्जलयो भूत्वा प्राब्रुवन्मधुराक्षरं ।

७. ज ल भ—नास्ति ।

* ल—सर्वनाभश्च ।

+ भ—संततावरणौ ।

N] जंभकान् प्रणतान् रम्यान् किंकरान् समुपस्थितान्॥ १४॥[N

उ१४] गम्यतां स्वागतं वोऽस्तु कृत्यकाल उपेष्यताम् ।
स्मृता मामुपतिष्ठध्वमिति रामोऽप्युवाच तान् ॥१५॥[१५

१५] इत्युक्त्वा राममामन्त्र्य कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ।
एवमस्त्विति चैवोक्त्वा प्रतिजग्मुर्यथागतम् ॥१६॥ [१६

१६] तान् विसृज्य ततो रामो विश्वामित्रं महामुनिम् ।
गच्छन्नेवं पुनर्वाक्यं मधुराक्षरमब्रवीत् ॥१७॥ [१८

१७] किमेतन्मेघसंकाशं पर्वतस्याविदूरतः ।
वनमाभाति सुमहत् कस्यैतदमरद्युते: ॥१८॥ [१९

१८] आभाति रमणीयं हि वनमेतन्मनोहरम् ।
विनादितं वल्गुवाग्भिर्नानामृगगणैर्युतम् ॥१९॥ [२०

१. ज—इमे स्म नरशार्दूल ब्रूहि किं करवाणि ते ।
ल—इमेः स नरशार्दूल ,, ,, करवाम ते ।
भ—इमे स्म ,, ,, ,, ,, ,, ।

२. ज ल भ—गम्यतामिति तान् सर्वान्यथेष्टं प्राह राघवः ।
मनसा मे यथाकालं सहायार्थं* भविष्यथ: ।

३. ज ल भ—अथ ते ।

४. ज ल भ—काकुत्स्थमुक्त्वा जग्मुर्यथागतम् ।

५. ज ल भ—गतासु तासु विद्यासु ।

६. ज ल भ—गच्छन्नेवाथ काकुत्स्थ श्लक्ष्णं वचनमब्रवीत् ।

७. ज ल भ—किं त्वेतन्मेघ० ।

८. ज ल भ—पर्वतस्य विदूरतः ।

९. रा—कस्यैदमवद्युते ।

१०. ज ल भ—वृक्षखंड इवाभाति मुने कौतूहलं हि मे ।

११. ज ल भ—दर्शनीयं मनोज्ञं च मम चातिमनोहरं ।
नानाप्रभावैः शकुनैर्वल्गुवाग्भिरलंकृतं ॥

* ल—सहाय्यार्थं ।

१९] निःसृतां[1] स्म[2] मुनिश्रेष्ठ कान्ताराल्लोमहर्षणात्। [२१
अनेनैवाव[3]गच्छामो देशोऽयं सुसुखोदर्य[4]ः ॥२०॥ [२२पू
सुव्यक्तं वाऽपि भवतः सिद्धाश्रमपदं वयम्।
२०] संप्राप्ता यत्र तौ पापौ यज्ञविघ्नकरौ तव ॥२१॥[5] [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[6] जंभकप्रदानं[7] नाम

षड्विंशः[8] सर्गः ॥ २६ ॥

---

१. कै रा ल ज—निस्सृताः।
२. ज ल भ—स्मो।
३. ज भ—अनेनैवाथ गच्छामो। ल—०वाद्य ग०।
४. कै रा—सुसुखोदयः। ज—सुसुखावहः। ल—सुसुखावहः।
५. ज ल भ—सर्वं मे शंस भगवन्कस्याश्रमपदं महत्।
संप्राप्ताः कुत्र ते पापा यज्ञघ्ना दुष्टराक्षसाः।
स्वत्कोपनिहताः पूर्वं निहंतव्या मया हि ते।
६. कै—आदिकाण्डे।
७. ज ल भ—विद्यासंहारग्रहणं।
८. कै—एकत्रिंशः। ज—पंचविंशः। रा ब ल भ—नास्ति।

अथ तस्याप्रमेयस्य तद्वनं परिपृच्छतः ।
१] विश्वामित्रो महातेजा आख्यातुमुपचक्रमे ॥[2]१॥ [१

अयं पूर्वाश्रमो राम[3] वामनस्य महात्मनः ।
२] सिद्धाश्रम इति ख्यातः सिद्धो यत्र महायशाः ॥२॥ [२

विष्णुर्वामनरूपेण तप्यमानो महत्तपः ।
३] त्रैलोक्यराज्येऽपहृते बलिनेन्द्रस्य[4] [5]यत्र ॥३॥[6] [N

अभिभूय हि देवेन्द्रं पुरा वैरोचनिर्बलिः ।[7]
४] त्रैलोक्यराज्यं बुभुजे बलोन्मादसमन्वितः ॥[8]४॥ [४

ततो बलौ[9] तदा यज्ञं यजमाने भयार्दिताः ।
५] इन्द्रादयः सुरगणा विष्णुमूचुरिहाश्रमे ॥५॥[10] [५

१. ज—तस्याश्रमे रम्ये । ल—तस्याश्रमो रामो ।
भ—तस्याश्रमे रम्यं ।

२. ज ल भ—आख्यातुं नरशार्दूल: सर्वमेवोपचक्रमे ।

३. ज ल भ—एष ।

४. भ—नाम ।

५. ज ल भ—यत्र ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. ज भ—एतस्मिन्नेव काले तु राज्यं वैरोचनो बलिः ।
ल— ,, ,, ,, वैरोचनिर्बलिः ।

८. ज—कारयामास काकुत्स्थ: त्रिषु लोकेषु निर्भयः ।
ल भ— ,, ,, ,, ,, निर्भयः ।

९. कै—बलो । पुनः प्रबोधित: ।

१०. ज ल भ—बलेस्तु यजमानस्य देवाः साग्निपुरोगमाः ।
समागम्याब्रुवंश्चैव विष्णुमूचुरिहाश्रमे ॥

बलिर्वैरोचनिर्विष्णो यजते[1]ऽसौ महाबलः । [६पू
६] कामदः सर्वभूतानां महर्द्धिरसुराधिपः ॥[2] ६॥ [N
पू७] तं त्वं वामनरूपेण गत्वा भिक्षितुमर्हसि ।
भिक्षितो विक्रमानेतांस्त्रीन् वीर्यबलदर्पितः ॥७॥ [3] [N
८] परिभुय जगन्नाथ तुभ्यं वामनरूपिणे ।[4]
ये ह्येनमभियाचन्ते[5] लिप्समानाः स्वमीप्सितम् ॥[6] ८॥ [N
९] तान् कामैरीप्सितैः सर्वान् योजयत्यसुरेश्वरः ।
स त्वं त्रैलोक्यराज्यं नो हृतं भूयो जगत्पते ॥९॥[7] [N
१०] दातुमर्हसि निर्जित्य विक्रमैर्भूरिभिस्त्रिभिः ।[8]
अयं सिद्धाश्रमो[9] नाम[10] सिद्धकर्मा[11] भविष्यति ॥[12] १०॥[N
११] तस्मिन् कर्मणि संसिद्धे तव सत्यपराक्रम ।[13]

---

१. ज ल भ—यजते यज्ञमुत्तमं ।
२. ज ल भ—नास्ति ।
३. ज ल भ—अपर्यवसिते तस्मिन्नवकार्यमुपपद्यतां ।
४. ज ल भ—नास्ति ।
५. ब—ह्येनमभियाचंतो ।
६. ज ल भ—ये चैनमभिनंदंति याचितारस्ततस्ततः ।
७. ज ल भ—ये गत्वा तत्र याचंते तेभ्यः सर्वं प्रयच्छति ।
यत्तं सुरहितार्थाय महायोगमुपागतः ॥
ल—उत्तरार्द्धो नास्ति ।
८. ज भ—वामनत्वं गतो विष्णो कुरु कल्याणमुत्तमं ।
ल—नास्ति ।
९. रा—अद्याश्रमो ।
१०. ब—राम ।
११. ज भ—त्वत्प्रसादाद् ।
१२. ल—नास्ति ।
१३. ज ल भ—सिद्धे कर्मणि देवेशः प्रातिष्ठद्भगवानिति ।

एवमुक्तः सुरैर्विष्णुर्वामनं रूपमास्थितः ॥[1] ११॥ [N

१२] वैरोचनिमुपागम्य[2] त्रीनयाचत् पदक्रमान् ।

लब्ध्वा च त्रीन् पदान् विष्णुः कृत्वा रूपमथाद्भुतम्॥[3] १२॥[N

१३] त्रिभिः क्रमैस्तथा लोकानाजहार त्रिविक्रमः ।

एकेन हि पदा कृत्स्नां पृथिवीं सोऽभ्यतिष्ठत ॥१३॥[4] [N

१४] द्वितीयेनाव्ययं व्योम[5] द्यां तृतीयेन राघव ।

तं च बद्धाञ्जलिं कृत्वा पातालतलवासिनम्[6] ॥१४॥[7] [N

१५] त्रैलोक्यराज्यमिन्द्राय ददावुद्धृतकण्टकम् । [३५पू

तेनैष पूर्वाध्युषित आश्रमः पुण्यकर्मणा ॥१५॥[8]

१६] अद्याप्यभिभक्त्या[9] तस्यैव वामनस्योपभुज्यते[10] । [३६

यत्र तौ राक्षसौ वीरे[11] यज्ञविघ्नकरौ मम ॥[12] १६॥

---

१. ज ल भ—अथ विष्णुर्महायोगं प्रविश्य रघुनन्दन ।

२. रा—वैरोचनमुपागत्य ।

३. ज भ—वामनं रूपमास्थाय वैरोचनमुपागमत् ।

ल—वामने ,, वैरोचनिमुपागतम् ।

४. ज ल भ—त्रीन् क्रमानथ याचित्वा प्रतिगृह्य च वासवः ।

आक्रम्य लोकांल्लोकात्मा सर्वभूतहिते रतः ॥

५. रा—द्वितियेन पदा स्वर्गं ।

६. के—पातालतलवासिनाम् । रा—पुनः शोधितः ।

७. ज ल भ - नास्ति ।

८. ज ल—तेनैव पूर्वमाक्रांतमाश्रमं श्रमनाशनं ।

भ—तेनैव पूर्वमाक्रांत आश्रमः श्रमनाशनः ।

९. रा—अद्यापिभिक्षा । ज ल भ—मया तु भक्त्या ।

१०. ज ल—वामनस्योपसेव्यते । भ—वामनस्यैव भुज्यते ।

११. रा—वीरौ ।

१२. ज ल - यत्र ते राक्षसा राम मम ते विघ्नकारिणः ।

ब—यत्र ,, ,, ,, ,, ,, ,, ।

भ—......राक्षसा राम मम ये विघ्नकारिणः ।

१७] हन्तव्यौ येन वीर्येण त्वया नरवरात्मज ।[1] [३७
पू१८] एवमेवो[2]भिगच्छामः सिद्धाश्रमपदं मम[3] ॥१७॥ [३८पू
[4]तं दृष्ट्वा स्वागतं दूरात् सिद्धाश्रमनिवासिनः ।
१९] प्रत्युद्गम्य महात्मानं विश्वामित्रमपूजयन् ॥१८॥ [४०
प्रविष्टाय ददुश्चास्मै पाद्यार्घ्यासनसत्क्रियाम् ।[11]
२०] रामलक्ष्मणयोश्चापि सत्क्रियां प्रददुर्द्विजाः ॥[12] १९॥ [४१
मुहूर्तमथ विश्रान्तौ ततस्तौ रामलक्ष्मणौ ।[13]
२१] तमूचतुर्मुनिवरं विश्वामित्रं कृताञ्जली ॥[14] २०॥ [४२

---

१. ज ल भ— ते त्वया पुरुषव्याघ्र हंतव्या दुष्टचारिणः ।
ब— ,, ,, ,, ,, दुष्टकारिणः ।

२. भ—एतमेवाभिगच्छामः ।

३. ज ल भ—सिद्धाश्रममनुत्तमं ।

४. ल—ते ।

५. ज ब ल भ—ऋषयः सर्वे ।

६. ज ब ल भ—तदाश्रमनिवासिनः ।

७. के—प्रत्युद्गम्य ।

८. ज ल—यथान्यायं भ—यथान्यायं ।

९. ज—विश्वामित्राय धीमते ।

१०. रा—वसिष्ठाय ददौ चास्मै ।

११. ल—कृत्वा पूजां यथान्यायं विश्वामित्राय धीमते ।
ज—नास्ति । भ—कृत्वा पूजां ......। त्रुटितः पाठः

१२. ज ल भ—काकुत्स्थयोरपि तदा पूजां चक्रुर्महर्षयः ।

१३. ज ल भ—मुहूर्तमिव विश्रान्तौ राजपुत्रौ महाबलौ ।
भ—अतः परमधिकः पाठः—
अथ रामो महाबाहुः प्रीणयन्कुशिकात्मजं ।

१४. ज ल भ—प्राञ्जलिर्मुनिशार्दूलमुवाच मधुरं वचः ।

अद्यैव दीक्षां प्रविश भद्रं ते मुनिपुङ्गव ।
२२] सिद्धाश्रमोऽयं सिद्धोऽस्तु[1] संसिद्धे तव कर्मणि॥२१॥[2] [४३
तयोरेतद्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महात्मनोः ।[3]
२३] आदिदेश तथेत्युक्त्वा दीक्षां तदहरेव तु ॥[4]२२॥ [४४
रामोऽपि तां तत्र निशामुषित्वा सहलक्ष्मणः ।[5]
२४] प्रभातकाले चोत्थाय विश्वामित्रमवन्दतं[6] ॥२३॥[7] [४५

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[8] सिद्धाश्रमनिवासो
नाम सप्तविंशः[9] सर्गः[9] ॥२७॥

---

१. रा ल भ—सिद्धस्तु ।
२. ज ल भ—सत्यमेवास्तु मे वचः ।
३. ज ल भ—रामस्य तु वचः श्रुत्वा दीक्षां संहृष्टमानसः ।
४. ज ल—जग्राह स महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ।
भ— „ „ „ „ महानृषिः ।
५. ज ल भ—कुमारावपि तां रात्रिमतिवाह्य समाहितौ ।
६. ज ल भ—विश्वामित्रमवन्दताम् ।
७. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

इत्थं विनीय धरणीमथ तौ प्रभाते
कौतूहलेन धरणीं सहपंक्तिमुग्धां ।
पुष्पानतां मृगगणैरभितः प्रकीर्णां*
†पत्रोत्तरां ददृशतुः हर्षाकुलाक्षौ ॥

८. के—आदिकांडे । ब—नास्ति ।
९. के—द्वात्रिंशोऽध्यायः । रा—द्वात्रिंशो सर्गः ।
ज—षड्विंशः सर्गः ॥२६॥ ब ल—सर्गः ।
भ—सर्गः ॥२६॥

* ल—प्रकीर्णपत्रोत्तरां ।
† ल—प्रसन्नाकुलाक्षौ ।

तदा च देशकालज्ञो रामः सत्यपराक्रमः ।[1]
१] कालयुक्तमिदं वाक्यं विश्वामित्रमुवाच ह ॥[2]१॥[3] [१
भगवन् श्रोतुमि[4]च्छामि कस्मिं[5]न् काले निशाचरौ[6] ।
२] मया तौ प्रतिषेद्धव्यौ यज्ञविघ्नकरौ तव ॥[7]२॥[8] [२
रामस्यैतद्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रादयस्तदा ।[9]
३] सर्वे ते मुनयः प्रीताः प्रशंसन्तस्तमब्रुवन्[10] ॥३॥ [३
अद्य प्रभृति राम त्वं षड्रात्रं रक्षे[11] तत्परैः ।
४] दीक्षां गतो ह्येष मुनिर्मौनं संकल्पयिष्यति ॥४॥[12] [४

१. ज ल—अथ तौ देशकालज्ञौ राजपुत्रौ महाबलौ ।
२. ज—देशं कालं च विज्ञाय व्याजहतुरिदं वचः ।
ल—देशकालं ,, ,, ,, ,, ।
३. भ—अथ तौ देशकालेशौनातिवर्तेत सक्षमः ।
४. ज—श्रोतुमिच्छावो ।
५. ज ल—यस्मिन् ।
६. रा—निशाचरैः ।
७. ज—रक्षणीयौ विभो ब्रह्मनातिवर्तेत साक्षिणः ।
ल—रक्षणीयावितो ब्रह्मन्नातिवर्तेतमक्षयाः ।
८. भ—नास्ति ।
९. ज ल भ—भवतोस्तु तयोरेव हृष्टयोः परिपृच्छतोः ।
१०. ज ल भ—प्रशशंसुस्तयोर्वचः ।
११. रा—रक्षितत्परः ।
१२. ज ल भ—अद्य प्रभृति षड्रात्रं तिष्ठतां *वत्स यन्त्रितौ*।
दीक्षागतो हि भगवान्मुनिरेष यथाक्रमः ॥

*भ—तिष्ठतो च सुसंपदौ ।

तेषामेतद्वचः श्रुत्वा मुनीनां भावितात्मनाम् । [५पू
५] उद्यम्य कार्मुकं तस्थौ रामस्तत्र सलक्ष्मणः ॥५॥[1] [N
अनिद्र एवं[2] षड्रात्रं संरक्षन् स मुनेः क्रतुम् । [५उ
६] राक्षसागमनाकांक्षी निश्चलः स्थाणुवत् स्थितः ॥६॥[3] [N
कालेनाभ्यागते तस्मिन् षष्ठेऽहनि महात्मनः ।[4] [७पू
७] स्थापयांचक्रिरे वेदीं मुनयः संशितव्रताः ॥[5]७॥[6] [८उ
ततो[7] मायां प्रकुर्वाणौ राक्षसावभ्यधावताम् । [११उ
१०] मारीचश्च सुबाहुश्च[8] तयोरनुचरास्तथा ॥८॥[9] [१२पू

१. ज ल भ—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा राजपुत्रावतिष्ठतां ।
२. रा— एष ।
३. ज ल भ—अनिद्रौ षडहोरात्रं *रक्षमाणौ तपोधनं† ।
४. ज ल भ—अथ काले गते तस्मिन्षष्ठेहन्युपकाल्पिते ।
५. ज ल भ—प्रजज्वाल ततो वेदी सोपाध्यायससामगा‡ ।
६. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

मंत्रवच्च यथान्यायं यज्ञः समभिवर्तते ।

ज ल भ—आकाशे च महान् ‖ शब्दः प्रादुरासीद्भयंकरः ।
अ— अवातगमनं मेघा यथा प्रावृषि चाभवन् ।
ल—आवार्य गगनं ,, ,, ,, चाभवत् ।
भ—आवार्यगगने मेघा यथा प्रावृषि चाभवन् ।

७. ज ल भ—तथा । ८. कै—स्वबाहुश्च ।
९. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

आगम्य भीमनिर्ह्रादा रुधिरौघानवासृजन् ।

* भ—चाप्यहोरात्रं ।
* भ—चाप्यहोरा ।
† ल—तपोनिधिम् ।
‡ भ—उपाध्यायससामगा ।
‖ ल—महाशब्दः ।

स तानापततो दृष्ट्वा रुधिरौघप्रवर्षिणः ।
११] उवाच लक्ष्मणं वाक्यं रामो[1] राजीवलोचनः[2] ॥९॥ [१४
पश्य लक्ष्मण मारीचं[3] महाशनिसमस्वनम्[4] ।
१२] सपदानुगमायान्तं सुबाहुं च निशाचरम् ॥[5]१०॥ [N
एतौ पश्य महाबाहो नीलाञ्जनचयोपमौ ।[5]
१३] अस्मिन् क्षणे समाधूतावनिलेनाम्बुदाविव ॥[6]११॥ [N
पवनास्त्रं ततो रामः प्रगृह्यास्त्रविशारदः । [N
१४] मारीचोरसि चिक्षेप नातिकोपसमन्वितः ॥१२॥[7] [१८
स तेन परमास्त्रेण पावनेन[8] समाहतः ।
N] संपूर्णं योजनशतं क्षिप्तो[9] वेगानिलेरितः ॥१३॥[10] [१९
स तेन शरवेगेन नीतः सागरमूर्धनि ।
१५] पपाताचलसङ्काशो भीवेपथुसमन्वितः ॥१४॥[11] [N
विचेतसं विघूर्णन्तं पवनास्त्रबलेरितम् ।[12]

---

१. ज ल भ—रामो राजीवलोचनः ।
२. ज ल भ—निर्व्यथः प्रहसन्निव ।
३. ज ल भ—दुर्वृत्तं ।
४. ज ल भ—राक्षसापसदं मया ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. ज ल भ—मानवेन समाधूतमनिलेन यथा तृणं ।
७. ज ल भ—स मनोः परमोदग्रमस्त्रं परमदुर्जयं ।
चिक्षेप परमक्रुद्धो मारीचोरसि राघवः ।
८. ज ल भ—मानवेन ।
९. ज ल भ—क्षिप्तः सागरसंप्लवे ।
१०. कै रा—नास्ति ।
११. कै रा ज ल भ—नास्ति ।
१२. ज ल भ—विचेतनंविघूर्णन्तं शीतेषुबलताडितं✳ ।

✳ ल—शीतेषुवरताडितं । भ—शितेषुबलताडितं ।

१६] मारीचं [1]पतितं दृष्ट्वा रामो लक्ष्मणमब्रवीत् ॥१५॥ [२०
पश्य लक्ष्मण मारीचं पवनास्त्रसमाहतम् ।[2]
१७] मोहयित्वानयद्दूरं न च प्राणैर्व्ययोजयत्[3] ॥१६॥ [N
इमांस्त्वन्यान् हनिष्यामि सुबाहुप्रभृतीन् रुषा ।[4]
१८] यज्ञघ्नान् राक्षसान घोरान् रुधिरामिषभोजनान् ॥[5]१७॥[२२
प्रगृह्यास्त्रमथो दिव्यमाग्नेयं रघुनन्दनः ।[6]
१६] विद्ध्वा[7] सुबाहुमुरसि पातयामास भूतले ॥[8]१८॥ [२३
अन्यांन्यपि[9] च वायव्यमस्त्रमादाय राघवः ।
२०] निजघान स रक्षांसि मुनीनां प्रथयन् सुखम् ॥१९॥[10] [२४
एवं हत्वा स रक्षांसि तत्र रामो महायशाः ।
२१] समेत्य मुनिभिः सर्वैर्विश्वामित्रादिभिस्तदा ॥२०॥[11] [N

---

१. ज—निर्हतं । ल भ—निहतं ।

२. ज ल भ—पश्य लक्ष्मण शीतेषु मानवं धर्मशोभितं ।

३. भ—प्राणं व्ययोजयत् ।

४. ज ल भ—इमांस्तु निहनिष्यामि निर्घृणान्दुष्टचारिणः ।

५. ज ल भ—राक्षसान्पापकर्मज्ञान्यज्ञघ्नान् रुधिराशरान्* ।

६. ज ल भ—स गृहीत्वास्त्रमाग्नेयं चिक्षेप रघुनन्दनः ।

७. रा—विद्धं ।

८. ज ल—गृहीत्वा वक्षसि स्थाने सुबाहुं पातयन्भुवि ।
भ— ,, ,, स्थामं ,, पातयन्भुवि ।

९. कै ब—अन्यानपि ।

१०. ज ल भ—वायव्येन तु तान् शेषाञ्जघान निशाचरान् ।
रामं तमथ संहृष्टा मुनयः प्रत्यपूजयन् ।

११. ज ल भ—स हत्वा राक्षसान्सर्वान्यज्ञघ्नान् रघुनन्दनः ।
ऋषिभ्यः प्राप्तवान्पूजां यथेन्द्रो विजयी पुरा ।

* ल—रुधिराशनाम् ।
भ—रुधिराक्षतान् ?

पूजितोऽभिष्टुतश्चैव जयेन च समन्वितः ।
२२] विस्मिताश्चाभवन् सर्वे मुनयो रामकर्मणा ॥२१॥[2] [N
तस्मिन् यज्ञे समाप्तेऽथ विश्वामित्रो महायशाः ।[3]
२३] दृष्ट्वाऽऽश्रमं कृतक्षेमं काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ॥[4]२२॥ [२६
कृतार्थोऽस्मि[5] महाबाहो कृतं गुरुवचस्त्वया ।
२४] सिद्धाश्रमपदं भूयस्त्वया[6] सिद्धतरं कृतम् ॥[7]२३॥[8] [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[9] विश्वामित्रयज्ञो
नाम अष्टाविंशः[11] सर्गः ॥२८॥[12]

---

१. रा—रामलक्ष्मणौ ।

२. ज ल भ—नास्ति ।

३. ज ल भ—अथ यज्ञसमाप्तौ तु विश्वामित्रो महामुनिः ।

४. ज—निरीतिकां दिशं दृष्ट्वा काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ।
ल—निरीतीकां ,, ,, ,, ।
भ—निरातंकां ,, ,, ,, ।

५. के ब रा—कृतार्थोसि ।

६. के—भूयः कृतं ।

७. ज ल भ—सिद्धाश्रमनिवासानां कृतं क्षेमं महात्मनां ।

८. ज भ—अतः परमधिकः पाठः—
अथ निहत्य निशाचरमण्डलं घननिभे शुशुभे रघुनन्दनः ।
तिमिरजालमतीव सुदुःसहं दिनकरो हि विधूय यथाम्बरे ॥

९. के— आदिकाण्डे ।

१०. ज ल भ—राक्षसवधो ।

११. के रा—त्रयस्त्रिंशः । ज—सप्तविंशः । ब ल भ-नास्ति ।

१२. ज भ—॥ २७ ॥

[वं=३४] [एकोनत्रिंशः सर्गः] [दा=३१]

अथ तौ[1] रजनीं तत्र कृतार्थौ[2] रामलक्ष्मणौ।
१] ऊचतुर्मुदितौ वीरौ मुनिभिः प्रतिपूजितौ ॥[4]१॥ [१
प्रभातायां तु शर्वर्यां कृतपौर्वाह्णिकक्रियौ[5]।
२] विश्वामित्रमृषींश्चान्यान् राघवावभ्यवन्दताम् ॥[6]२॥ [२
अभिवाद्य मुनीन् सर्वांस्तांश्च[7] तावमरद्युती।
३] ऊचतुर्मधुरोदारभाषिणौ रघुनन्दनौ[3] ॥३॥[8] [३
इमौ द्वौ[9] मुनिशार्दूल किङ्करौ समुपस्थितौ[10]।
४] आज्ञापय यथेष्टं नौ[11] पुनः किं[1] करवाव ते[12] ॥४॥ [४

१. ज ल—तां।
२. ज ब भ—कृतार्थौ। ल-कृतार्थो।
३. ज भ—रघुनन्दनौ। ल—रघुनन्दन।
४. ज ल भ—ऊचतुर्मुदितौ वीरौ प्रहृष्टेनान्तरात्मना ✳।
५. ज ल—प्रभातायां तु शर्वर्यां कृत्वा स्नानमरिन्दमौ।
भ— ,, ,, ,, ,, शौचमरिन्दमौ।
६. ज—अभ्यवादयतां गत्वा विश्वामित्रं महामुनिं।
ल— ,, तत्र ,, महामुनिम्।
भ—अभ्यवाद्................ मित्रं महामुनिं।
७. रा—सर्वांस्तं च। पुनरपरकरणोचित:।
८. ज ल भ—नास्ति।
९. ज ल—तौ।
१०. ज ल भ—समुपागतौ।
११. ज ल भ—ते शासनं।
१२. के रा ज—करवामहे। ल भ—वः।

✳ ल—प्रहृष्टेनान्तरात्मना।
भ—प्रहृष्टेनान्तरात्मना।

एवमुक्ते ततस्ताभ्यामृषयस्ते तपोधनाः ।[1]

५] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य रामं वचनमब्रवीत ॥५॥[2] [५

मैथिलस्य रघुश्रेष्ठ जनकस्य महात्मनः ।

६] भविष्यति महायज्ञस्तत्र यास्यामहे वयम् ॥६॥[3] [६

त्वं चापि नरशार्दूल सहास्माभिर्गमिष्यसि ।

७] रत्नं महाद्भुतं तत्र तद्धनुर्द्रष्टुमर्हसि ॥७॥ [७

प्राग् दत्तं नृपतेस्तत्र न्यासभूतं महद् धनुः ।[5]

८] देवासुरे तथा युद्धे वृत्ते[6] देवैः सवासवैः ॥[7]८॥ [८

तत्र[8] देवा न गन्धर्वा नासुरा न च पन्नगाः ।

९] समारोपयितुं शक्ताः कुत एवेतरे जनाः ॥[9]९॥ [९

१. ज ल भ—अतः पूर्वमधिकः पाठः—

एवं तौ हृष्टवदनौ मुनिं ज्वलनतेजसम् ।

ऊचतुः परमोदारं वाक्यं मधुरभाषिणौ ।

२. ज ल भ—ब्रुवतोस्तु तयोरेवं सर्व एव महर्षयः ।

विश्वामित्रं पुरस्कृत्य राघवं वाक्यमब्रुवन् ।

३. ज ल भ—मैथिलस्य नरश्रेष्ठ जनकस्य भविष्यति ।

यज्ञः परमधर्मिष्ठो यास्यामस्तत्र वै वयम् ।

४. ज ल भ—धनुस्त्वं द्रष्टुमर्हसि ।

५. ज ल भ—तद्धि पूर्वं नरश्रेष्ठ दत्तं सदसि दैवतैः ।

,, ,, रघुश्रेष्ठ ,, ,, ,,

६. ब—वृते ।

७. ज ल—अप्रमेयबलं घोरं मिथेः परमभास्करम् *।

८. ज ल भ—तत्तु ।

९. ज ल भ—आधिज्यं कर्तुमानस्य शक्ताः किमुत मानवाः ।

* भ—परमभासुरम् ।

धनुषः सारतां तस्य जिज्ञासन्तो नराधिपाः ।[2]
१०] न शेकुरातोलयितुमप्यारोपयितुं कुतः ॥[3]१०॥[4] [१०
तद्धनुर्नरशार्दूल शंकरस्य महात्मनः ।
११] यत्र द्रक्ष्यसि काकुत्स्थ सहास्माभिरितो गतः ॥११॥ [११
तथेत्युक्त्वा ततो रामः प्रयातुमुपचक्रमे ।
१२] विश्वामित्रपुरोगैस्तैर्महर्षिभिरुदारधीः ॥१२॥[8] [N
विश्वामित्रोऽथ भगवानामन्त्र्य वनदेवताः ।
१३] उवाचेदं ततो वाक्यं यियासुर्मिथिलां प्रति ॥१३॥[9] [१४

---

१. कै—अज्ञासंतो । रा—जहाँस... ।

२. ज ल भ—धनुषा* बलवीर्यं हि जिज्ञासीत महीपतिः ।

३. ज ल भ—न शेकुरारोपयितुं राजपुत्रा महाबलाः ।

४. अतः परमधिकः पाठः—

ज ल भ—तद्धि यज्ञफलं तेषां मैथिलात्† धनुरुत्तमम् ।

ज ल भ—याचितं नरशार्दूल दुर्लभं सर्वदैवतैः ।

५. ज ल भ—मैथिलस्य ।

६. ज—मिथले । ल—मिथेः । भ—मिथेर् ।

७. ज ल भ—यज्ञं चाद्भुतदर्शनं ।

८. ज ब ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

एवमुक्त्वा मुनिवराः प्रस्थानं समरोचयन् ।

ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल भ—महर्षिसंघा काकुत्स्थमामंत्र्य नरदेवताः ।

* भ—धनुषो ।

† भ—मैथिलं ।

स्वस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि[1] सिद्धः सिद्धाश्रमादितः[2] ।
१४] उत्तरं जाह्नवीतीरं[3] हिमवन्तं शिलोच्चयम् ॥[4] १४॥ [१५
प्रदक्षिणमुपावृत्या ततः सिद्धाश्रमं मुनिः ।[5]
१५] उत्तरां[6] दिशमास्थाय प्रस्थातुमुपचक्रमे[7] ॥१५॥ [१६
युक्तं ब्रह्मरथानां तु शतमात्रं हि तत्क्षणात् ।
१६] ययुर्मुनीनां भाण्डानि समारोप्यानुयायिनाम् ॥१६॥[8] [१७
मृगपक्षिगणाश्चैव सिद्धाश्रमनिवासिनः ।
१७] प्रयान्तमुपजग्मुस्ते विश्वामित्रं महामुनिम् ॥१७॥[9] [१८
ते गत्वा दूरमध्वानं लम्बमाने दिवाकरे ।
१८] वासं चक्रुर्मुनिगणाः शोणतीरे समागताः ॥[10] १८॥ [२०
गते त्वस्तं दिनकरे स्नातौ[11] हुतहुताशनाः ।[12]

---

१. ज व ल भ—गमिष्यामः ।
२. कै—०सिद्धाश्रमाश्रिताः । ज ल—०सिद्धाश्रमाद्ध्यं ।
भ—सिद्धासिद्धाश्रमाद्ध्यं ।
३. ज—जाह्नवीकूलं ।
४. ल—नास्ति । भ—उत्तरे जाह्नवीकूले हिमवंतं नगोत्तमं ।
५. ज ल भ—प्रदक्षिणं ततः कृत्वा सिद्धाश्रममनुत्तमं ।
६. रा ज—उत्तरं ।
७. ज ल—पन्थानमुपचक्रमुः । भ—प्रस्थानमुपचक्रमुः ।
८. ज ल भ—ते प्रयाता मुनिवरा बहवो रेणुपांडुराः ।
शकटीशतमात्रेण विश्वामित्रपुरोगमाः ॥
९. ज ल भ—अनुजग्मुर्महाभागं ।
१०. ज ल भ—वासं चक्रुर्मुनिवराः शोणकूले समाहिताः ।
११. रा—स्नात्वा ।
१२. ज ल भ—तेऽस्तं गते दिनकरे ततोऽर्चितहुताशनाः ।
व—गते त्वस्तं ,, ,, ।

१९] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य निषेदुरमितौजसः ॥१९॥[2] [२१

उ२०] निषसादाभितस्तस्य विश्वामित्रस्य धीमतः । [२२उ
अथ रामोऽञ्जलिं कृत्वा विश्वामित्रं मुनिं तदा ॥२०॥

२१] पप्रच्छ नरशार्दूलः कौतूहलसमन्वितः । [२३
भगवन् को न्वयं देशः समृद्धजनसेवितः ॥२१॥

२२] श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते वक्तुमर्हस्यशेषतः । [२४
नोदितो रामवाक्येन तस्य देशस्य विस्तरम् ।

२३] विश्वामित्रो महातेजा व्याहर्तुमुपचक्रमे ॥[9]२२॥ [२५

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[10] शोणातीरनिवासो
नाम एकोनत्रिंशः[11] सर्गः ॥ २९ ॥[12]

१. ज ब ल भ—निषेदुर्धरणीतले ।

२. ज ल भ— अतः परमधिकः पाठः—
रामोऽपि सहसौमित्रिर्ऋषींस्तान्समपूजयत् ।

३. ज ल भ—अग्रतो निषसादाथ ।

४. ज ल भ—रामो महातेजा ।

५. ज ल भ—विश्वामित्रमृषिं ।

६. ज ल भ—मुनिशार्दूलं ।

७. ज ल भ—कथयामास ।

८. ज ल—विस्तरात् ।

९. ज ल भ—तं देशमखिलं सर्वमृषिमध्ये तपोधनः ।

१०. के—आदिकाव्ये । ब—नास्ति ।

११. के रा—चतुर्विंशः । ब—नास्ति ।

१२. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

N] शृणु राम कथां दिव्यां देशस्य च समुद्भवाम् ।[1] [N
ब्रह्मयोनिर्[2]महानासीत् कुशो नाम महाय[3]शाः ॥१॥ [१पू
१] स सुतान् जनयामास चतुरः ख्यातविक्रमान् ।
कुशाम्[4]बं कुशनाभं च अमूर्तवयसं वसुम् ॥२॥[5] [२
२] महात्[6]मनो दीप्तिमतः क्षत्रधर्ममनुव्रतान् ।
तानुवाच कुशः पुत्रान् विनीतान्[7] श्रुतिपारगान् ॥३॥
३] प्रजानां पालनं पुत्राः क्रियतामिति राघव । [३
पितुस्ते वचनं श्रुत्वा लोकपालोपमाः सुताः ॥[8]४॥
४] निवेशं[9] चक्रिरे सर्वे पुराणां कुशसूनवः । [४

१. ल— समुद्भवम् ।
२. के रा—नास्ति ।
३. के रा—महातपाः ।
४. रा—कुशांभं ।
५. ज ल भ—स किलाजनयत् पुत्रांश्चतुरः पुरुषर्षभः* ।
शकुनाभं कुशांवं† च असूर्तरयसंवसम्‡ ।
६. ज ल भ—महोत्साहान् ।
७. ज ल—धर्मिष्ठः धर्मपारगः ।
भ—धर्मिष्ठो वेदपारगः ।
८. ज ल भ—क्रियतां पालनं पुत्रा धर्मं प्राप्स्यथ पुष्कलं ।
नृपेस्तस्य वचः श्रुत्वा चत्वारस्तेऽमितौजसः ।
९. भ—निवेशं । पुनः शोभितः ।
११. के रा—पुराण्यावासयामासुः पृथक् चत्वारि राघव ।

* भ—पुरुषर्षभ । † ल - कुशांभं । भ—कुशांवं । ‡ ल—असूर्तरयसं वसव् । भ—असूर्तरयसं वसुं ।

तेषां कुशाम्बः कौशाम्बीं पुरीमावासयच्च ताम् ॥[1]५॥

५] कुशनाभस्तु धर्मात्मा पुरं[2] चक्रे महोदयम् । [५

तथाऽमूर्तवयो वीरश्चक्रे प्राग्ज्योतिषं[3] पुरम् ॥[4]६॥

६] धर्मारण्यसमीपस्थं वसुश्चक्रे गिरिव्रजम् । [६

देशोऽयं वसुनामासीद्वसोरमिततेजसः ॥७॥[5]

७] एते शैलवराः पञ्च प्रकाशन्ते महोच्छ्रयाः[6] । [७

सुमागधीं[7] नदी चात्र मागधा विश्रुता यया ॥[8]८॥

८] पञ्चानां भूभृतां मध्ये वनमालेव शोभते । [८

एषा सा मागधा राम वसोर्नाम[9] [10]महात्मनः ॥[11]९॥

९] पूर्वमभ्यासिता तेन सुक्षेत्रा[12] सस्यमालिनी । [९

---

१. ज—कुशांवस्तु महातेजाः कोशांवीमकरोत्पुरीं ।
ल—कुशांभस्तु ,, कौशांभीमकरोत्पुरीं ।
भ—कुशांवस्तु ,, कोशांबीम ,, ।

२. के—परं ।

३. रा—प्राक्ज्योतिषं ।

४. ज ल भ—प्राग्ज्योतिषं पुरं चक्रे वसुश्चक्रे गिरिव्रजं ।

५. ज ल भ—तथा सूनुरयो* वीरो धर्मारण्यसमीपतः ।
एषा वसुमती तस्य वसुतस्य महात्मनः ।

६. ज ब ल भ—विदूरतः ।

७. रा—समागधा ।

८. ज ल भ—एषा सा मागधी रम्या मागधा† विश्रुता भुवि ।

९. के रा—नाम ।

१०. ब—वसोस्तस्य ।

११. ज ल भ—एते ते मागधा राम वसुतस्य महात्मनः ।

१२. रा—सुक्षेत्रस्यास्यमालिनी ।

---

*भ—भूतरयो । †ल भ—मगधा ।

कुशनाभोऽपि राजर्षिः कन्याशतमनुत्तमम् ॥१०॥[1]
१०] जनयां[2]मास दुर्धर्षो [3]घृताच्यां रघुनन्दन । [१०
रूपयौवनशालिन्यस्ताः कदाचिदलङ्कृताः ॥११॥[4]
११] उद्यानभूमिमासाद्य[5] चिक्रीडुर्विद्युतो यथा । [११
गायन्त्यो नृत्यमानाश्च वादयन्त्यश्च राघव ॥[6]१२॥
१२] [7]आमोदं परमं जग्मुर्वनमाल्यैरलङ्कृताः । [१२
अथ ताश्चारुसर्वाङ्गी रूपेणाप्रतिमा भुवि ॥[8]१३॥ [१३पू
१३] दृष्ट्वा सर्वत्रगो वायुरिदं वचनमब्रवीत् । [१४उ
अहं वः कामये सर्वा भार्या भवत मेऽबलाः ॥[9]१४॥
१४] त्यक्त्वा मानुष्यकं भावममरत्वमवाप्यताम् ।[10] [१५
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वायोर्[11]वचनमङ्गनाः ॥१५॥
१५] मुक्त्वा[12] हास्यं ततः सर्वा वायुं वचनमब्रुवन् ।[13] [१७

१. ज ल भ—पूर्वाधिवासितास्तेन सुक्षेत्रा सस्यमालिनः ।
कुशनाभस्तु राजर्षिः कन्यानां शतमुत्तमं ॥
२. ज ल भ—सुषुवे देवरूपायां ।
३. कै—घृताच्यां ।
४. ज ल भ—तास्तु यौवनशालिन्यो रूपेणाप्रतिमा भुवि ।
५. ज ल भ—उद्यानभूमिमागम्य ।
६. ज ब ल भ—गायन्त्यो वादयंत्यश्च नृत्यंत्यश्च यथासुखं ।
७. ज ब ल भ—आल्हादं ।
८. ल भ—ततस्ता रूपसंपन्ना यौवनेनाभ्यलंकृताः ।
ज—नास्ति ।
९. ज ल भ—भवतीः कामये सर्वा भार्या मे भवतेति वै ।
१०. ज ल भ—मानुषस्त्यज्यतां स्नेहो दीर्घमायुरवाप्यताम् ।
११. ज ब ल भ—वायोरमितकर्मणः ।
१२. दा—कृत्वा । कुबेरपरपार्श्वे शोभितः ।
१३. ज ल भ—अवहस्य ततो वाक्यं कन्याशतमुवाच तं ।

अन्तश्चरसि भूतानां सर्वेषां किल मारुतः ॥१६॥

१६] प्रभावज्ञाः स्म ते सर्वाः[2] किमस्मानवमन्यसे । [१८

कुशनाभसुताः साध्वीः क्षमस्त्वं न हि मारुत ॥[3]१७॥

१७] स्थानाद्‌ भ्रंशयितुं देव रक्षामः स्वकुलं वयम् । [१९

मा भूत् स कालो यद्‌ वायो पितरं सत्यवादिनम् ॥[5]१८॥

१८] कामतः समतिक्रम्य वरयेम स्वयं वरम् । [२०

पिताऽस्माकं प्रभवति दैवतं नः परं पिता ॥[6]१९॥

१९] अस्मान् दास्यत्यसौ यस्मै स नो भर्ता भविष्यति ।[7] [२१

तासां तद्वचनं श्रुत्वा वायुः क्रोधसमन्वितः ॥२०॥

२०] बभञ्ज कन्या मध्ये ताः संप्रविश्यात्मतेजसा ।[10] [२२

N] ताः कन्या वायुना भग्ना विविशुर्भवनं प्रति[11] ॥२१॥ [२३पू

उ२२] दृष्ट्वा[12] भग्नाश्च ता रामे राजर्षिरिदमब्रवीत् । [२४उ

---

१. ज ल भ—त्वं सुरोत्तम ।

२. ज ब ल भ—प्रभावं ते विजानीमः ।

३. ज ल भ—कुशनाभसुताः सर्वाः समर्थस्त्वं न मारुत ।

४. ज भ—स्थानाच्च्यावयितुं । ल—स्थानाः स्थापयितुं ।

५. ज ल भ—माभूत्कलंको वंशेऽस्मिन्पितरं सत्यवादिनः ।

६. ज ल भ—आवाहया* प्रथमेव स्वयं* कन्या वरं भजेत् ।

जनिता प्रभुरस्माकं दैवतं परमं पिता ।

७. ज ल—यस्मै नो दास्यति पिता स नो भर्ता भविष्यति ।

८. ज ल भ – तु ।

९. ज ल भ—परमकोपनः ।

१०. ल भ—प्रविश्य सर्वगात्राणि बभंज भगवान्प्रभुः ।

ज— ,, ,, बभंज ,, ।

११. ज ल—विविशुर्नगरीं पितुः । ब—०र्भवनं पितुः ।

भ—०र्नगरं पितुः ।

१२. ज ल—तास्तदा दुःखिता दृष्ट्वा । भ—तास्तथा दुःखिता दृष्ट्वा ।

* ल—आवहाय० । भ—आवहाय स्वधर्मं हि यदि ।

किमिदं कथ्यतां पुत्र्यः को धर्ममवमन्यते ॥२२॥[1]

२३] कुब्जाः केन कृता यूयं समाविश्य दुरात्मना ।[3] [२८

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कुशनाभस्य धीमतः ॥२३॥[4]

२४] शिरोभिः शरणं गत्वा कन्याशतमभाषत । [३३,१

वायुरस्मानुपागम्य बलवान् काममोहितः ॥[5]२४॥

२५] उत्क्रम्य धर्ममर्यादां प्रधर्षयितुमुद्यतः । [२

सोऽस्माभिरुक्तः सर्वाभिर्वायुः कामवशङ्गतः ॥[6]२५॥ [N

२६] पितृमत्यः स्म भगवन् न स्वच्छन्दवरा वयम् ।[7]

पितरं नोऽभियाचस्व न्यायतो यदि मन्यसे ॥[8]२६॥ [३

२७] न वयं स्वैरचारिण्यः प्रसीद भगवन्निति ।

इत्युक्तः कुपितो वायुः प्रविश्यास्मांस्ततः प्रभो ॥[9][10]२७॥[N

२८] बभञ्ज बेलेवांस्तेन सर्वाः कुब्जीकृता वयम् । [N

१. के रा—अतः परमधिकः पाठः—

प्रोत्तिष्ठन्त्यः सुसंत्रस्ताः सलज्जाः साश्रुलोचनाः ।

अवदत् स पिता कन्यास्ततः परमकोपि..: ॥

२. ज ल—विचेष्ट तानभाषत । भ—विचेष्टस्यो न भाषथ ।

३. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

शंसध्वं किमिदं पुत्र्यः कुब्जत्वं कथमागतं ।

४. ज ल भ—ताः सुताः ।

५. ब—नास्ति ।

६. ज ब ल भ—अभिवाद्य पितुः पादौ सर्वा वचनमब्रवन् ।

वायुः सर्वत्रगः सोऽस्मान्धर्षयितुं† प्रभुः ।

७. ज ल भ—अशुभं मार्गमास्थाय न धर्मं पर्यवेक्षत ।

८. ज ल भ—पितृवश्यो वयं सर्वा न स्वातन्त्र्यमुपस्थिताः ।

९. ज ल भ—नास्ति ।

१०. ज ल भ—नास्ति ।

११. के—बद्वांस्तेन । पुनरपरकरशोधितोऽपपाठः ।

† ब—०नैतद्धर्षयितुं ।

इति तासां वचः श्रुत्वा कुशनाभो नराधिपः ॥२८॥[1]

२९] प्रत्युवाच ततो[2] रामं[3] कन्याशतमिदं वचः । [९

यत् क्षान्तोऽतिक्रमो वायोः कृतं तन्मे महत् प्रियम्॥[4]२९॥[N

३०] पुत्र्यो मे यच्च युष्माभिः कुलमाभिश्च[5] रक्षितम् ।[6]

अलङ्कारो हि नारीणां क्षमा पुत्र्यो विशेषतः ॥३०॥ [N

३१] पुंसां चैव विशेषेण क्षन्तव्यमिति मे मतिः ।

पू३२] दुष्करं च कृतं मन्ये यद् वायोः क्षान्तमीदृशम् ॥[7]३१॥ [N

N] देशः कालश्च प्राप्तोऽयं सुपात्रप्रतिपादने ।[8]

प्रदानसमयं चैव मन्येऽहं वोऽद्य सर्वेषाः ॥[9]३२॥ [N

३३] गम्यतामिच्छतः पुत्र्यश्चिन्तयिष्यामि वो[10] हितम् ।

---

१. ज ल भ—इति तेन प्रवाणाः स्म वायुनोपहता भृशं ।
तासां तु वचनं श्रुत्वा राजा परमधार्मिकः ।

२. ज—स धर्मात्मा । ल भ—महातेजाः ।

३. के रा—वायुः ।

४. ज ल भ—भद्रं कृतमिदं पुत्र्यः कर्तव्यञ्च महत्कृतम् ।

५. ब—कुशयाभिश्च ।

६. ज ल भ—ऐकमत्यमुपागम्य† कुलं वै रक्षितं मम ।
अलंकारः क्षमा पुत्र्यः स्त्रियो वा पुरुषस्य वा ॥
के—अत ऊपरभागे पुनरपरकराभ्यस्तोऽधिकः पाठः—
भद्रं कृतमिदं पुत्र्यः कर्तव्यं च महत्कृतम् ।
ऐकमत्यमुपागम्य कुलं वै रक्षितं मम ॥

७. ज ल—दुष्करं तद्वचः क्षान्तं त्रिदशेषु विशेषतः ।
भ— ,, तच्च वै ,, ,, ,,

८. के रा—व्यभिचारकृतं यस्मात्प्राप्तोयं तेन सुव्रताः ।

९. ज ल भ—प्राप्तोयं देशकालश्च सुपात्रप्रतिपादने* ।
यद्वायुना च कन्यास्तास्तत्र न्युब्जीकृताः पुरा ॥

१०. रा—वै ।

†भ-एकमत्यमुपागत्य । *ल भ-०प्रतिपादनं ।

विसृज्य चैव ताः कन्यास्ततः स नृपसत्तमः ॥३३॥[1] [N

३४] राजा प्रदानधर्मज्ञः चिन्तयामास मन्त्रिभिः।[2][3]

वद्वायुना च ताः कन्यास्तत्र कुब्जीकृताः पुरा ॥[4]३४॥[N

३५] कान्यकुब्जमिति ख्यातं ततः प्रभृति तत् पुरम्।[5] [N

एतस्मिन्नेव काले तु चूली[6] नाम महामुनिः[7] ॥३५॥

३६] ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचर्यं चकार किल दुष्करम्। [११

तं ब्रह्मचारिणं राम तप्यमानं महत्तपः ॥३६॥[8]

३७] सोमपा नाम गन्धर्वी ऊर्णायुदुहिता पुरा।[9] [१२

परं नियममास्थाय सम्यक् परिचचार ह ॥[10]३७॥

३८] पुत्रार्थिनी ततो राम महर्षेर्भावितात्मनः।[10] [N

१. ज ब ल भ—कान्यकुब्जमितिख्यातं* ततः प्रभृति तत्पुरः।
विसृज्य कन्याः काकुत्स्थ राजा त्रिदशविक्रमः॥

२. रा—प्रधानधर्मज्ञाः।

३. ज ब ल भ—मंत्रज्ञो मंत्रयामास प्रधानं सह मंत्रिभिः।

४. रा—शतं।

५. ज ल भ—नास्ति। पूर्वमायातः।

६. ज ब—चूडिर्नाम। ल—चूकिर्नाम। इत्यपरहस्तेन।
भ—चूडिनाम।

७. ज ल—महानृषिः।

८. ज ल भ—ऊर्ध्वरेताः शुभाचारो ब्रह्मतेजा† ब्रह्मकृतः†।
तप्यमानं तु तमृषिं‡ गंधर्वी तमुवाच ह॥

९. ज—सोमपा नाम भद्रं ते तूर्णायुर्दुहिता पुरा॥
ल भ—„ „ „ „ ऊर्णायुदुहिता तदा।
ब—सोमपा नाम गन्धर्वी तूर्णायुदुहिता पुरा।

१०. ज ल भ—नास्ति।

*ल—कन्याकुब्ज०। †ब ल—०तेजोऽन्य०।
‡ल—मृषि तं तु।

साऽ[1]भवत् प्रयता भूत्वा शुश्रूषणपरायणा ॥३८॥ [१३पू
१९] स तां काल[2]स्य महतः प्रोवाच परितोषितः ।[3]
परितुष्टो ऽस्म्यहं भद्रे ब्रूहि किं करवाणि ते ॥[4]३९॥ [१४
४०] परितुष्टं मुनिं दृष्ट्वा गन्धर्वी मधुराक्षरा ।
उवाच प्राञ्जलिर्भूत्वा वाक्यमात्महितं तदा ॥[5]४०॥ [१५
४१] दीप्यसे परया लक्ष्म्या ब्राह्म्या त्वमनया यथा[6] ।[7]
तथाऽहं पुत्रमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मश्रियान्वितम् ॥४१॥ [१६
४२] स्वयं च [8]वरये त्वाऽहं भर्तारमपरिग्रहा ।

---

१. ज ल—सा तदा ।
भ—सा तथा ।

२. ब—कालेन महता ।

३. ज ल भ—उवास काले धर्मज्ञस्तस्यास्तुष्टोभवद् गुरुः ।
स तथा कालयोगेन प्राब्रवीत्प्रभुमव्ययः ॥

४. ज ल भ—परितुष्टोस्मि भद्रं ते किं करोमि तव प्रिये ।

५. ज ल भ—परितुष्टं मुनिं ज्ञात्वा गंधर्वी मधुरस्वरा ।
उवाच परमोदारं वाक्यज्ञा वाक्यमब्रवीत्* ॥

६. ब—यथा ।

७. ज ल भ—ब्राह्म्या† लक्ष्म्यानया ब्रह्मन्दीप्यसे ब्रह्मवित्तम ।
त्वत्तो लक्ष्म्या‡ त्वया‡ ब्रह्मन्पुत्रमिच्छामि धार्मिकं ।

८. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
न पतिश्चास्तिमे ब्रह्मन्न भार्या चास्मि कस्यचित् ।
ब—.................................. त्रुटितः ।

* ल–वाक्यकोविदम् । †ल–ब्राह्म्या ।

‡ल–०तया । भ–लक्ष्म्या तया ।

अनन्यपूर्वा[1] भज मां याचमानामनुव्रताम् ॥[2]४२॥ [१७

४३] तस्यै[3] प्रसन्नो विमार्षिर्ददौ[4] पुत्रं यथेप्सितम् ।

ब्रह्मदत्त इति ख्यातः सोऽभवच्चूलिनः सुतः ॥[5]४३॥ [१८

४४] ब्रह्मदत्तः स राजर्षिः पुरमध्यवसत् तदा ।

काम्पिल्लं नाम काकुत्स्थ देवराजसमद्युतिः ॥४४॥[7] [१९

४५] तं[8] श्रुत्वा परया लक्ष्म्या कुशनाभोऽन्वितं नृपम् ।[9]

ब्रह्मदत्ताय ताः कन्याः प्रदातुमुपचक्रमे ॥[10]४५॥ [२०

४६] स तमाहूय धर्मज्ञो ब्रह्मदत्तं महीपतिम् ।[11]

ददौ कन्याशतं तस्मै[12] सुप्रीतेनान्तरात्मना ॥[13]४६॥ [२१

---

१. ज भ—भजमानां पतिव्रतां । ल–भजमानं यतव्रतं ।

२. भ—अतः परमधिकः पाठः—

ब्राह्मण्ये ननु संयुक्तं दातुमर्हसि सुव्रतं ।

३. ज ल भ—तस्याः ।

४. ज ल भ—ब्रह्मर्षिर्ददौ ।

५. ज भ—सोभूच्चूलिसुतो नृपः ।

ल—सोभूः चूलिसुतो नृपः । पुनः शोधितः ।

६. भ—ब्रह्मदत्त इति ख्यातोऽभवच्चूलीसुतो नृपः ।

७. ज ल भ—नास्ति ।

८. रा—ते ।

९. ज ल—स बुद्धिमकरोद्राजा कुशनाभः सुधार्मिकः ।

भ—स बुद्धिमकरोज्जातु कुशनाभः सुधार्मिकः ।

१०. ज ल—ब्रह्मदत्ताय काकुत्स्थं दत्तं कन्याशतं तदा ।

भ— „ „ दत्तां „ „ ।

११. ज भ—तमाहूय महातेजा ब्रह्मदत्तं महीपतिः ।

१२. ज भ—राजा ।

१३. ल—नास्ति ।

४७] यथाक्रमं च सर्वासां तासामनुपमद्युतिः ।
जग्राह विधिवत् पाणिं ब्रह्मदत्तो नराधिपः ॥४७॥[1] [२२

४८] तेन च स्पृष्टमात्रेषु ताः पाणिषु गतव्यथाः ।
बभूवुः सर्वशः कन्या रूपौदार्यगुणान्विताः ॥[2]४८॥ [२३

४९] तौ दृष्ट्वा वायुना मुक्ताः कुशनाभो महीपतिः ।
विस्मयं परमं चक्रे मुमुदेऽभिननन्द च ॥[5]४९॥ [२४

५०] कृतोद्वाहं च राजानं ब्रह्मदत्तं रघूद्वह ।[6]
सदारं प्रेषयामास स्वपुरं परमार्चितं ॥५०॥ [२५

१. ज भ—यथाक्रमं तथा पाणिं जग्राह रघुनन्दन ।
ब्रह्मदत्तो महीपालस्तासां देवपतिर्यथा ॥
ल—नास्ति ।

२. ज भ—स्पृष्टमात्रे तथा* पाणौ विज्वरं विपुलं शुचि ।
युक्तं परमया लक्ष्म्या कन्याशतमभूत्तदा ॥
ल—नास्ति ।

३. ज ल भ—सः ।

४. ज ल भ—कुशनाभः सुतास्तदा ।

५. ज ल भ—बभूव परमप्रीतो हर्षबाष्पाकुलेक्षणः ।

६. ज ल भ—कृतोद्वाहं तु राजा वै ब्रह्मदत्तं महामुनिं ।

७. ज—सोपाध्यायगणं तथा ।
ल भ— ,, तदा ।

* भ—ततः ।

तं तथा सदृशैर्दारैरन्वितं पुत्रमागतम् ।
५१] मुमुदे सोमपा प्रीता दृष्ट्वा चाभिननन्द च ॥५१॥[1] [२६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[2] ब्रह्मदत्तविवाहो[3]
नाम त्रिंशः[4] सर्गः ॥[5]३० ॥

१. ज ल म—स सोमपास्तु* ताः प्राप्य पुत्रस्य सदृशीः प्रियाः* ।
कन्या गृहीत्वा सम्पूज्य कुशनाभं मुदा† ययौ ॥
२. कै—आदिकाण्डे ।
३. ज ल—वैवाहिको । म—कन्यावैवाहिको ।
४. कै रा—पंचत्रिंशः । ज—अष्टाविंशः ।
ब ल म—नास्ति ।
५. ज म— ॥ २८ ॥

* ल—सोमपापितु तं प्राप्य सदृशीं प्रियाम् ।
म—सोमपापितु० ।
† ल म—तदा ।

कृतोद्वाहे गते तस्मिन् ब्रह्मदत्ते नराधिपे ।
१] अपुत्रः कुशनाभोऽथ पुत्रीयामिष्टिमारभत् ॥१॥ [१
तस्यां चै वर्तमानायां कुशनाभं तदा नृपम् ।
२] उवाच परमप्रीतः कुशो ब्रह्मसुतस्तदा ॥२॥ [२
पुत्रस्ते सदृशः पुत्र भविष्यति सुधार्मिकः ।
३] गाधिः प्राप्स्यसि तेन त्वं कीर्तिं लोके च शाश्वतीम् ॥३॥ [३
एवमुक्त्वा कुशो राम कुशनाभं प्रजापतिम् ।
४] जगामाकाशमास्थाय ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥४॥ [४
कस्यचित् त्वथ कालस्य कुशनाभस्य धीमतः ।
५] प्राजायत सुतो राम गाधिर्नाम महायशाः ॥५॥ [५
स पिता मम धर्मात्मा गाधिः सत्यपराक्रमः ।

१. ज ल भ—तदा ।
२. ज ल भ—नराधिपः ।
३. के रा—पुत्रीयामिष्टिमाहरत् ।
४. ज ल भ—इष्ट्यां तु ।
५. ज ल—गाधि ।
६. भ—कीर्तिर्लोके च शाश्वती ।
७. ज—एवमुक्तः ।
८. रा—कुशनाभं ।
९. रा—प्रजापतिसुतो ।
१०. ज ल—जज्ञे परमसन्तुष्टो गाधिर्नाम सुतस्ततः ।
भ—जज्ञे परमधर्मिष्ठो ,, ,, ।
११. ज—काकुत्स्थो । ल भ—काकुत्स्थ ।
१२. ज ल भ—परमधार्मिकः ।

६] कुशवंश्योऽभवद् राजा गाधिजोऽहं रघूद्वह ॥[2]६॥ [६
अनुजा भगिनी चापि मम राघव सुव्रता ।
७] नाम्ना सत्यवती राम ऋचीके प्रतिपादिता ॥७॥ [७
भर्तृव्रतत्वाद् भर्त्रैव सह गत्वा सुरालयम् ।[5]
८] कौशिकी परमोदारा सा प्रवृत्ता महानदी ॥८॥ [८
स्वर्ग्या पुण्योदका रम्या हिमवन्तमुपाश्रिता ।
९] इयं पावयितुं लोकान् प्रवृत्ता भगिनी मम ॥[10]९॥ [९
अहं हि हिमवत्पार्श्वे वसामि निरतः सुखी ।
१०] भगिन्याः स्नेहतो राम कौशिक्या नियतव्रतः॥१०॥[11] [१०
सैषा सत्यवती पुण्या सत्यधर्मपरायणा[12] ।
११] पतिव्रता महाभागा कौशिकी सरितां वरा ॥११॥[13] [११

---

१. रा—कुशवंशोभवद्राजा । ब—०वश्यो भवेद्राजा ।
२. ज भ—कुशादेवं प्रसूताः स्म कौशिका रघुनन्दन ।
ल—कुशादेव ,, ,, ,, ,, ।
३. ज ल भ—पूर्वजा ।
४. ज ल भ—चैव ।
५. ज—सुव्रत ।
६. ज ल भ—नाम ।
७. ज—भर्तारमनुरुध्यंती सशरीरा दिवं गता ।
ल भ—भर्तारमनुध्यंती ।
८. ब—सात्र वृत्ता ।
९. ज ल—स्वर्गपुण्योदका ।
१०. ज ल भ—लोकस्य हितकामार्थं प्रवृत्ता भगिनी मम ।
११. ज ल भ—ततो हिमवतः पार्श्वे निवसामि ततः* सुखम् *।
भगिन्या स्नेहसंयुक्तः कौशिक्या रघुनंदन ।
१२. ज—सत्ये धर्मे च संस्थिता । भ—सत्यं धर्मं च संस्थिता ।
१३. ल—नास्ति ।

---

* ल—यथासुखम् ।

अहं च नियमं कश्चिदास्थातुं रघुनन्दन ।[1]

१२] सिद्धाश्रममनुप्राप्तः सिद्धोऽस्मि तव तेजसा ॥१२॥ [१२

एषा राम ममोत्पत्तिः स्वस्य वंशस्य कीर्तिता ।

१३] देशस्य चास्य निर्दर्शि[2] यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥१३॥

स्थितोऽर्धरात्रः[3] काकुत्स्थ कथां कथयतो मम ।

१४] निद्रां भजस्व भद्रं ते विघ्नोऽयं माऽस्तु नोऽधुना ॥[4]१४॥[१४

निःस्पन्दास्तरवः सर्वे संलीनमृगपक्षिणः ।[5]

१५] नैशेन तमसा व्याप्ता दिशश्च रघुनन्दन ॥१५॥ [१५

सूक्ष्मेणाञ्जनचूर्णेन नभः कृत्स्नमिवाञ्जितम् ।

१६] ग्रहनक्षत्रताराभिः काञ्चनीभिरिवावृतम्[6] ॥१६॥ [१६

उदेति चासौ शीतांशुर्लोककान्तो निशाकरः ।

१७] अंशुभिः स्वैर्जगच्छीतैर्धर्मान्तं ह्लादयन्निव ॥[7]१७॥ [१७

निशाचराणि सर्वाणि सत्त्वानि विचरन्ति च ।[8]

१८] यक्षरक्षोगणाश्चैव ये चान्ये पिशिताशनाः ॥[9]१८॥[10] [१८

---

१. ज भ—अहं तु नियमस्यास्य सिद्ध्यर्थं रघुनंदन ।

ल—नास्ति ।

२. रा—निर्विर्शि ।

३. ज व ल भ—गतोऽर्धरात्रः ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज ल भ—निष्पन्दपर्णास्तरवः संलीना मृगपक्षिणः ।

६. ज ल भ—काञ्चनाभिरिवावृतं ।

७. ज ल भ—स्वैरंशुभिर्ह्लादयते घर्मार्तान् रघुनन्दन ।

८. ज ल भ—नास्ति ।

९. ज ल—यक्षरक्षोगणाश्चैव ये चान्ये पिशिताशिनः ।

भ—यक्षरक्षोगणाश्चान्ये ये चैव पिशिताशनाः ।

१०. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

निद्रां भजस्व भद्रं ते विघ्नो वै माऽस्त्वतोऽस्तु वः* ।

---

*भ—च: ।

एवमुक्त्वा कौशिको[1] वै[2] विरराम[3] महाद्युतिः ।
१.९] साधु साध्विति [4]ते सर्वे मुनयः [5]प्रशशंसिरे ॥१९॥ [१९
रामोऽपि सहसौमित्रिः[6] किञ्चिदागतविस्मयः ।
N] [7]प्रणम्य मुनिशार्दूलं निद्रावशमुपेयिवान् ॥२०॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[8] विश्वामित्रवंश- कीर्तनं
नाम एकत्रिंशः[9] सर्गः ॥३१॥[10]

१. ज ल भ—महातेजा ।
२. ल—विश्वामित्रो ।
३ ज ल भ—महामृषिः । व—महामुनिः ।
४. ज ल—तत् । व—तं ।
५. ज ल भ—प्रत्यपूजयन् ।
६. ज ल भ—राघवोपि ससौमित्रिः ।
७. ज ल भ—प्रशंसन् ।
८. के—आदिकाण्डे ।
९. के—षड्विंशः । रा— षड्विंशः ।
ज—एकोनविंशः । व ल भ—नास्ति ।
१०. ज भ—॥२१॥

ते रात्रिशेषं मुषुपुः शोणतीरे महर्षयः ।
१] प्रभातायां तु शर्वर्यां विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥१॥[1] [१
कौसल्यामातरुत्तिष्ठ सुप्रभाता निशा तव ।
२] पूर्वां सन्ध्यामुपास्यैनां गमनायाभिरोचय ॥२॥[3] [२
तच्छ्रुत्वोत्थाय रामोऽपि कृत्वा पौर्वाह्णिकक्रियाम् ।
३] गमनं रोचयामास वचनं चेदमब्रवीत् ॥३॥[4] [३
अयं शोणः शुचिजलो गाधः पुलिनमण्डितः ।
४] कतमेन पथा ब्रह्मंस्तरिष्याम इमं वयम् ॥[6]४॥ [४

१. रा—०मित्रो ऽभ्यभाषत ।

२. ज ल भ—ऋषीणां तु ततस्तेषां शोणकूले मनोहरे ।
निशायां तु* प्रभातायां* विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।
सुप्रभाता निशा राम पूर्वसंध्या प्रवर्तते ।
व—पुस्तके केवलं तृतीया पङ्क्तिरधिका ।

३. ज भ—उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भद्रं ते गमनं प्रतिरोचय† ।

४. ज भ ल—तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृत्वा पूर्वाह्णिकां‡ क्रियां ।
गमनं रोचयामास वाक्यं चेदमुवाच ह ।

५. कै—अगाधः पुलि० । पुनरपरकरेण शोधितः ।
ज भ—अगाधः पुलिनान्वितः । ल—अगाधा पुलिनाः ।

६. ज ल—कथमेव यथा ब्रह्मंस्तरिष्यामः सुखं वयम् ।
भ—कथमेवं यथा ,, ,, ,, ।

* भ—सुप्रभातायां । † ल भ—पुष्य रोचय । ‡ भ—पूर्वाह्णिकी ।

इत्युक्तः[1] प्रत्युवाचाथ विश्वामित्र इदं वचः । [५पु
५] रामं कमलपत्राक्षं तदा संहर्षयन्निव ॥५॥[2] [N
गाध[3] एष महाबाहो तरितव्यो यथासुखम् ।[4] [N
६] एष पन्था मयोद्दिष्टो येन यान्ति महर्षयः ॥६॥ [८ उ
ते गत्वा दूरमध्वानं गते च दिवसे तदा ।
७] जाह्नवीं सरितां[5] श्रेष्ठां ददृशुः परमर्षयः ॥७॥[6] [७
तां दृष्ट्वा पुण्यसलिलां गङ्गां मुनिजनप्रियाम् ।
N] कथमेतां तरिष्यामो गन्तव्यं वा कुतो मुने ॥८॥ [N
इत्युक्तः[7] प्रत्युवाचेदं विश्वामित्रो महामुनिः ।
N] रामं कमलपत्राक्षं हर्षयन्निदमब्रवीत् ॥९॥ [N
इतस्त्रियोजनादूर्ध्वं सन्तरिष्याम जाह्नवीम् ।
N] अस्मिन्नेव समुत्तीर्य तीर्थं[8] शोणमिमं[9] नदम् ॥१०॥ [N
एष पन्थाः शिवः क्षेमः स्वादुमूलफलोदकः ।
N] अनेन राम यास्यामः[10] पथा सुखमनामयम्[11] ॥११॥ [N

१. रा—इत्युक्त्वा ।
२. ज ल भ—नास्ति ।
३. के—अगाधः । पुनरपरकरेण शोधितः ।
४. ज ल भ—सोऽब्रवीद्राम एषोऽत्र तरितव्यं यथासुखम् ।
५. के रा—अतः परं द्वादशश्लोकान्तः पाठो नास्तिः ।
६. ज ल भ—हंससारससेवितां ।
७. ज—इत्युक्त्वा ।
८. ज—तीर्थं । भ—तीर्थे ।
९. ज ब ल—शोणमिदं ।
१०. ज—यास्यामः पंथाः । भ—यास्यामो यथा ।
११. ज—सुखमनामयः ।

ते तमध्वानमचिरात् सुखेनोत्तीर्य[1] जाह्नवीम् ।
N] ददृशुर्मुनयः सिद्धा आश्रमं श्रमनाशनम् ॥१२॥ [N
तां ते शुचिजलां दृष्ट्वा हंससारसशोभिताम्[2] ।
८] बभूवुर्मुदिताः सर्वे[6] मुनयः सहराघवौ[3] ॥१३॥ [८
तस्यास्तीरे च[5] ते[4] चक्रुस्तदा वासपरिग्रहम्[7] । [९
९] ततः स्नात्वा यथाकामं सन्तर्प्य पितृदेवताः ॥१४॥
हुत्वा चैवाग्निहोत्राणि प्राश्य चामृतवद्धविः । [१०
१०] विविशुर्जाह्नवीतीरे शुचौ मुदितमानसाः ॥१५॥
विश्वामित्रं महात्मानं परिवार्य समन्ततः । [११
११] अथ तत्र तदा रामो विश्वामित्रमभाषत ॥१६॥
भगवन् श्रोतुमिच्छामि[8] यथेयं सरितां वरा । [१२
१२] त्रैलोक्यपथगां[10] गङ्गां[9] गता नदनदीपतिम् ॥१७॥ [१३
नोदितो रामवाक्येन विश्वामित्रो महामुनिः ।

---

१. ज भ—सुखेनोत्तीर्य ।

२. ज ल भ—गंगां मुनिजनप्रियां ।

३. ज ल—राघवो मुनयस्तदा । भ—राघवौ मुनयस्तथा ।

४. कै रा—तदा ।

५. ज ल भ—चक्रुर्निवासं मुनयस्तदा ।

६. ज ल भ—सर्वे ।

७. ज—वास तत्र । ल—वसंस्तत्र ।

८. कै—भगवांछ्रोतु० । व—भगवं छ्रोतुमि० ।

९. ज ल—गंगा त्रिपथगा नदी । भ—गगां त्रिपथगां ।

१०. ज ल—त्रिलोक्यं कथमाक्रम्य ।

भ—त्रैलोक्ये कथमाक्रम्य ।

१३] जन्मप्रभृति गङ्गायाः प्रावदत् प्रभवागमम् ॥[1]१८॥ [१४
शैलेन्द्रो हिमवान् नाम रत्नानामाकरो[2] महान्[3] ।
१४] तस्य कन्याद्वयं जज्ञे रूपेणाप्रतिमं भुवि ॥१९॥ [१५
[4]मेरोर्दुहिता राम तयोर्माता सुमध्यमा ।
१५] नाम्ना मनोरमा देवी पत्नी हिमवतोऽभवत् ॥[5]२०॥ [१६
तस्यां गङ्गेयमभवज्ज्येष्ठा हिमवतः सुता ।
१६] उमा नाम द्वितीयाऽभूत् कन्या तस्यैव राघव ॥२१॥[6] [१७
अथ ज्येष्ठां हिमवतः सुतां गङ्गामनिन्दिताम् ।
१७] वरयाञ्चक्रिरे देवा आत्मकार्यचिकीर्षवः[7] ॥२२॥[8] [१८
ददौ चापि स धर्मेण तेभ्यस्त्रैलोक्यपावनीम् ।
१८] स्वच्छन्दपथगां देवीं सुतां गङ्गां महानदीम् ॥२३॥[9] [१९
प्रतिगृह्य च गङ्गां ते त्रैलोक्यपथचारिणीम् ।
१९] यथागतं ययुर्देवास्तदा पूर्णमनोरथाः ॥२४॥[10] [२०

---

१. ज ल भ—वृद्धिं जन्म च गंगाया वक्तुमेवोपचक्रमे ।

२. कै रा—रत्नाकरसमान्वितः ।

३. ज ल भ—राम ।

४. ज ल भ—मेरोर्दुहितरा । रा—मेरोर्दुहितरौ ।

५. ज ल भ—नाम्ना मनोरमा नाम पत्नी हिमवतः प्रिया ।

६. ज ल भ—नास्ति ।

७. व—स तु कार्यचिकीर्षवः ।

८. ज ल भ—अथ ज्येष्ठां सुतां राम देवाः सत्रचिकीर्षवः ।
शैलेन्द्रं वरयामासुर्गंगां त्रिपथगां नदीं ॥

९. ज ब ल भ—ददौ धर्मेण हिमवांस्तनयां लोकपावनीं ।
स्वच्छां त्रिपथगां गंगां त्रैलोक्यहितकाम्यया ॥

१०. ज ल भ—प्रतिगृह्य तु लोकार्थं* त्रैलोक्य*-हितकाम्यया ।
गंगामादाय ते जग्मुः कृतार्थास्त्वंतरात्मभिः ॥

* भ—तां गंगां लोकानां ।

सा तु शैलेन्द्रदुहिता द्वितीया रघुनन्दन ।[1]
२०] औग्रं[2] व्रतमुपाश्रित्य तपस्तेपे तपोधना[3] ॥२५॥ [२१
तामप्युग्रतपःसिद्धां[4] ददौ शैलवरः[5] सुताम् ।
२१] रुद्राय याचमानाय उग्रां लोकनमस्कृताम्[6] ॥[7]२६॥ [२२
इत्येते शैलराजस्य सुते राम बभूवतुः ।[8]
२२] गङ्गा च सरितां श्रेष्ठा देवीनां[9] चाप्युमा वरा ॥२७॥ [२३
तत्र पावयितुं लोकानिमांस्त्रीन् स्वेन तेजसा ।[10]

---

१. ज ल भ—यावत्सा* शैलतनया [illegible]रघुनंदन ।

२. ज ल भ—उग्रं सा व्रतमास्थाय ।

३. ज—तपोधन ।

४. ज—उग्रेण तपसा युक्तं । ल भ—उग्रेण तपसा युक्तां ।

५. ल—शैलपति ।

६. ब—सर्वलोकनमस्कृतां ।

७. ज—रुद्रायाप्रतिवीर्याय लोकसंपूजितां† पुमान् † ।

८. ज ल—एते ते शैलराजस्य उभे‡ सुदयिते सुते ।

९. ज ल भ—देवी चोमा रघूत्तम ।

ब— ,, ,, रघूद्वह ।

१०. ज ल भ—एतत्ते सर्वमाख्यातं यथा त्रिपथगा नदी ।

---

* भ—या त्वन्या ।

† भ—लोकसंपूजितामिमां ।

‡ भ—शुभे ।

२३] गङ्गा प्रवर्तते राम सर्वभूतहिते रता ॥[1] २८ ॥[2] [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[3] गङ्गोत्पत्तिर्नाम
द्वात्रिंशः[4] सर्गः ॥३२॥[5]

१. ज ल भ—गं गता[1] प्रथमं गंगा[2] गंगा[3] मतिमतां वर[4] ।
२. अत: परमधिक: पाठ:—
ज—उवाच देवं भर्तारं संप्राप्ता च सुमध्यमा ।
ल—शैलेंद्रः वरयामास „ „ „ ।
भ—उमा च देवं भर्तारं „ „ „ ।
३. के ब—आदिकांडे ।
४. के रा—सप्तत्रिंशः । ज—त्रिचत्वारिंशः ।
ब ल भ—नास्ति ।
५. ज भ—॥३०॥

1. ल भ—गां गता । 2. ल भ—राम । 3. ल—देवाः मन्त्रविकर्षिताः ।

उक्तवाक्ये मुनौ तस्मिन् रामः पप्रच्छ तं पुनः ।
१] विश्वामित्रं सुखासीनं महात्मानं कृताञ्जलिः ॥[2]१॥[3] [१
कथेयं कथिता ब्रह्मन् पुण्यश्रवणकीर्तना ।[4]
२] या त्वया तां पुनः श्रोतुमिच्छामि बहुविस्तरम् ॥[6]२॥[N
उमा केनाभवद् देवी कौमारब्रह्मचारिणी ।
३] अवाप देवप्रवरं पतिं देवं[8] महेश्वरम् ॥३॥ [N
हेतुना केन चैवेयं गंगा त्रिपथगाऽभवत् । [४पू

१. ज—तस्मिनुभौ तौ रामलक्ष्मणौ ।
ल भ—तस्मिन्नुभौ ,, ,, ।

२. ज भ—प्रतिनंद्य कथां वीराव्रूतां मुनिपुंगवः ।
ल— ,, ,, वीराव्रूतां मुनिपुंगवम् ।

३. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
युक्तरूपमिदं ब्रह्मन्कथितं मधुराक्षरं ।

४. रा—०श्रवनकीर्तना ।

५. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
दुहितुः शैलराजस्य ज्येष्ठा या वक्तुमर्हसि ।
विस्तरं विस्तरज्ञोसि कथां नो दिवि चेह च ।

६. ज ल भ—पुनस्तां श्रोतुमिच्छामि त्वत्तोऽहं बहुविस्तरां* ।

७. रा—कौमारव्रतचारिणी । ल—०व्रतचारिणी ।

८. ज ल भ—अवाप्य ।

९. ज ल भ—भूत०

---

* ल—बहुविस्तरं ।

४] कथं देवनदी चेयं मानुषान्[1] समुपागता ।।४।।[2] [N

त्रिषु लोकेषु विख्यातां[3] कैश्च धर्मैरधिष्ठितां[4] । [४उ

५] एवं ब्रुवति काकुत्स्थे[5] विश्वामित्रो महातपाः ।।[6]५।।

विस्तरेण कथामेतां व्याख्यातुमुपचक्रमे ।[7] [५

६] पुरा राम कृतोद्वाहः शितिकण्ठो[8] महातपाः ।।६।।

उमा च स्पर्धया देवी मैथुनायोपजग्मतुः । [६

७] शितिकण्ठस्य देव्याश्च दिव्यं वर्षशतं गतम् ।।७।। [७पू

न चैवैकतरस्यासीत्[9] तयोः राम पराजयः । [८पू

८] ततो देवाः ययुश्चिन्तां पितामहपुरोगमाः ।।८।।

यदत्रोत्पत्स्यते भुतं सोढां[10] कोऽस्य भविष्यति ।[11] [९

९] तेऽभिगम्य[12] सुराः सर्वे प्रणिपत्य वृषध्वजम् ।।९।।

१. अ—मानुषं ।। ल भ—मानुष्यं ।

२. ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः —

कथं* त्रिपथगा गंगा प्रोच्यते देवमानुषैः ।

३. ज ल भ—धर्मज्ञ ।

४. ज ल भ—०रधुष्ठिता ।

५. रा—काकुत्स्थो ।

६. ज ल भ—तथा तयोस्तु ब्रुवतोर्विश्वामित्रो महातपाः+ ।

७. ज ल भ—निखिलेन कथां दिव्यामृषिमध्ये ततोऽब्रवीत् ।

८. ल—सितिकंठो ।

९. ज ल भ—चैवान्यतरस्यासीद् ।

१०. रा—सोढः । ब—सोढं ।

११. ज ल भ—यदि चोत्पत्स्यते पुत्रः सोढा कस्तं भविष्यति ।

१२. ज—तेऽपि गत्वा ।

---

* ल भ—कथानां । + ल—महातपः ।

शितिकण्ठं महात्मानमिदं वचनमब्रुवन् ।[1] [१०
१०] देवदेव महाभाग सर्वभूतहिते रत ॥[2] १०॥
सुराणां प्रणिपातेन प्रसादं कर्तुमर्हसि । [११
११] न तेऽपत्यं धारयितुं शक्तेयं पृथिवी विभो ॥[3] ११॥ [N
न लोकाः सर्वशश्चेमे सोढुं ते वीर्यसंभवम् ॥[4] [१२पू
१२] आत्मनैवात्मनस्तेजस्त्वं धारयितुमर्हसि ॥[5] १२॥[6] [N
सहानयैव देव्या त्वं ब्रह्मचारी भवेश्वर ।[7]
१३] अस्माकं च धरायाश्च लोकानां हितकाम्यया ॥[8] १३॥ [N
पू१४] धारयात्मभवं तेजः स्वयमेवोमया सह ।[8]
रक्ष लोकानिमान् देव न लोकान् हर्तुमर्हसि ॥[9] १४॥ [१३
१६] इति तेषां वचः श्रुत्वा देवानां भगवान् शिवः ।
शिवेन मनसा युक्तो देवान् वचनमब्रवीत् ॥१५॥[10] [१४

---

१. ज ल भ—नास्ति ।

२. ज ल भ—देवदेवं महादेवं* सर्वभूतहिते रतं ।

३. ज ल भ—नास्ति ।

४. ज भ—न लोका धारयिष्यन्ति तवापत्यं सुरोत्तम ।

५. ज भ—नास्ति ।

६. ल—नास्ति ।

७. ज भ—ब्रह्मचर्येण संयुक्तो देव्या सह तपश्चर† ।

८ ज ल—त्रैलोक्यहितकामस्त्वं तेजो धारय तेजसा ।

९. ल—वयं च शरणं याता न लोकान्हंतुमर्हसि ।

१०. ज ल भ—देवतानां वचः श्रुत्वा सर्वलोकमहेश्वरः ।
बाढमित्यब्रवीत्सर्वान्पुनश्चेदमुवाच ह ॥

---

* भ—महाभागं ।

† भ—परस्परं ।

१७] धारयिष्याम्यहं तेजः समुद्भूतं सहोमया।
निर्वृत्तो भवतेत्येवं[1] मुनींश्चेदमुवाच ह ॥१६॥[2] [१५
१८] यच्चेदं[3] क्षुभितं[4] स्थानान्मम[5] तेजो[6] ह्यनुत्तमम् ।
धारयिष्यति कस्तन्मे प्रोच्यतां सुरसत्तमाः[7] ॥१७॥ [१६
१९] एवमुक्तास्ततो देवाः प्रत्यूचुर्वृषभध्वजम् ।
यत् तव क्षुभितं तेजस्तद् धरा धारयिष्यति ॥१८॥ [१७
२०] एवमुक्तः सुरश्रेष्ठैः[9] प्रमुमोच महाबलः ।
तेजस्तत् पृथिवी येन व्याप्ता[8] सगिरिकानना ॥१९॥ [१८
२१] ततो देवाः पुनरिदमूचुः सर्वे हुताशनम् ।
प्रविश त्वं महातेजो रौद्रं[10] वायुसमन्वितः ॥२०॥ [१९
२२] तदग्निना पुनर्व्याप्तं स जातः श्वेतपर्वतः ।
दिव्यं शरवणं[11] चैव पावकादित्यवर्चसम् ॥२१॥
२३] यत्र जातो महातेजाः[12] कार्त्तिकेयोऽग्निसंभवः । [२०
ततो देवीं शिवं चैव देवाः सर्वेऽभ्यपूजयन्[13] ॥२२॥

१. ब—निर्वृता भवतीत्येवं ।
२. ज ल भ—नास्ति ।
३. ज ल भ—यदिदं ।
४. ल—क्षोभितं ।
५. भ—स्थानात्समरेतो ।
६. ज ल भ—कस्तं ।
७. ज ल भ—सुरपतिः ।
८. ज ल भ—व्याप्तं तदागिरिकाननं ।
९. ज ल भ—सुरपतिं प्रोचुः ।
१०. रा—रौद्रं ।
११. रा—शरवरं । के ब ज ल—शरवनं ।
१२. भ—महावीर्यः ।
१३. ज ल भ—सर्विगणास्तदा ।

२४] प्रह्वानतशिरःकायाः साधु साध्विति चाब्रुवन् ।[1] [२१
अथ शैलसुता राम त्रिदशानभिवीक्ष्य तान् ॥२३॥ [२२पू
२५] समन्युरशपत् सर्वान्[2] क्रोधसंरक्तलोचना[3] । [२३उ
यस्मादपत्यं सदृशममरा मम नोऽभवत् ॥[4]२४॥ [N
२६] अपत्यं स्वेषु दारेषु यूयं नोत्पादयिष्यथ ।[5]
उक्त्वा चैवं सुरान् सर्वान् शशाप पृथिवीमपि ॥२५॥ [२५
२७] त्वमप्यूषरसङ्कीर्णा भविष्यसि वसुन्धरे ।[10] [N

---

१. ज ल भ—पूजयामासुरत्यर्थं सुराःसुरपतिं यदा * ।
के—पुनरपरहस्तेन [illegible] शोधितः ।
२. ज ल भ—सर्वानेव तदा सुरान् ।
३. ज ल भ—देवी ।
४. ल ज भ—रोषात्संर० ।
५. के—यस्मादपत्यदारेषु यूयमुत्पाभवत् ।
अपरहस्तेन पुनस्तत्रैव शोधितः ।
सदृशममराममनेष्वथ ।
ज ल भ—नास्ति ।
६. ज ल भ—युष्माकं न भविष्यति ।
७. अतः परमधिकः पाठ :—
ज—भार्यायाश्चप्रभृतिभिर्भविष्यंत्यप्रजाः सुराः ।
ल— ,, प्रभृति वै भविष्यंत्यजाः सुरः ।
भ—भार्याश्च वोद्यप्रभृति ,, सुराः ।
८. ज ल भ—एवमुक्त्वा ।
९. के ब ल—सर्वा ।
१०. ज ल—एकरूपावने त्वं च बहुभोज्या भविष्यसि ।
भ—एकरूपा च नित्यं च ,, ,, ।

---

* के—तथा ।

न चापत्यकृतां प्रीतिं मत्क्रोधकलुषीकृता ॥२६॥

२८] प्राप्स्यसि त्वमनिच्छन्ती[1] ममापत्यमभीप्सितम्[2] ।[3] [२६

तां दृष्ट्वा व्यथितां[4] देवीमुमां देवो[5] महेश्वरः ॥२७॥

२९] गन्तुं[6] समुपचक्राम दिशं वरुणपालिताम् । [२७

स गत्वा तप आतिष्ठदुत्तमं संशितव्रतः ॥२८॥

३०] हिमवत्प्रभवे शृंगे[7] सह देव्या महेश्वरः । [२८

एष ते विस्तरो राम शैलपुत्र्या निवेदितः ॥२९॥

३१] गंगायां शृणु कार्त्स्न्येन[8] प्रभवं[9] सहलक्ष्मणः । [२९

N] कुमारं संभवं[10] चैव वह्न्यर्थं सुरपूजितम् ॥३०॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] उमामाहात्म्यं
नाम त्रयस्त्रिंशः[12] सर्गः ॥३३॥[13]

---

१. कै रा—त्वमभीप्सन्ती ।

२. कै रा—न चापत्यमभीप्सितम् ।

३. ज—ममापत्यमनिच्छंतीमेवं त्वमपि लप्स्यसे ।
   ल— ० निच्छंती चैवाहं त्वमपि ,, ।
   भ— ,, ,, ह्येवं त्वमपि ,, ।

४. ज ल भ—व्रीडितां ।

५. ज ल भ—सुरपतिस्तदा ।

६. ज ल भ—गमनाय मतिं चक्रे ।

७. रा—गंगे ।

८. ल—कांत्स्येव ।

९. ज भ—प्रभावं ।

१०. कै—०मारसंभवो । ब—कुमारं संभवं ।

११. कै ब—आदिकांडे ।

१२. कै—अष्टात्रिंशत्तमः । रा—अष्टत्रिंशतमः ।
   ब—नास्ति ।

१३. ज ल भ—नास्ति ।

तपस्तप्यति देवेशे त्र्यम्बके विबुधास्ततः ।[2]
१] सेनापतिमभीप्सन्तः पितामहमुपागमन्[3] ॥१॥ [१
अब्रुवंश्च सुराः सर्वे भगवन्तं पितामहम् ।
२] प्रणिपत्याञ्जलिं बद्ध्वा सेन्द्रा वह्निपुरोगमाः ॥[4]२॥ [२
यो[5] नः सेनापतिर्देव[6] दत्तो भगवता[7] पुरा । [३पू
३] स ब्रह्मचर्यमास्थाय तपस्तेपे सहोमया ॥[8]३॥ [४३
यदत्रानन्तरं कार्यं सर्वलोकपितामह[9] ।
४] तत्कुरुध्वं[10] भृशार्तानां[11] त्वं हि नः परमा गतिः ॥४॥ [५
देवानां वचनं श्रुत्वा सर्वलोकनमस्कृतः[12] ।[13]

१. ब—विविधास्ततः ।
२. ज ल भ—तप्यमाने महादेवे देवाः सर्षिगणाः पुरा ।
३. कै—०मुपागमत् ।
४. ज लभ—प्रणिपत्य शुभां वाणीं मुबद्धाञ्जलिकुड्मलाः* ।
५. ब—येन ।
६. ज ल—०देवः कृतो । ०देव कृतो ।
७. रा—भगवतः ।
८. ज ल भ—स तपः परमास्थाय स्थितः सुमहदद्भुतं ।
९. ज ल भ—लोकानां हितकाम्यया ।
१०. ज ल भ—तद्विधत्स्व ।
११. कै—भृशार्त्तानां । ज ल भ—विधानज्ञ ।
१२. कै—०नमस्कृतिः ।
१३. ज ल भ—देवतानां वचः श्रुत्वा ब्रह्मा लोकपितामहः ।

* भ—प्रबद्धाञ्जलि० ।

५] अग्रो मधुरया वाचा त्रिदशानिदमब्रवीत् ॥५॥ [६
यथा हि यूयमुमया शप्ताः साम्वयया पुरा ।[1]
६] तथा तद्वचनं देवा न शक्यं कर्तुमन्यथा ॥[4]६॥ [७
इयं त्वाकाशगा गङ्गा शैलराजसुता पुरा ।
७] उमाया भगिनी ज्येष्ठा ततोऽपत्यं हुताशनः ॥[7]७॥
जनयत्यात्मवीर्येण तपसा परमद्युतिः ।[8] [८
पृ८] ज्येष्ठा शैलेन्द्रदुहिता जनयिष्यति यं[10] सुतम् ॥[11]८॥
N] स[12] उमाया बहुमतो भविष्यति न संशयः[13] । [९
उ८] भविष्यति स च श्रीमान् सेनापतिरभीप्सितः ॥[14]९॥[N

१. ज—सान्त्वया । ल— सांत्वयं । भ—सांत्वयन् ।
२. ज ल भ—श्लक्ष्णया ।
३. ज ल भ—शैलपुत्र्या प्रयुक्ताः स्थ प्रजा वो नो* भविष्यति ।
४. रा—तस्मात् ।
५. ज ल—पर्वाण्विति च चादिष्ट तत्सत्यं नात्र संशयः ।
भ— „ वचोऽदिष्टं „ „ „ ।
६. रा—०काशका ।
७. रा—०सुतापरा ।
८. ज भ—येयमाकाशगंगेयमुपसृत्य† हुताशनं ।
ल— „ „ मुपोपृत्युद्गताशनन् ।
९. ज ल भ - जनयिष्यति देवानां सेनापतिमरिंदमं ।
१०. भ—तं ।
११. कै रा—नास्ति ।
१२. ज—शतमाया । ल—शतुमाया । भ—शतमायो ।
१३. भ—संशयं ।
१४. ज ल भ—नास्ति ।

* भ—न । † भ—वै ह्युपसृ० ।

एतच्छ्रुत्वा वचो देवाः प्रणिपत्य पितामहम् ।
९.] प्रहृष्टमनसः सर्वे कृतार्थाः पुनराययुः ॥१०॥[2] [१०
ततः कैलासशिखरमागत्य सहिताः सुराः ।[3]
१०] अग्निं नियोजयामासुः पुत्रार्थं रघुनन्दन ॥११॥ [११
हितार्थमग्ने लोकानामपत्योत्पादनं कुरु ।
११] आकाशपथचारिण्या संभूय सह गङ्गया ॥१२॥[6] [१२
तथेति च प्रतिज्ञाय वचस्तेषां हुताशनः ।
१२] उवाच गङ्गां मत्तेजो धार्यतामिति राघव ॥१३॥[7] [१३
तमुवाच ततो गङ्गा हुताशनमिदं वचः ।

१. कै--एत [व ?] श्रुत्वा ।

२. ज ल भ —तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य कृतार्था रघुनंदन ।
प्रणिपत्य सुराः सर्वे पितामहमपूजयन् ॥

३. ज ल भ—गत्वा तु पर्वतं राम कैलासं रत्नमंडितं ।

४. कै रा—विज्ञापयामासुर्गंगां च ।

५. ज ल भ—सर्वदेवताः ।

६. ज ल भ—देवतानां कृते साधु पुत्रं जनय पावक ।
शैलपुत्र्यां महाभाग गंगायां तेज उत्तमं ॥

७. ज ल भ—देवतानां प्रतिज्ञाय गंगां प्रोवाच पावकः ।
गर्भं धारय वै देवि देवतानामिदं प्रियम् ॥

अतः परमधिकः पाठः—

ज ब ल भ—कर्तव्यमिति सा श्रुत्वा दिव्यं गर्भमधारयत्-
दृष्ट्वा तंमहिमानं + सा समंतादन्वकीर्यंत* ॥

ज ब ल भ—समंततश्च तां देवीमभ्यार्षिचत पावकः ।

ज ब ल भ—सर्वस्रोतांसि पूर्णानि तस्या×श्चासन्नरोत्तम× ।

८. ज भ—सर्वदेवपुरोहितं ।

+ भ—तन्महि० । *ल—०दवकर्यंत । ×ल—तस्या—सन्नै नरोत्तम

१३] अशक्ताऽहं धारयितुं त्वत्तेजो भगवन्निति ॥[2] १४ ॥[3] [१.६

तामुवाच ततो गङ्गां हुतभुग् भगवान् पुनः ।

१४] प्रगृह्य गङ्गे मत्तेजः शैलेन्द्रे[4] त्वं विसर्जय ॥१५॥[5] [१.७

तथेत्युक्त्वा ततो गङ्गा तत्तेजः प्रत्यपद्यत ।

१५] प्रतिपद्य च सद्योऽभूद् विह्वला मूर्च्छिता च सा ॥१६[6]॥ [१.८

असहन्ती ततो गर्भं तं धारयितुमोजसा ।

१६] कैलासशिखरे राम सान्निरेर्तः सुषाव तत् ॥१७॥[8] [N

अजातसारं प्रस्कन्नं सहसा भूरितेजसम् ।

१७] रम्ये शरवणोद्देशे समुत्सृज्य ततो ययौ ॥१८॥[7] [N

१. ब—भगवानिति ।

२. ज—शक्ता धारयितुं नास्मि तव तेजःसमुद्यतं ।

भ— ,, ,, नास्मास्तव ,, ।

३. ल—नास्ति ।

अतः परमधिकः पाठः—

ज—असौ तु दह्यमाना या संप्रव्यथितचेतना ।

ल— ,, ,, दह्यमानाहा ,,

भ— ,, ,, दह्यमानाहं ,, ।

४. ब—शैलेन्द्र ।

५. ज ल भ – अथाब्रवीदिदं तत्र गंगां देवो हुताशनः ।

साधु हैमवते पार्श्वे गर्भमेनं* निवेशय* ।

६. रा—प्रतिपद्यत ।

७. ज ल भ—श्रुत्वा तस्यापि वचनं तं गर्भमतिभास्वरं† ।

तं ससर्ज ‡ महातेजाः + स्रोतोभ्यो हि तदानघ ॥

८. के—सोम्नीरेतः । रा—सोम्ने रेतः ।

* भ—गर्भ [मे] तं विसर्जय । † ज—०तिभासुरं । ‡ भ—विमम्रजं ।

+ ल भ—महातेजः ।

तदिदं[1] निर्गतं तस्यास्[2]तदा जांबूनद[2]प्रभम् ।
१८] का[3]ञ्चनं धरणीं प्राप्तं हिरण्यं चाभवत् तदा[4] ॥१९॥ [१९
ताम्रं कृष्णायसं चापि वक्त्रादेतदजायत ।
१९] मलं चाप्यभवत् तत्र[5] त्रपुसीसकमेव च ॥२०॥
N] तदेतद् धरणीं प्राप्य नानाधातुत्वमागतम् ।[6] [२०
निक्षिप्त[7]मात्रे गर्भे तु तेजसा[8]ऽप्यत्र रञ्जितम्[8] ॥२१॥
२०] सर्वं[9] पर्व[10]तसंबद्धं सौवर्णमभवद्[10]वनम् । [२१
जात[11]रूपमिदं ख्यातं ततः[12] प्रभृति राघव ॥२२॥
२१] सुवर्णं प्रादुरभवद् वह्नितेजोभवं तु च । [२३
कुमारश्चाभवत् तत्र तरुणार्कसमद्युतिः ॥२३॥
२२] वह्नितेजोभवः श्रीमान् गङ्गाकुक्षिपरिच्युतः ।[13] [N
तं कुमारं ततो जातं दृष्ट्वा सेन्द्राः[14] मरुद्गणाः ॥२४॥

---

१. रा—तद्दिन ।
२. ज ल—स्तस० । भ—तस्य तस० ।
३. भ—कापिशं ।
४. ल—तथा । ज—पुनरपरहस्तेन शोधितः ।
५. भ—तस्य ।
६. कै रा—नास्ति ।
७. ल—निक्षिप्तमात्रं ।
८. कै रा—०जसा भूरितेजसि ।
९. ज ल—सर्व० ।
१०. कै रा—०मभवत्तदा । ज—सौवर्णमभवद्धनं ।
ल—सौभद्रमभ० । भ—०र्णमवनं तदा ।
११. ज ल भ—जातरूपमिति ।
१२. रा—तदा ।
१३. ज ल भ—नास्ति ।
१४. ज ल भ—देवा ।

२३] तदा[1] क्षीरप्रदानार्थं कृत्तिकाः सन्न्ययोजयन् । [२४
ताः क्षीरं तस्य देवस्य समयेन ददुस्तदा ॥२५॥[2]
२४] स्यादस्माकमयं पुत्रः ख्यातो नाम्नेति[3] राघवं । [२५
ततस्ता देवता ऊचुः कार्त्तिकेय इति प्रभुः ॥[4]२६॥[5]
२५] पुत्रोऽयं जगति ख्यातो भविष्यति न संशयः ।[6] [२६
देवतानां वचः श्रुत्वा पूर्वं[7] गर्भपरिस्रवे ॥२७॥
२६] कृत्तिकाः स्कन्दयामासुः[8] तमादित्यसमप्रभम् ।[9] [२७
स्कन्द[10] इत्येव तं देवाः[11] प्रोचुरप्रतिमौजसम्[12] ॥२८॥

१. रा—ततः ।
२. ज ल भ—क्षीरसंभवनार्थाया कृत्तिकाः समयोजयन् ।
तत्क्षीरं जातमात्राय कृत्वा समयमुत्तमं ।
ददुःपुत्रार्थमस्माकं सर्वासां प्रकरिष्यति ।
३. रा—नाम्नोभिराघव ।
४. ज ल—कार्तिकेयमिति ।
५. भ—ततस्ता देवताः सर्वाः कार्तिकेयमतिप्रभुं ।
६ भ—सेनापत्येभियोक्ष्यामो विजयायेति चाब्रवीत् ।
ज ल—नास्ति ।
७. कै—०परिप्रवे । ज—सर्वं गर्भं परिस्रवे ।
ल—सर्वं गर्भं परिस्रुवे । भ—तीर्थगर्भपरिस्रवे ।
८. कै रा—छंदयामासु० ।
९. ज ल—सूपयामासुरथ तं दीप्यमानं यथा रविं ।
भ—स्नपयामासु ॥थये दीप्यमान „ „ ।
भ—अतः परमधिकः पाठः—
स्कन्नत्वात्प्रतिजग्राह सुरेसं तु शिवं तदा ।
१०. कै रा—सुस ।
११. कै रा—दृष्ट्वा । ज ल भ—देवा ।
१२. ज ल—ऊचुरप्रति० । भ—ऊचुराभिजम् ।

२७] कार्त्तिकेयं[1] महत्तेजः[2] काकुत्स्थं[3] ज्वलनप्रभम्[4] । [२८
प्रस्नुतानां ततः क्षीरं तासां षण्णां षडाननः ॥[5]२९॥
२८] भूत्वा स बालोऽप्यपिबत् कृत्तिकानां परिस्नुतम् । [२९
पीत्वा तासां[6] च तत् क्षीरं स कुमारो व्यवर्धत ।
२९] अजयत् स्वेन वीर्येण दैत्यसैन्यगणान् बहून् ॥३०॥[7] [३०
सुरसेनागणपतिं ततस्तममरद्युतिम् ।
३०] अभ्यषिंचन् सुरगणाः समेत्याग्निपुरोगमाः ॥३१॥[8] [३१
इति ते कथितो राम गङ्गायाः संभवो मया ।[9]
३१] देवस्य च कुमारस्य संभवः पुण्यकीर्तिः ॥ ३२॥ [३२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[10] कुमारोत्पत्तिर्नाम[11]
चतुस्त्रिंशः[11] सर्गः ॥३४॥[12]

१. ब—कार्तिकेय । ज ल—कार्तिकेयो ।
२. ज ल—महातेजाः । भ—महातेजः ।
३. ज—काकुत्स्थो ।
४. ज ल—ज्वलनोपमः । भ—ज्वलनोपमं ।
५. ज ल भ—प्रादुर्भूतं तदा* क्षीरं कृत्तिकानामनुक्रमं ।
६. ब—थासां ।
७. ज ल—षण्णां षडाननो भूत्वा जग्राह सुरजस्तदा ।
भ— ,, ,, ,, ,, सुरसं तदा ।
८. ज ल भ—नास्ति ।
९. ज ल भ—एष ते विस्तरो राम गंगायाः कीर्तितो मया ।
कुमारः† संभवश्चैव धन्यः पुण्यः‡ सुखावहः ।
१०. कै ब—आदिकाण्डे ।
११. कै—॰नामैकोनचत्वारिंशः ।
ज—एकत्रिंशः । रा ब ल भ—॰नाम ।
१२. ज भ—॥३१॥

* ल भ—ततः ।
† ल भ—कुमारसम्भ॰ ।
‡ ल भ—पुण्यः ।

तां तथां कौशिको रामे निवेद्य मधुरां कथाम् ।
१] पुनरेव कथामेतां कथयामास कौशिकः ॥[3]१॥ [१
अयोध्याधिपतिः श्रीमान् पूर्वमासीन् नराधिपः ।
२] सगरो नाम धर्मात्मा प्रजाकामः स चाप्रजः ॥२॥ [२
विदर्भराजतनया केशिनी नाम नामतः ।
३] ज्येष्ठा सगरपत्न्यासीद् धर्मिष्ठा सत्यवादिनी ॥३॥ [३
अरिष्टनेमिदुहिता रूपेणाप्रतिमा भुवि ।
४] द्वितीया सगरस्यासीत् पत्नी परमधार्मिका ॥४॥ [४
ताभ्यां सह महेष्वासः पत्नीभ्यां तप्तवांस्तपः ।
५] अपत्यकामः काकुत्स्थ भृगुप्रस्रवणे गिरौ ॥५[9]॥ [५

१. ज ल भ—कथां ।

२. ज भ—मधुराक्षरां । ल—मधुराक्षरम् ।

३. ज ब ल भ—पुनरेवापरं वाक्यं काकुत्स्थमिदमब्रवीत् ।

४. ज ल भ—शूरः ।

५. ज ल भ—वैदर्भदुहिता राम ।

६. कै—०सीद्धर्मिष्ठा । ज ल—०रपत्नी सा ध०

७. ज ल—हिमवंतमुपाश्रित्य । भ—हिमवंतमपाश्रित्य ।

८. कै रा—०प्रतरणे ।

९. कै—अतः परमधिकः पाठः
उत्तरपार्श्वे विन्यस्तः—
हिमवद्गिरिमाश्रित्य भृगुप्रस्रवणे गिरौ ।
अथ वर्षशते पूर्णे तपसाराधितो मुनिः ।
सगराय वरं प्रादा ... ... ।

अथ वर्षशते पूर्णे[1] तपसाऽऽराधितो मुनिः[2] ।
६] सगराय वरान्[3] प्रादाद्[4] भृगुः सत्यवतां वरः ॥६॥ [६
अपत्यलाभः सुमहांस्तव राजन् भविष्यति ।
७] कीर्त्तिमप्रतिमां लोके सन्तानोत्थामवाप्स्यसि ॥७॥[5] [७
एका जनयिता पुत्रं[6] पत्नी वंशधरं तव ।
८] षष्टिं पुत्रसहस्राणि द्वितीया जनयिष्यति ॥[7]८॥ [८
मुनिमेवं भाषमाणं सत्यधर्मतपोनिधिम् ।
९] ते पत्न्यौ सगरस्येदं कृत्वाऽञ्जलिमभाषताम् ॥९॥[8] [९
एकं[10] का तनयं ब्रह्मन् का बहून् [illegible]ष्यति ।

१. कै रा—तस्मै वर्षसहस्रांते ।
२. भ—भृगुः ।
३. ज ल भ—वरं ।
४ भ—प्रादान्मुनिः ।
५. ज ल भ—अपत्यलाभः सुमहान् भविता ते नरेश्वर ।
कीर्तिं चाप्रतिमां लोके प्राप्स्यसे पुरुषर्षभ ॥
६. ज ल भ—राजन्पुत्रं वंशकरं तव ।
७. ज—षष्टिपुत्रसहस्राण्यामेका च जनयिष्यति ।
ल—षष्टिं पुत्रसहस्राण्यामन्यापि ,, ।
भ— ,, ,, मेकापि ,, ।
८. रा—कृताञ्जलिरभाषताम् ।
ब—कृताञ्जलिमभाषतां ।
९. ज ल भ—एवं मुनिं भाषमाणं राजपत्न्यौ महेश्वरं† ।
ऊचतुः परमप्रीते कृताञ्जलिपुटे तदा ।
१०. ज—एकैकस्याः सुतो । ल भ—एकःकस्याः सुतो ।

†भ—नरोत्तम ।

१०] भगवन्[1] श्रोतुमिच्छावः सर्गः[2] सोऽस्तु वरो हि नौ॥[3]१०॥[१०
तयोरेतद् वचः श्रुत्वा स मुनिप्रवरस्तदा ।
११] उवाच मधुरं वाक्यं स्वच्छन्देन[4] ददामि वाम् ॥११॥[5] [११
एका वंशधरं पुत्रमेका वंशान्तकान्[6] बहून् ।
१२] यथेष्टं मां वरयतं तथा दास्यामि वाञ्छितम्[7] ॥१२॥[8] [१२
मुनेरेतद्[9] वचः श्रुत्वा केशिनी रघुनन्दन ।
१३] पुत्रं वंशंधरं[10] राम जग्राहैकमनिन्दिता ॥१३॥ [१३
[11]षष्टिं पुत्रसहस्राणि[12] सुपर्णभगिनी तथा[13] ।
१४] जग्राह कीर्त्तियुक्तानि सुमतिर्वरमीप्सितम् ॥[14]१४॥ [१४

१. कै—भगवं श्रो० । ब—०वंश्रोतुमिच्छावः ।

२. ब—सत्यः ।

३. ज ल भ—इत्येतच्छ्रोतुमिच्छावः सत्यं चास्तु वचस्तव ।

४. ब—स्वाच्छन्द्येन ।

५. ज ल भ—तयोस्तु वचनं श्रुत्वा भृगुः परमधार्मिकः ।
उवाच मधुरां वाणीं स्वच्छंदोऽत्र विधीयतां ॥

६. ब—वंशकराम् ।

७. कै—वाञ्छिताम् ।

८. ज ल भ—एको वंशकरो वास्तु* बहवो वा† महाबलाः ।
कीर्तिमंतो महोत्साहा एवं× का वरमिच्छति ।

९. ज ल भ—मुनेस्तु वचनं ।

१०. ज ल भ—वंशकरं ।

११. ज—राजा ह नृपसंसदि । ल भ—०ह नृपसंसदि ।

१२. ज ल भ—पुत्रान्षष्टिसहस्राणि ।

१३. ज ल भ—तत: ।

१४. ज ल भ—कीर्तियुक्तान्महोत्साहान् जग्राह सुमतिस्तदा ।

*ज ल—वोस्तु । †ज—वै । ल—वो । ×भ—एव ।

प्रदक्षिणं ततः कृत्वा भृगुं धर्मभृतां वरम् ।[1]
१५] जगाम स्वपुरं राजा सभार्यो रघुनन्दन ॥१५॥ [१५
अथ कालेन[2] महता पुत्रं ज्येष्ठा[3] व्यजायत ।
१६] असमञ्जा[4] इति ख्यातं काकुत्स्थ सगरात्मजम् ॥१६॥ [१६
सुमतिश्च[5] रघुश्रेष्ठ[6] गर्भं[7] तुम्बं व्यजायत ।
१७] षष्टिः[8] पुत्रसहस्राणि[9] भिन्ने तुम्बे विनिर्ययुः ॥१७॥ [१७
घृतपूर्णेषु[10] कुम्भेषु धात्र्यस्तानभ्यवर्धयन[11] ।
१८] ते[12] च कालेन महता यौवनं प्रतिपेदिरे ॥१८॥ [१८
समानवयसः सर्वे तुल्यवीर्यपराक्रमाः ।[13]
१९] [14]षष्टिः पुत्रसहस्राणि सगरस्य तदाऽभवन्[15] ॥१९॥ [१९
स च ज्येष्ठोऽभवत् तेषामसमञ्जाः[16] परन्तपः ।[17] [२०पू

१. ज ल भ—प्रदक्षिणमृषिं कृत्वा शिरसा चाभिवाद्य च ।
२. ज ल भ—काले गते तस्मिन् ।
३. ज ल—ज्येष्टं । भ—ज्येष्ठं ।
४. के—असमंजा इति । ज ल भ—०मंजमिति ।
५. ज ल भ—सुमतिस्तु ।
६. ज ल भ—नरव्याघ्र ।
७. ज—गर्भ: ।
८. रा ज ल—षष्टि० । भ—षष्टिं ।
९. ज ल भ—तुम्बे भिन्ने ।
१०. ल भ—घृतकुंभेषु पूर्णेषु ।
११. रा—धात्र्यास्ता० ।
१२. ज ल भ—कालेन महता ते तु ।
१३. ज ल भ—अथ दीर्घस्य कालस्य रूपयौवनशालिनः ।
१४. के रा—षष्टि० । ज—पुत्र: षष्टिसह० । ल—पुत्राण्यष्टिसह० ।
भ—पुत्रा: षष्टिसहस्रा० ।
१५. भ—नास्ति । अतः परं २३श्लोकान्तो नास्ति पाठः ।
१६. रा—०समंज: । ब—०समंजा: ।
१७. ज ल—स च ज्येष्ठो नरव्याघ्र सगरस्यात्मसंभवः ।

२०] पौराणामहिते युक्तः पित्रा निर्वासितः[1] पुरात् ॥२०॥ [२१उ
तस्य पुत्रोंऽशुमान् नाम बभूव ह्यसमञ्जसः ।[2]
२१] संमतः सर्वलोकस्य सर्वलोकप्रियंवदः[3] ॥२१॥ [२२
अर्थ[4] कालेन महता मतिरेवम[5]जायत ।
२२] सगरस्याश्व[6]मेधेन यजेयमिति राघव ॥२२॥ [२३
स कृत्वा निश्चितां[7] बुद्धिं[8] सोपाध्यायगणो[9] नृपः ।
२३] सगरो यष्टुमारेभे कृत्वा द्रव्यपरिग्रहम् ॥[10]२३॥ [२४

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] सगरपुत्रजन्म
नाम[12] पञ्चत्रिंशः[13] सर्गः ॥३५॥[14]

१. रा—निवसितः । ज—'विवासित' इति मौलिकं पाठं संशोध्य 'निर्वासित' इति कृतम् । ल—निवासितः ।

२. ज ब ल—तस्य पुत्रोंऽशुमानासीदसमंजस्य वीर्यवान् ।

३. ज ल—सर्वस्यैव प्रियं० ।

४. ज ब ल—तस्य ।

५. ज ल—मतिरासीन्महात्मनः ।

६. ज ल—०रस्य नरश्रेष्ठ ।

७. ज ल—निश्चयं ।

८. ज ल—राजा ।

९. ज ल—०गणास्तदा ।

१०. ज ल—यज्ञकर्मणि वेदज्ञो यष्टुं समुपचक्रमे ।
तत्र तस्यात्मजा राम† प्रविष्टाः कापिलं‡ वपुः ।

११. ब—आदिकाण्डे । कै—नास्ति ।

१२. कै रा—नास्ति ।

१३. कै रा—चत्वारिंशत्तमः । ब—नास्ति ।

१४. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

---

†ल—नाम । ‡ज—कपिलं ।

विश्वामित्रवचः श्रुत्वा कथाऽन्ते रघुनन्दनः ।
१] उवाच परमप्रीतो मुनिं दीप्तमिवानलम् ॥१॥[1] [१
श्रोतुमिच्छामि भगवन् विस्तरेण कथामिमाम् ।
२] पूर्वको मे यथा यज्ञं सगरः समवाप्तवान् ॥[2] २॥ [२
विश्वामित्रस्ततो राममुवाच[3] प्रहसन्निव ।
३] श्रूयतां विस्तरो राम सगरस्य कथां प्रति ॥३॥ [३
शङ्करश्वशुरः श्रीमान् हिमवान् [illegible]लोत्तमः ।
४] विन्ध्यश्च स्पर्धयाऽन्योन्यं[5] यत्र देशे निरक्षताम् ॥[4] ४॥ [४
तस्मिन् देशे स यज्ञोऽभूत् सगरस्य महात्मनः ।[6]
५] स हि देशो महापुण्यैः प्रशस्तो यज्ञकर्मणि ॥५॥ [५
तस्याश्वचर्यां काकुत्स्थ दृढधन्वा महारथः ।

---

१. भ—नास्ति । अतः परं १४श्लोकस्य पूर्वार्द्धपर्यन्तः
पाठो न दृश्यते ।
२. रा—पूर्वको मे यथा यज्ञमश्वमेधमवाप्तवान् ।
ज ल—पूर्वः को मे कथं ब्रह्मन्यज्ञान्तं समवाप्यथ * ।
३. ज ल—विश्वामित्रस्तु काकुत्स्थमुवाच ।
४. ज—०रोराम । ब ल—०रोमाम
५. ज—विंध्यश्च पर्वतश्रेष्ठो निरीक्ष्यैते परस्परं ।
६. ज ल—तयोर्मध्ये प्रवृत्तोभूद्यज्ञो वै रघुनंदन ।
७. ज ल—नरव्याघ्र ।
८. के रा—ख्यातः पुण्यजनाश्रितः ।
९. के रा—तस्य चानन्तरो राम ।

---

* ल—समवाप्य ह ।

६] अंशुमानकरोद्वीरः सगरस्य तदाऽऽज्ञया ॥६॥ [६
यजतस्तस्य तं यज्ञमुत्थार्य धरणीतलात् ।
७] तमश्वं यज्ञियं नागो जहारानन्तरूपधृत् ॥ ७॥[3] [७
हृतेऽश्वे यज्ञिये तस्मिन् सर्वे ते रघुनन्दन ।
८] याजकाः समुपागम्य यजमानं तदाऽब्रुवन् ॥८॥[4] [८
केनापि नागरूपेण हृतस्तेऽश्वः स यज्ञियः ।
९] हत्वा तमश्वहर्तारं तमेवाश्वं त्वमानय ॥९॥[7] [९
यज्ञच्छिद्रं महद्ध्येतत् सर्वेषामशिवाय नः ।
१०] तथा तत् क्रियतां राजन् यथाऽच्छिद्रः क्रतुर्भवेत्॥१०॥[8] [१०
उपाध्यायवचः श्रुत्वा तस्मिन् सदसि पार्थिवः ।
११] षष्टिं पुत्रसहस्राणि समाहूयेदमब्रवीत् ॥११॥ [११
न गतिं राक्षसानां हि पश्यामीह महाक्रतौ ।

१. के रा—०नभवद्वीरः । ज ल—०नकरोत्तात ।
२. रा—यज्ञं मुक्त्वाथ ।
३. ज ल—तस्य पर्वणि तं यज्ञं यजमानस्य राघव: ।
राक्षसीं तनुमास्थाय केनाप्यश्वस्तदा हृतः ।
४. रा—तथाब्रुवन् ।
५. ज ल—ह्रियमाणे तु काकुत्स्थ तस्मिन्काले महात्मनः ।
उपाध्यायगणः सर्वो यजमानमथाब्रवीत्* ।
६. रा ब—०श्वहंतारं ।
७. ज ल—अयं पर्वणि वेगेन याज्ञिकोश्वोपनीयते ।
हर्तारमस्य राजेन्द्र जहि माश्वः प्रयास्यतु ।
८. ज ल—नास्ति ।
९. ज ल—वाक्यमेतदुवाच ह ।

* ल—यजमानस्य राघव ।

१२] नागानां चापि चान्येषां रक्षिते हि महर्षिभिः ॥१२॥[1] [१,२
केनापि तु स देवेन हृतोऽश्वो नागरूपिणा ।
१३] अमर्षतोच्छिद्रमेतद् दृष्ट्वा दीक्षामुपागतम् ॥१३॥[2] [N
योऽसौ रसातलगतो यदि वान्तर्जले स्थितः । [N
१४] तं[3] हत्वाऽऽनयताश्वं मे[3] पुत्रका भद्रमस्तु वः ॥१४॥
समुद्रमालिनीं[4] कृत्स्नां पृथिवीमनुमार्गथ[5] । [१,३
१५] प्रोत्खनन्तः प्रयत्नेन यावत्तुरगदर्शनम् ॥[6]१५॥ [N
एकैकं योजनं भूमिं निर्भिन्दन्तो[7]ऽनुगच्छत ।[8]
१६] अस्माकमश्वहर्तारं मार्गमार्ग[9] ममाज्ञया ॥[10]१६॥ [१४,१५
दीक्षितः पुत्रसहितः[11] सोपाध्यायगणस्त्वहम्[12] ।
१७] इह स्थास्यामि भद्रं वो यावत् तुरगदर्शनम्[13] ॥१७॥ [१६

१. ज ल—न गतिर्दृश्यते तावद्गच्छत पुरुषर्षभाः ।
मंत्रविद्भिर्महाभागैरधिष्ठितमिदं सदः ॥
२. ज ल—नास्ति ।
३. ज ल भ—तद्गच्छत समग्रकाः ।
४. ज—०नीमिमां । ल—०नीमेनां । भ—०नीमेतां ।
५. कै—०नुगच्छत । रा—०नुगच्छतु । ज—०नुमार्गय ।
६. ज ल भ—एकैकं योजनं पुत्रा विस्तारमनुगच्छत ।
७. कै रा—निर्भिंदतोनु० ।
८. ज ल भ—यावत्तुरगसंदर्शस्तावत्खनतमेदिनी ।
पूर्वोत्तरश्लोकार्द्धविपर्य्यासो दृश्यते ।
९. कै—०मनुज्ञया ।
१०. ज ल भ—नास्ति ।
११. भ—यैश्च सहितः ।
१२. ल भ—०गणो ह्यहं ।
१३. रा—०दर्शनात् ।

असमाप्तक्रतुस्तावद्‌ भविष्यामीह पुत्रकाः ।
१८] युष्माभिर्यावदश्वो मे न मत्याह्रियते पुनः ॥१८॥[1] [N
इत्युक्ता[2] हृष्टमनसः पित्राऽर्थे[3] सगरेण ते ।[4]
१९] बिभिदुर्वसुधां[5] राम पितुर्वचनकारिणः[6] ॥१९॥ [१७
योजनायामविस्तारमेकैको[7] धरणीतलम् ।
२०] बिभेद[8] पुरुषव्याघ्रं[9] वज्रसारैर्भुजैः[10] क्रमात् ॥२०॥ [१८
कुद्दालैः परिघैः शूलैर्मुसलैः शक्तिभिस्तथा ।
२१] भिद्यमाना वसुमती तैरार्तैव[11] ननाद सा ॥२१॥[12] [१९
नागानां वध्यमानानां[13] सर्पाणां च महौजसाम् ।[14]

---

१. ज ल भ——नास्ति ।
२. रा——इत्युक्त्वा ।
३. कै——पुत्राथ ।
४. ज ल भ—ते सर्वे हृष्टमनसो राजपुत्रा महाबलाः ।
५. ज——चक्नुर्महीतलं । ल—चखुः महीतलं ।
भ—चेरुर्महीतलं ।
६. ज ल—०न मंत्रिताः । भ—०यंत्रिताः ।
७. ज ल——तेषां योजनविस्तीर्णमेकको ।
भ—तेषां योजनविस्तीर्णे० ।
८. कै रा—बिभिदुः ।
९. कै रा—पुरुषव्याघ्रा ।
१०. ज ल भ - वज्रस्पर्शसमैर्भुजैः ।
११. रा तैरांतेव ।
१२. ज ल भ——शूलैरशनिकल्पैश्च हलैश्चापि सुदारुणैः ।
भिद्यमाना‡ वसुमती विदध्रे× रघुनंदन ।
१३. रा—वध्य० ।
१४. ज ल भ—नागानां हन्यमानानामसुराणां च राघव ।

---

‡ल——भिद्यमाना । ×भ——विदध्रे ।

२२] रक्षसामसुराणां च बभूवार्तस्वरो महान् ॥२२॥ [२०
षष्टिं हि योजनानां ते सहस्राणि महौजसः ।[3]
२३] धरण्यां बिभिदुः क्रुद्धाः सर्वे यावद् रसातलम् ॥२३॥[२१
एवं पर्वतसंबाधं जम्बुद्वीपं नृपात्मज ।
२४] खनन्तस्ते नृपसुताः सर्वतः परिबभ्रमुः ॥२४॥ [२२
ततो देवाः सगन्धर्वा सहोरगगणास्तथा ।
२५] संभ्रान्तमनसः सर्वे पितामहमुपागमन् ॥२५॥ [२३
तेऽभिवन्द्य महात्मानं विषण्णवदनास्तदा ।
२६] अब्रुवन् परमत्रस्ताः पितामहमिदं वचः ॥[12]२६॥ [२४
N] सपर्वतवना देव सरिद्द्वीपसमाकुला ।[14] [N

१. ज ब ल भ—राक्षसानां च घोराणां ।
२. के—॰वार्तस्व॰ । रा—॰भूवांतं वरो॰ ।
ज—नांतः समुपपद्यते । ल भ—नांतः समुपलभ्यते ।
३. ज—योजनानां सहस्राणि चाशीतिं रघुनंदन ।
ब ल भ— ,, ,, अशीतिं ,,
४. ज ब ल भ—विभिदुर्धरणीं वीराः ।
५. भ—जंबू॰ ।
६. ज—प्रतिचक्रमुः । ल भ—परिचक्रमुः ।
७. ज ल भ—तदा ।
८. ज ल भ—सासुराः सहपन्नगाः ।
९. ज ब ल—॰मुपाद्रवन् । भ—॰मुपाद्रुवन् ।
१०. ज ल भ—ते प्रसाद्य ।
११. के रा—संभ्रांतमनसः सुराः ।
१२. ज ल भ—ऊचुः परमसंभ्रांताः ससंभ्रममिदं वचः ।
१३. ज ल भ—ससरिद्द्वीपसंकुला ।
१४. के रा—नास्ति ।

भगवन् पृथिवी सर्वा खन्यते सगरात्मजैः ॥२७॥

२७] खनद्भिश्चैव तैर्ब्रह्मन् हन्यन्ते मुनयस्तथा । [२५

उ२८] इति ते सर्वभूतानि निघ्नन्ति सगरात्मजाः ॥२८॥[1] [२६उ

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[2] पृथिवीदारणं

नाम[3] षट्त्रिंशः सर्गः[3] ॥३६॥

---

१. ज ल भ—महान्तश्च महात्मानो बध्यन्ते जलचारिणः ।

२. कै—आदिकाण्डे

३. कै—नामैकचत्वारिंशत्तमोध्यायः ।

रा ब—नाम सर्ग । ज ल भ—पुस्तकेषु सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

इति तेषां वचः[1] श्रुत्वा देवानां[2] प्रपितामहः ।
१] प्रत्युवाच भयोद्विग्नान्[3] सर्वान् देवानिदं वचः ॥[4]१॥ [१
बिभर्ति यो जगत्सर्वं यस्योत्पत्तिं न विद्महे ।
२] तेनाश्वो वासुदेवेन कपिलेनापवाहितः ॥२॥[5] [N
पृथिव्याश्चैव भेदोऽयं दृष्टस्तेनेति मे मतिः ।[6]
३] सगरस्य च[7] पुत्राणां विनाशोऽमिततेजसाम्[8] ॥३॥ [४
पितामहवचः श्रुत्वा ततस्ते त्रिदिवालयाः[9] ।
४] देवर्षिपितृगन्धर्वाः प्रतिजग्मुर्यथागतम् ॥[10]४॥ [५
सगरस्य च[11] पुत्राणां प्रादुरासीन् महौजसाम्[12] ।
५] खनतां पृथिवीं शब्दो वज्राशनिसमस्वनः ॥[13]५॥ [६

१. ज ल भ—देवानां वचनं ।
२. ज ल भ—भगवान् ।
३. कै—भयोद्विग्नाः ।
४. ज ल भ—तान्प्रत्युवाच संत्रस्तान्सर्वदेवानिदं वचः ।
५. ज ल भ—यस्येयं वसुधा वत्सा वासुदेवस्य दीयते * ।
कापिलं ‡ रूपमास्थाय हयस्तेनापवाहितः ।
६. ज ल भ—पृथिव्याश्चापि निर्भेदो दृष्ट एव पुरातनः ।
७. ज ल भ—तु ।
८. ज ल भ—दीर्घजीविनां ।
९. ज ल भ—त्रयस्त्रिंशदरिंदम ।
१०. ज ल भ—देवाः परमसंहृष्टाः सर्वे जग्मुर्यथागतं ।
११. ज ल भ—तु ।
१२. ज ल भ—महास्वनः ।
१३. ज ल भ—पृथिव्यां भिद्यमानायां निर्घातसमनिस्वनः ।

* ज—दीयते । ‡ भ—कपिलं ।

ते[1] भित्त्वा पृथिवीं सर्वां कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ।
६] उपेत्य पितरं सर्वे सगरं वाक्यमब्रुवन् ॥[3]६॥ [७
परिक्रान्ता मही सर्वा महद्भिर्शसनं कृतम्[4] ।
७] यादोगणमहाग्राहदैत्यदानवरक्षसाम् ॥[5]७॥ [८
न[6] चापश्याम तं राजन् यज्ञविघ्नकरं तव ।
८] किं कुर्महे[7] पुनस्तात विनिश्चित्य प्रशाधि नः ॥८॥ [९
तेषामेतद्वचः श्रुत्वा पुत्राणां सगरस्तदा ।[8]
९] निश्चित्योवाच तान् सर्वान् पुनः पुत्रानिदं वचः ॥९॥ [१०
भूयो मृगयताश्वार्थं विभिद्येदं रसातलम् ।[9]
१०] कृतार्थाः सन्निवर्तध्वं गृहीत्वाऽश्वापवाहकम् ॥[10]१०॥ [११

---

१. ज ल भ—ततो भित्त्वा महीं कृत्स्नां ।

२. रा—पुत्रास्ते ।

३. ज ल भ—पार्थिवं सगरं सर्वे पितरं वाक्यमब्रुवन् ।

४. के—०द्भिशमनं० । ज ब ल—महान् सत्त्ववधः कृतः ।
भ—महासत्त्ववधः कृतः ।

५. ज ल भ—गंधर्वयक्षवृक्षाणां पिशाचोरगरक्षसां* ।

६. ज ल भ—पश्यामो न च ।

७. ज ल भ—†तत्करिष्यामहे भूयस्तं‡ बुद्ध्या साधु चिन्त्यतां ।

८. ज ल भ—पुत्राणां वचनं श्रुत्वा तेषां तु रघुनन्दन ।
समन्युरब्रवीद्वाक्यं सगरः पुरुषर्षभः ॥

९. ज ल भ—भूयः खनत भद्रं वो निर्भिद्य वसुधातलं ।

१०. के रा—अश्वहर्तारमासाद्य कृतार्थास्संन्यवर्तत ।
रा—पुस्तकेऽतः परं—॥ १००० ॥

*ज—राक्षसाम् । भ—†यत्० । ‡ ल भ—०तत् ।

पितुरे[1]तद्वचः श्रुत्वा सगरस्यात्मसंभवाः ।।[2]

११] ष[3]ष्टिः पुत्रसहस्राणि रसातलमुपाग[4]मन् ।।[5]११।। [१२

पुनः[6] खनन्तस्ते तत्र ददृशुः पर्वतोपमम् ।

१२] आशा[7]गजं विरू[8]पाक्षं धार[9]यन्तमिमां महीम् ।।१२।। [१३

शिरसा नरशार्दूल सशैलवनकाननाम् ।[10]

१३] नानाजनपदाकीर्णां नानापत्तनशोभिताम् ।।[11]१३।। [१४

यदा च पर्वणि शिरः? खेदाच्चालयते शिरः ।[12]

१. के रा—पुनरेत० ।

२. ज ल भ—पितुर्वचनमाज्ञाय सगरस्य महात्मनः ।

३. भ—षष्टिं ।

४. ज ल भ—०ग्रमथाद्रवन् ।

५. के रा—सागराः षष्टिसाहस्राः पितामहमुपागमन् ।

६. ज ल भ—खन्यमाने तदा तस्मिन् ।

७. रा—अश्वागजं ।

८. ज ब—विरूपाक्षं ।

९. ज ल भ—धारयंतं महीमिमां ।

१०. ज ब ल भ—सपर्वतवनां कृत्स्नां पृथिवीं स नरोत्तम† ।

११. ज—सदा बिभर्ति काकुत्स्थ विरूपाख्यो महागजः ।

भ— „ „ „ दिक्पालं कुंजरोत्तमं ।

खनमाना दिशो राम जग्मुर्भित्त्वा वसुंधरां ।

तद्रूपाख्यो महागजः ।

ब ल—नास्ति ।

१२. ज भ—यदा पर्वणि काकुत्स्थ विश्रामार्थं स वारणः ।

ब—सदा बिभर्ति वै जातु „ „ „ ।

ल— „ „ काकुत्स्थ „ „ „ ।

---

† ज—सगरोत्तम ।

१४] सपर्वतवना राम तदेयं चलति क्षमा ।।[1] १४।। [१५
तं[2] ते[2] प्रदक्षिणं कृत्वा दिक्पालं[3] कुञ्जरोत्तमम् ।
१५] मन्यमाना दिशां पालं दक्षिणां विभिदुर्दिशम् ।।१५।।[4] [१६
दक्षिणस्यामपि पुनर्ददृशुस्ते गजोत्तमम् ।[5] [१७उ
१६] महापद्मं महात्मानं तिष्ठन्तं मन्दरोपमम् ।।१६।।
तं च दृष्ट्वा महाकायं विस्मयं परमं ययुः ।[6] [१८
१७] कृत्वा तमपि नागेन्द्रं प्रदक्षिणमरिन्दम ।।[7] १७।।
सगरस्यात्मजा[8] राम पश्चिमां विभिदुर्दिशम् । [१९
१८] पश्चिमायामपि दिशि[9] कैलासशिखरोपमम् ।।१८।।
आशागजं सौमनसं[10] ददृशुस्ते महाबलम् । [२०

१. ज ब ल भ—ईषच्चालयते स्कंधं कंपते मेदिनी तदा ।

२. ज ल—ते तं ।

३. कै रा—दिशो गजमरिंदम । भ—दिक्पालं तु गजोत्तमं ।

४. ज भ—खनमाना *दिशं पूर्वां जग्मुर्भित्त्वा वसुंधरा [म] ।
ततः पूर्वां दिशं भित्त्वा दक्षिणां विभिदुः पुनः ।।
ल—नास्ति ।

५. भ—दक्षिणस्यां पुनश्चैव ददृशुस्ते गजोत्तमं ।
ल—नास्ति ।

६. ज ल भ—शिरसा धारयंतं गां ते† दृष्ट्वा विस्मयं गताः ।

७. ज ल भ—ततः प्रदक्षिणं कृत्वा सगरस्य महात्मनः ।

८. रा—सागर० । ज ल—षष्टिःपुत्रसहस्राणि ।
भ—षष्टिं पुत्रसहस्राणि ।

९. ज—तदा महांतमचलोत्तमं । ल भ—तदा महांतमचलोपमम् ।

१०. ज ल भ—दिक्कुंजरं सुमनसं ।

* भ—दिशो राम ज० । † भ—तं ।

१९] तं[1] ते[1] प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ट्वा चानामयं तथा ॥१९॥
प्रोत्खनन्तो ययुर्वीरा दिशं हैमवतीं ततः । [२१
२०] उत्तरस्यामपि तथा ददृशुर्हिमपाण्डुरम् ॥२०॥
भद्रं भद्रेण वपुषा धारयन्तमिमां महीम् । [२२
२१] समालभ्य च ते सर्वे कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् ॥२१॥
संहिताः पुनरेवेदं बिभिदुर्धरणीतलम् । [२३
२२] प्रागुत्तरां दिशं गत्वा ततस्ते सगरात्मजाः ॥[9]२२॥
अमर्षवशमापन्नाश्चख्नुरेव धरामिमाम् । [२४
२३] तत्राथ प्रोत्खनन्तस्ते क्षोणीमपि समन्ततः ॥[10]२३॥ [N
ददृशुः कपिलं नाम देवं नारायणं प्रभुम् ।[11] [२५उ
२४] हयं च यज्ञियं तस्य चरन्तमविदूरतः ॥२४॥ [N

१. र ज ल—ते तं ।
२. ज ल—चैवमनामयं । भ—चैनमनामयं । के रा—०मयं ततः ।
३. ज ल भ—खनंतः समतिक्रान्तां दिशं हैववर्ती तदा ।
४. ज ल भ—०स्यां रघुश्रेष्ठ ।
५. ज ल भ—धारयंतं धरामिमां ।
६. के—तमप्यालभ्य ते ।
रा—तमप्यालभ ते ?
७. ज ल भ—चैनं प्रदक्षि० ।
८. ज ल भ—राजपुत्रास्ततो भूयो ।
९. ज भ ल—ततः प्रागुत्तरं गत्वा पाश्रिया† पृथिवीमिमां ।
१०. ज ल भ—अभ्यघ्नन्‡ रुषिताः सर्वे काकुत्स्थ सगरात्मजाः ।
११. ज ल भ—ददृशुः कपिलं तत्र वसुदेवं महाबलं* ।
१२. ज ल भ—नास्ति ।

† ल—पाश्रियां । ‡ ल—अभ्यघ्नंत । *भ—महाबल

ते[1] तं[1] यज्ञहयं[2] मत्वा[3] क्रोधपर्याकुलेक्षणाः ।

२५] अभ्यधावन्त ते क्रुद्धास्तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवन् ॥[4] २८॥ [२७

संमूढा न विदुस्तं वै देवमक्षयमव्ययम् ।[5]

ततस्तेनाप्रमेयेण तेऽपध्याता महात्मना ।[6]

२६] भस्मराशीकृताः सर्वे समेताः सगरात्मजाः ॥२६॥ [१०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे कपिलदर्शनं
नाम सप्तत्रिंश.[8] सर्गः ॥ १७ ॥

१. भ तं ते ।
२. ज ल भ—यज्ञहरं ।
३. ज ल भ—ज्ञात्वा ।
४. ज ल भ— अभ्यधावन्नरश्रेष्ठ तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रुवन् ।
५. कै रा—नास्ति ।
६. ज ल भ—ततस्तेनाप्रमेयेण तेन* शप्ता महात्मना ।
७. ज ल भ--काकुत्स्थ ।
८. कै—द्विचत्वारिंशत्तमः । रा ब—नास्ति ।
ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

---

*ज ल—॰येयाप्रेते ।

पुत्रांश्चिरगतान् मत्वा सगरो रघुनन्दन ।
१] नप्तारमब्रवीद् वाक्यं दीप्यमानं स्वतेजसा ॥१॥ [१
पितॄन् गच्छ त्वमन्वेष्टुं येन चाश्वोऽपवाहितः । [२उ
२] अन्तर्भूमिनिवासीनि सन्ति सत्त्वान्यनेकशः ॥२॥
तेषां प्रतिविधानार्थं गृहीत्वा व्रज कार्मुकम् । [३
३] तानासाद्य पितॄंस्तात यज्ञविघ्नकरं च मे ॥३॥
कृतार्थः सन्निवर्तेथा यज्ञादुत्तारयस्व माम् । [४
४] शूरोऽसि कृतविद्यश्च पूर्वैस्तुल्यपराक्रमः ॥४॥ [२पू
N] शीघ्रमायाहि भद्रं ते यथा धर्मो न लुप्यते । [N
एवमुक्तोऽशुमांस्तेन सगरेण महात्मना ॥५॥

---

१. ज ल भ—ज्ञात्वा ।
२. रा—रघुनन्दनः ।
३. ल—सुतेजसम् ।
४. ज ल भ—पितॄणां गतिमन्विच्छ ।
५. ज ल भ—अंतर्भौमानि सत्त्वानि वीर्यवंति महांति च ।
६. ज ल भ—तेषां त्वं प्रतिघातार्थमसिं गृह्णीष्व कार्मुकं ।
ब—तेषां प्रतिविघातार्थं ,, ,, ,, ।
७. ज ल भ—अभिवन्द्याभिवाद्यत्वं संहृत्य च रिपूनपि ।
८. रा—कृतार्थो ।
९. ज ल भ—सिद्धार्थः सन्निवर्तस्व मम यज्ञस्य पारगः ।
१०. ज ल भ—नास्ति ।
११. रा—लभ्यते ।
१२. ज ल भ—एवमुक्तो राम ।

५] धनुरादाय खड्गं च ययौ त्वरितविक्रमः ।[1] [५
तमेव पितृभिर्यातं पन्थानमनुसंचरन्[2] ।।[3]६।।
६] ययौ वेगेन महता पितृंस्तान् द्रष्टुमञ्जसा । [६
वीक्षमाणो विशसनं कृतं तैर्यक्षरक्षसाम् ।।७[3]।।
७] सोऽवैक्षत विरूपाक्षमाशागजमवस्थितम् ।[3] [७
स तं[4] प्रदक्षिणं कृत्वा पृष्ट्वा चानामयं ततः[5] ।।८।।
८] पितॄन् स्वान् परिपप्रच्छ हयहर्तारमेव[7] च । [८
आशागजोऽपि तच्छ्रुत्वा पृच्छतोंऽशुमतो वचः ।।[8]९।।
९] तमुवाच कृतार्थस्त्वमेष्यसीत्यभितः स्थितः ।[9] [९
इति[10] तस्य वचः श्रुत्वा सर्वानेव हि दिग्गजान् ।।१०।।
१०] यथाक्रमं यथान्यायं[11] प्रष्टुं समुपचक्रमे । [१०
एतदेव च तैरुक्तो गजैराशुपराक्रमैः ।।[12]११।।

१. कै—चरिताविक्रमः । रा—चरतिविक्रमः ।
२. रा—०नमनुसंस्मरन् ।
३. ज ल भ—दैत्यदानवरक्षोभिः पिशाचपतगोरगैः ।
स्तूयमानो महातेजा दिग्गजं स ददर्श ह ।।
४. कै—तां ।
५. ज ल—चैवमनामयम् । ब—चैनामनामयं ।
भ—चैनमनामयं ।
६. ज ल भ—पितृंस्तान् ।
७. ज ल भ—वाजिहर्तारमेव ।
८. ज ल भ—दिग्वारणस्तु तच्छ्रुत्वा सौम्यमंशुमतो वचः ।
९. ज ल भ—तमुवाच कृतार्थस्त्वं हयं त्वं† प्राप्स्यसीति च ।
१०. ज ल भ—तस्य तद्वचनं ।
११. कै ब ल—यथान्याय्यं ।
१२. ज भ ल—दिक्पालैः सद्भुतैः सर्वैर्वाक्यतो वाक्यकोविदैः ।

† भ—तं । ‡ज ल—संततैः ।

११] पूजितः सहयश्चैव गन्ताऽसीत्यंशुमानपि ।[1] [११
तेषां स वचनं श्रुत्वा जगाम लघुविक्रमः ॥१२॥[2] [3]
१२] भस्मराशीकृता यत्र पितरस्तस्य सागराः ।[4] [१२
स दुःखवशमापन्नः सुतोऽथ ह्यसमञ्जसः ॥[5] [6] १३॥
१३] चुक्रोशार्तस्वरं दृष्ट्वा भस्मराशीकृतान् पितॄन् ।[7] [१३
पु१४] अपश्यत् तुरगं तं तु[8] चरन्तमविदूरतः ॥१४॥[9] [10] [१३
स तेषां राजपुत्राणां कर्तुकामो जलक्रियाम् ।[11]
१५] सलिलार्थी महातेजा नापश्यत् सलिलं क्वचित् ॥[12] १५॥[१५

---

१. ज ल—पूजितः सहि जित्वैव गंतासीत्यभिभाषितः ।
भ—पूजितः स समस्तैस्तु गंतासीत्यवभाषितः ।
२. ज ल भ—सु ।
३. रा—जगामाख० ।
४. ज—सागरः ।
५. ज—अतः परमधिकः पाठः—
सदुःखवशमापन्नाः पितरस्तस्य सागराः ।
६. ज ल भ—स दुःखवशमापन्नस्त्वसमंजसुतस्तदा ।
७. ज ल भ—चुकोप* परमायस्तो वधे तेषां सुदुःखितः ।
८. ज ल भ—यज्ञियं च हयं तत्र ।
९. ज—चरित्तमवि० ? ।
१०. अतः परमधिकः पाठः—
के—यथा पर्वणि नागेन कृतं वेलावनेस्ति······ ।
रा—तदा ,, ,, ,, वेलां वने स्थितम् ।
ज ल भ—ददर्श पुरुषव्याघ्रो दुःखशोकसमन्वितः ।
११. के ज ल भ—०कामोंजलिक्रियां ।
१२. ज ल भ—सलिलार्थं महातेजास्तदापश्यजलाशयं ।

---

* ल भ—चुक्रोश ।

पातयंश्चाभितो दृष्टिं ततस्तत्र ददर्श ह।
१६] पितॄणां मातुलं राम सुपर्णं पतगोत्तमम् ॥१६॥ [१६
स चैनमब्रवीद्द् वाक्यं वैनतेयो महाबलः।
१७] मा शुचः पुरुषव्याघ्र वधोऽयं लोकसंमतः ॥[4]१७॥ [१७
कपिलेनाप्रमेयेण दग्धा ह्येते महाबलाः।[4]
१८] सलिलं नार्हसे वीर दातुमेषां त्वमन्यतः ॥[6]१८॥ [१८पू
गङ्गा हिमवतो ज्येष्ठा दुहिता सरितां वरा। [१९पू
१९] भस्मराशीकृतानेतान् पावयेल्लोकपावनी ॥१९॥
यावत् क्लिन्नमिदं भस्म गङ्गया लोककान्तया।
२०] यदैषां भविता तात स्वर्गमेष्यन्ति वै तदा ॥[10]२०॥ [२०
गङ्गामानय भद्रं ते नाकलोकान्महीतलम्।

१. के ज ल भ—विचार्य निपुणं दृष्ट्वा।

२. भ—ततस्तत्रददर्श।

३. ज ल भ—सुपर्णमनिलोपमम्।

४. ज ल भ—नास्ति।

५. ब—०मेभ्यस्त्वमन्यतः।

६. ज ल भ—मर्होसि सलिलं वीर दातुमेभ्यो‡ नरोत्तम।

७. ज ल भ—पुरुषर्षभ।

८. ज—पावयेल्लोकभावन। ल—प्लावयेल्लोकभावन।

भ—प्लावयेल्लोकभावना।

९. ज ल भ—तया।

१०. ज ल भ—नास्ति।

---

‡ल भ—दातुं तुभ्यः।

२१] क्रियतां यदि शक्तो[1]ऽसि गङ्गाया अवतारणम् ॥[2]२१॥ [२१
गच्छाश्वमेतमादाय[3] पुनरेव यथागतम् ।[4]
२२] यज्ञं पैतामहं[5] वीरं निर्वर्तयितुमर्हसि ॥[6]२२॥ [२२
सुपर्णवचनं श्रुत्वा वीर्यवानंशुमानथ[7] ।
२३] त्वरितो[8] हयमादाय यज्ञमायान्[9] महायशाः ॥२३॥[10] [२३
स राजानं[11] समासाद्य दीक्षितं रघुनन्दन ।
२४] तस्मै निवेदयामास[12] सुपर्णवचनं तदा[13] ॥२४॥ [२४
तच्छ्रुत्वा व्यथितो राजा राघवांशुमतो वचः ।[14]
२५] यज्ञं समापयामास नातिहृष्टमना इव ॥[15]२५॥ [२५

---

१. रा—शक्नोसि ।
२. ज ल—षष्टिं तानि सहस्राणि स्वर्गलोकाय दास्यति† ।
भ— ,, ,, ,, यास्यन्तीन्द्रसलोकतां ।
३. रा—॰मेतदादाय ।
४. ज—गच्छ चाश्वं महातेजाः प्रगृह्य पुरुषर्षभ ।
ल—गंगां चाशु महातेजः ,, ,, ।
भ—गच्छ चाश्वं ,, ,, ,, ।
५. रा—पैतामहीं वीर । ज—पैत्र्यं महावीर ।
६. ल—नास्ति ।
७. ज—सुपर्णो राम नामतः । ब–वीरवानंशुमानथ ।
भ—सोंऽशुमान्नाम नामतः ।
८. ज भ—त्वरितं ।
९. ज—पुनरायां । भ—पुनरायान् ।
१०. ल—नास्ति ।
११. ज ल भ—राजानमथा॰ ।
१२. ज भ—न्यवेदयद्यथावृत्तं । ल—न्यवेदयन्यथावृत्तं ।
१३. ज ल भ—ततः ।
१४. ज ल भ—तच्छ्रुत्वा घोरसंकाशं वाक्यमंशुमतो नृपः ।
१५. ज ल भ—यज्ञं निवर्तयामास यथारब्धं* यथाविधि ।

---

† ल–यास्यति । * भ–यथारंभं ।

स्वपुरं च ययौ धीमा[1]निष्टयज्ञो महीपतिः ।
२६] गङ्गायाश्चागमे राजा नाध्यगच्छत्[2] स निश्चयम्[2] ॥२६॥ [२६
अगत्वा निश्चयं चापि युयुजे कालधर्मणा ।[3]
२७] त्रिंशद्वर्षसहस्राणि पालयित्वा[4] महीमिमाम् ॥२७॥ [२७
विधाय सोपानमिव क्रतुं[5] स
प्रतापविद्योतितभूमिपृष्ठः[6] ।
आरुह्य देवालयमुग्रतेजा—
N] श्चिक्रीड देशेषु मनोरमेषु ॥२८॥[7] [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[8] यज्ञसमाप्ति[9] र्नाम
अष्टत्रिंशः[10] सर्गः ॥३८॥[11]

१. ज ल भ—स्वपुरं चागमद्धीमा० ।
२. ज ल भ—नाध्यगच्छद्धिनिश्चयं ।
३. ज ल भ—अगत्वा† निश्चयं राजा कालेन महता महान् ।
४. ज ल भ—राज्यं कृत्वा दिवं ययौ ।
५. भ—क्रतून् ।
६. ज—०भूमिपृष्टः । ल—०विद्योतितभूवमिष्टः । के रा—०पृष्टः ।
७ के रा—नास्ति ।
८. ल—आदिकाण्डे ।
९. ज भ—सगरयज्ञस० । ल—सगरयज्ञसमाप्ति ।
१०. के—त्रिचत्वारिंशतमाध्यायः ।
रा—त्रिचत्वारिंशत्तमः सर्गः ।
ज—द्वात्रिंशः सर्गः । व भ—सर्गः ।
ल—नास्ति ।
११. ज भ—॥ ३२ ॥

---

† ल—चकारो ।

[वं=४४] [एकोनचत्वारिंशः सर्गः] [दा=४२]

ततः प्रकृतयो राम स्वर्गते सगरे नृपे ।[1]
१] धार्मिकं रोचयामासुरंशुमन्तं नराधिपम् ॥[2]१॥ [१
स[3] राजासीदंशुमानासीदंशुमान् रघुनन्दन ।
२] तस्य पुत्रः[4] समभवद् दिलीप इति विश्रुतः ॥२॥ [२
तस्मिन् राज्यं समावेश्य[5] दिलीपेऽथांशुमानपि[6] ।
३] हिमवच्छिखरे राम[7] तपस्तेपे महायशाः[8] ॥३॥ [३
गङ्गावतरणं पुण्यं चिकीर्षुरमरद्युतिः[9] ।
४] अनवाप्यैव तं कामं स वै नृपतिसत्तमः ॥४॥[10] [N
द्वात्रिंशत्[11]स सहस्राणि वर्षाण्यमितद्युतिः[12] ।
५] तपस्[13]तप्त्वा[14] महाघोरं स्वर्गं लेभे महामनाः[15] ॥५॥ [४

१. ज ल भ—कालधर्मं गते राम सगरे प्रकृतिजनः ।
२. ज ल—राजानं चोदयमास* अंशुमंतं महाद्युतिं ।
३. ज ल भ—राजा च सुमहानासीदंशु॰ ।
४. ज ल भ—पुत्रो महातेजा ।
५. ज व ल—समादेश्य ।
६. ज भ—दिलीपे रघुनन्दन । ल—दिलीपं रघुनन्दन ।
७. ज ल भ— रम्ये
८. ज ल भ—तदांशुमान् ।
९. दा—॰रमितद्युतिः ।
१०. ज ल भ—नास्ति ।
११. भ—द्वात्रिंशच्च ।
१२. ज—॰मितप्रभः । ल—॰मितप्रभुः । भ—॰प्रभाः ।
१३. ज व ल भ—तपोवने ।
१४ ज व ल भ—तपः कृत्वा ।
१५. ज व ल भ—स्वकर्मजं ।

---

* भ—रोचयामास ।

दिलीपस्तु महातेजाः श्रुत्वा पैतामहं वरम्[1] ।
N] दुःखोपहतया बुद्ध्या नाध्यगच्छत् स[2] निश्चयम् ॥६॥[3] [५
कथं गङ्गावतरणं कथं तेषां जलक्रिया ।
N] तारयेयं कथं बन्धूनिति चिन्तापरोऽभवत् ॥७॥[3] [६
तस्य चिन्तयतो नित्यं धर्मेण विजितात्मनः ।
N] पुत्रो भगीरथो नाम जज्ञे परमधार्मिकः[4] ॥८॥ [७
दिलीपोऽपि[5] महातेजा यज्ञैर्बहुभिरिष्टवान्[6] ।
६] त्रिंशच्चैव[7] सहस्राणि वर्षाणां गामपालयत् ॥९॥ [८
निश्चयं चाप्य[8]गत्वैव गङ्गावतरणे ततः ।[9]
७] व्याधिना नरशार्दूल कालस्य वशमीयिवान्[10] ॥१०॥[11] [९
इन्द्रलोकं गतो राजा सोऽर्जितं पुण्यकर्मणा ।[12]

१. ज ल भ—वधम् ।

२. भ—स्व० ।

३. के रा—नास्ति ।

४. भ—०धार्म्मिकः ।

५. ज ल भ—दिलीपस्तु ।

६. ज ल—यज्ञैश्च बहुभिर्यजन् । भ-यज्ञैर्बहुविधैर्यजन् ।

७. ज ल भ—विंशतिं वै ।

८. रा—चापि गत्वैव ।

९. ज ल भ—अगत्वा निश्चयं तांस्तु† समुद्धर्तुमशक्नुवन् ।

१०. ब—०मेयिवान् ।

११. ज ल भ—विधिना नरशार्दूल कालधर्ममुपेयिवान् ।

१२. ज—इन्द्रलोकगतो राजा स्वार्जितं स्वेन कर्मणा ।
ल—इन्द्रलोकं गतो ,, ,, ,, ,, ।
भ—इन्द्रलोके ,, राजाभ्यर्जितं ,, ,, ।

---

† ज—स्वां तु ।

८] राज्यं भगीरथे पुत्रे निक्षिप्य पुरुषर्षभे ॥११॥[1] [१०
भगीरथोऽथ राजाऽभूद्द धार्मिको रघुनन्दन ।
९] अनपत्यः स चाकांक्षन् सदृशीमात्मनः प्रजाम् ॥१२॥[3] [११
स तपो महदातिष्ठद्द गोकर्णेऽनुपमद्युतिः ।[4]
१०] ऊर्ध्वबाहुः पञ्चतपा ग्रीष्मे भूत्वा यतव्रतः ॥१३॥ [१२
जलशाँयी च हेमन्ते वर्षास्वभ्राँव···सनः ।
११] शीर्णपर्णकृताहारो यतात्मा जितमैथुनः ॥१४॥[9] [N
तस्य वर्षसहस्रान्ते तपसोग्रेण तोषितः ।
१२] आजगामाश्रमं ब्रह्मा प्रजानां पतिरीश्वरः ॥१५॥[10] [१५
वृतः सुरगणैः श्रीमान् विमानवरमास्थितः ।
१३] स एनमाभाष्य तदा तप्यमानं तपोऽब्रवीत् ॥१६॥[11] [१६

---

१. ज ल भ—*राज्ये भगीरथं पुत्रं निक्षिप्य ‡पुरुषर्षभं ।

२. ज ल भ—भगीरथोपि ।

३. ज ल भ—नास्ति ।

४. ज ल भ—नास्ति ।

५. ज—पंचतपो ।

६. ज ल भ—मिताहारो जितेंद्रियः ।

७. रा—जलाशये ।

८. रा—वर्षासुभ्रावकासम । पुनः ककारो किंखितः ।
ब—वर्षेस्वभ्राव···सनः ।

९. ज ल भ—नास्ति ।

१०. ज ल भ—तस्य वर्षसहस्रेण तपस्युग्रे महात्मनः ।
ब्रह्मा प्रीतोभवद्राम प्रजानां प्रभुरीश्वरः ॥

११. ज ल भ—ततः सुरगणैः सर्वैः सहलोकपितामहः ।
भगीरथं तप्यमानं महात्मानं वचोब्रवीत्× ॥

*ल—राज्यं । ‡ पुरुषर्षभ । × भ—ततोऽब्र॰ ।

भगीरथ[1] महाभाग प्रीतस्तेऽहं नरेश्वर ।
१४] गृहाण वरमस्मत्तः कांक्षितं पृथिवीपते ॥[2] १७॥[3] [१७
तमुवाच ततो दृष्ट्वा ब्रह्माणं स्वयमागतम् ।[4]
१५] भगीरथो नरश्रेष्ठ कृताञ्जलिरिदं वचः ॥[5] १८॥ [१८
यदि मे भगवान् प्रीतो यद्यस्ति तपसो बलम्[6] ।
१६] तत्[7]ः सगरपुत्रास्ते मत्तः सलिलमाप्नुयुः ॥१९॥ [१९
गङ्गाजलप्लुते तस्मिन् देहभस्मनि चानघ ।
१७] गच्छेयुरमलाः स्वर्गं सर्वे नः प्रपितामहाः ॥२०॥[8] [२०
इयं च सन्ततिर्देव नावसानं[9] कथञ्चन[10] ।
१८] इक्ष्वाकूणां कुले गच्छेदेष मेऽस्त्वपरो वरः[11] ॥२१॥ [२१
इत्युक्तवाक्यं[12] राजानं सर्वलोकपितामहः ।[13]

---

१. ल—भगीरथं ।
२. ज ल भ—तपसा त्वं सुतसेन वरं वर[य]सुव्रत ।
३. ब—नास्ति ।
४. ज ल भ—उवाच स‡ महात्मानं सर्वलोकपितामहं ।
ब—नास्ति ।
५. रा ज ल भ—भगीरथो महातेजा बद्ध्वा शिरसि चांजलिं ।
६. रा ज ल भ—तपसः फलम् ।
७. रा ज ल भ—सगरस्यात्मजाः सर्वे ।
८. रा ज ल भ—गंगासलिलसंक्लिन्ने ते भस्मनि महौजसः ।
*स्वर्गं गच्छेयुरत्यंत× सर्वे ते† प्रपितामहाः ।
९. कै भ—नावसादं ।
१०. ज ल भ—कदाचन ।
११. ज ल—मेस्तु वरो वरः । भ–मेस्तु वरः परः ।
१२. ज—उक्तवाक्यं च । भ–उक्तवाक्यं तु ।
१३. रा ल—नास्ति ।

---

‡ ल—सुमहात्मानं । * ज–स्वर्गे । × भ–रत्यंते । † भ–मे ।

१९] प्रत्युवाच शुभां वाणीं मधुराक्षरभूषिताम् ॥२२॥ [२२
तपोधन महाभाग भगीरथ महारथ ।
२०] एवं भवत्वविच्छिन्नमिक्ष्वाकुकुलमव्ययम् ॥[1]२३॥ [२३
इयं च गङ्गा प्रवरा सरितां स्वर्गतश्च्युता । [२४पू
२१] दारयेत् पृथिवीं सर्वा निपतन्ती महौघिनी ॥२४॥[2] [N
तदस्या धारणे राजन् महादेवः प्रसाद्यताम् ।[3] [२४उ
२२] गङ्गायाः पतनं व्यक्तं भूमिः सोढुं न शक्ष्यति ॥२५॥ [२५पू
N] अतिवेगाद् पतंती गां भित्वा पातालमाविशेत् ।[6] [N
२३] तस्या धारयितारं च नान्यं पश्यामि शङ्करात् ॥२६॥ [२५पू
वेगं सुदुःसहं लोके[7] तस्मात् त्वं तं प्रसादय । [N
तमेवमुक्त्वा राजानं भगवान् प्रपितामहः ।
२४] आभाष्य च महीं नेतुं गङ्गां स त्रिदिवं ययौ ॥[10]२७॥[२६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] भगीरथवरप्रदानं
नाम एकोनचत्वारिंशः[12] सर्गः ॥ ३९ ॥[13]

---

१. के—०कुलसंभव । ज-०भवतु भद्रं वै चेक्ष्वाकु० ।
रा ज भ—भवतु भद्रं व इक्ष्वाकु० ।
२. रा ज ल भ—या सा देवनदी गंगा ज्येष्ठा हिमवतः सुताः ।
३. रा ज ल भ—तां वै धारयितुं राजन् शिवो देवः प्रसाद्यताम् ।
४. रा ज भ—राजन् । ल-राजं ।
५ ज ल—पतंतीं ।
६. के—नास्ति ।
७. ब—मन्ये ।
८. रा ज ल भ—नास्ति ।
९. रा ज भ—गंगां चाभाष्य लोककृत् ।
ल—गंगामाभाष्य लोककृत् ।
१०. रा ज ल भ--नियुक्ता जगतीं गंतुं गंगां प्रतिययौ ततः ।
पुराणं देवसदनं सर्वदेवनमस्कृतः ॥
११. के ब—आदिकाण्डे ।
१२. के—चतुश्चत्वारिंशत्तमः । ब-नास्ति ।
१३. रा ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्नास्ति ।

प्रजापतौ गते तस्मिन्नङ्गुष्ठाग्रप्रपीडितम् ।[1]

१] कृत्वा महीतलं[2] राजा संवत्सरमुपावसत्[3] ॥१॥ [१

ऊर्ध्वबाहुर्निरालम्बो वायुभक्षो निराश्रयः ।

२] अचलः[4] स्थाणुवत् स्थित्वा रात्रिन्दिवमतन्द्रितः ॥२॥[5] [२

अथ संवत्सरेऽतीने[6] सर्वदेवनमस्कृतः ।

३] उमापतिः पशुपतिर्भगीरथमभाषत ॥[7]३॥ [३

प्रीतस्तेऽहं[8] नरश्रेष्ठ करिष्यामि प्रियं[9] महत् । [४पू

४] पतन्तीं धारयिष्यामि दिवस्त्रिपथगां नदीम् ॥[10]४॥[11] [५उ

ततो हिमवतः शृङ्गमधिरुह्य महेश्वरः ।[12]

---

१. रा ज ल भ—देवदेव गते राम सोगुष्ठाग्रेण पीडिताम् ।
२. रा भ—वसुमती । ज ल—वसुमतीं ।
३. रा ज—॰मुपागमत् । ल—॰मुपागतम् ।
४. कै—अचला॰ ।
५. रा ज ल भ—नास्ति ।
६. रा ज ल भ—॰त्सरे पूर्णे ।
७. रा ज ल भ—उमापतिः पशुपती राजानमिदमब्रवीत् ।
८. रा ज ल भ—तव ।
९. रा—प्रियाम् । ल—प्रियम् । ज भ—प्रियं ।
१०. रा ज ल भ—शिरसा धारयिष्यामि शैलराजसुतामिमां* ।
११. अतः परमधिकः पाठः—
रा ज ल—ततो हैमवतीं ज्येष्ठां सर्वलोकनमस्कृतां ।
भ—ततो हैमवती ज्येष्ठा सर्वलोकनमस्कृता ।
अचिंतयत्तदा [गङ्गा] देवानामपि दुर्धरा ।
वसाम्यहं हि पाताळमंभसागृह्य शंकरं ।
तथावलिप्तां विज्ञाय क्रुद्धोभूद्भगवान्हरः ।
१२. रा ज ल भ—ततः स हिमवंतं तमधिरुह्य महेश्वरःX ।

---

* ल भ—सुतामहम् । X ज—समंततः ।

५] निपतेत्यब्रवीद् गङ्गामाभाष्याकाशगां तदा ॥५॥ [N
जटाकलापं विपुलं प्रविकीर्य समन्ततः ।
६] बहुयोजनविस्तारं शैलकन्दरसन्निभम् ॥६॥ [N
तस्मिन् पपात गगनाद् गङ्गा देवनदीच्युता ।
७] वेगेन महता राम शिरस्यमिततेजसः ॥७॥ [७
तत्र संवत्सरं पूर्णं बभ्राम परिमोहिता । [१२पू
८] गङ्गा शिरसि देवस्य निःसृता वेगवाहिनी ॥८॥ [N
ततः प्रसादयामास पुनरेव भगीरथः ।
९] गङ्गायाः परिमोक्षार्थं महादेवमुमापतिम् ॥९॥ [N
तस्याथ वचनाद् गङ्गामुत्ससर्ज भगाक्षिहा ।
१०] जटामेकां समापीड्य स्रोतः सञ्जनयन् स्वयम् ॥१०॥ [N

---

१. रा ज ल भ—पतस्वेत्यब्रवी० । ब—निपतस्वेत्यब्रवी० ।

२. ज ल—तथा ।

३. कै—विनिकीर्य ।

४. भ—शैवकन्दर० । [केशकान्तर लिखितम्]

५. अतः परमधिकः पाठः—

रा ज ल भ—उत्ससर्ज जलं तत्र तीव्रशब्दपुरस्कृतम्* ।
आकाशगंगामासाद्य धारयामास शंकरः ॥

६. रा ज ल भ—ततः ।

७. भ—प्रतिमोहिता ।

८. रा ज ल भ—विसृता । रा—पुनः शोधयित्वा कृतम् ।

९. कै—परिमोक्षाय ।

१०. कै—भगार्दनः । रा—भगाहिहा ।
ज—भगादिह ।

११. कै—समाक्षिप्य ।

१२. ल—सृजत् ।

---

* भ—पुरः सरम् ।

स्रोतसा तेन सुस्राव गङ्गा त्रिपथगा नदी ।[1]
११] पावयन्ती जगद् रामे पुण्या देवनदी शुभा ॥११॥[2] [N
गगनाच्छंकरशिरस्ततश्च धरणीं गता ।
N] तां भ्रच्युतामृषिगणाः शिरसा जगृहुस्तदा ॥१२॥[3] [N
N] सेन्द्रैः सुरगणैः सार्द्धं पूजयंतो महानदीम् ।
पू१२] ततो देवर्षिगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ॥[4]१३॥[5] [२१पू
उ१३] स्वयं चानुर्जगामैनां ब्रह्मा लोकपितामहः ।[6] [N
तदद्भुततमं लोके गङ्गापतनमुत्तमम् ॥१४॥
१४] दिदृक्षवो देवगणाः समीयुरमितौजसः । [२३

---

१. रा ज ल भ—सतस्त्रिपथ० । कै—०त्रिपथगामिनी ।

२. रा ज ल भ—प्लावयन्ती जगद्राम ।

३. कै—नास्ति ।

४. रा ज ल भ—नास्ति ।

५. कै—अतः परमधिकः पाठः—
विमानैर्विविधै राम हयैर्गजवरैस्तथा ।

६. कै—चावजगा० । रा ज—चात्र जगामैतां ।
ल—चात्राजगामैतां । भ— चात्र जगामै० ।

७. अतः परमाधिकः पाठः—
रा ज ल भ—नागाश्च शोभयामासु मोर्गं* रम्यां× महौजसः ।
जेपुर्देवर्षयो÷ जप्यं† सिद्धाश्च परमर्षयः ॥
जगुश्च देवगन्धर्वा यक्षाः सिद्धगणास्तथा ।
व्याकुलां पतितां गंगां गगनाद्गां गतां तथा ॥
विमानैर्गजवैर्हंसैर्हयैर्गजवरैस्तथा ।
परिप्लवगतारचान्ये देवतास्तत्राधिष्ठिताः ‡ ।

* भ—०सुर्मार्गे । × ज—तस्यां । ल—तस्या म० । ÷ ल—अर्थं ।
† भ—चाप्यं । ‡ भ—विमानैस्त० ।

संपतद्भिः सुरगणैस्तेषां चाभरणौजसा ॥१५॥
१५] शतादित्यमिवासीत् तु गगनं गततोयदम् । [२४
क्वचिद् द्रुततरं यायात् कुटिलं चायतं क्वचित् ॥१६॥
१६] विनम्रं क्वचिदुद्वृत्तं शनैरपि पुनः पुनः । [२७
सलिलेनैव सलिलं क्वचिदभ्याहनत पुनः ॥१७॥ [२८पू
१७] शिशुमारोरगगणैर्मीनैरपि च चञ्चलैः ।
विद्युद्भिरिव विक्षिप्तमाकाशमभवद् वृतम् ॥१८॥ [२५
१८] पाण्डुरैः सलिलोत्पीडैः कीर्यमाणं सहस्रधा ।
शरच्छुभ्रमिवाभाति गगनं हंससंप्लवैः ॥१९॥ [२६
१९] पुनरूर्ध्वमधो गत्वा पपात धरणीतले । [२८उ

१. रा ज ल —०स्तेषामाभरणौजसाम् ।
भ —० ,, जसा ।
२. रा—नृततोयदम् ।
३. रा ज ल भ—क्वाचिदायतम् ।
४. के—विततं ।
५. के—रा ज भ—क्वचित् ।
६. के—०दभ्यावधीत् ।
७. रा ज ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
सुवेगोद्भ्रमितावर्ता× फेनमालावतंसका* ।
महाजलावर्तवती महाफेनप्रवाहिनी‡ ॥
८. ल—०णै पीनैरपि ।
९. रा ज ल भ—विक्षिप्तैराकाश० । के—०वच्छृतम् ।
१०. के—सलिलोत्पातैः ।
११. रा ल भ—शरच्छुभ्र० ।
१२. के—हंसविप्लवैः ।
१३. रा ज ल—मुहूर्तार्धमधो । भ—मुहूर्त तमधो ।

× ल—स्ववेगो० । * ज—फेन । ल—हेम मा० ।
‡ ज—महाफेन । ल—महाहेन ।

[२०] तच्छङ्करशिरोभ्रष्टं[1] गतं भूमितलं पयः ॥२०॥
N] विरराज तदा[2] तोयं[3] निर्मलं[4] गतकल्मषम् ।[5] [२०
३२०] ग्रहाः सगण[6]गन्धर्वा वसुधातलनिवासिनः ॥२१॥ [३०पू
नागाश्च शोधयामासुर्मार्गे[7]मस्य महौजसः ।[8] [N
२१] भवाङ्गसङ्गते[9] तोये[10] [11]पवित्रे तत्र पूजिते ॥२२॥ [३०उ
[12]कृत्वाऽभिषेकं ते सर्वे बभूवुर्गतकल्मषाः । [३१पू
२२] शापात् प्रपतिता ये [13]तु गगनाद् वसुधातलम् ॥२३॥ [३१उ
पूतात्मानः पुनस्ते[14] च सलिलेन दिवं गताः । [३२
२३] जेपुर्देवर्षयो जप्यं सिद्धाश्च परमर्षयः ॥[15]२४॥ [N
जगुश्च देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः । [N

---

१. रा ल--तज[ं]हरशिरोभ्रष्टं । ज--वजहाशि० ।

२. रा ज ल भ—पुनः ।

३. रा—ततस्तोयं ।

४. रा—निर्मूलं ।

५. के—नास्ति ।

६. ल--सवनगन्ध० ।

७. ब—०र्गमस्या ।

८. रा ज ल भ—नास्ति ।

९. रा ज—०संगतो ।

१०. रा ज—येन

११. रा ज ल भ—पवित्रत्वात् ।

१२. रा ज ल भ—कृत्वा तत्राभिषेकांते ।

१३. के—च ।

१४. रा ज ल भ—पुनस्तेन ।

१५. रा ज ल भ—नास्ति ।

२४] मुनिसंघा मुमुदिरे प्रह्लादं जगदाप च ॥२५॥[2] [N
अयोऽपि लोका मुदिता गङ्गाऽवतरणे तदा । [N
२५] भगीरथोऽपि राजर्षिर्दिव्यं स्यन्दनमाश्रितः ॥२६॥[4]
प्रायादग्रे महातेजास्तं गङ्गा पृष्ठतोऽन्वयात् । [३४
२६] महातरङ्गौघवती प्रनृत्यन्तीव राघव ॥[6]२७॥[7] [N
स्ववेगोद्भासितजला पद्ममालाऽवतंसका ।
२७] महाजलावर्तवती महावेगप्रवाहिनी ॥२८॥[11] [N
प्रययौ विलसन्ती च भगीरथपथानुगा ।[12]
२८] देवाः सर्षिगणाः सर्वे दैत्यदानवराक्षसाः ॥२९॥ [३५
गन्धर्वयक्षप्रवराः सकिंनरमहोरगाः ।
२९] सर्वाश्चाप्सरसो राम भगीरथरथानुगाः ॥३०॥ [३६
गङ्गामन्वगमन् प्रीताः सर्वे जलचराश्च ये । [३७

१. ब—मुनिसंगा ।
२. रा ज ल भ—नास्ति ।
३. रा ज ल भ—॰र्दिव्यमास्थाय वै रथम् ।
४. ब—नास्ति ।
५. रा ज ल भ—॰न्वगात् ।
६. रा ज ल भ—नास्ति ।
७. ब—नास्ति ।
८. ब—॰गोद्भ्रमितावर्ता ।
९. ब—फेनमाला॰ ।
१०. ब—॰वर्तनदी ।
११. रा ज ल भ—नास्ति ।
१२. रा ज ल—॰पथगा ।
१३. ल— गंगायन्वमहोरगाः ।
१४. ज—वीर ।

३०] य[1]तो भगीरथो राजा[2] त[3]तो ग[4]ङ्गा यशस्विनी ॥३१॥
जगाम नरशा[5]र्दूल सर्वलोकनमस्कृता । [३७
३१] स गत्वा सागरं राजा गङ्गयाऽनुग[6]तस्तदा ॥३२॥
प्रविवेश तलं भू[7]मेः खातं यत् सगरात्मजैः । [४४.१
३२] उपानीय ततो गङ्गां रसातलतलं प्रभुः ॥[8]३३॥ [३२
तर्पयामास ता[9]न् सर्वान् भस्मीभूतान् पितामहान् ।
३३] अथ गङ्गाऽम्भसा तत्र प्लाविताः सगरात्मजाः ॥३४॥[10]
दिव्यमूर्तिधरा भूत्वा जग्मुः स्वर्गं मुदा युताः । [४३
३४] तान् दृष्ट्वा प्लावितान् सर्वान् पितॄंस्तेन महात्मना ॥३५॥[11]
भगीरथमुवाचेदं ब्रह्मा सुरगणैः सह । [२ उ
३५] तारिता नरशार्दूल त्वया पूर्वपितामहाः ॥३६॥[12]

१. रा ज ल भ—यथा ।

२. भ—गंगा ।

३. रा ज ल—तथा । भ—तथा ।

४. भ—वा सा ।

५. कै—राम ।

६. रा ज ल—गंगायानुगतस्तदा ।

७. रा ज ल भ—भूमेर्यत्र ते भस्मसात्कृताः ।

८. रा ज ल भ—नास्ति ।

९. कै—ताः ?

१०. रा ज ल भ—भस्मन्यथाप्लुते तेन गांगोदेन† नरोत्तमः ।

११. रा ज ल भ—नास्ति ।

१२. रा ज ल भ—सर्वलोकप्रभुर्ब्रह्मा राजानमिदमब्रवीत् ।
तारितानि नृपश्रेष्ठ दिवं यावाभि देववत् ॥

† ज—गंगोदेन । भ—गंगोदेन

षष्टिः पुत्रसहस्राणि[2] सगरस्य महात्मनः । [३

३६] अक्षयः सगरस्यायं नाम्ना ख्यातो महोदधिः ।।३७।।[3]

व्यक्तं सागर इत्येवं ख्यातिं लोके गमिष्यति ।[3]

३७] यावच्च सागरो लोके स्थितोऽयमिह[4] शाश्वतः ।।[5] ३८ ।।

सगरः सहितः पुत्रैस्तावत् स्वर्गे निवत्स्यति ।[6] [६

३८] इयं च[7] दुहिता राजंस्तव[8] गङ्गा भविष्यति ।।३९।।

भागीरथीति विख्याता त्रिषु लोकेषु भूपते ।[9] [५

३९] गङ्गेति गमनाद् भूमेः ख्याता[10] भागीरथीति च ।। ४०।। [६

भविष्यति सरिच्छ्रेष्ठा लोके त्रिपथगेति च ।[11]

१. ज—षष्टिं ।

२. ज—पुत्रसहस्रस्य ।

३. रा ज ल भ—नास्ति ।

४. ब—स्थितोहमिह ।

५. रा ल भ—सागरस्य जलं यावल्लोके स्थास्यति पार्थिव ।

६. रा ज ल भ—सगरस्यात्मजास्तावल्लोके* स्थास्यंति देववत्† ।

अतः परमधिकः पाठः—

रा ज ल भ—दिव्यमाल्यांबरवृता‡ दिव्यमाल्यानुलेपनाः× ।

दिव्यरूपधराश्चैव भविष्यंति गुणान्विताः ॥

७. रा ज ल—तु ।

८. रा ज ल भ—ज्येष्ठा तव ।

९. रा ज ल भ—स्वस्कृतेन= च नाम्ना तु लोकधात्री÷ तु विश्रुता ।

१०. रा—प्रथमं नाम तथा । ज–प्रथितं । राजंस्तथा ।

ल भ—प्रथितं नाम तथा ।

११. रा ज ल भ—नास्ति ।

---

* ज–०स्यात्मजस्ता० । † ज–स्यास्यति । ‡ भ–दिव्यमाल्यांब० ।

× ल भ–दिव्यगन्धानु० । =भ–स्वस्कृते तव । ÷ज लोकधात्रीतिवि०

४०] त्रिपथगेति नामास्यास्त्रिमार्गगमनादिदम् ॥[1]४१॥ [६
त्रीँल्लोकान् पावयन्त्या[2] वै सुरर्षिभिरुदाहृतम् ।
४१] द्वितीयं चापि गङ्गेति गां गतायै[3] त्रिशांपते ॥४२॥[4] [N
पू४२] भागीरथीति चाप्येतत् तृतीयं चापि सुव्रत ।
यावच्च भुवि गङ्गेयं भविष्यति महानदी ॥४३॥[5] [N
४३] तावत् तवाक्षया कीर्त्तिर्लोकेषु विचरिष्यति । [N
पितामहानां सर्वेषां त्वमत्र मनुजाधिप ॥४४॥
४४] कुरुष्व सलिलं राजन् प्रतिज्ञा (ज्ञां ?) परिपालय । [७
पूर्वजेनापि[6] ते राजंस्तेनातियशसा सता[7] ॥४५॥[8]
४५] धर्मिणां[9] प्रवरेणापि नैष प्राप्तो मनोरथः । [८
तथैवांशुमता तात लोकेऽप्रतिमतेजसा ॥४६॥

१. कै—त्रिपथगेति चाप्येतत्तृतीयं चापि सुव्रत । मध्ये पाठं विच्छिद्य ४२ तमश्लोकस्य पूर्वार्द्धेन सह योजितः ।
रा ज ल भ—त्रिपथेति च नामास्यास्त्रिमार्गगमनात् स्मृतं ।
२. ज—पावयन्त्यो ।
३. रा ल भ—गतायां ।
४. कै—नास्ति ।
५. रा ज ल भ—भागिरथीति चाप्येव* तृतीयं नाम सुप्रभम् । भविष्यति च त्वत्प्रीत्या† मत्प्रीत्या च विचक्षण‡ ।
६. रा ज ल—पूर्वं केनापि । भ—पूर्वे केनापि ।
७. रा ज ल भ—तदा ।
८. कै—कुरुष्व सलिलं राजंस्तेनातियशसा सता । अपरकरेण पूर्वपार्श्वे 'प्रतिज्ञामनुपालयन्' इति लिखितम् ।
९. रा ज ल भ—धर्मेण ।

* ज भ—चाप्येवं । † भ—त्वत्प्रीते । ‡ ज—विचक्षणः
रा—विचक्षणा ।

४६] गङ्गां प्रार्थयमाणेन न प्राप्तः काम एष हि ।[1] [९
राजर्षीणां पुराणानां[2] महर्षिसमतेजसाम्[3] ॥४७॥

४७] अतुल्यतपसा चापि[4] क्षत्रधर्मस्थितेन च । [१०
दिलीपेन महाभाग तव पित्राऽतितेजसा ॥४८॥

४८] पुनर्न शङ्किता[5] तेन गङ्गां प्रार्थयताऽनघ[6] । [११
सा त्वया समनुप्राप्ता प्रतिज्ञा पुरुषर्षभ ॥[7]४९॥

४९] प्राप्तोऽसि[8] परमं[9] लोके यशस्त्रिदशसम्मितम्[10] । [१२
यच्च गङ्गाऽवतरणं त्वया कृतमरिन्दम ॥५०॥[11]

५०] अनेन च महत् प्राप्तं धर्मस्थानं त्वयाऽनघ ।[12] [१३
पावयस्व स्वमात्मानं[13] नरोत्तम नरोचते[14] ॥५१॥

५१] सलिले पुरुषश्रेष्ठ शुचिः पुण्यफलो[15] भव । [१४
पितामहानां सलिलं कुरुष्व च यथासुखम् ॥५२॥

---

१. रा ज ल भ—नास्ति ।
२. रा ज ल भ—गुणवतां ।
३. रा ज ल भ—महर्षिप्रतिमौजसाम् ।
४. कै—चापि ।
५. कै—शोभितं । रा—शंकिता ।
६. भ—०नया ।
७. भ—नष । मध्यस्थं पाठं भ्रान्तिवशादपहाय लिखितमिदम् ।
८. ज—प्राप्तासि ।
९. ज—परमे ।
१०. कै—०दशसम्मतम् ।
११. कै—त्वया ।
१२. रा ज ल भ—प्लावय त्वं ।
१३. कै—स्वमात्मानं ।
१४. कै—सदोचिते । रा ज ल भ—मयोदिते ।
१५. कै—०ण्यफलाय च । भ—पुण्यफला भव ।

५२] स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि स्वंर्लोकं नरपुङ्गव[1] । [१५
इत्युक्त्वा भगवान् ब्रह्मा भगीरथमरिन्दम ॥[3]५३॥
५३] जगाम सहितो देवैर्ब्रह्मलोकमनामयम् ।[4] [१६
भगीरथोऽपि राजर्षिः कृत्वा तेषां जलक्रियाः ॥५४॥ [१७पू
५४] पितामहानां सर्वेषामयोध्यां पुनरागमत् ।[6]
समृद्धार्थो नरश्रेष्ठो राज्यं चानुशशास ह ॥५५॥ [१८
५५] प्रमुमोद च लोकस्तं नृपमासाद्य राघव ।[8] [१९पू
इति[9] ते राम गङ्गाया विस्तरोऽभिहितो मया ॥५६॥
५६] स्वंस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते सन्ध्याकाल उपस्थितः । [२०
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं पावनमेव च[13] । [२१पू

---

१. रा ज ल भ—स्वगृहं ।

२. रा ज ल भ—गम्यतामिति ।

३. रा ज ल भ—इत्येवमुक्त्वा लोकेशः* सर्वलोकपितामहः ।

४. रा ज ल भ—यथागतं† जगामाथ ब्रह्मलोकं‡ पितामहः ।

५. रा ज ल भ—सलिलमुत्तमम् ।

६. रा ज ल भ—यथाक्रमं यथान्यायं‡‡ सागराणां रघूत्तम ।
रा ज ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
कृतोदकः शुची राजा स्वपुरं प्रविवेश ह ।

७. कै—नरं श्रेष्ठो । रा ज ल भ—नरश्रेष्ठ ।

८. रा ज ल भ—अतः परमधिकः पाठः --
नष्टशोकः समृद्धार्थो× बभूव विगतज्वरः ।

९. रा ज ल भ—एष ।

१०. कै—स्वस्ति ।

११. रा ज ल—०कालोऽभिवर्तते । भ—०लोऽतिवर्तते ।

१२. रा ज ल भ—पुण्यं ।

१३. रा ल भ—स्वर्ग्यं तथैव । ज—स्वर्गं तथैव ।

* ज—सर्वेशः । † ल—यथागतं । ‡ ल—ब्रह्मलोके ।
‡‡ ल—यथान्यायं । × स सिद्धार्थो ब० ।

५७] इदमाख्यानमाख्यातं गङ्गाऽवतरणं मया ॥५७॥ [२२पृ

भागीरथीति विदिता भुवनत्रयेऽस्मिन्
पीयूषनिर्मलजलमचलत्तरङ्गा ।
भस्मीकृताखिलजगत्कलुषा धरण्यां
N] स्वैरं प्रखेलति विहंगमशब्दरम्या ॥५८॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[4] गङ्गाऽवतरणो
नाम चत्वारिंशः[5] सर्गः ॥४०॥[6]

१. रा ज ल भ—शुभम् ।
२. रा ज ल—प्रज्वालिता० । भ—प्रक्षालिता० ।
३. रा ल भ—हि खेलति । ज—च खेलति ।
४. कै ब—आदिकाण्डे ।
५. कै —पञ्चचत्वारिंशत्तमः । ज—त्रयस्त्रिंशः ।
रा ब ल भ—नास्ति ।
६. भ— ॥ ३१ ॥

[वं=४६] [एकचत्वारिंशः सर्गः][दा=४५]

विश्वामित्रवचः श्रुत्वा राघवः सहलक्ष्मणः[1] ।
१] विस्मयं परमं गत्वा प्रोवाचेदं[2] वचस्तदा[2] ॥१॥ [१
अत्यद्भुतमुपाख्यानं त्वया ऽऽख्यातं महामुने ।[3]
२] गङ्गाऽवतरणं पुण्यं सागरस्य[4] च पूरणम् ॥२॥ [२
इयं नो रजनी पुण्या गुणभूता भविष्यति ।[5]
३] इमां चिन्तयतामेव कथां पापभयापहाम् ॥[6]३॥ [३
ततः[7] सा शर्वरी सर्वा[7] सह सौमित्रिणा तदा ।
४] गता चिन्तयतश्चैव[8] विश्वामित्रस्य तां कथाम् ॥४॥ [४
ततः प्रभाते विमले विश्वामित्रं महामुनिम् ।
५] उवाच रामः सत्कृत्य कृत्वाह्निकमिदं[9] वचः ॥[10]५॥ [५
गता भगवती रात्रिः श्रोतव्यं परमं श्रुतम् । [६[1]

१. कै—रामो दशरथात्मजः ।
२. रा ज ल भ—विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।
३. रा ज ल भ—अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मन्कथितं परमं त्वया ।
४. रा ज ल भ—समुद्रस्य ।
५. रा ज ल भ—क्षणभूता हि रात्रिर्मे वृत्तेयं सुमहाव्रत ।
६. रा ज ल भ—इमां चिंतयतः सर्वां निखिलेन कथां* तव† ।
७. कै—तस्या सा रजनी पुण्या ।
८. रा ज ल भ—चिंतयतस्तस्य ।
९. कै—कृताह्निक० ।
१०. रा ज ल भ—उवाच राघवो वाक्यं कृतपूर्वाह्निकक्रियः ।

---

* भ—कथं । †रा—इव ।

६] सन्तरामः सरिच्छ्रेष्ठां पुण्यां त्रिपथगां नदीम् ॥[1]६॥ [७
इढेयं नौः[2] सुविस्तीर्णा[3] सन्तारयितुमापगाम्[4] ।
७] भवन्तमिह संप्राप्तं दृष्ट्वैवेति मतिर्मम ॥[5]७॥ [७
इत्येतद् वचनं श्रुत्वा रामस्याक्लिष्टकर्मणः ।
८] सन्तारं कारयामास विश्वामित्रो महामुनिः ॥८॥[6] [८
उत्तरं तीरमासाद्य[7] ततः स मुनिपुङ्गवैः[8] ।
९] अपश्यत् तत्र निरतांस्तापसान् नियतव्रतान् ॥[9]९॥ [९
स तान् संपूज्य विधिवज् जगाम सहराघवः ।[10]
१०] विशालां[11] नगरीं रम्यां दिव्यां[12] स्वर्गपुरीमिव ॥१०॥ [१०
ततो रामो महाबुद्धिर्विश्वामित्रमिदं तदा ।[13]

---

१. रा ज ल भ—*तरामः सरितां श्रेष्ठां पुण्यां †त्रिपथगामिमाम् ।

२. रा ल—कथा श्रुता । भ—नौरेषा हि ।

३. रा ज ब ल भ—सुविस्तीर्णा ।

४. रा ज ल—मुनीनां पुण्यकर्मणां । भ—मुनीनां भावितात्मनां ।

५. रा ज ल भ—भगवंतमिह प्राप्तं ज्ञात्वा त्वरितमागता ।

६. रा ज ल भ—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य महानृषिः ।
सन्तारं तारयामास सर्षिसंघः× सराघवः ॥

७. रा ज ल भ—कूलमासाद्य ।

८. रा ज ब ल—संपूज्यार्षिगणं ततः । भ—संपूज्यर्षिगणं ततः ।

९. रा ज ल भ—गंगातीरे निविष्टास्ते विशालां ददृशुः पुरीम् ।

१०. रा ज ल भ—ततो मुनिवरो द्रष्टुं जगाम सहराघवः ।

११. कै—विशालं ।

१२. ज—दिव्यं ।

१३. रा ज ल भ—अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिं ।

---

*ज—शां रामः । भ—स रामः । † भ—०गामिमां । ×ज—सर्षिसंघः ।

११] पप्रच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालां प्राप्य तां[1] पुरीम् ॥११॥ [११
कतमो[2] राजवंशोऽयं विशालस्य महात्मनः[3] ।
१२] श्रोतुमिच्छामि भद्रं ते परं कौतूहलं हि मे ॥१२॥[4] [१२
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राघवस्य मुनिस्तदा ।
१३] आख्यातुमुपचक्राम विशालस्य[5] पुरातनम् । [१३
श्रुता मयेयं शक्रस्य पुरा कथयतः कथा ॥[6]१३॥
१४] यथा दिवि सभामध्ये शृणु तां मम राघव । [१४
आसन् कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः ॥[7]१४॥
१५] अदितेश्च महावीर्याः सुवीर्यबलदर्पिताः ।[8] [१५
भ्रातरः स्पर्धिनः पुत्राः कश्यपस्य महात्मनः ॥[9]१५॥ [N

१. कै—वैशाली: । रा ज भ—विशालामुत्तमां ।

२. रा ल भ—कतरो ।

३. रा ज ल—महामुने ।

४. कै—नास्ति ।

५. कै— विश्वामित्रो महातपाः ।

६. रा ज ल भ— *श्रुता मया महेन्द्रस्य कथां कथयतः शुभां ।

७. रा ज ल भ—तां मे निगदतो वत्स शृणु तत्त्वेन राघव ।
पूर्वं कृतयुगे वीर दितिपुत्रा महाबलाः ॥

८. रा भ—अदितेश्च समानार्या वीर्यवंतो महाबलाः ।
ज—,, समानार्या ,, ,,
ल— अदितेः शसमनार्या ,, ,,
रा ज ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
ततस्तेषां नरश्रेष्ठ बुद्धिरासीन्महात्मनां ।

९. भ—नास्ति ।

*ल—श्रुत्वा । + रा—निगादितो ।

१६] मातृष्व[1]स्रीयाः सापत्नाः परस्परजिगीषवः ।[2] [N
तेषां[3] किल समेतानां बुद्धि[4]रासीन्महौजसाम् ॥१६॥
१७] अजराश्चामराश्चैव कथं स्यामेति राघव । [१६
तेषां चिन्तयतां राम बुद्धिरासीत् मुनि[5]श्चला ॥१७॥[6]
१८] क्षीरोदसागरं सर्वे मथ्नीमः सहिता वयम् ।[7] [१७
नानौ[8]षधीः समाहृत्य प्रक्षिप्य च ततस्ततः ॥१८॥ [N
१९] यत्त्रो[9]त्पत्स्यते सारं तत् पास्यामस्ततो वयम् ।
तेनाज[10]रामरा लोके[11] भविष्यामो गतज्वराः ॥१९॥ [N
२०] तेजोवीर्यबलोपेता[12]ः कान्तिद्युतिसमन्विताः । [N
इति ते निश्चयं कृत्वा ममन्थुर्वरुणालयम् ॥२०॥

---

१. कै—मातृस्वश्रेयाः ।

२. रा ज ल भ—नास्ति ।

३. भ—ततस्तेषां नरश्रेष्ठ ।

४. रा—०रासीद्विनिश्चिता । भ—०रासीन्महात्मनां ।

५. ज ल—विनिश्चिता ।

६. रा भ—नास्ति ।

७. भ—नास्ति ।

रा ज ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
क्षीरोदमथनाद्भूरि रसं संभाव्य तत्र वै ।

८. रा ज ल भ—सर्वौषधीः ।

९. रा ज ल भ—यदत्रोत्पस्यते ।

१०. रा ल—तथाजरामरा । ज—तथाजरामा? । भ—तथा तथाजरा ।

११. ज—लोके च ।

१२. रा—तेषां वीर्यबलोन्मत्ताः ।

ज ल भ—तेजोवीर्यबलोन्मत्ताः ।

२१] मन्थानं मन्दरं कृत्वा नेत्रं कृत्वा च वासुकिम् ।[1] [१८
अप्सु निर्मथ्यमानासु रसात् तस्माद् वरस्त्रियः ॥२१॥
२२] उत्पेतुस्तु रसाद् यस्मात् तस्मादप्सरसः स्मृताः । [३३
षष्टिः कोट्योऽभवन् राम तासामप्सरसां तदा ॥ ।२२। [३४पू
२३] दिव्यानां दिव्यरूपाणां दिव्याभरणवाससाम् ।
रूपयौवनमाधुर्यगुणाढ्यानां सुवर्चसाम् ॥२३॥ [N
२४] असंख्येया बभूवुश्च यास्तासां परिचारिकाः । [३४ उ
N] तास्ततः प्रतिसंप्राप्ता जगृहुर्देवदानवाः ॥२४॥
उ२५] अप्रतिग्रहणात् ताश्च सर्वाः साधारणीकृताः ।[10] [३५
वरुणस्य ततः कन्या वारुणी रघुनन्दन ॥२५॥

---

१. रा ज ल भ—तेथ निश्चित्य मनसा नेत्रं कृत्वा † तु वासुकिम् ।
मंथानं मंदरं चैव *ममन्थुः पुरुषोत्तम ॥

२. रा—निर्मथ्यमाणासु ।

३. रा—०सात्सुरस्त्रियः । ल—०सात्सरस्त्रियः ।
भ—रस्यात् तस्माद्वराः स्त्रियः ।

४. रा ज ल भ—उत्पेतुः पयसस्तस्मात् ।

५. ज भ—षष्टिः कोट्यस्तु ‡संभूतास्तस्मादप्सर[सः]पुरा ।
ल—षष्टिकोट्यस्तु काकुत्स्थ यास्मादप्सरसः पुरा ।

६. ज ल भ—असंख्येयास्तु काकुत्स्थ ।

७. रा—यस्तासां ।

८. ज—ततस्ताः ।

९. कै रा—न स्मेता जगृहुर्देवास्तत्र दैत्याश्च राघव ।
कै पुस्तके पाठममुं छित्त्वा पुनरपरकरेण मूलस्थपाठो विन्यस्तः ।

१०. ज ल भ—अप्रतिग्रहणाचैव ततःसाधारणास्तु ताः ।

† ज—कृत्वाथ । *ल—कृत्वा । ‡भ—षष्टिको० ।

२६] उत्पपात रसात् तस्मान् मार्गमाणा परिग्रहम् । [३६
दितेः पुत्रा न तां राम जगृहुर्वरुणात्मजाम् ॥२६॥
२७] अदितेस्तु सुताः मीतास्तामगृह्णन्त वै सुराः । [३७
सुरापरिग्रहाद् देवाः सुरा इत्यभिविश्रुताः ॥[3] २७॥
२८] अप्रतिग्रहणात् तस्या दैतेया असुरास्तथा ।[4] [३८ पू
उच्चैःश्रवाश्च तत्राश्वो मणिरत्नं च कौस्तुभम् ॥२८॥ [३९ पू
२९] तस्मादेतत् समुद्भूतममृतं चाप्यनन्तरम् । [N
अमृतानन्तरं चापि धन्वन्तरिरजायत ॥२९॥
३०] वैद्यराडमृतस्यैव बिभ्रत् पूर्णं कमण्डलुम् । [३२ पू
धन्वन्तरेस्तदुद्भूतं विषं लोकविषादकृत ॥[12] ॥३०॥ [N

---

१. ज ल भ—महावीर्या ।

२. ज ल भ—वांछमाना । ब—वांछिमाना ।

३. ज ल भ—श्रादितेस्तु †सुता वीरा जगृहुस्तामनिंदितां ।
तेनाभवन्सुरा देवा दैतेया *श्रासुरास्ततः ॥

४. रा—दैत्येया ।

५. ज—हृष्टाः प्रमुदिताश्चासन्वारुणीग्रहणात्सुराः ।
ल—हृष्टाः प्रमुदिताश्चासं वारुणीग्रहणात्मनाः ।
भ—हृष्टाः प्रमुदिता आसन्वारुणीग्रहणात्सुराः ।

६. ल भ—उच्चैःश्रवास्तु ।

७. ज—तस्मादेव च । ल भ—तस्मादेव ।

८. ज—संभूतममृतं ।

९. रा ज ल भ—धान्वंतरि० ।

१०. रा—पूर्णक० ।

११. रा—धान्वंतरे तदद्भूतं । ज ल—धान्वंतरेरनुद्भू० ।
ब भ—धन्वंतरेरनुद्भूतं ।

१२. ज ल—सर्वविषाददम् । भ—सर्वविषादनं ।

†ल—सुरा । *०तेया असुरा०

३१] तन्नागा[1] जगृहुः सर्वे ज्वलनादित्यसन्निभम् । [N
तत्रामृतार्थे[2] देवानामसुराणां च विग्रहः ।।[3]३१।। [४७ पू
३२] आसीद् बलवतां राम लोकक्षयकरो महान् ।[4] [४८ उ
तस्मिन् विमर्दे महति तेषाममिततेजसाम् ।।[5]३२।।
३३] अदितेरात्मजा राम निजघ्नुस्तान् दितेः सुतान्[6] ।[7] [५१
निहत्य च[8] दितेः पुत्रान् राज्यं प्राप्य पुरन्दरः ।
३४] मुमोदर्द्धिं[9] परां प्राप्य सर्वदेवाभिपूजितः ।[10]।।३३।। [५२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] अमृतमथने अमृतोत्पत्तिर्नाम
एकचत्वारिंशः[12] सर्गः ।। ४१ ।।[13]

१. ज ल भ—तं नागा ।
२. रा—तत्रामृतार्थी ।
३. ज ल भ—दृष्ट्वा देवास्ततोभावममृतं चापि भास्वरं ।
४. ज ल भ—अमृतस्य कृते राम महानासीत्कुलक्षयः ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. के—सुरान् ।
७. ज ल भ—अदितेरात्मजास्तत्र दि*तिपुत्रान्निजघ्निरे ।
८. ज ल भ—तु ।
९. रा—मुमोचार्द्धिं ।
१०. ज ल भ—विज्वरो निहिताभित्रो †विबुधैर्मुमुदे सह ।
ज ल भ—तदा तु मुदिता लोका सर्षिसंघाः सचारणाः ।
११. कै व—आदिकांडे ।
१२. कै रा—षट्चत्वारिंशत्तमः । व—नास्ति ।
१३. ज ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

*—दितेः पु० । †ल भ—मुमुदे विबुधैः ।

हतपुत्रा[1] ततो देवैर्दितिः परमदुःखिता ।[2]
१] मारीचं[3] कश्यपं देवी[4] भर्तारमिदमब्रवीत् ॥१॥ [१
हतपुत्राऽस्मि भगवन्[5] पुत्रैः शक्रादिभिस्तव ।
२] शक्रहन्तारमिच्छामि[6] पुत्रं दीर्घतपोऽर्जितम् ॥२॥ [२
साऽहं तपः करिष्यामि[7] गर्भमाधातुमर्हसि ।
३] तत्र मे शक्रहन्तारं पुत्रं त्वं जनयिष्यसि ॥[8] ३॥ [३
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा मारीचः कश्यपस्तदा ।
४] प्रत्युवाच महातेजा दितिं परमदुःखिताम्[9] ॥४॥ [४
एवं भवतु भद्रं ते शुचिर्भव तपोधने ।
५] जनयिष्यसि पुत्रं त्वं शक्रहन्तारमीप्सितम्[10] ॥५॥ [७

१. कै—हतपुत्रस्तो ।

२. ज ल भ—हतेषु पुत्रेषु दितिः परं दुःखेन मोहिता ।

३. रा—मारीचीं ।

४. ज ल भ—राम ।

५. ज ल—०वंस्तव पुत्रैर्महात्मभिः ।

भ—०वन् तव पुत्रैर्महात्माभिः ।

६. ज—०हर्तारमिच्छामि ।

७. ज ल भ—तपश्चरिष्यामि । ब—तव करिष्या० ।

८. ज ल भ—ईदृशं शक्रह†न्तारं त्वमनुज्ञातुमर्हसि ।

९. ज—०दुःखितं ।

१०. ज—शक्रहर्तारमाहवे । ल भ—०हंतारमाहवे ।

†ज—शक्रहर्तार । भ—क्रतुहन्तारं ।

पू६] पूर्णे वर्षसहस्रे च शुचिर्यदि भविष्यसि ।
N] पुत्रं त्रैलोक्यहन्तारं[2] मत्तो वै[3] जनयिष्यसि ॥६॥ [६
उ६] एवमुक्त्वा महातेजाः पाणिना सम्ममार्ज ताम् ।
संस्पृश्य चोक्त्वा स्वस्तीति जगाम तपसे मुनिः ॥[4]७॥ [७
७] गते तस्मिन् मुनिश्रेष्ठे[5] दितिः परमहर्षिता[6] ।
उदक्प्रस्रवणे देशे तप आतिष्ठदुत्तमम् ॥[7]८॥ [८
८] चरन्त्याश्च तपस्तस्याः परां सन्नतिमास्थितः ।
परिचर्यां स्वयं शक्रश्चकाराधनतत्परः ॥९[8]॥ [९
९] समित्कुशं मूलफलं पुष्पमग्निं तथा जलम् ॥[9]१०॥ [१०
प्रयत्नवानाजहार तस्याः काले पुरन्दरः ॥[10]११॥ [११

१. ज ल भ—स्वं ।
२. ज—०हर्तारं । कै रा—स्वं शक्रहर्तारं ।
३. ज ल भ—ततस्त्वं ।
४. ज ल भ—संमार्ज्य †चात्र भवनं जगाम स महानृषिः ।
५. ज ल—नरश्रेष्ठ । भ—नरश्रेष्ठे ।
६. भ—परमदुःखिता ।
७. ज ल भ—कुशप्रवणमासाद्य तपस्तेपे सुदारुणम् ।
८. ज ल भ—तपस्तस्याश्च कुर्वत्याः परिचर्यां चकार ह ।
सहस्राक्षो नरश्रेष्ठ *परया भक्तिसंपदा ॥
९. ज ल भ—‡समिधोऽग्निं कुशान्पुष्प×महीमूलफलं हविः ।
समिधोग्निकुशान्पुष्पं महीं मूलं फलं हविः ॥
१०. कै ज ल भ—शक्रो न्यवेदयत्तस्यै यथान्य÷दपि कांक्षितं ।

---

†ल—च त्रिभुवनं । *ल—०क्षोऽमरश्रेष्ठो । ‡ज—समिद्धो० ।
×भ—पुष्पं महींमूलं फलं । ÷ज—०न्यदाभकां० ।

१०] गात्रसंवाहने चैव श्रमापनयने तथा ।[1]
शक्रः सर्वेषु कार्येषु[2] दितिं परिचचार ह ॥११॥ [११

११] गते[3] वर्षसहस्रे तु दशोने रघुनन्दन ।
दितिः प्रीता सहस्राक्षमिदं वचनमब्रवीत ॥[4]१२॥ [१२

१२] प्रीता तेऽहं सहस्राक्ष दशवर्षाणि पुत्रक ।
अवशिष्टानि भद्रं ते द्रष्टासि[5] भ्रातरं ततः ॥१३॥ [१४

१३] तमहं त्वत्कृते पुत्र समाधास्ये यथा[6] तथा ।
पू१४] सौभ्रात्रेणैव सहितस्त्वं हि राज्यमवाप्स्यसि ॥[7]१४॥ [१५
N] त्रैलोक्यं निखिलं पुत्र भोक्ष्यथः[8] सह विज्वरौ ।[9] [N
उ१४] एवमुक्त्वा[10] दितिः[11] शक्रं विशुस्ता[12] शक्रसन्निधौ ॥१५॥ [१६
उ१५] कृतपादा[13] शिरःस्थाने प्राप्ते[14] मध्यं दिवाकरे ।

---

१. ज ल भ—गात्रसं†वाहने *चात्र श्रमापनयनेन सः ।
२. ज ल भ—कालेषु ।
३. ज ल भ—अथ वर्षशते पूर्णे दशमे ।
४. ज ल भ—दितिः परमसुप्रीता सहस्राक्षमुवाच ह ।
५. ज ल भ—भ्रातरं द्रक्ष्यसे ।
६. के ज ल भ—अयोत्सुकं ।
७. ज ल भ—नास्ति ।
८. भ—भोक्ष्येथे ।
९. के रा—नास्ति ।
१०. रा—एवमुक्तः ।
११. के रा—ततः ।
१२. ज ल भ—नास्ति । कै—वर्ज्यचिह्नेनाबद्धः ।
१३. ज ल भ—नास्ति ।
१४. ज—प्राप्तं मध्ये दिवाकरे ।

†भ—॰संबाहनं । *ल—चापि

पु १५] निद्र्यापहृता देवी[2] पादौ कृत्वा तु शीर्षतः ॥१६॥[3] [१६
दृष्ट्वा तामशुचिं शक्रः पादयोः कृतमूर्द्धजाम्।
१६] वैपरीत्येन सुप्तां चै मुमुदे च जहास च ॥१७॥ [१७
तस्याः शरीरं विकृतं प्रविश्य बलसूदनः।[8]
१७] बिभेद सप्तधा गर्भं वज्रेण शतपर्वणा ॥१८॥ [१८
एकैकं चैव गर्भं सं पुनश्चिच्छेद सप्तधा।
१८] विस्फुरन्तं बलाद्र राम रुदन्तं चार्तया गिरा ॥१९॥ [N
भिद्यमानस्तदा गर्भः कुक्षौ वज्रेण वज्रिणा।[13]
१९] रुरोद सुस्वरं राम ततोऽदितिरबुध्यत ॥२०॥ [१९
मा रोदीरिति तं शक्रः प्ररुदन्तमभाषत।
२०] बिभेद चैवं वज्रेण रुदन्तमपि वासवः ॥[15] २१॥ [२०

१. ज—निद्र्यापहृतां। ल—दिद्रायां पहृतां।
२. ज ल—देवीं।
३. रा—कृतपादा शिरःस्थाने मुमुदे च जहास च।
४. ज ल—तामशुचिः।
५. ज ल—कृतायां शिरसःस्थाने। भ—कृतायाः शिरसः स्थाने
६. के ज ल भ—जहास मुदितोपि च।
७. ज ल—विवेश स पुरंदरः। भ—प्रविवेश पुरंदरः।
८. ज ल भ—गर्भं च सप्तधा †राम बिभेद परमात्मवान्।
९. ज ल—गर्भांस्तु।
१०. ज—विस्फुटं तु। ब ल—विस्फुटंतं।
११. ज—रुरोदैवार्तया। ल—रुरोदैवांतया।
१२. भ—नास्ति।
१३. ज ल भ—भिद्यमानस्ततो गर्भो वज्रेण शतपर्वणा।
१४. ज ल भ—शक्रो गर्भं चैवाभ्यभाषत।
१५. ज ल भ—बिभेद च महातेजा एकैकं सप्तधा पुनः।

†भ—कृत्वा।

न हन्तव्यो न हन्तव्य इति[2] तं[2] दितिरब्रवीत् ।
२१] निर्ययौ च ततः शक्रो मातुर्वचनगौरवात् ॥२२॥ [२१
प्राञ्जलिश्चाब्रवीदेनां विनिःसृत्याग्रतः स्थितः ।[4]
२२] अशुचिर्देवि सुप्ताऽसि पादयोः कृतमूर्धजा ॥२३॥ [२२
लब्ध्वा तदन्तरं चाहं मद्विनाशार्थमाहितम् ।[7]
२३] गर्भं ते हतवान् देवि तन्मे त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥२४॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[9] दितिगर्भच्छेदो[10] नाम
द्विचत्वारिंशः[11] सर्गः ॥४२॥[12]

---

१. रा—न हंतव्यं न हंतव्यं ।
२. ज ल भ—इत्येवं ।
३. ज भ—निर्ययावथ देवेशो । ल—निर्ययाविति देवेशो ।
४. ज ल भ—प्राञ्जलिर्भयसहितो दितिंचैवाभ्यभाषत ।
५. ज ल भ—पादतः ।
६. रा—वीर्यं ।
७. ज ल भ—तदंतमहं लब्ध्वा †शक्रहंतारमाहवे ।
८. ज ल भ—भित्त्वान्सप्तधा ।
९. कै ब—आदिकाण्डे ।
१०. ज—दितिगर्भच्छेदभेदो । ल—गर्भविभेदनं ।
भ—भेदवर्णनो ।
११. कै रा—सप्तचत्वारिंशः । ज—चतुर्विंशः ।
ब भ—नास्ति ।
१२. भ—॥ ३४ ॥

---

† ज—शक्रहर्तारमा० ।

एकोनपञ्चाशद्धा तु भिन्ने गर्भे तदा दितिः ।
१] सहस्राक्षं दुराधर्षमुवाच भृशदुःखिता ॥१॥[1] [१
ममापराधाद् गर्भोऽयं सप्तधा विदलीकृतः ।
२] नापराधोऽस्ति देवेश भवतः[2] स्वहितैषिणः[3] ॥२॥[4] [२
एवं गतेऽपि वत्स त्वं प्रियं मे कर्तुमर्हसि[5] ।

१. ज ल भ—सप्तधा तु हते1 गर्भे दितिः परमदुःखिता ।
सहस्राक्षं दुराधर्षं2 वाक्यं सानुनयाब्रवीत् ॥

२. ज ल भ—तव ।

३. रा—सुहितैषिणः । ज ल भ—कश्चन पुत्रक ।

४. ज ब ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

प्रियं तु कृत3मिच्छेयमस्मिन्गर्भविपर्यये ।
सप्त स्थानानि सप्तैते मरुतः4 पालयंतु ते ।
वातस्कन्धाः5 सदा सप्त चरंतु6 मम पुत्रक ।
मरुतश्चेति च7 विख्याता दिव्यरूपा महाबलाः ।
ब्रह्मलोकं चरत्वेक 8इंद्रलोकं तथापरः 8।
दिव्यवायुरिति9 ख्यातस्तृतीयस्तु महायशाः ।
चत्वारस्तु नरश्रेष्ठ दिशो वै तव शासनात् ।
संचरिष्यंति भद्रं ते देवरूपा महाबलाः ।
त्वत्कृतेनैव मरुत इति नाम्ना च विश्रुताः ।
संचरिष्यंति भद्रं ते कालेन हि ममात्मजाः ।

५. ब—नास्ति ।

---

1. ब ल भ—हृते । 2. ज—दुराधर्षो । 3. ज—गतमि० । 4. ज—मारुतः । 5. ज ब ल—वातस्कन्धाः । 6 ब—चर्यंतु । ल—चरंतु । 7. ज—मरुचेति च । ब—मारुतश्चेति । 8. ज—चरत्वेके इन्द्रलोके तथापरे । 9. भ—दिव्यश्वसन इति ।

३] इमे ते सप्तधा[1] सप्त मरुतो नाम विश्रुताः ॥३॥[2] [३
चरन्त्वाज्ञाकरा[3]ः सप्त वातस्कन्देषु सप्तसु । [४पू
४] सहैभिर्मम पुत्रैस्त्वं मरुद्भि[4]र्जहि शात्रवान्[5] ॥४॥[6] [N
ब्रह्मलोके चरन्त्वेके[7] इन्द्रलोके तथापरे ।[8] [५पू
५] दिक्षु चैतासु सर्वासु विचरन्तु तवाज्ञया ॥५॥[6] [N
दिव्यमूर्तिधरा भूत्वा मरुतोऽमृतभोजनाः ।
६] तवैवाज्ञाकरा[9]ः शक्र कुरुष्वैतद्वचो मम ॥६॥[6] [N
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा शक्रः[10] शक्तिमतां वरः ।
७] उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यमेवमस्त्विति राघव ॥[11]७॥[12] [७
त्वत्कृतेनैव नाम्ना हि भविष्यन्ति तवात्मजाः ।[13]
८] ख्याता मरुत इत्येते दिव्यरूपा ममाज्ञया ॥८॥ [६ उ
सर्वमेतद् यथात्थ त्वं करिष्ये ऽहमशेषतः ।

---

१. रा ज—सप्तभिः ।

२. ल भ—नास्ति ।

३. रा—चरंत्वाज्ञाः कराः । ज—चरन्त्वातेकराः ।

४. रा—महद्भिर्जहि ।

५. रा—शातवान् ।

६. ल भ—नास्ति ।

७. रा—चरन्त्वेमे ।

८. ज—त्वत्कृतेनैव नाम्ना हि भविष्यंति तवात्मजाः ।
ख्याता मरुत इत्येते दिव्यरूपा ममाज्ञया ॥
एष देशः स काकुत्स्थ महेन्द्राद्युषितः पुरा ।
दितिं यत्र तपःसिद्धामेवं परिचचार सः ॥

९. ज—तवैवाज्ञाकराः ।

१०. ल भ—सहस्राक्षः पुरंदरः ।

११. ल भ—उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं दितिं बलनिषूदनः ।

१२. ज—नास्ति ।

१३. ज ल भ—नास्ति ।

९] अमृतभाशिनः पुत्रा इमे ते सहिता मया ॥९॥[1] [N
विचरिष्यन्ति लोकांस्त्रीन् निर्भया विगतज्वराः ।
१०] निर्वृता भव भद्रं ते करिष्ये वचनं तव ॥१०॥[1] [N
सर्वमेतद् यथोक्तं ते भविष्यति न संशयः । [८ पृ
११] एवं तौ निश्चयं कृत्वा माता[2]पुत्रौ परस्परम्[3] [4]॥११॥
जग्मतुस्त्रिदिवं राम कृतार्थाविति नः श्रुतम् । [९
१२] एष देशः स काकुत्स्थ महेन्द्राध्युषितः पुरा [5]॥१२॥
दितिं यत्र तपःसिद्धामेवं परिचचार सः ।[6] [१०
१३] इक्ष्वाकोरत्र राजर्षेः पुत्रः परमधार्मिकः ॥१३॥
अलंबुसायामुत्पन्नो विशाल इति विश्रुतः । [११
१४] तेनेयं निर्मिता राम वैशाली नगरी पुरी ॥१४॥
विशालस्य सुतो राम हेमचन्द्रोऽभवन्नृपः । [१२

---

१. ल भ—नास्ति ।
ज—अतः परमधिकः पाठः—
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा सहस्राक्षः पुरंदरः ।
उवाच प्रांजलिर्वाक्यं दितिं बलनिसूदनः ॥
२. ज भ—मातृपुत्रौ ।
३. ज भ—तपोवने ।
४. ल—तस्य पुत्रो महातेजाः संप्रत्येष पुरीमिमाम् ।
५. ज ल भ—नास्ति ।
६. ज ल—विश्वग्यायोस्तु । भ—विष्वग्यायोस्तु ।
७. ज ल भ—काकुस्थ ।
८. भ—अलंबुषाया० ।
९. ज ल भ—नः श्रुतम् ।
१०. रा—वैशाली ।
११. ल—शुचि । भ—शुभा ।
१२. ल भ—महाबलः ।

१५] सुचन्द्र इति विख्यातो हैमचन्द्रिर्महायशाः ॥१५॥ [१३
सुचन्द्रतनयो राम धूम्राश्वं इति विश्रुतः ।
१६] धूम्राश्वतनयो राम सञ्जयः समजायत ॥[5]१६॥
सञ्जयस्य सुतः श्रीमान् सहदेवः प्रतापवान् । [१४
N] कृताश्वः सहदेवस्य पुत्रः परमधार्मिकः ॥१७॥
कृताश्वस्य महातेजाः सोमदत्तः सुतोऽभवत् ।
१८] सोमदत्तस्य काकुत्स्थं पुत्रोभूज्जनमेजयः ॥१८॥ [१६
तस्य पुत्रश्च काकुत्स्थ पात्येतां सांप्रतं पुरीम् ।
१९] धर्मात्मा नरशार्दूल सुमतिर्नाम वीर्यवान् ॥[16]१९॥ [१७

---

१. रा—हेमचंद्रिर्महायशाः ।
ज—हैमचंद्रो महायशाः ।
२. रा—धूम्राश्व । ब ल—धूम्राश्वः ।
३. रा—धूम्राश्व० ।
४. रा ज ब—संजयः ।
५. ल—धूम्राश्वतनयश्चापि संजयः समपद्यत ।
भ—धूम्राश्वतनय ,, ,, ,, ।
६. रा ज ब ल—संजयस्य । भ—नास्ति ।
७. ल—सुतो राम । भ—श्रीमान् ।
८. ज ल भ—कृशाश्वः ।
९. ज ल भ—कृशाश्वस्य ।
१०. ल भ—पुत्रस्तु ।
११. ल भ—काकुत्स्थ जनमे० ।
१२. ब ल भ—पुत्रो महातेजाः ।
१३. ल भ—अध्यास्ते ।
१४. ल भ—प्रमितिर्नाम ।
१५. ल भ—दुर्जयः ।
१६. ल—विश्वग्वायोःप्रसादेन विशालाः सर्वपार्थिवाः ।
भ—विश्वग्वायोः ,, ,, ,, ।

इक्ष्वाकवः सर्वे एव ख्याता वैशालका नृपाः ।
२०] दीर्घायुषो महात्मानो वीर्यवन्तो महाबलाः ॥२०॥ [१८
इहाद्य रजनीं राम सुखं वत्स्यामहे वयम् ।
२१] श्वः प्रभाते तु जनकं ध्रुवं द्रक्ष्याम राघव ।[४] ॥२१॥ [१९
सुमतिस्तं ततः श्रुत्वा विश्वामित्रमुपागतम् ।
२२] प्रत्युद्गम्य महात्मानं पूजयामास पार्थिवः ॥[७]२२॥ [२०
पाद्यार्घ्यासनदानेन सोपाध्यायगणस्तदा ।[८]
२३] प्राञ्जलिः कुशलं चैनं पृष्ट्वेदं वाक्यमब्रवीत् ॥२३॥ [२१
पूतोऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे विषयं मुनिः ।
२४] संप्राप्तो दर्शनं चैव नास्ति धन्यतरो मम ॥२४॥ [२२
अद्य मे सफलं जन्म संपूर्णश्च मनोरथः ।
२५] यस्त्वां कुशलिनं ब्रह्मन् पश्यामि समुपागतम् ॥२५॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे सुमतिसमागमो
नाम[१४] त्रिचत्वारिंशः सर्गः ॥ ४३ ॥[१५]

१. ल भ—वीर्यवंत: ।
२. ल—सुधार्मिक: । भ—सुधार्म्मिका: ।
३. ल—वत्स्याम: सुसुखा वयम् । भ—वत्स्याम: ससुखा वयं ।
४. ज—श्वःप्रभाते तु जनकं द्रक्ष्याम ध्रुवमेव हि ।
ल भ— ,, नरश्रेष्ठ जनकं द्रष्टुमर्हसि ।
५. ल भ—अथासौ प्रमिती राजा । अथासौ प्रमती राजा ।
६. भ—॰मित्रमुपागमत् ।
७. ल भ—श्रुत्वा नरवरः श्रेष्ठः पुरात्प्रत्युद्ययौ तदा ।
८. ल भ—पूजां च परमां कृत्वा सोपाध्यायः सबांधवः ।
९. ल भ—पृष्ट्वा विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।
१०. ल भ—धन्योस्म्यनु॰ ।
११. ल भ—मया ।
१२. ल भ—संवृतस्तश्च ।
१३. कै रा ज भ—यस्त्वां ।
१४. कै—नामाष्टाचत्वारिंशः । रा ब—नाम ।
ज—नाम पञ्चत्रिंशः ।
१५. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

पृष्ट्वा तु कुशलप्रश्नं परस्परमशेषतः ।
१] कथान्ते सुमतिर्वाक्यं विश्वामित्रमभाषत ।।[3]१।। [१
इमौ कुमारौ भगवन् कुतः कस्य च शंस मे । [२ पू
२] किमर्थं च त्वया सार्धं रमेते देवरूपिणौ ।।२।।[5] [६ पू
सिंहर्षभगती वीरौ शार्दूलवृषभाविव । [२ उ
३] पद्मपत्रविशालाक्षौ वरायुधधरावुभौ ।।३।।
अश्विनाविव रूपेण समुपस्थितयौवनौ । [३
४] यदृच्छया क्षितिं प्राप्तौ देवलोकादिहागतौ ।।४।।
कथं पद्भ्यामिह प्राप्तौ किमर्थं कस्य वा सुतौ । [४
५] भूषयन्ताविमं देशं चन्द्रसूर्याविवाम्बरम् ।।५।।

---

१. ज—कुशलं प्रश्नं । ल भ— कुशलं तत्र ।

२. ल भ—० रसमागमे ।

३. ल भ—कथां ते प्रमतिर्वाक्यं व्याजहार महामुनिम् ।

४. ज—भवतः ।

५. ल भ—इमौ कुमारौ भद्रं ते देवतुल्यपराक्रमौ ।

६. ल भ—गजसिंहगती ।

७. रा—०लवृषकाविव ।

८. के—वीरेण । रा—वीर्येण ।

९. रा—०दिह स्थितो । ल भ—दिवामरौ ।

१०. रा—प्राप्तं ।

११. ल भ—मुने ।

१२. ब ल भ—सूर्यचन्द्राविवाम्बरं ।

---

* छ—प्रमितिः ।

परस्परस्य[1] सदृशौ प्रमाणस्थितिचेष्टितैः[2] । [५

६] वरायुधधरौ वीरौ श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥६॥ [६ ब

तस्यैतद्वचनं[3] श्रुत्वा यथावृत्तं न्यवेदयत् । [७ पू

७] सिद्धाश्रमकथां चैव राक्षसानां वधं तथा[4] ॥७॥ [८ उ

राक्षसानां वधं श्रुत्वा सुमतिर्भृशविस्मितः[5] । [N

८] अतिथी पूजयामास पुत्रौ दशरथस्य तौ ।[7] ॥८॥ [६ ब

ततः परमसत्कारं सुमतेः[8] प्राप्य राघवौ ।

९] उषित्वा[9] च निशां तत्र जग्मतुर्मिथिलां पुरीम् ॥[10]९॥ [१०

ते[11] दृष्ट्वा दूरतः सर्वे जनकस्य पुरीं[12] शुभाम् ।

१०] मुनयो हृष्टमनसः शशंसुः साध्विति ॥१०॥[13] [११

मिथिलोपवने तस्मिन्नाश्रमं प्रेक्ष्य राघवः ।

११] पप्रच्छ मुनिशार्दूलं किमिदं निर्जनं वनम् ॥[14]११॥ [१२

---

१. ब ल भ—परस्परेण ।

२. रा—स्थितिं चेष्टितौ । ज—चेष्टितौ ।

३. ल भ—तस्य तद्वचनं

४. ल भ—रक्षसां वधमेव च ।

५. ज ब ल भ—विश्वामित्रवचः ।

६. ब—स मुनि० । ल भ—विस्मितः स महायशाः ।

७. ल—बभूव दृष्ट्वा सदृशौ पुत्रौ दशरथस्य वै ।

भ—बभूवत्वीदृशौ ,, ,, तौ ।

ल भ—अथ तौ पूजयामास नृपतिः स यथाविधि ।

८. ल—प्रमितेः । भ—प्रमतेः ।

९. ब—उषित्वा ।

१०. ल भ—व्युष्य तत्र निशामेकां जग्मतुर्मिथिलां तदा ।

११. ल भ—दृष्ट्वा तु मुनयः ।

१२. ल भ—शुभां पुरीं ।

१३. भ ल—साधु साध्विति संहृष्टा मिथिलां समपूजयन् ।

१४. ल भ—पुराणं निर्जनं चैव पप्रच्छाथ महामुनिम् ।

श्रीमानं[1]विरलच्छायो मुनिसंघै[2]र्विवर्जितः ।
१२] श्रोतुमिच्छामि भगवन् कस्यासीदयमाश्रमः ॥१२॥ [१३
१३] इति तस्य वचः श्रुत्वा विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ।[3] [१४
अहं[4] ते कथयिष्यामि शृणु यस्यायमाश्रमः ।[5]
१४] यथा शून्यो यथा चायं शप्तः कोपान्महात्मनः[6] ॥[7]१३॥ [१५
गौतमस्याश्रमः[8] पुण्यो ह्ययमासीन्महात्मनः[9] ।
१५] नित्यपुष्पफलो[10]पेतैः पादपैरुपशोभितः ॥[11]१४॥ [१६
स चेह तप आतिष्ठदहल्यासहितो मुनिः ।

---

१. भ—श्रीमांस्तु विर०

२. रा—मुनिसंग ।

३. ल भ—तच्छ्रुत्वा राघवेणोक्तं वाक्यं वाक्यविशारदः ।
प्रत्युवाच महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ॥
रा ज—कथाज्ञो मुनिशार्दूलः प्रहसन्वाक्यमुत्तमं ।
विनयावनतं धीरं धर्मज्ञं सत्यवादिनं ।
रामं कमलपत्राक्षमाभाष्य मधुरं वचः ॥

४. ब—हन्त ।

५. ल भ—हन्त ते वर्णयिष्यामि* शृणु तत्त्वेन राघवः ।

६. रा ज—०न्महात्मना ।

७. ल भ—यथायमाश्रमः पूर्वं शप्तः कोपान्महात्मना ।

८. ब—०पुण्यः । ल—गौतमस्य नरश्रेष्ठ ।
भ—गौतमस्य नरश्रेष्ठः ।

९. ब भ—पूर्वमासीन्महामुनेः । ल—पूर्वमासीन्महामुने ।

१०. ब—०फलोपेतः ।

११. ल भ—आश्रमोऽयं महापुण्यः सुरैरपि सुपूजितः ।

---

* भ—वर्तयिष्यामि ।

१६] संवत्सरसहस्राणि बहूनि रघुनन्दन ॥[1] १५॥ [१७
अहल्यया[2] रघुश्रेष्ठ तरुणादित्यरूपया ।
N] तदस्याश्चाश्रमं कृत्वा रम्यरूपं पुरन्दरः ॥१६॥[3] [N
तस्यान्तरं विदित्वाऽथ कामार्तस्त्रिदशेश्वरः ।
१७] मुनिवेशधरो भूत्वा अहल्यामिदमब्रवीत् ॥[4] १७॥ [१८
ऋतुकालं[5][6] प्रतीक्षोऽपि न प्रतीक्षे[7] सुमध्यमे ।
१८] सङ्गमं शीघ्रमिच्छामि पृथुश्रोणि सह त्वया ॥१८॥ [१९
मुनिवेशधरं शक्रं सा ज्ञात्वाऽपि परन्तप ।[8]
१९] मतिं[9] चकार दुर्मेधा देवराजकुतूहलात्[10] ॥१९॥ [२०
अब्रवीच्च सुरश्रेष्ठं कृतार्थं सा वचस्तदा ।
२०] कृतार्थाऽस्मि सुरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमलक्षितः ॥२०॥[11] [२१

---

१. ल—स चेह तप आतिष्ठदहल्यामिदमब्रवीत् ।
२. ज—अहल्याया ।
३. ब ल भ—नास्ति ।
४. भ—सोहल्यामिद० ।
५. ल—नास्ति ।
६. ब ल—ऋतुकालः प्रतीक्ष्योपि । भ—ऋतुकालप्रतीक्ष्योपि ।
७. भ—प्रतीक्ष्ये ।
८. ल—मुनिवेशधरो भूत्वा सोहल्यामिदमब्रवीत् ।
संवत्सरसहस्राणि बहूनि रघुनन्दन ॥
तस्यान्तरं विदित्वाथ सहस्राक्षः पुरन्दरः ।
मुनिवेषधरं ज्ञात्वा सहस्राक्षं तथापि सा ॥
९. ब—रतिं ।
१०. रा—०कुतूहलम् । भ—देवराजे कुतू० ।
११. ल भ—अब्रवीच्च सुरश्रेष्ठं गच्छ शीघ्रमरिंदम ।
आत्मानं मां च देवेश सर्वथा रक्ष मानद ॥

उ२१] तामिन्द्रः प्रहसन् वाक्यमहल्यामिदमब्रवीत् ।[1] [२२उ

सुश्रोणि परितुष्टोऽस्मि गमिष्यामि क्षमस्त्वं मे[2]॥२१॥ [२३

२२] एवमुक्त्वा ततोऽहल्यां निष्क्रामन्नुटजान्मुनेः ।[4]

संभ्रमात्[5] त्वरितो राम शङ्कितो गौतमं प्रति ॥२२॥ [२४

२३] ददर्श सहसाऽऽयान्तं गौतमं दीप्ततेजसम् ।

देवैरपि सुदुर्धर्षं तपोवीर्यबलाश्रयात् ॥२३॥[6] [२५

२४] पुण्यतीर्थोदकक्लिन्नमाज्यक्लिन्नमिवानलम् ।[7]

N] समित्कलापं सकुशमादायायान्तमाश्रमम् ॥[8]२४॥ [२६

दृष्ट्वैव च तदा शक्रो विषादमगमत् परम् ।[10] [२७

२५] सोऽपि[1] दृष्ट्वैव देवेन्द्रं[11] मुनिवेशधरं[12] मुनिः ॥२५॥

दुर्वृत्तं वृत्तसंपन्नो रोषाद्द् वचनमब्रवीत् । [२८

---

१. ल—सहस्राक्षस्तथेत्युक्त्वा त्वहल्यां† देवरूपिणीम् ।

२. ल भ—उवाच ।

३. ल भ—यथासुखम् ।

४. ल भ—निश्चक्रामोटजात्तदा ।

५. ल भ—सभं संचरन् राम ।

६. ल भ—गौतमं तु ददर्शाथ प्रविशंतं शचीपतिः ।
देवदानवदुर्द्धर्षं तपोबलसमन्वितम् ॥

७. ब—पुण्यतीर्थोदकक्लिन्नं दीप्यमानमिवानलं ।
ल भ—तीर्थोदकपरिक्लिन्नं ,, ,,

८. ल भ—गृहीतसमिधं विप्रं सकुशं पुरुषर्षभ ।

९. रा—पुरम् ।

१०. ल भ—दृष्ट्वा सुरपतिस्त्रस्तो विषसाद भयान्वितः ।

११. ल भ—दृष्ट्वा सहस्राक्षं ।

१२. भ—मुनिवेष० ।

---

†भ—०क्त्वा महल्यां ।

२६] मम रूपसमं रूपं कृतवानसि दुर्मते ॥२५॥
अकर्तव्यमिदं यस्मात् तस्मात् त्वं विकलो भव । [२९
२७] गौतमेनैवमुक्तस्य सरोषेण महात्मना ॥२६॥
पेततुर्वृषणौ भूमौ सहस्राक्षस्य तत्क्षणात् । [३०
२८] व्यथितश्च तदा सोऽभूद्धतौजा विकलीकृतः ॥[7]२७॥
धर्षितस्तपसोग्रेण कश्मलं चैनमाविशत् । [३१
२९] तं शप्त्वैवं मुनिवरो भार्यां तामपि शप्तवान् ॥[10]२८॥
वर्षपूगानसंख्येयांस्त्वं पापे दुष्टचारिणि । [३२
३०] तप्यमाना निरालम्बा सततं भस्मशायिनी ॥२९॥
अदृश्या सर्वभूतानां वनेऽस्मिंस्त्वं निवत्स्यसि[12] । [३३
३१] यदा त्विदं[13] वनं घोरं रामो दशरथात्मजः ॥३०॥

१. ब ल भ—रूपं समास्थाय ।
२. रा—भूपते ।
३. रा ज ब—०विफलो भव । ल भ—विफलस्त्वं भविष्यसि ।
४. ल भ—कुपितेन ।
५. रा—वृषितश्च ।
६. ज—विफलीकृतः ।
७. ल भ—नास्ति ।
८. के—क्षपितस्तप० ।
९. रा—कल्मलं ।
१०. ल—तथाचोक्त्वा†सहस्राक्षं भार्यामपि च शप्तवान् ।
११. ल भ—०स्यानामाश्रमे त्वं ।
१२. ज—न वत्स्यसि ।
१३. ल भ—चेदं ।
१४. ल भ—दाशरथिर्विभुः ।

†भ—०चोक्त्वा ।

आगमिष्यति तं दृष्ट्वा धुतपापा[1] भविष्यसि । [२४

१२] तस्यातिथ्यं[2] सुदुर्मेधे कृत्वा लोभविवर्जिता ॥३१॥[3]

मत्समीपं मुदोपेता समुपैष्यस्यसंशयम् ।[4] [२५

१३] एवमुक्त्वा महातेजाः शप्त्वा भार्यां मनीषिणीम् ॥[6]३२॥[7]

उ१४] हिमवच्छिखरं[8] गत्वा[9] तपस्तेपे महामना[10]: ॥३३॥ [२६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] शक्राहल्ययो:[12] शापो[12] नाम[13] चतुश्चत्वारिंशः[13] सर्गः ॥ ४४ ॥

१. ज—धूतपापा । ब—पदा पूता ।

२. रा—तस्यातिथिं ।

३. ल भ—आगमिष्यति दुर्द्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि ।

तस्यातिथ्येन दुर्वृत्ते लोभमोहविवर्जिता ॥

४. ब—समुपैष्यसि संशयं ।

५. ल—तदा काले मुदा युक्ता स्वं रूपं धारयिष्यसि ।

भ—तदाकालमुदा युक्तं स्वरूपं धारयिष्यसि ।

६. ब ल भ—एवमुक्त्वा महातेजा गौतमो दुष्टचारिणीं ।

७. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

पुण्यं देशं समासाद्य सिद्धचारणसेवितम् ।

८. ल—हिमवच्छिखरे । भ—हिमवच्छिषरे ।

९. ल भ—रम्ये ।

१०. ल भ—महातपाः ।

११. कै ब—आदिकाण्डे । भ—नास्ति ।

१२. ल भ—इन्द्राहल्याशापो ।

१३. कै—नामोनपंचाशः । रा—०एकोनपंचाशः ।

ज—०षट्त्रिंशः ।

विकलस्तु[1] कृतः शक्रो देवानग्निपुरोगमान् ।
१] अब्रवीद् दुर्मना राम सहसिद्धर्षिचारणान् ॥[2] १॥ [१
कुर्वता तपसो विघ्नं प्राप्तेयं[3] विक्रिया मया ।
२] गौतमात् क्रोधमुत्पाद्य सुरकार्यचिकीर्षुणा ॥[4] २॥ [२
अफलोऽहं[5] कृतस्तेन क्रोधेन[6] च निराकृतः ।
३] शापमोक्षेण तेनास्य तपोविघ्नः कृतो मया ॥[7] ३॥ [३
तस्मात्[8] सुरगणाः[9] सर्वे सर्षिसंघाः सचारणाः ।
४] सुरकार्यं[10] तु संफलं[11] सफलं कर्तुमर्हथ ॥४॥ [४
शतक्रतुवचः श्रुत्वा देवा अग्निपुरोगमाः ।[12]
५] ऊचुः पितृगणान् वाक्यमिदं तत्र समागतान् ॥[13] ५॥ [५

---

१. ज—विफलस्तु । ब ल भ—अफलस्तु ।

२. ल भ—अब्रवीत्तत्र वचनं सर्षिसंघान्‡ सचारणान् ।

३. ब ल भ—गौतमस्य महात्मनः ।

४. ब ल भ—क्रोधमुत्पाद्य तु*मया*सुरकार्यमिदं कृतम् ।

५. ब ल भ—अफलोस्मि ।

६. ब ल भ—क्रोधास्त ।

७. ब ल भ—शापमोचेण महता तपोस्यापहृतं मया ।

८. कै रा ज—तस्मां ।

९. ब ल भ—सुरवराः ।

१०. ब ल भ—सुरसाहाय्यकर्तारं ।

११. ब—मां फलं ।

१२. ल भ—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।

१३. ल भ—पितृन् ×देवानुवाचाग्निः सहितान्समरुद्गणान् ।

---

‡ ल—सर्षिसंगान् । *भ—तरसा । ×भ—पितृदे॰

एष मेषः[1] सवृषणः[2] शक्रश्चावृषणीकृतः ।

६] अस्येमौ वृषणौ छित्त्वा महेन्द्राय प्रयच्छत[3] ॥[4]६॥[5] [७

अफलस्तु[6] ततो[7] मेषः परां पुष्टिमुपैष्यति[8] । [८

७] भक्तामुपयोगेन तच्चास्य[9] तु[10] महाफलम् ॥७॥[11] [९

श्रुत्वाऽथाग्निपुरोगाणां[12] देवानां पितरो वचः ।[13]

९] उत्कृत्य[14] मेषवृषणाविन्द्रायोपददुस्तदा ॥[15][16]८॥ [१०

ततः प्रभृति काकुत्स्थ पितरः[17] क्रव्यभोजिनः[18] ।

---

१. ज—एवमेषः । ल भ—अयं हि मेषो ।

२. ल भ—वृषणी ।

३. कै—प्रयच्छतु ।

४. भ—अस्यापहृत्य वृषणं महेन्द्रार्थं प्रयच्छथ ।

५. ल—अस्यापहृत्य वृषणं सहस्राक्षे समादधुः ।
तदा प्रभृति काकुत्स्थ पितृदेवसमागताः ॥

६. ल भ—अफलश्च ।

७. रा—तमो । ल भ—कृतो ।

८. ल भ—पुष्टिं गमिष्यति ।

९. ल भ—तद्व्यस्य ।

१०. रा—तु महाबलम् । ल भ—सुमहत्फलं ।

११. कै रा ज—तस्मान्मेषस्य वृषणौ छित्त्वा तौ दातुमर्हथ ।
इंद्राय सुरकार्यार्थं विफलाय पितामहाः ॥

१२. ज—०पुरोगाणां ।

१३. ल भ—अग्नेस्तु वचनं श्रुत्वा पितृदेवाः समागताः ।

१४. ब—उत्पाट्य ।

१५. ल भ—मेषवृषणं सहस्राक्षे समादधुः† ।

१६. भ—तदा ।

१७. भ—पितृदेवाः ।

१८. रा ब—क्रव्यभोजनाः । भ—समागताः ।

---

†ल—महादधुः ।

१०] अफलं भुञ्जते मेषं सफलं तु न भुञ्जते ॥९॥ [११
इन्द्रश्च मेषवृषणस्ततः प्रभृति राघव ।
११] गौतमस्य प्रभावेण बभूवामिततेजसः ॥१०॥ [१२
तस्मात् प्रसाद्य रामाशु गौतमं मुनिसत्तमम् ।
१२] तारयेमां महाभागामहल्यां शापवैकृताम् ॥११॥ [१३
विश्वामित्रवचः श्रुत्वा रामः सौमित्रिणा सह ।
१३] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य प्रविवेशाश्रमं ततः ॥१२॥ [१४
स ददर्श महाभागां तपसा द्योतितप्रभाम् ।
१४] सेन्द्रैरपि सुरैः साक्षादनालक्ष्यां समागतैः ॥१३॥ [१५
प्रयत्नान्निर्मितां धात्रा दिव्यां मायामयीमिव । [१६पू
१५] धूमेनाभिपरीताङ्गीं दीप्तामग्निशिखामिव ॥१४॥ [१७उ
तुषारेणावृतां साभ्रां पूर्णचन्द्रप्रभामिव । [१६उ
१६] मध्येऽम्भसो दुराधर्षां दीप्तां सूर्यप्रभामिव ॥१५॥ [१७पू

---

१. ल भ—ते ।
२. ल भ—इन्द्रश्च ।
३. रा ज ल भ—प्रभावेन ।
४. ल भ—तपसः सुमहत्फलम् ।
५. ब ल भ—तस्माद्गच्छामहे तस्य गौतमस्याश्रमं× व्रतम् ।
६. ल—॰भागां चाहल्यां ।
७. ब—शापवैकृतात् । ल भ—कामरूपिणीम् ।
८. ल भ—राघवः सहलक्ष्मणः ।
९. ल भ—प्रविवेश महावनम् ।
१०. ल भ—॰व्युषितप्रभाम् ।
११. ल—एकामथ समासाद्य दुर्द्धर्षामसुरैः ‡सुरैः ।
१२. रा—॰न्निर्मितं । ज—॰न्निर्मिता ।
१३. रा—दिव्ये ।
१४. ज—॰नापिपरीतांगीं ।
१५. ल—तुषवेणावृतां ।
१६. ब—मध्येनभो । ल—नभोमध्ये ।

×ब भ—आश्रमं पुण्यकर्मणः । ‡भ—दुर्द्धर्षामसुरासुरैः ।

सा हि गौतमवाक्येन दुर्निरीक्षा[1] बभूव ह ।[2]

१७] त्रयाणामपि लोकानां यावद्[3] रामस्य दर्शनम् ॥१६॥ [१८

दृष्ट्वैव राघवौ तस्याः[4] पादौ जगृहतुस्तदा ।

१८] सा चैतौ[5] पूजयामास स्मृत्वा गौतमभाषितम् ॥१७॥[6][१९

पाद्यार्घ्यासनसत्कारै[8]र्यथावत् प्रीतमानसा[9] ।[10]

१९] प्रतिजग्राह रामश्च पूजां तां विधिवत् तदा ॥[11]१८॥ [२०

वृष्ट्वै[12]र्नुर्देववाद्यानि पुष्पवृष्टिः पपात च ।[13]

२०] गन्धर्वाप्सरसां चैव[14] महानासीत् समागमः ॥१९॥ [२१

साधु[15] साध्विति देवाश्च तदाऽहल्यामपूजयन्[16] ।

२१] विशुद्धां तपसोग्रेण तदा रामसमागमे ॥[17]२०॥ [२२

१. भ—दुर्निरीक्ष्या ।

२. ज—नास्ति ।

३. ल—दर्शनात् ।

४. भ—राघवौ तु ततस्तस्याः ।

५. रा ज भ—च तौ ।

६. भ—प्रतिजग्राह ।

७. ल—नास्ति ।

८. रा—०सत्कार्यै० ।

९. रा—०मानसः ।

१०. ल—नास्ति ।

११. ल भ—प्रतिजग्राह रामस्तु शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ।

१२. ल—रुध्वनु० ।

१३. ल भ—पुष्पवृष्टिर्महत्यासीद्दिव्यदुंदुभिनिःस्वनः†

१४. ल—चापि । भ—वापि ।

१५. रा ल—साध्व० ।

१६. रा—०मपोजयन् ।

१७. ल—तपोबलविशुद्धा सा गौतमस्य वशान्वगात् ।

भ— „ द्धां तां „ वशानुगां ।

---

†भ—०सीद्देवदुंदुभिनिस्वनः ।

गौतमश्च महातेजा दृष्ट्वा दिव्येन चक्षुषा । [२३पू

२२] स्वमाश्रमपदं राममागतं प्रत्यपूजयत् ॥२१॥[1] [N

समेत्य भार्यया चैव पूतयाऽहल्यया तदा । [N

२३] तयैव सहितो भूयस्तपस्तेपे महायशाः ॥२२॥[4] [२३उ

रामोऽपि परमां पूजां गौतमादृषिसत्तमात् ।

२४] अवाप्य विधिवत् तस्माज्जगाम मिथिलां प्रति ॥[6]२३॥ [२४

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[7] अहल्यादर्शनं नाम[8]
पञ्चचत्वारिंशः[9] सर्गः[10]॥ ४५[11]॥

---

१. ब ल भ—गौतमश्च† महातेजा अहल्यासहितः सुखी ।
रामं संपूज्य विधिवत्तपस्तेपे महातपाः ॥
२. रा—सुतया० ।
३. रा—तदैव । ज—तथैव ।
४. ल भ—नास्ति ।
५. ल भ—गौतमस्य महामुनेः ।
६. ल भ—सकाशाद्विधिवत्प्राप्य जगाम मिथिलां तदा ।
७. के ब—आदिकाण्डे ।
८. भ—अहल्यामुक्तिर्नाम ।
९. के—पंचाशत्तमः । रा ब भ—नास्ति । ज—सप्तत्रिंशः ।
१०. भ—सर्गाः ।
११. ज—॥३७॥ भ—॥३६॥
ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

---

†ल भ—गौतमस्तु ।

ततः प्रागुत्तरां[1] गत्वा दिशं रामः सलक्ष्मणः ।
१] विश्वामित्रं पुरस्कृत्य यज्ञवाटं ददर्श ह ॥१॥[2] [१
तं रामो मुनिशार्दूलं[3] दृष्ट्वा यज्ञमभाषत ।
२] अहो समृद्धिर्यज्ञस्य जनकस्य महात्मनः ॥२॥[4] [२
पृ३] बहूनीह[5] सहस्राणि नानादेशनिवासिनाम् ।[6]
दृश्यन्ते ब्राह्मणानां च निवासा[7] विविधाः कृताः[7] ॥[8]३॥[9] [३
४] देशः परीक्ष्यतां ह्यद्यो वत्स्यामो[10] यत्र वै सुखम्[10] ।[11] [४उ

१. ज—प्रागुत्तरं ।
२. अस्य श्लोकस्यादौ पाठोऽयमधिकः—
ब ल—विश्वामित्रं पुरस्कृत्य पश्यं देशं निमेस्तथा ।
भ— ,, ,, पश्यन्देशान्मिथिलास्तथा ।
३. ज—मुनिशार्दूल ।
४. ल भ—रामस्तु मुनिशार्दूलमुवाच सहलक्ष्मणः ।
साश्चर्यं सुसमृद्धोस्य जनकस्य †महाक्रतुः ॥
५. ल—बहवः शतसाहस्र्ये ।
६. भ—बहवः शतसाहस्रा नानादेशनिवासिनः ।
७. ज—निवासाश्च पृथक् कृताः ।
८. ल भ—ब्राह्मणानां समेतानां *वेदभाषाविचारिणां ।
९. अतः परमधिकः पाठः—
ल—यज्ञवाटाश्च बहवः शकटीशतसंकुलाः ।
भ—यज्ञभागाश्च ,, शकटीशत ,, ।
१०. के अ—वयम् । रा—वसम् ।
११. ल—देशो विधीयतां ब्रह्मन् यत्र वासं सुखी भवेत् ।
भ—देशोपि धीयतां ,, ,, वासः ,, ,,

†भ—महान् क्रतुः । *भ—देशभा०

इति[1] रामवचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महामना[2]: ॥४॥
५] निवेशमकरोद् देशे विविक्ते सलिला[3]प्लुते । [५
विश्वामित्रमृषिं प्राप्तं श्रुत्वा स मिथिलेश्वरः ॥[4]५॥
६] शतानन्दं पुरस्कृत्य पुरोहितम[5]कल्मषम् । [६
ऋत्विग्भिः सहितश्चान्यैरादा[6]यार्घ्यं त्वराऽन्वितः ॥[7]६॥
७] विश्वामित्राय सत्कृ[8]त्य ददौ मन्त्रपुरस्कृतम् । [७
प्रतिगृह्य सं[9] तां पूजां जनकान्मुनिसत्त[10]मः ॥७॥
८] पप्रच्छानामयं चैव यज्ञसामृद्ध्यमेव च [८
तांश्चैवान्यान् मुनीन् सर्वानागतान् स पुरोहितः ॥८॥[11]
९] यथान्या[12]यं यथायोग्यं पर्यपृच्छदनामयम् ।[13] [९
अथ राजा मुनिश्रेष्ठं[14] कृताञ्जलिर[15]भाषत ॥९॥

---

१. ल भ—रामस्य वचनं ।
२. ल भ—महायशा: ।
३. ल भ—सलिलाश्रिते ।
४. ल भ—विश्वामित्रं मुनिं प्राप्तं जनकः सह मंत्रिभिः ।
५. ल भ—पुरोधसमनिंदितम् ।
६. ब—०रामायार्घ्यं ।
७. ल भ—ऋत्विक् परिवृतस्तूर्णमर्घ्यमादाय धर्मवित् ।
८. ल भ—धर्मेण ।
९. ल भ—तु ।
१०. ल भ—जनकस्य महात्मन: ।
११. ल भ—पप्रच्छ कुशलं राज्ञो राष्ट्रे †वापि निरामयम् ।
तांश्चैव +समुनि: सर्वानुपाध्यायपुरोधस: ॥
१२. ब—यथान्याय्यं ।
१३. ल भ—समागच्छद् यथान्याय्यं*यथाविधयथार्चनम् ।
१४. ज—मुनिं श्रेष्ठं । भ—मुनिवरं ।
१५. रा—०रभाषित ।

---

†भ—चापि । +भ—सुमति: । *भ—यथान्यायं ।

१०] आसनं भगवन् क्लृप्त[1]मुपवेष्टुमिहार्हसि ।[2] [१०
जनके[3]नैवमुक्तो विश्वामित्रोऽथ[4] महामुनिः ॥१०॥
११] निषसाद ततश्चैनं स राजा सह मन्त्रिभिः । [११
उपविष्टमुपेत्येदं कृताञ्जलिरभाषत ॥[5]११॥ [१२
१२] अमृतस्यैव[6] संप्राप्तिरद्य मे भगवन्[7] मुने । [N
१३] अद्य यज्ञसमृद्धिर्मे सफला दैवतैः कृता ॥१२॥[8] [१३पू
धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे त्वं[9] महामुने ।
१४] यज्ञस्यावभृथं पुण्यं द्रष्टाऽसि सपदानुगः॥[10] १३॥ [१४
द्वादशाहं च शेषं मे यज्ञस्याहुर्द्विजातयः ।[11]

१. के रा ज ब—क्ल्यप्तमुप० ।

२. ल भ—आसने भगवानास्तां श्रमं मोक्तुमिहार्हसि× ।

३. ल भ—जनकस्य वचः श्रुत्वा निषसाद ।

४. ल भ—पुरोहितो द्विजाश्चैव ।

५. ल भ—आसने तु यथान्याय्य†मुपविष्टं यथाविधि ।

६. ज ब—अमृतस्येव । रा—अमृतसेव ।

७. ब—भगवां ।

८. ल भ—दृष्ट्वा नरपतिस्तत्र विश्वामित्रमथाब्रवीत् ।

अद्यायं सफलो यज्ञो महर्षे दैवतैः कृतः ॥

अद्य यज्ञफलं प्राप्तं तव सन्दर्शनान्मया ।

९. ल भ—मुनिपुंगवः ।

१०. ल भ—यज्ञावसाने* संप्राप्तो द्रष्टुं मुनिवरैः सह ।

११. ल भ—महर्षे द्वादशाहं तु शेषमाहुर्मनीषिणः ।

× भ—मोक्तुं त्वमर्हसि ।

† भ—यथान्यायमु० । * भ—यज्ञावसानं

१५ ततो भागार्थिनो देवानिह द्रक्ष्यस्युपागतान् ॥१४॥[1][2] [१५
उष्यतामिह[3] मत्प्रीत्यै सहैभिर्ब्रह्मवादिभिः।
१६] एतान्यहानि सुसुखं[4] ततो यास्यथ सत्कृताः ॥१५॥[5] [N
एतौ[6] च मुनिशार्दूल कुमाराविव पावकी।
१७] काकपक्षधरौ कस्य[7] किमर्थं चाभ्युपागतौ ॥१६॥ [२०
व्यूढोरस्कौ महाबाहू खड्गतूणधनुर्धरौ।
१८] अश्विनोः सदृशौ रूपे कस्यैतौ प्रियदर्शनौ ॥[8]१७॥ [१८
किमर्थं सुकुमाराङ्गाववरण्यं[9] संश्रितावुभौ।[10]
१९] बालावेवानवद्याङ्गौ श्रोतुं कौतूहलं मम ॥[11]१८॥ [N
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा जनकस्य महात्मनः[12]।
२०] न्यवेदयन्महात्मानौ सुतौ[13] दशरथस्य तौ ॥१९॥ [२४

---

१. ज—द्रक्ष्याम्युपा०।
२. ब—यज्ञं भागार्थिनो देवां द्रष्टुमर्हसि कौशिक।
ल भ—यज्ञभागार्थिनो देवान् ,, ,,
३. रा—उषितामिह।
४. रा ज—ससुखं।
५. ल भ—नास्ति।
६. ल भ—इमौ।
७. ल भ—वीरौ कस्येमौ मुनिपुंगव।
८. ल भ—अश्विनाविव रूपेण कस्येमौ देववर्चिनौ।
९. ज—०वारण्यं।
१०. ल भ—किमर्थं च मुनिश्रेष्ठ प्रपन्नौ दुर्गमाम्पथः*।
११. ल—बलावपहितौ ब्रह्मं श्रोतुमिच्छाम्यसंशयम्।
भ— ,, ब्रह्मन् श्रोतुमिच्छामि संशयं।
१२. ल भ—महामुनिः।
१३. ल भ—पुत्रौ।

---

* भ—दुर्गमान्पथ।

तदागमनमव्यग्रं राक्षसानां च तद्वधम्[1] ।
२१] सिद्धाश्रमनिवासं च विशालस्य च दर्शनम् ।।२०।। [२५
गौतमस्यापि शापान्तमहल्यायाश्च दर्शनम् ।
२२] रामस्य धनुषश्चैव जिज्ञासाऽर्थमुपागमम् ।।२१।।[3] [२६
इति सर्वं महातेजा जनकाय महात्मने ।[4]
२३] निवेद्य विररामाथ विश्वामित्रो महामुनिः ।।२२।।[6] [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकदर्शनं नाम
षट्चत्वारिंशः सर्गः ।।४६।।

१. ब ल भ—०मत्युग्रं ।
२. ज ल भ—तं ।
३. ल भ—गौतमाश्रमकार्यं च गौतमस्य च दर्शनम् ।
महाधनुषि जिज्ञासा कार्यं चैषां महात्मनाम् ।।
४. ल भ—एतत्सर्वं महातेजाः कौशिको जनकाय वै ।
५. ल भ—विररमाशु ।
६. ल भ—अत: परमाधिकः पाठः—
मुनिमध्ये स्थितः प्राज्ञो वसूनामिव पावकः ।
७. के रा ब—आदि काण्डे ।
८. के रा—नामैकपंचाशत्तमः । ज—नाम अष्टत्रिंशः ।
ब—नाम ।
९. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रस्य धीमतः ।
१] हृष्टरोमा भृशं भूत्वा शतानन्दो महातपाः ॥[2]१॥ [१
गौतमस्य सुतो ज्येष्ठस्तपसा द्योतितप्रभः ।
२] रामसन्दर्शनं प्राप्य विस्मयं परमं ययौ ॥२॥ [२
स निषण्णावुभौ दृष्ट्वा सदृशौ रामलक्ष्मणौ ।[6]
३] शतानन्दो मुनिश्रेष्ठं विश्वामित्रमभाषत ॥३॥ [३
अपि त्वया मुनिश्रेष्ठ मम माता तपस्विनी ।
४] दर्शिता राजपुत्रस्य रामस्य च महात्मनः ॥४॥ [४
अपि रामाय मे माता पूजाऽर्हाय महामुने ।
५] पूजां कृतवती सम्यगहल्या भृशदुःखिता ॥५॥[12] [५

---

१. ज—महामुनिः ।

२. ल भ—हृष्टरोमा महातेजाः क्षणेन समपद्यत ।

३. ज—ज्येष्ठस्तपसः ।

४. रा ज—द्योतितः प्रभुः ।

५. ल भ—परं विस्मयमागतः ।

६. ल भ—स निषण्णौ तु तौ दृष्ट्वा सुखासीनौ नृपात्मजौ ।

७. ल—मुनिश्रेष्ठो । ज—नास्ति ।

८. भ—०मित्रमुवाच ह । ज—नास्ति ।

९. ल भ—०ते मुनिशार्दूल । ज—मुनिश्रेष्ठ ।

१०. ल भ—राजपुत्राय ।

११. ल—तपोदीर्घमुपागता । भ—तमोदीर्घमुपागता ।

१२. ल भ—नास्ति ।

अपि रामाय कथितं पुरावृत्तं महामुने ।
६] मम मातुर्महाबुद्धे दैवेन दुरनुष्ठितम् ॥६॥[1] [६
अपि कौशिक माता मे सङ्गता गुरुणा पुनः ।
७] शापाग्निदग्धा पित्रा मे रामदर्शननिर्मला ॥७॥[2] [७
अपि प्रीतेन मनसा गुरुर्मे कुशिकात्मज[3] ।
८] पूतां दीर्घेण तपसा मातरं मेऽभ्यनन्दत[4] ॥८॥[5] [N
अपि मे गुरुणा ब्रह्मन् पूजितोऽसि[6] यथाऽर्हतः[7] ।
९] इहागतो[8] महाभाग पूजां प्राप्य महात्मनः ॥९॥ [९
तच्छ्रुत्वा[10] वचनं तस्य विश्वामित्रो महातपाः[9] ।
१०] प्रत्युवाच शतानन्दं[12] वाक्यं वाक्यविदां[13] वरः[11] ॥१०॥[14] [१०

१. ल भ—अपि माता वियुक्ता* मे तस्माच्छापात्सुदारुणात् ।
२. ल भ—अपि× कौशिक भद्रं ते गुरुणा चापि‡ संगता ।
माता मुनिगणश्रेष्ठ रामसंदर्शनादमु ॥
३. के—कुशिकात्मजा ।
४. के रा—मेभ्यनन्दन ।
५. ल भ—नास्ति ।
६. रा—पूजितासि ।
७. ल भ—यथार्हणम् ।
८. ज—इहागतौ ।
९. ल भ—महातेजाः ।
१०. ल भ—कृत्वा ।
११. ल—महात्मनां ।
१२. भ—शतानंदस्य धीमतः ।
१३. भ—वाक्यज्ञो वाक्यकोविदः ।
१४. ल—नास्ति ।

* भ—विमुक्ता । × ल—अवि । ‡ भ—वापि ।

नातिक्रान्तमिदं[1] ब्रह्मन् यत् कार्यं तत् कृतं मया ।
११] सङ्गता गुरुणा पत्नी भार्गवेणेव रेणुका ॥११॥[2] [११
तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य विश्वामित्रस्य धीमतः ।
१२] शतानन्दस्ततो[3] राममिदं वचनमब्रवीत् ॥१२॥ [१२
स्वागतं ते रघुश्रेष्ठ दिष्ट्या प्राप्तोऽसि[4] मे प्रभो ।
१३] विश्वामित्रेण सहितो यज्ञवाटं महात्मना ॥[5] १३॥ [१३
अचिन्त्यो ह्यसि[6] धर्मात्मा राम त्वममितद्युतिः[7] ।
१४] विश्वामित्रो महातेजा[8] यस्य ते परमो गुरुः ॥१४॥ [१४
नास्ति धन्यतरो राम त्वदन्यो[9] भुवि कश्चन ।
१५] यस्य ते हितकामोऽयं विश्वामित्रस्तपोनिधिः ॥[10] १५॥ [१५
श्रूयतां[11] च पुरावृत्तं कौशिकस्य महात्मनः ।

१. ब—०मिमं ।
२. भ—नातिक्रमो मुनिश्रेष्ठ सर्वमेतन्मया कृतं ।
संगता मुनिना पत्नी रेणुकेव महात्मना ॥
ल—नास्ति ।
३. ल भ—शतानंदो महातेजा रामं ।
४. ल भ—दृष्टोसि राघव ।
५. ल भ—विश्वामित्रं पुरस्कृत्य त्वं चाश्रममुपागतः ।
६. ल भ—ह्येष ।
७. ल भ—महर्षिरमितप्रभः ।
८. ल भ—०तेजास्त्वयं† परमा गतिः ।
'भ' पुस्तके पुनरपरहस्तेन शोधितः ।
९. ल भ—त्वयेह भुवि यस्य ते ।
१०. ल भ—गोप्ता कुशिकपुत्रस्ते येन तप्तं महत्तपः ।
११. ल भ—श्रूयतामभिधास्यामि ।

†भ—०स्त्वेयं ।

१६] यद्वीर्यो यत्प्रभावोऽयं यद्धर्मश्च महायशाः ।[2] [१६
राजाऽभूदेष धर्मात्मा दीर्घकालमरिन्दमः ॥१६॥
१७] धर्मज्ञश्च क्रियावांश्च प्रजानां पालने रतः । [१७
पितामहसुतस्त्वासीत् कुशो नाम महातपाः ॥१७॥
१८] कुशस्य पुत्रो बलवान् कुशनाभः सुधार्मिकः । [१८
कुशनाभसुतश्चासीद् गाधिरित्येव विश्रुतः ॥१८॥
१९] गाधेः पुत्रो महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः । [१९
विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा पालयन् मेदिनीमिमाम् ॥१९॥
२०] बहून् वर्षगणान् राम राजा राज्यमकारयत् । [२०
कदाचित् स महातेजा योजयित्वा वरूथिनीम् ॥२०॥
२१] अक्षौहिणीपरिवृतः परिचक्राम मेदिनीम् । [२१
सरितः पर्वतांश्चैव वनानि नगराणि च ॥२१॥

१. के रा ज—यद्वीर्यश्च ।
२. ल भ—यथाबलं यथावृत्तं तन्मे निगदतः शृणु ।
३. ब ल—वदान्यश्च । कृतज्ञश्च ।
४. ल—प्रजानां च हिते । भ—प्रजाभ्यश्च हिते ।
५. के रा ज—०सुतश्चासीत् ।
६. के रा—कुशनाभश्च । ज—कुशनाभस्तु ।
७. ल भ—कुशनाभसुतस्त्वासीत् ।
८. के रा ज—०धिर्नाम महामतिः ।
९. के रा ज—तस्य ।
१०. ल—पृथिवीमिमाम् ।
११. के रा ज—वर्षायुतान्यनेकानि ।
१२. रा ज ब ल भ—सु० ।
१३. के रा ज—षडंगिनीम् ।
१४. के—०परिवृता ।
१५. ल—पर्यटन्सकलां वसुंधराम् । भ—ययौ गच्छन्वसुंधरां ।

२२] विचरन् क्रमशो राजा आजगाम महायशाः । [२२
वसिष्ठस्याश्रमपदं नानापुष्पफलद्रुमम् ॥२२॥
२३] नानामृगगणाकीर्णं सिद्धचारणसेवितम् । [२३
देवर्षिगणसङ्कीर्णं ब्रह्मर्षिगणपूजितम् ॥२३॥
तपश्चरद्भिः संसिद्धैरग्निकल्पैर्महर्षिभिः । [२५
२४] सततं संकुलं श्रीमद् ब्रह्मकल्पैर्महात्मभिः ॥२४॥
अब्भक्षैर्वायुभक्षैश्च शीर्णपर्णाशनैस्तथा ।
२५] फलमूलाशिभिर्दान्तैर्जितक्रोधैर्जितेन्द्रियैः ॥२५॥ [२६
संप्रक्षालैरश्मकुट्टैर्दन्तोलूखलिभिस्तथा । [N
२६] ऋषिभिर्वालखिल्यैश्च जपहोमपरायणैः ॥२६॥ [२७पू

---

१. भ—विचिन्वन् ।

२. भ—तदागच्छन् ।

३. भ—०फलप्रभं ।

४. ल—०कीर्यं ।

५. ल भ—देवर्षिगणपूजितं ।

६. ल भ—बहुपुष्पफलं रम्यं यक्षराक्षसवर्जितम् ।

७. ल भ—देवदानवगन्धर्वकिंनरैरुपशोभितम् ।

८. ल—अतः परमधिकः पाठः—

प्रशान्तहरिणाकीर्णं नानाविहगनादितम् ।

९. ल भ—तपश्चरण० ।

१०. ल भ—०महात्मभिः ।

११. कै—०महर्षिभिः ।

१२. कै ल—अभक्षै० ।

१३. ल भ—०पर्णाशिभिस्तथा ।

१४. कै—०दिभिर्दान्तै० । ल भ—फलमूलाशनै० ।

१५. ल भ—०जितरोषै० ।

१६. भ—०भिस्तदा ।

१७. ल भ—०वालखिल्यैर्जप० ।

वसिष्ठस्याश्रमपदं ब्रह्मस्थानमनुत्तमम् ।

२७] अपश्यद्[1] यजतां श्रेष्ठो विश्वामित्रो महाबलः[2] ॥२७॥ [२८

वातोद्धूतं[3] तपनवाहनिभं नियम्य

वल्गावशेन तुरगं च शशांकशुभ्रम् ।

दिव्य[4]प्रभानिकरकुण्डललोलमान-

N] कर्णस्तुरंगमवरान्नृप उत्ततार ॥२८॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[5] वसिष्ठाश्रमवर्णनं[6] नाम[6]

सप्तचत्वारिंशः[7] सर्गः ॥ ४७ ॥[8]

१. ल भ—०जपतां ।

२. के—महाबलाः ।

३. ज—वातोद्धूतमुपवनवाहानिभं । ल—वातोद्गतं तपनवाहसमं ।
भ—वातोद्धूतं पवनवेगसमं ।

४. ल—दीप्यत्प्रभा० । भ—०कुंडलशोभमान० ।

५. के ब—आदिकाण्डे । भ—नास्ति ।

६. ल भ—०दर्शनं नाम । के ब रा—नास्ति ।

७. के रा ब—द्विपंचाशत्तमः । ज—एकोनचत्वारिंशः ।

८. ज—॥ ३९ ॥ भ—॥ ३७ ॥

N] वसिष्ठं तु तदा तस्मिन्नाश्रमे[1] मुनिसत्तमम्[2] । [N
दृष्ट्वा तु परमप्रीतो विश्वामित्रो महामना[3]ः ॥१॥

१] प्रणतो विनयाद् वीरो वसिष्ठं जपतां[4] वरम् । [१
स्वागतं चैव तवेत्युक्त्वा[5] वसिष्ठेन महात्मना ॥२॥

२] आसनं तेन विधिवत् प्रदत्तं जगतीपतेः[6] । [२
उपविष्टाय च तदा विश्वामित्राय धीमते ॥३॥

३] तस्यां[7] वन्यं[8] मुनिवरः फलमूलमुपाहरत्[9] । [३
प्रतिगृह्य वरां पूजां वसिष्ठाद् राजसत्तमः ॥४॥

४] तदाऽग्निहोत्रे[10] शिष्येषु पर्यपृच्छदनामयम् । [४
विश्वामित्रो महातेजा वनस्पतिगणे तथा ॥५॥

५] सर्वत्र कुशलं[11] चोक्त्वा वसिष्ठो मुनिसत्तमः । [५
सुखोपविष्टं राजानं विश्वामित्रं महातपाः ॥६॥

---

१. रा—तस्मिन्नाश्रमं ।
२. कै—॰सत्तम ।
३. ल—महामुनिः ।
४. कै ज—यजतां । रा—वदतां ।
५. ल भ—भवतेत्युक्त्वा ।
६. ल भ—जगतीपती ।
७. रा—यस्यां । ल—वृष्यं ।
८. ल—वंयं ।
९. कै—॰मुपाहरन् ।
१०. रा—तदग्नि॰ ।
११. ल—कुशिकं ।

६] पप्रच्छ जपतां श्रेष्ठो गाधेयं ब्रह्मणः सुतः । [६
कच्चित् ते कुशलं राजन् कच्चिद् धर्मेण रञ्जयन् ॥७॥

७] प्रजाः पालयसे नित्यं राजवृत्तेन धार्मिक । [७
कच्चित् ते सुभृता भृत्याः कच्चित् तिष्ठन्ति शासने ॥८॥

८] कच्चित् ते विजिता सर्वे रिपवो रिपुसूदन । [८
कच्चित् ते कुशलं कोशे मित्रेषु च परन्तप ॥९॥

९] कुशलं ते नरव्याघ्र पुत्रपौत्रेषु चानघ । [९
सर्वत्र कुशलं राजा वसिष्ठं प्रत्युवाच ह ॥१०॥

१०] विश्वामित्रो महातेजास्तमथो विनयान्वितः । [१०
कृत्वा तौ सुचिरं कालं धर्मिष्ठां तां कथां तदा ॥११॥

११] मुदा परमया युक्तावभिनन्द्य परस्परम् । [११
ततो वसिष्ठो भगवान् कथान्ते मुनिसत्तमः ॥१२॥

१२] विश्वामित्रमिदं वाक्यमुवाच प्रहसन्निव । [१२
आतिथ्यं कर्तुमिच्छामि बलस्यास्य महाबल ॥१३॥

१३] तव चैवाप्रमेयस्य यथाऽर्हं प्रतिगृह्यताम् । [१३
सत्क्रियां हि भवांस्तात प्रतीच्छतु ममोद्यताम् ॥१४॥

---

१. रा—०जगतां । ल भ—प्रपृच्छजपतां ।

२. कै रा—धार्मिकः ।

३. भ—पुत्रेषु ।

४. ब ल भ—राज्ये ।

५. ल भ—भवतः ।

६. ल भ—महातेजा वसिष्ठं ।

७. ल—बहुवृत्तां तु संकथाम् ।
भ—बहुवृत्तांतसंकथां ।

८. कै ल—०भिवंद्य ।

९. ल—प्रहसन्निह ।

१०. ल भ—ममोद्यतां ।

१४] राजंस्त्वमतिथिश्रेष्ठः पूजनीयः प्रयत्नतः । [१४
एवमुक्तो वसिष्ठेन विश्वामित्रो महीपतिः ॥१५॥
१५] कृतमित्यब्रवीद् राजा पूजां चानेन मे कृता । [१५
फलमूलेन भगवन् विद्यते यत् तवाश्रमे ॥१६॥
१६] पाद्येनाचमनीयेन भगवन् दर्शनेन च । [१६
सर्वथा च महाबाहो पूजाऽर्हेणास्मि पूजितः ॥१७॥
१७] गमिष्यामि नमस्तुभ्यं पश्य मैत्रेण चक्षुषा । [१७
एवं ब्रुवन्तं राजानं वसिष्ठः पुनरेव च ॥१८॥
१८] न्यमन्त्रयदमेयात्मा पुनः पुनरुदारधीः । [१८
बाढमित्येव गांधेयो वसिष्ठं प्रत्यभाषत ॥१९॥
१९] यथा प्रियं भगवतस्तथाऽस्तु मुनिसत्तम । [१९
एवमुक्तो महातेजा वसिष्ठो जपतां वरः ॥२०॥
२०] आजुहाव ततः प्रीतः शबलां धुतकल्मषः । [२०
एह्येहि शबले क्षिप्रं शृणु चैव वचो मम ॥२१॥

१. भ—प्रजा ।
२. ल भ—नाद्येन । रा—चाद्येन ।
३. भ—भगवान्विद्यते ।
४. ल—पाद्ये आचमनीये च ।
५. कै भ—भगवद्दर्शनेन ।
६. ल—सर्वदा ।
७. ज—महाबुद्धे ।
८. ब ल भ—ब्रुवन्तं ।
९. रा—निमंत्र० । ल भ—न्यमंत्रयत धर्मात्मा ।
१०. कै ब—०मित्येवागाधेयो ।
११. रा—जगतां ।
१२. कै ज ल भ—कल्माषां । रा—कल्मकां ।
१३. ल भ—धूतकल्मषः ।
१४. ब ल—शृणुष्व वचनं । भ—शृणु चेदं वचो ।

२१] सबलस्यास्य राजर्षेः कर्तुं व्यवसितो ह्ययम्[1] ।
भोजनेन महार्हेण[2] सत्कारं[3] तद्विधत्स्व मे ॥२२॥ [२१
२२] यस्य यस्य यथाकामः[4] षड्रसेष्वभिवांछितः[5] ।
तत् सर्वं कामधुग्[6] देवि पूरयस्व[7] कृते मम ॥२३॥ [२२
वरेणान्नेन पानेन[8] चोष्यलेह्येन चाप्यमुम्[9] ।
२३] राजानं सपरीवारं[10] शबले[11] मत्प्रियेच्छया ॥२४॥ [२३
N] यथा सर्वो जनस्तुष्येत् स्वाशितस्तु[12] यथा भवेत् । [N
एवमुक्ता वसिष्ठेन शबला शत्रुसूदन[13] ॥२५॥
५४,१] विदधे कामधुक्[14] कामं यथा यस्येप्सितं तथा । [५३,१
इक्षूंश्च मधु[15] लाजांश्च[16] मैरेयं च वरासवम् ॥२६॥

---

१. ब—०स्यहं ।
२. ल—महार्घ्येण ।
३. ल—संकरं ।
४. रा ल भ—यथाकामं ।
५. रा—षड्सेषुभिवां० । ल—षट्सुभीष्टो रसेष्विह ।
भ—यत्रभीष्टो रसेष्विह ।
६. ज ल—कामदुग्देवि ।
७. ज ल भ—पूरय त्वं ।
८. ज—मानेन ।
९. ल—चाप्ययम् । भ—चाप्ययं ।
१०. ल—सुपरीवारं ।
११. ल भ—सबलो । भ—पुनः कृतः ।
१२. ब—स्वशितस्तु । ल भ—स्वाशितश्च ।
१३. ल—रघुनंदन ।
१४. कै—कामयुक्कामं ।
१५. कै—मधु० ।
१६. रा ज—०लाजांश्च । ल—०जातं च ।

२] एतानि च महार्हाणि भक्ष्यांश्चोच्चावचान् बहून् । [२
वाष्पाढ्यस्यौदनस्यापि राशीन् पर्वतसन्निभान् ॥२७॥
३] मिष्टान्नानि तथाऽपूपान् दधिकुल्यास्तथैव च । [३
नानास्वादुरसानां च षाडवानामितस्ततः ॥२८॥
४] भाजनानि सुपूर्णानि गौडानां च सहस्रशः । [४
सर्वमासीत् सुसन्तुष्टं हृष्टपुष्टजनायुतम् ॥२९॥
५] विश्वामित्रबलं राम वसिष्ठेनाभिनन्दितम् । [५
यस्य यस्य यथा कामस्तस्य तस्य तथा तथा ॥३०॥ [N
६] अभिवर्षति कामांश्च शबला शत्रुसूदन । [N
एवमस्य बलं सर्वं सर्वकामैः प्रपूजितम् ॥३१॥
७] विश्वामित्रस्य राजर्षे हृष्टपुष्टजनायुतम् ।
सान्तःपुरः सहामात्यः परितुष्टो नृपोत्तमः ॥३२॥ [६

१. भ—पात्राणि ।
२. ल—महार्घाणि ।
३. ल भ—०दनस्यात्र ।
४. ल भ—मृष्टान्नानि ।
५. ज—वाडवाना० । ल—०मितस्तथा ।
भ—षड्रसाना० ।
६. ज—सुपर्णानि ।
७. रा—०स्वसंतुष्टं । भ—सर्वमासीत्तु संहृष्टं
८. भ—०जनाकुलं ।
९. रा—सर्व । ज—नाम ।
१०. भ—वशिष्ठेना० ।
११. ल भ—कामं तस्य ।
१२. भ—सुपूजितं ।
१३. ल भ—सर्वं तत्रास्य ।
१४. रा ब—राजर्षेर्हृष्टपुष्ट० ।
१५. भ—सांतःपुर० ।

८] सपौरो[1] मन्त्रिसहितः सभृत्यबलवाहनः ।
युक्तः परमहर्षेण वसिष्ठमिदमब्रवीत् ॥३३॥ [७
९] पूजितो[2]ऽहं त्वया ब्रह्मन्[3] पूजनार्हेण कामतः ।
श्रूयतामभिधास्यामि वाक्यं वाक्यविदां वर ॥३४॥ [८
१०] गवां शतसहस्रेण दीयतां शबला मम । [९
रत्नं हि भगवन्नेषा[4] रत्नहारी हि पार्थिवः ॥३५॥
११] तस्मान्मे शबलां देहि धर्मतो[5] द्विजसत्तम । [१०
एवमुक्तस्तु[6] भगवान्[7] वसिष्ठो[8] मुनिसत्तमः ॥३६॥
१२] विश्वामित्रेण धर्मात्मा[9] प्रत्युवाच महीपतिम् । [११
नाहं शतसहस्रेण गवां कोटिशतैरपि[10] ॥३७॥
१३] राजन् दास्यामि शबलां राशिभी[11] रजतस्य हि[12] । [१२
न परित्यागमर्हेयं मत्सकाशादरिन्दम[13] ॥३८॥
१४] शाश्वती शबलेयं[14] मे कीर्तिरात्मवतो[15] यथा । [१३

---

१. ल भ—पौरैः स ।
२. ब—पूजितोयं ।
३. भ—महाब्रह्मन् ।
४. कै—०वन्नेषा । ल भ—०वन्नेतद्रत्न० ।
५. ल—ममैषा धर्मतो द्विज । भ—ममैषा धर्म्मतो द्विज ।
६. रा—एवमुक्त तु ।
७. रा—भगवन् ।
८. भ—वशिष्ठो ।
९. भ—धर्म्मात्मा ।
१०. ल भ—नापि कोटिशतैर्गवाम् ।
११. रा भ—राशीभी ।
१२. ल—ह ।
१३. ज ब—मत्सकाशमरिन्दम ।
१४. कै—शकलेयं । रा—शबलेयं ।
१५. रा—०रात्मवृत्तो ।

अत्र कव्यं च हव्यं च[1] प्राणयात्रा तथैव मे ॥३९॥

१५] आसन्नम[2]ग्निहोत्रं च बलिर्होमै[3]स्तथैव च । [१४

स्वाहाकारवषट्कारौ विद्याश्च विविधा नृप ॥४०॥

१६] आपन्नो[4] ह्यत्र राजर्षे सर्वमन्यदसंशयम् । [१५

पू१७] सर्वस्वमेतत्[5] सत्यं[6] ते मम पुष्टिकरं तथा ॥४१॥ [१६पू

वसिष्ठेनैवमुक्तस्तु विश्वामित्रोऽब्रवीत् ततः ।

१८] संरब्धतरमत्यर्थं[7] वाक्यं वाक्यविशारदः[8] ॥४२॥ [१७

सुवर्णकक्ष्याग्रैवेयान्[9] सर्वाभरणभूषितान् ।

१९] ददामि कुञ्जरांस्तुभ्यं सहस्राणि चतुर्दश ॥४३॥ [१८

हैरण्यानां तथाऽश्वानां श्वेतानां वै[10] चतुर्युजाम् ।

२०] लक्षणैरुपपन्नानां[11] किङ्किणीजालमालिनाम् ॥४४॥ [१९

हयानां देशजातीनां[12] कुलजानां महौजसाम् ।

२१] सहस्रमेकं दश च ददामि तव सुव्रत ॥४५॥ [२०

---

१. ल—हव्यं च कर्तव्यं । भ—हव्यं च कव्यं च ।

२. ब ल—आयत्तमग्नि० । भ—आयत्तम० ।

३. कै—बहिर्होमस्त० । ज ल—बलिहो० ।

४. रा—आसन्ना० । ब ल—आयत्ता० । भ—आयत्तास्तत्र ।

५. ल भ—सर्वस्वमेव ।

६. ब—सदा । क—मुदा ।

७. ल—संरम्भतरमत्यर्थं ।

८. ल—वाक्यविदां वर ।

९ रा—स्ववर्णकक्षाग्रै० । ज—सुवर्णकक्षाग्रैवेयान् ।

ल—हैरण्यकक्ष्याग्रै० । भ—हैरण्यकक्षाग्रै० ।

१०. ल भ—च ।

११. ज—अश्वाधैरुप० ।

१२. रा—देशजातीनां । ज ल भ—देशजाता० ।

नानावर्णविभक्तानां वयःस्थानां तथैव च ।
२२] ददाम्येकां गवां कोटिं दीयतां शबला मम ॥४६॥ [२१
एवमुक्तस्तु भगवान् विश्वामित्रेण धीमता ।
२३] नैव दास्यामि शबलामिति राजानमब्रवीत् ॥४७॥ [२३
उ२४] एतदेव हि मे सर्वमेतदेवं हि जीवितम् । [२४उ
दर्शश्च पौर्णमासश्च यज्ञश्चैवाप्तदक्षिणः ॥४८॥
२५] एतदेव हि मे राजन् क्रियाश्च विविधास्तथा । [२५
पू२६] एतन्मूलाः क्रियाः सर्वा मम राजन् न संशयः ॥४९॥ [२६पू

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[11] वसिष्ठविश्वामित्रसंवादे[12] धेनुप्रभावो नाम अष्टचत्वारिंशः[13] सर्गः[14] ॥४८॥

---

१. ल भ—०विरक्तानां ।
२. रा—ददाम्येकां । ज—दास्याम्येकां ।
३. रा—भगवन् ।
४. भ—वै तदा
५. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
एतदेव हि मे धर्ममेत†देवाहि मे धनम् ।
६. भ—सत्यमे० ।
७. ज ल भ—दर्शश्च ।
८. ल—पौर्णमासी च ।
९. रा—०वाप्तदक्षिणम् ।
१०. ल भ—एतत्पूर्वाः ।
११. कै ब—आदिकांडे ।
१२. ल भ—नास्ति ।
१३. कै—चतुष्पंचाशत्तमः । रा—चतुर्पंचाशत्तमः ।
ज—चत्वारिंशः । ल भ—नास्ति ।
१४. भ—॥१८॥

---

† भ—सर्वमेत० ।

कामधेनुं वसिष्ठो हि न तत्याज यदा मुनिः ।
१] ततोऽस्य शबलां राजा विश्वामित्रस्तदाऽहरत् ॥१॥ [१
नीयमानां तु शबला राम राज्ञा बलीयसा ।
२] ध्यायन्ती चिन्तयामास रुदंती शोकविह्वलाँ ॥२॥ [२
परित्यक्ता वसिष्ठेन किमहं सुमहात्मना ।
३] सोऽहं दीनां राजभृत्यैर्ह्रियेँ[7] परमदुःखिता ॥३॥ [३
किं मयाऽपकृतं तस्य महर्षेर्भावितात्मनः ।
४] यन्मामनागसं साध्वीं भक्तां त्यजति धार्मिकः ॥४॥ [४
इति सा चिंतयित्वा तुं निःश्वस्य च पुनः पुनः ।
५] प्रययावेथं वेगेन वसिष्ठं प्रति राघव ॥५॥ [५
निर्धूयं तान् राजभृत्यान् शतशोऽथ सहस्रशः ।

---

१. ज—नीयमानस्तु ।
२. ब ल—रुदंती ।
३. ल भ—शोककर्षिता ।
४. ब—किमर्थं ।
५. ल भ—याहं ।
६. ल—भृत्या । भ—हृता ।
७. ब—ह्रियै । भ—ह्रीये ।
८. रा—०पहृतं ।
९. ल—च ।
१०. ल भ—प्रययौ साथ ।
११. ल भ—विधूय ।
१२. भ—राजभृतः ।

६] जगामानिलवेगा सा पादमूलं महात्मनः ॥६॥ [६
गत्वा तु रुदती शोकादिदं वचनमब्रवीत् ।
७] शोकसन्तप्तहृदया श्वसन्ती च सुदुःखिता ॥७॥ [७
किं मयाऽपकृतं ब्रह्मंस्त्वयि ब्रह्मविदां वर ।
N] यन्मामनागसं शिष्टां भक्तां त्यजसि धार्मिक ॥८॥ [N
N] श्रुत्वा तु शबलावाक्यं वसिष्ठ इदमब्रवीत् । [९ पू
न त्वां त्यजामि शबले नहि मेऽपकृतं त्वया ॥९॥
१०] एष त्वां नयते राजा बलान्मम महाबलः । [१०
न हि तुल्यं बलं भद्रे राज्ञो मम विशेषतः ॥१०॥
११] बली राजा क्षत्रियश्च पृथिव्याः पतिरेव च । [११
इयमक्षौहिणी पूर्णा गजवाजिरथाकुला ॥११॥
१२] पत्तिध्वजशरौघैश्च तथैव बलवत्तरैः । [१२

१. ल—महात्मना ।
२. कै—रुदती ।
३. ल—सबाष्पा च । भ—स्वसा यद्वत् ।
४. ल भ—धर्मभृतां ।
५. रा—वसिष्ठमिद० । ल—वसिष्ठश्चैवमब्रवीत् । भ—वसिष्ठश्चेदम० ।
६. रा—तु ।
७. ल—त्यजसि ।
८. रा—मे परमं ।
९. भ—विप्रे ।
१०. च ल—राज्ञां विप्रैर्महाबलैः । भ—क्षत्रियै सुमहाबलैः ।
११. ल—शरौघैश्च । भ—०रथौघैश्च ।
१२. ल—यथैव । भ—चैव ।
१३. ज—बलवत्तराः ।

N] विश्वामित्रो महावीर्यस्तेजश्चास्य दुरासदम् ॥१२॥ [N
एवमुक्ता वसिष्ठेन प्रत्युवाच विनीतवत्।
१३] वचनं वचनज्ञा सा ब्रह्मर्षिममितप्रभम् ॥१३॥ [१३
न बलं क्षत्रियस्याहुर्ब्राह्मणा बलवत्तराः।[३]
१४] ब्रह्मन् ब्रह्मबलं दिव्यं क्षात्रात् तु बलवत्तरम् ॥[४]१४॥ [१४
अप्रमेयं बलं तेऽस्ति नायं तु बलवत्तरः।
१५] विश्वामित्रो महातेजांस्तेजस्तव दुरासदम् ॥[८]१५॥ [१५
नियुङ्क्ष्व मां महातेजस्त्वं ब्रह्मबलवत्तरम्।[११]
१६] बलं दर्पं च यावद्धि नाशयामि दुरात्मनः ॥१६॥ [१६
एवमुक्तस्तया राम वसिष्ठः सुमहातपाः।
१७] सृज त्वमिति होवाच बलं परबलार्दनम् ॥१७॥ [१७
तस्या हंभारवोत्सृष्टाः पह्लवाः शतशो नृपाः।

१. ल—०तेजस्तु च। भ—०तेजसा च।
२. भ—दुरासदः।
३. ल—न बलं क्षत्रिये प्राहुर्ब्राह्मणो बलवत्तरः।
भ—न बलं क्षत्रियस्यास्य ब्राह्मणो " ।
४. ल भ—क्षत्रात्तु।
५. के रा ज—नास्ति।
६. ल—नायं हि। भ—नान्योस्ति।
७. रा ज—महातेज०।
८. ल भ—नास्ति।
९. रा—नियुंक्ष्व।
१०. ल भ—ब्रह्मबलसंवृतः।
११. ल—अतः परमाधिकः पाठः—
ब्रह्मन् ब्रह्मबलं दिव्यं क्षत्रात्तु बलवत्तरम्।
१२. भ—वसिष्ठः।
१३. भ—परबलार्दन।
१४. ल भ—शतशस्तदा।

१८] अनाशयन् बलं सर्वं विश्वामित्रस्य पश्यतः ॥१८॥ [१६
राजा तु परमायस्तः क्रोधविस्तारितेक्षणः ।[1]
१६] पह्लवान् नाशयामास शस्त्रैरुच्चावचैस्तथा ॥१६॥[2] [२०
विश्वामित्रहतान् दृष्ट्वा पह्लवान् शतशस्तदा ।
२०] भूय एवासृजद् घोरान् शकान् यवनमिश्रितान्[3] ॥२०॥ [२१
तैरासीदावृता[4] भूमिः शकैर्यवनमिश्रितैः ।[5]
२१] प्रधावद्भिर्महावीरैः[6] पद्मकिञ्जल्कसन्निभैः ॥२१॥ [२२
पू२२] दीर्घासिपट्टिशधरैर्हेमवर्मावृतैः[7] । [२३पू
N] शैलस्थैर्विकृताकारैर्भीमवेगपराक्रमैः ॥२२॥ [N
उ२२] निर्दग्धं तद्बलं सर्वं प्रदीप्तैरिव पावकैः । [२३उ
उ२३] अथास्त्राणि महातेजा विश्वामित्रो ह्यवासृजत् [२४पू
N] येषां विसृज्यमानानां त्रस्येदपि[8] शतक्रतुः ॥२३॥ [N

इत्यार्षे रामायणे[9] बालकाण्डे[10] कामधेनुप्रकोपो नाम[10]
एकोनपंचाशः[11] सर्गः ॥४९॥[12]

---

१. ल भ—क्रोधपर्याकुलेक्षणः ।
२. रा—पह्लवान् ।
३. रा—यवनव्यमिश्रितान् ।
४. ल—०रासीत्संभृता । भ—०संवृता ।
५. ल—सर्वा । भ—सेना ।
६. ल भ—०महावीर्यैः ।
७. ल—हेमवर्णैरिवावृता । भ—रिवावृतं ।
८. रा ज—त्रस्येदपि । के—पुनः शोषितः ।
९. के ब—नास्ति ।
१०. के रा ब—नास्ति ।
११. के— पंचपंचाशत् । रा ब—पंचपंचाशः ।
ज—एकचत्वारिंशः ।
१२. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

ततस्तान् व्याकुलान् दृष्ट्वा विश्वामित्रास्त्रमोहितान् ।
१] वसिष्ठश्चोदयामास त्वं धेनो सृज योगिनः ॥१॥ [१
तस्या हुंभारवोज्जाताः कांभोजा रविसन्निभाः ।
२] उरसस्त्वभिसंजाताः पह्लवाः शस्त्रपाणयः ॥२॥ [२
योनिदेशाच्च यवनाः शकृत्स्थानाच्छकास्तथा ।
३] म्लेच्छास्तु रोमकूपेभ्यस्तुषारा: सकिरातकाः ॥३॥ [३
तैस्तु निःषूदितं सैन्यं विश्वामित्रस्य तत्क्षणात् ।
४] सपदातिगणं साश्वं सरथं रघुनन्दन ॥४॥ [४
दृष्ट्वा निर्षूदितं सैन्यं वसिष्ठेन महात्मना ।
५] विश्वामित्रसुतानां च शतं नानाविधायुधम् ॥५॥ [५

१. ल भ—वसिष्ठो नोदयामास ।

२. ल—हुंभारवाज्जाताः । भ—हुंभारवोत्सृष्टाः ।

३. ल—हृदयादभिसंजाताः । भ—हृदयादभिसंजाताः ।

४. ल—कांभोजाः । भ—कांबोजाः ।

५. ल—योनिदेशाच्च ।

६. ल भ—शकृत्स्थानात्तथा शकाः ।

७. भ—०स्तुखराः ।

८. कै रा—०निष्पूदितं । ज—निसूदितं ।
ल—तैस्तैर्निसूदितं । भ—तथैर्निसूदितं ।

९. ब ल भ—सपदातिगवं ।

१०. ब—निःसूदितं । भ—निषूदितं ।

११. ब—नानाविधायुधं ।

अभ्यधावत् सुसंरब्धं[1] वसिष्ठं जपतां[2] वरम् । [५
६] हुंकारेणैव तान् सर्वान् निर्ददाह महामुनिः ॥ ६॥ [६
गजाश्वरथपादाता वसिष्ठेन महात्मना ।
७] भस्मीकृता मुहूर्तेन विश्वामित्रसुतास्तदा ॥७॥ [७
दृष्ट्वा विनाशितान् पुत्रान् भग्नं च सुमहद्बलम्[3] ।
८] सव्रीडश्चिन्तयानश्च[4] विश्वामित्रोऽभवत् तदा[5] ॥८॥ [८
समुद्र इव निर्वेगो भग्नदंष्ट्र इवोरगः[6] ।
९] उपरक्त इवादित्यः सद्यो निःश्रेष्ठतां[7] गतः ॥९॥ [९
हतपुत्रबलो दीनो लूनपक्ष इव द्विजः ।
१०] हतामर्षो[8] हतोत्साहो निर्वेगः[9] समपद्यत[10] ॥१०॥ [१०
पुत्रमेकं तु राज्ये च नियुज्य परिपाल्यताम् ।[11]
११] [12]पृथिवीति महातेजा वनमेवान्वपद्यत ॥११॥ [११
गत्वा हिमवतः पार्श्वं किन्नरैरुपशोभितम् ।

१. ल भ—सुसंक्रुद्धं ।
२. रा—जयतां ।
३. भ—सुमहाबलं ।
४. रा भ—०श्चिंतयामास ।
५. भ—०मित्रस्तदानघ ।
६. भ—भग्नदंत ।
७. भ—निःप्रभतां ।
८. के—हतामाप्यो । रा—हतामाप्यो
९. भ—निर्वेदं ।
१०. के ल—समुपपद्यत ।
११. भ—पुत्रमेकं तु राज्याय नियोज्य परिपालने ।
१२. भ—पृथिवी वीरधर्मेण ।

१२] महादेवप्रसादार्थमतप्यत[1] महत्तपः ॥ १२॥ [१२
ऊर्ध्वबाहुः स राजर्षिः पादाङ्गुष्ठाग्रसंस्थितः।
N] अभक्षयद् वर्षशतं वायुमात्रं भुजङ्गवत् ॥१३॥ [N
तत् तस्य तादृशं दृष्ट्वा तपस्त्रैलोक्यपावनम्[2]।
N] प्रीतात्मा[3] स्वयमेवास्य स्वयम्भूर्दर्शनं ययौ[4] ॥[5] १४॥ [N
उ१३] आगत्य[6] वरदो देवो विश्वामित्रमभाषत। [N
किमर्थं क्रियते[7] राजंस्तपो ब्रूहि चिकीर्षितम् ॥१५॥[8]
१४] वरदोऽस्मि वरो यस्ते कांक्षितः[9] सोऽभिधीयतां[10]। [१४
एवमुक्तस्तु देवेन विश्वामित्रो महातपाः ॥१६॥[11]
१५] प्रणिपत्य महादेवमिदं वचनमब्रवीत्। [१५
यदि तुष्टोऽसि मे देव धनुर्वेदः प्रदीयताम् ॥ १७॥[12]

१. ल—देवानां हि प्रसा०।
भ—०प्रसादार्थं तपस्तेपे सुदुःकरं।
२. ल भ—०लोक्यतापनम्।
३. रा—प्रेतात्मा।
४. ब ल—ददौ।
५. भ—केनचित्त्वथ कालेन महादेवो वृषध्वजः
६. ब—प्रादुर्भूय०।
७. भ—तप्यते।
८. भ—विवक्षितं।
९. ल—नास्ति।
१०. भ—कांक्षितोऽस्त्वभिधीयतां।
११. ल—नास्ति।
१२. ल—स तं प्रणम्य विधिवत्प्रणतमभाषत।
यदि तुष्टो महादेव धनुर्वेदो ममागत ॥

१६] साङ्गोपाङ्गः सोपनिषत् सरहस्यस्तथैव च [१६

यानि देवेषु चास्त्राणि दानवेषु तथा नृषु ॥१८॥

१७] गन्धर्वयक्षरक्षःसु प्रतिभान्तु च तानि मे ।

भवत्प्रसादाद्भवतु देवदेव ममेप्सितम् ॥१९॥ [१७

१८] एवमस्त्विति देवेशो वाक्यमुक्त्वा दिवं ययौ । [१८

प्राप्य चास्त्राणि दिव्यानि विश्वामित्रो महातपाः ॥२०॥

१९] हर्षेण महताऽऽविष्टो दर्पपूर्णस्तथाऽभवत् । [१९

विवर्धमानो वीर्येण समुद्र इव पर्वणि ॥२१॥

२०] हतमेव तदा मेने वसिष्ठमृषिसत्तमम् । [२०

आगत्य चाश्रमपदं तान्यस्त्राणि ततोऽसृजत् ॥२२॥

२१] तैस्तत् तपोवनं सर्वं निर्दग्धमभवत् तदा । [२१

---

१. ल—सरहस्यः प्रदीयतां । भ—सरहस्यो वृषध्वज ।

२. ल—वेदेषु ।

३. ब ल—तथर्षिषु । भ—सुरारिषु ।

४. भ—यक्षगंधर्वरक्षस्सु ।

५. भ—तव प्रसादाद्भगवन् ।

६. भ—एवमुक्तस्तु देवेश तथेत्युक्त्वा दिवं गतः ।

७. ल भ—राजर्षिर्विश्वामित्रो ।

८. भ—महायशाः ।

९. भ—महता युक्तो ।

१०. रा—विवर्धमाणो ।

११. ल—॰तदाक्षासीद् । भ—हतं मेने तदा धीमान् ।

१२. ल—आगम्य । ज—आगत्या ।

१३. भ—मुमोचास्त्राणि ।

१४. ल—ततोपवनम् । भ—तस्य सः ।

उदीर्यमाणमेवं तद् विश्वामित्रस्य धीमतः ॥२३॥

२२] दृष्ट्वा विप्राश्च ते भीता ऋषयः शतशस्तथा । [२२
वसिष्ठस्य च ये शिष्यास्तथैव मृगपक्षिणः ॥ २४॥

२३] प्राद्रवन्त भयोद्विग्ना दिशः सर्वे सहस्रशः । [२३
वसिष्ठस्याश्रमपदं शून्यमासीन्महात्मनः ॥२५॥

२४] मुहूर्तं चैव निःशब्दमासीद् वै रघुनन्दन । [२४
अवदच्च वसिष्ठस्तान् मा भैष्टेति मुहुर्मुहुः ॥२६॥

२५] नाशयाम्येष गाधेयं नीहारमिव भास्करः । [२५
एवमुक्त्वा महातेजा वसिष्ठो जपतां वरः ॥२७॥

२६] विश्वामित्रं तदा वाक्यं सरोषमिदमब्रवीत् । [२६
आश्रमं चिरसंवृद्धं यद् विनाशितवानसि ॥२८॥

---

१. भ—०मेवं तु ।
२. ज—भीतारच । ल—विप्रारच । ।
३. ज ल—विप्रा ।
४. ल—शतशस्तदा ।
५. भ—दृष्ट्वा विप्रा सुता भीता ऋषयोथ सहस्रशः ।
६. भ—नास्ति ।
७. ल—विप्राद्रवंस्ततो[थो]द्विग्ना ।
८. भ—मुहूर्तमिव ।
९. ल—०मासीच्चरणसन्निभं ।
   भ—०मासीदीरिणसंनिभं ।
१०. भ—मब्रवीच ।
११. फै—भैष्टेति ।
१२. भ—वदतां ।
१३. ज—विश्वामित्रमिदं ।
१४. भ—सरोषमिदम० ।
१५. ल—यदि नाशितवानसि ।

२७] दुराचारोऽसि संमूढे[1] तस्मात् त्वं न[2] भविष्यसि[2] । [२७
इत्युक्त्वा परमक्रुद्धो[3] दण्डं[4] जग्राह सत्वरः ।
२८] सधूममिव कालाग्निं यमदण्डमिवापरम् ॥[5]२९॥ [२८

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[6] वसिष्ठाश्रमदाहो[7] नाम
पञ्चाशः[8] सर्गः[9] ॥ ५० ॥

१. भ—मे मूढ ।
२. भ—विनंक्षसि
३. रा—परम० क्रुद्धो ।
४. भ—दंडमुद्यम्य संस्थितः ।
५. भ—सधूम इव कालाग्निर्यमदण्ड इवापरः ।
६. भ—आदिकांडे ।
७. के रा—वसिष्ठाश्रमदाहम् । भ—वसिष्ठाश्रमदाहः ।
ङ—०श्रमविनाशो नाम ।
८. के रा—षट्पंचाशत्तमस् । ज—द्विचत्वारिंशः ।
भ—नास्ति ।
९. भ—नास्ति ।

एवमुक्तो वसिष्ठेन विश्वामित्रो महाबलः ।
१] आग्नेयमस्त्रमुत्क्षिप्य तिष्ठ तिष्ठेति[1] चाब्रवीत् ॥१॥ [१
तस्य तद्वचनं श्रुत्वा वसिष्ठः प्रत्यभाषत । [२उ
२] स्थितोऽस्म्येष[2] क्षत्रबन्धो[3] यद् बलं तन्निदर्शय[4] ॥२॥
नाशयाम्येष ते[5] दर्पमस्त्रस्याप्यस्य गाधिज[6] । [३
३] क्व च क्षात्रं[7] बलं मूढ[8] क्व च ब्राह्मं महद् बलम्[9] ॥३॥
पश्यं[10] ब्राह्मं बलं दिव्यं मम क्षत्रियपांसन । [४
४] तथास्त्रं[11] गाधिपुत्रस्य घोरमाग्नेयमुत्तमम् ॥४॥
ब्रह्मदण्डहतं शान्तमग्निवेग इवाम्भसा । [५
५] रौद्रं च वारुणं चैव शैवं[12] पाशुपतं तथा ॥५॥

---

१. भ—तिष्ठेत्यचाब्रवीत् ।
२. भ—स्थितोस्म्ययं ।
३. अ—चात्रबंधो । ब ळ—क्षत्रनिंध ।
४. ळ भ—तद्वि दर्षय ।
५. ळ—ते दर्पमस्त्रस्याप्यत्र । भ—दर्पं ते शस्त्रस्याप्यय ।
६. रा—गाधिप ।
७. अ—चात्रबलं । भ—क्षत्रबलं ।
८. रा—मूढं ।
९. भ—महाबलं ।
१०. ळ—क्वचि[द्] ।
११. भ—तथास्त्रं ।
१२. क—सैवं । भ—पत्रं ।

अवासृजत् तथैषीकं[1] कु[2]पितो गाधिनन्दनः । [६
६] मान[3]सं मान[3]वं चैव गांधर्वं स्वाप[4]नं तथा ॥६॥
जृ[5]म्भणं मोह[6]नं चैव सन्तापनवि[7]लापनम् ।[8] [७
७] शोषणं दार[9]णं चैव वज्रमस्त्रं च[10] दुर्जयम् ॥७॥[11] [८ पू
पू ८] दण्डास्त्रमथ पैशाचं क्रौञ्चमस्त्रं तथैव च । [९ उ
उ ८] धर्मचक्रं कालचक्रं विष्णुचक्रं तथैव च ॥[12]८॥[13] [१०पू
ब्रह्मपा[14]शं कालपाशं वारु[15]णं पाशमेव च । [८उ
१०] पैनाकम[16]स्त्रं दयितं शुष्कार्द्रे अ[17]शनी तथा ॥९॥[18] [९ पू

---

१. भ—ऐषीकं चैव चिक्षेप ।
२. ल भ—रुषितो ।
३. भ—मानवं मानवं ।
४. ल—स्थापनं ।
५. भ—जृंभणं ।
६. ज—मोहनं ।
७. भ—संतापनविलापने ।
८. ज—अतः परमधिकः पाठः—
शोषणं दारुणं चैव संतापनविलापनं ।
९. ज भ—दारुणं । व ल—दारुणं ।
१०. ज ल—सुदुर्जयं । भ—सुदारुणं ।
११. रा—नास्ति ।
१२. ल भ—नास्ति ।
१३. रा—नास्ति ।
१४. ल—ब्रह्मपाशं ।
१५. ज—पाशं वारुणमेव च ।
१६. ल—पिनाकमस्त्रं ।
१७. ज—वारुणी तथा । व—अशनीद्वयं ।
ल—वारुणीद्वये ।
१८. रा भ—नास्ति ।

पृ११] वायव्यं मथनं चैव अस्त्रं हयशिरस्तथा ।[1] [१०
उ८] शक्तिद्वयं च व्यसृजत् कङ्कालं मुसलं तथा ॥१०॥[2]
पृ६] स्थावरं च महाऽस्त्रं वै[3] कालास्त्रमतिदारुणम् ।[4]
उ११] त्रिशूलास्त्रं च दयितं[5] कपालमथ किङ्किणीम्[6] ॥११॥ [११
एतान्यस्त्राणि दिव्यानि विश्वामित्रस्त्वथासृजत् ।
१२] वसिष्ठे सुमहाभागे तदद्भुतमिवाभवत् ॥१२॥ [१२
ब्रह्मदण्डेन सर्वाणि जग्राह ब्रह्मणः सुतः ।
१३] शान्तेषु तेषु ब्रह्मास्त्रमगृह्णाद् गाधिनन्दनः ॥१३॥ [१३
तदस्त्रमुद्यतं दृष्ट्वा देवाश्चाग्निपुरोगमाः ।
१४] देवर्षयश्च वित्रस्ता गन्धर्वाश्च महोरगाः ॥१४॥ [१४

---

१. ल—मथने चैवमस्त्रं ।
२. ज—ब्रह्मशिरस्तथा ।
३. भ—नास्ति ।
४. भ—विक्षेप ।
५. भ—कालेन० ।
६. रा—नास्ति ।
७. ल—च ।
८. भ—नास्ति ।
९. भ—त्रिशूलमस्त्रं घोरं च ।
१०. ज भ—किंकिणी ।
११. ज ब ल—प्रेषयामास । भ—तु महाभागे ।
१२. भ—तानि दंडेन ।
१३ भ—व्यवधीद् ।
१४. भ—तेषु शान्तेषु ब्रह्मास्त्रं प्राक्षिपद् गाधिनन्दनः ।
१५. ल—वसिष्ठाग्निपुरोगमाः ।
१६ भ—संत्राता ।
१७. भ—गन्धर्वा समहोरगाः ।

त्रैलोक्यमासीत् सन्त्रस्तं[1] ब्रह्मास्त्रे समुदीरिते ।
१५] तद्युक्तमस्त्रं[2] घोरं[3] तु[4] ब्राह्मं ब्राह्मेण तेजसा ॥१५॥ [१५
वसिष्ठोऽग्रसदव्यग्रो[5] ब्रह्मदण्डेन राघव । [१६
१६] ब्रह्मास्त्रं ग्रसमानस्य[6] वसिष्ठस्य महात्मनः[7] ॥१६॥
त्रैलोक्यमोहनं रौद्रं रूपमासीत् सुदारुणम्[8] । [१७
१७] सर्वेभ्यो रोमकूपेभ्यो वसिष्ठस्य महात्मनः ॥१७॥[9]
मरीचयो[10] विनिष्पेतुः[11] सधूमज्वलनप्रभाः । [१८
१८] जज्वाल[12] ब्रह्मदण्डश्च वसिष्ठस्य करोद्यतः[13] ॥१८॥
सधूम इव कालाग्निर्यमदण्ड इवापरः । [१९
१९] ततो[14]ऽस्तुवंस्तु ऋषयो वसिष्ठं जपतां वरम् ॥१९॥

---

१. ब ल—संतप्तं । भ—संविग्नं ।
२. के ल—तमुत्क्रमत्वं । ज—उद्युक्तमस्त्रम् ।
भ—तमत्युग्रं ।
३. भ—महाघोरं ।
४. भ—ब्राह्मेण ।
५. ल—वसिष्ठो ग्रसते सर्वान् । भ—॰दस्त्युग्रो ।
६. भ—ग्रसतस्तस्य ।
७. ल—महात्मना ।
८. भ—सुदुष्करं ।
९. के रा ज—नास्ति ।
१०. भ—मरीचय इवोत्पन्नाः ।
११. रा—सधूमज्वलनप्रभाः । ज—सधूमा ज्वलनप्रभाः ।
ल—सधूमज्वलनार्चिषः । भ—॰ज्वलनार्चिषः ।
१२. भ—प्रजज्वाल ब्रह्मदण्डो ।
१३. भ—करोऽस्थितः ।
१४. के ज—ततोऽस्तुवन्स्त॰ । रा—ततस्तुष्टुवुर्महर्षयो ।
भ—ततोऽस्तुवंस्तं मुनयो ।

अमोघं ते बलं ब्रह्मंस्तेजो धारय तेजसा । [२०
२०] निगृहीतस्त्वया राजा विश्वामित्रो महातपाः ॥२०॥ [२१ पु
विश्वामित्रोऽपि निकृतो विनिःश्वस्येदमब्रवीत् । [२२उ
२२] धिग्बलं क्षत्रियबलं ब्रह्मतेजो महद्बलम् ॥२१॥
एकेन ब्रह्मदण्डेन सर्वास्त्राणि हतानि वै[३] । [२३
२३] एतद्बलं समीक्ष्याहं सर्वेन्द्रियसमाहितः ॥२२॥
तपोबलं समास्थास्ये तद्वै ब्रह्मप्रवर्तकम् । [२४
२४] एवमुक्त्वा महातेजा राष्ट्रमुत्सृज्य दुःखितः ।[१०]
उ२५] स जगाम तदा रामं तपश्चरणनिश्चितः ॥[१२] २३॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[१३] विश्वामित्रप्रतिज्ञा[१४] नाम[१४]
एकपञ्चाशः[१५] सर्गः[१६] ॥५१॥

---

१. रा—०मित्रोपनिकृतो ।
२. भ—बलं बले ।
३. ब ल भ—मे ।
४. भ—तदेतद्ब्रह्मसमाकोक्य ।
५. रा—०समान्वितः । ज—०समाहृतः ।
६. ल—समास्थाय ।
७. भ—महत् ।
८. ल—ब्रह्म प्रवर्तते । भ—ब्रह्मकारिणां ।
९. भ—महातेजाः राज्यमुत्सृज्य ।
१०. ल—नास्ति ।
११. भ—महाराजा ।
१२. ल—एवं सुनिश्चयं कृत्वा ब्राह्मणो धृतमानसः ।
१३. के ब भ—आदिकाण्डे ।
१४. ज—विश्वामित्रप्रतिहतिर्नाम । भ—०मित्रप्रतिज्ञा ।
१५. के रा—सप्तपंचाशत्तमः । ज—त्रिचत्वारिंशः । भ—नास्ति ।
१६. ज—॥४३॥ भ—॥४७॥ ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

सोऽतप्यत[1] तपो घोरं विश्वामित्रो[2] महामुनिः[3] । [N
१] विनिःश्वस्य विनिःश्वस्य कृतवैरो महात्मना[4] ॥१॥ [१ ज
दिशं[5] तु दक्षिणां गत्वा महिष्या[6] सह कौशिकः । [२ पु
२] फलमूलाशनो दान्तः परमं चाकरोत् तपः ॥[8]२॥ [३ पु
ब्रह्मर्षित्वमभिप्रेप्सु[9] र्वसिष्ठस्पर्धया विभुः[10] ।[11] [N
३] दृष्ट्वा ब्रह्मतपोयोगं वसिष्ठस्यात्मनोऽधिकम् ॥३॥
तता[7]प परमं राम तपोवनमुपाश्रितः ।
४] ब्राह्मणः स्यामिति [12]मतिं समा[13]धाय महातपाः ॥[14][15]४॥ [N

१. ल—अतप्यत ।
२. भ—विश्वामित्रस्ततो मुनिः ।
३. ल—महातपाः ।
४. ज—नास्ति ।
५. ल—दक्षिणां तु दिशं । भ—दीक्षया दिशमास्थाय ।
६. ज—महिष्याः ।
७. ल—राघव ।
८. भ—फलमूलाशनस्तत्र चचार सुमहत्तपः ।
९. रा—०मभिप्रेप्स्व । भ—०मनुप्रेप्सुर्व० ।
१०. भ—मुनिः ।
११. ल—नास्ति ।
१२. भ—मनः ।
१३. ज—समाधाय ।
१४. भ—महामनाः ।
१५. ल—नास्ति ।

तत्रास्य[1] जज्ञिरे पुत्राश्चत्वारो लोकविश्रुताः ।[2]
५] हविःष्यन्दो मधुष्यन्दो[3] दृढनेत्रो महोदर[4] ॥[5]५॥ [३ ब
इत्यस्य शासतो राज्यमष्टौ पुत्रा महाबलाः ।
६] जज्ञिरे राजशार्दूल वीर्यवन्तो महौजसः ॥[6]६॥ [N
वर्षाणां तत्र पूर्णे[7]थ सँहस्रे[8] तपतां वरः ।
७] जज्वाल तपसा धीमान् कौशिकोऽग्निरिवोत्थितः[9] ॥७॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[10] विश्वामित्रप्रशंसा नाम[11]
द्विपञ्चाश[11]: सर्गः[12] ॥५२॥[13]

---

१. ब—ततोस्य ।
२. ळ—प्रजायंत तत्रास्य पुत्रा धर्मपरायणाः ।
३. ळ—महिष्यंदो ।
४. कै—हविष्यंदमधुष्यंददृढनेत्रमहोदराः ।
रा—हविष्यन्द ,, ,,
ज—हविःष्यन्द ,, ,,
भ—हरिस्कंदमधुस्कंददीर्घनेत्रमहोदया
५. भ—तदा च ।
६. भ—नास्ति ।
७. ज—पूर्णे च ।
८. ज—सहस्रं ।
९. भ—कौशिकोग्निरिव ज्वलन् ।
१०. ळ—नास्ति ।
११. कै ब—आदिकांडे ।
१२. कै रा—नामाष्टपंचाशत्तमः ।
ज—नाम चतुश्चत्वारिंशः । ब—नाम ।
भ—नास्ति ।
१३. भ—नास्ति ।
१४. ज—॥४४॥ भ—॥४१॥
ज—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

पूर्णे वर्षसहस्रेऽथ ब्रह्मा लोकपितामहः ।
१] आगम्य[2] गाधिजं राम सोऽब्रवीन्मधुरं वचः ॥१॥[4] [४
जितो राजर्षिलोकैस्ते सुमहान् कुशिकात्मज ।
२] अनेन तपसा युक्तं राजर्षिं त्वां समर्थये ॥२॥ [५
एवमुक्त्वा महातेजा जगाम सह दैवतैः ।
३] त्रिविष्टपाद् ब्रह्मलोकं जगाम प्रभुरव्ययः ॥[10]३॥ [६ व
विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वा ह्रिया किंचिदवाङ्मुखः[12]।
४] दुःखेन महता युक्तः समन्युरिदमब्रवीत् ॥४॥[13] [७
तपश्च सुमहत् तप्तं राजर्षिरिति चैव मे[14]।[15]

---

१. ब—ब्रह्मलोकपितामहाः । भ—ब्रह्मलोकात्पितामहः ।

२. ज—आगत्य ।

३. रा—गाधिकं ।

४. ल—पूर्णे वर्षसहस्रे तु तपसा द्योतितप्रभम् ।
आजगाम ततो द्रष्टुं ब्रह्मा लोकपितामहः ।
अब्रवीन्मधुरं वाक्यं विश्वामित्रं तपोधनम् ।

५. ब ल—राजर्षिवंशास्ते ।

६. ब ल—तपसा ।

७. रा ज—राजर्षि ।

८. ल—एवमुक्तो ।

९. रा—रितिचैव मे ।

१०. भ—त्रिविष्टपाद्देवलोकं लोकानां प्रभुरीश्वर ।

११. भ—विश्वामित्रोपि ।

१२. कै ल—०दवाङ्मुखः । भ—किंचित्पराङ्मुखः ।

१३. रा—नास्ति ।

१४. ल—राजर्षीति मां विदुः । भ- ०चैव मां ।

१५. रा—नास्ति

५] अद्यापि भगवानाह नास्ति शङ्के तपः फलम् ॥५॥[1] [८
एवमुक्त्वा महातेजा भूय एव महामुनिः[2] ।
६] तपश्चकार[3] काकुत्स्थ परमं परमात्मवान् ॥६॥ [९
एतस्मिन्नेव काले[4] तु सत्यधर्मपरायणः[5] ।
७] त्रिशङ्कुरिति[6] राजाऽऽसीदिक्ष्वाकुकुलनन्दनः[7] ॥७॥ [१०
तस्य बुद्धिः समुत्पन्ना यजेयमिति[8] राघव ।
८] गच्छेयं[9] स्वशरीरेण[10] रामं[11] स्वर्गमिति[12] प्रभो ॥८॥
स वसिष्ठं समाहूय मतिमेतां[13] न्यवेदयत् ।[14]
९] अशक्यमेतदित्युक्तो[15] वसिष्ठेन[16] च धीमता ॥९॥ [१२

१. ल—देवास्सार्षिगणाः सर्वे नास्ति मन्ये तपःफलम् ।
२. भ—महातपाः ।
३. ज भ—तपश्चचार ।
४. भ—एतस्मिन्नंतरे काले ।
५. ल—सत्यवादी महायशाः ।
६. ल—त्रिशंगर्नाम । भ—त्रिशङ्कुर्नाम ।
७. भ—राजाभूदि० ।
८. भ—यजेयामिति ।
९. ब ल—इच्छेयं ।
१०. ल—सशरीरेण ।
११. ब ल—गंतुं । भ—रमे ।
१२. भ—स्वर्गं इति ।
१३. ब—मंत्रमेतं ।
१४. ल—वसिष्ठं स समाहूय मंत्रयित्वा स राघव ।
भ— „ „ मतिमेतां न्यवेदयत् ।
१५. ल—अशक्यमिति चाप्युक्तो । भ—नास्ति ।
१६. भ—नास्ति ।

प्रत्याख्यातो[1] वसिष्ठेन प्रययौ दक्षिणां[2] दिशम् । [१३पु
१०] वसिष्ठस्य शतं यत्र पुत्राणां तप्यते[3] तपः[4] ॥१०॥
त्रिशङ्कुः[5] स महातेजाः शतसंख्यास्तपस्विनः[6] ।
११] वसिष्ठपुत्रान् ददृशे तप्यमानान् महत् तपः ॥११॥[7] [१४
सोभिवाद्य[8] महातेजाः सर्वानेव कृताञ्जलिः ।[9] [१५
१२] कुशलं चाव्ययं चैव पृष्ट्वा चैताननोमयान् ॥१२॥ [N
अब्रवीत् स[11] महाभागो गुरुपुत्रान् नराधिपः ।
१३] प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन ह्रिया किंचिदवाङ्मुखः ॥[12][13] १३॥ [१५पु
शरणं वः[14] प्रपन्नोहं[15] शरण्यान्[16] शरणप्रदान्[17] । [१६पु
१४] त्रातुमर्हथ मां सर्वे प्रपन्नं शरणागतम् ॥[18] १४॥ [N

---

१. भ—नास्ति ।
२. ल—दक्षिणामुखः ।
३. ज—ताप्यते ।
४. ल—वसिष्ठा दीर्घतपसस्तप्यंते यत्र वै तपः ।
भ—वसिष्ठस्य शतंपुत्राः तप्यंत परमं तपः ।
५. ल—त्रिशंकुस्तु ।
६. रा—शतसंख्यां तपस्विनः ।
७. भ—त्रिशंकुस्य पुत्राणां वसिष्ठस्य शतं ततः ।
ददर्श दीर्घतपसः तपतस्तप उत्तमं ॥
८. रा—सोपिवाद्य ।
९. भ—सोभिगम्यांजलिं कृत्वा तानुवाच तपोधनान् ।
१०. भ—चैतांस्ततो वचः ।
११. ल—स महाभाग । भ—सुमहातेजा ।
१२. के—०दवांमुखः । भ—किंचित्पराङ्मुखाः ।
१३. ल—नास्ति ।
१४. ल—वा ।
१५. ल—प्रपन्नोहं
१६. के—शरण्यो । ल—शरण्याः ।
१७. रा—शरणाप्रदान् । ल—शरणागतः । भ—शैरणागतं ।
१८. ल—नास्ति ।

प्रत्याख्यातोऽस्मि गुरुणा वसिष्ठेन महात्मना । [१६
१५] यष्टुकामो महायज्ञं तमनुज्ञातुमर्हथ ॥१५॥
गुरुपुत्रानहं सर्वान् नमस्कृत्य पुरोधसः । [१७
१६] शिरसा प्रणतो भूत्वा याचे वस्तपसि स्थितान् ॥१६॥
ते मां भवन्तः सिद्धार्थां याजयन्तु तपोधनाः ।
१७] सशरीरो यथा स्वर्गं यज्ञेन समवाप्नुयाम् ॥१७॥ [१८
प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन गतिमन्यां तपोधनाः ।
१८] गुरुपुत्रानृते सर्वान् नाहं पश्यामि तत्त्वतः ॥१८॥ [१९
इक्ष्वाकूणां च सर्वेषां वसिष्ठः प्रवरो गुरुः । [२०पू
१९] तस्मादनन्तरं सर्वे भवन्तो गुरवो मम ॥१९॥ [२१

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे त्रिशङ्कुप्रत्याख्यानं नाम त्रिपञ्चाशः सर्गः ॥ ५३ ॥

१. ल—भद्रं वो । २. ज—तदनुज्ञातु० । ल—तन्मेऽनुज्ञातु० ।
३. भ—पुरस्कृत्य । ४. ल—ये वै । ५. रा—व तपसे । भ—वै तपसि ।
६. रा—तेषां । ७. ल—सिद्ध्यर्थं । ८. कै—यजयन्तु ।
९. रा—नास्ति । १०. रा—सर्वानहं । भ—नाहं सर्वान् ।
११. ल भ—पुरोधाः ।
१२. रा—प्रभवो गुरुः । ल भ—परमा गतिः । १३. ल—दैवतं ।
१४. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
भवद्भिः संपरित्यक्तः प्रणिपत्य गुरोः सुतान् ।
अन्यं गुरुमुपाश्रिष्ये यज्ञार्थं कृतमानसः ।*
१५. कै ब भ—आदिकांडे ।
भ—अतः परमाधिकः पाठः—शतानन्दवाक्ये ।
१६. रा—०प्रत्याख्यानो ।
१७. कै रा—नामोनषष्टितमस्सर्गः ब—नाम सर्गः ।
ज—नाम पंचचत्वारिंशः सर्गः । भ—नास्ति ।
१८. ज—॥४५॥ भ—॥४२॥ ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

* भ—कृतात्मनः

त्रिशङ्कोर्वचनं श्रुत्वा ततः क्रोधसमन्वितम्[1] ।
१] ऋषिपुत्रशतं[2] रामं[3] राजानमिदमब्रवीत्[4] ॥१॥ [१
प्रत्याख्यातोऽसि दुर्बुद्धे गुरुणा ब्रह्मवादिना[5] ।
२] तदतिक्रम्य वचनं कस्मादस्मानुपागतः ॥[6]२॥ [२
मूलमुत्सृज्य कस्मात् त्वं शाखामिच्छसि सेवितुम्[7] ।
३] नैतत् ते साधु यद्राजन्नस्मानिच्छसि[8] सेवितुम् ॥[9]३॥[10] [N
इक्ष्वाकूणां हि[11] सर्वेषां पुरोधाः परमा गतिः ।
४] न[12] ते क्षमं तु तत्[12] तस्य वचोऽतिक्रम्य वर्त्तितुम् ॥४॥[10]
अशक्यमिति यत्[13] प्राह[13] वसिष्ठो भगवानृषिः ।
५] तदस्माभिः कथं शक्यं कर्तुं[14] राजन् बलादिव[14] ॥[15]५॥ [४

१. भ—०समान्विताः ।
२. भ—ऋषिपुत्राः समं ।
३. रा—नाम ।
४. भ—०मब्रुवन् ।
५. ल भ—सत्यवादिना ।
६. ल—न चातिक्रमितुं शक्यं वचनं सत्यवादिनः ।
७. ज—०मिच्छामि । भ—शाखां सेवितुमिच्छसि ।
८. भ—याजकान् ।
९. ज—नास्ति ।
१०. ल—नास्ति ।
११. भ—च ।
१२. भ—अतः क्षमं न ते ।
१३. ल—चोवाच ।
१४. भ—कर्तुमद्य बलादिह ।
१५. ल—समय वयमाहर्तुं कथं शक्ता ऋतुं तव ।

बालिशोऽसि सुमन्दात्मन् गम्यतां स्वपुरं पुनः ।[1]
६] याजने[2] भगवानेव शक्तोऽसौ न वयं हि ते ॥६॥[3] [५
तेषां तद्वचनं श्रुत्वा क्रोधपर्याकुलाक्षरम्[4] ।
७] राजा[5] मन्युसमाविष्टो गुरुपुत्रानुवाच[6] तान्[7] ॥७॥ [७
प्रत्याख्यातो वसिष्ठेन भवद्भिस्तदनन्तरम् ।
८] अन्यां गतिं गमिष्यामि यथेष्टं[8] विदितमस्तु वः ॥८॥ [८
ऋषिपुत्रास्तु तच्छ्रुत्वा[9] क्रोधपर्याकुलाक्षरम्[10] ।
९] शेपुस्तं परमक्रुद्धाश्चण्डालस्त्वं[11] भविष्यसि ॥९॥ [९
[12]इति शप्त्वा च[12] राजानं विविशुस्ते स्वमाश्रमम् । [१०
१०] अथ रात्र्यां[13] व्यतीतायां तस्यां[14] राजा बभूव सः[14] ॥१०॥

१, भ—अनुशिक्षसि मंद त्वं ।

२. रा—यजने ।

३. ल—बालिशस्त्वं नृपश्रेष्ठ गुरुपुत्रान् य इच्छसि ।
तपोरतांश्चालयितुं गम्यतामिष्टतो नृप ।

४. ल--स्नेहपयाकुला: । भ—क्रोधव्याकुलिताक्ष: ।

५. रा—राजमन्यु० ।

६. ल—गुरुपुत्रानथाब्रवीत् । भ --मुनिपुत्रा० ।

७. ल -गुरुपुत्रैस्तथैव च

८. ल—स्वस्ति वोस्तु तपोधनाः । भ—यत्तद्विदितम० ।

९. ल—वसिष्ठपुत्रास्तच्छ्रुत्वा ।

१०. ल—वाक्यं घोराक्षरं तदा । भ—घोराक्षरपदं वचः ।

११. ज—परमं क्रुद्धा० । भ—०श्चांडालस्त्वं ।

१२. रा—०शप्त्वा तु । रा --इत्येवमुक्त्वा ।

१३. ल—रात्र्यां । भ—रात्र्यं ।

१४. ल—राजा चंडालदर्शनः ।

चण्डालदर्शनो राम सद्य एव दुराकृतिः ।[1]
११] अथो नीलाम्बरधरो रक्ताम्बरकृतोत्तरः[2] ॥११॥ [१२
संरब्धताम्रघोराक्षः करालो हरिपिङ्गलः ।
१२] ऋक्षचर्मनिवासी[3] च लोहाभरणभूषितः ॥१२॥[4] [N
तं दृष्ट्वा सचिवास्तस्य[5] सद्यश्चण्डालतां[6] गतम्[7] ।
१३] दुद्रुवुः स्वपुरं[8] राम पौरा ये चानुयायिनः ॥१३॥ [१३
एक एव ततो राजा जगामाकुलचेतनः[9] ।
१४] शापजेन सुदुःखेन दह्यमानो दिवानिशम् ॥१४॥[10]
विश्वामित्रं महात्मानं ततः शरणमाययौ ।[10] [१४
१५] स्पर्धमानं वसिष्ठेन शरणार्थं तपोधनम् ॥१५॥ [N
विश्वामित्रोऽपि दृष्ट्वैव राजानं तु तथागतम् ।
१६] चण्डालरूपिणं राम कारुण्यं समुपागतम्[11] ॥१६॥[12] [१५

१. ल—नास्ति ।
२. भ—०धरोत्तरः ।
३. के—ऋषिराज्मनिवासी ।
४. ल—विचित्रमाल्याभरण आयसाभरणस्तथा ।
५. ल—मंत्रिणः सर्वे ।
६. ल—साक्षाच्चंडालतां ।
७. रा—गतिम् ।
८. ब भ—सुपुरं ।
९. भ—जगाम्याकुलचेतनः ।
१०. ल—अथैक एव राजा स जगाम परमात्मवान् ।
दह्यमानं दिवारात्रौ महामुनिम् ।
११. ज ब—समुपागमत् । भ—समुपागतः ।
१२. ल—विश्वामित्रस्तु तं दृष्ट्वा राजानं विफलीकृतम् ।
चंडालरूपिणं घोरं ततः कारुण्यमीयिवान् ।

कारुण्याच्च महातेजा वाक्यं वाक्यविशारदः ।
१७] अब्रवीद् गतलक्ष्मीकं राजानं घोरदर्शनम्[1] ।।१७।। [१६
किमागमनकृत्यं[2] ते[2] इक्ष्वाकुकुलनन्दन ।
१८] अयोध्याऽधिपते वीर[3] शापाच्चण्डालतां[4] गतः ।।१८।। [१७
अथ तद्वाक्यमाकर्ण्य राजा चण्डाल[5]दर्शनः ।
१९] अब्रवीत् प्राञ्जलिर्वाक्यं[6] विश्वामित्रं तपोधनम्[7] ।।१९।। [१८
प्रत्याख्यातोऽस्मि गुरुणा गुरुपुत्रैस्तथैव च ।
२०] इमं विपर्ययं प्राप्तः काममप्राप्य कांक्षितम् ।।[8]२०।। [१९
सशरीरो दिवं यायामिति मे[9] सौम्य[10] निश्चयः ।
२१] महायज्ञ[11]फलेनेति तं च[11] न[12] प्राप्तवानहम् ।।२१।। [२०

१. ल—घोरदर्शिनं ।
२. कै—०कृत्यं त । ल० गमनहेतुस्ते ।
३. रा—अयोध्याधिपतिर्वीरः ।
४. भ—शापाच्चांडालतां गत ।
५. ज—चांडाल० । पुनरपरहस्तेन कृतः ।
६. ल—वाक्यज्ञो ।
७. रा—तपोनिधिम् । ल—वाक्यकोविदः ।
८. ल—अनवाप्तश्च तं काममहं प्राप्तो विपर्ययं ।
९. ल—मा ।
१०. रा ब—सोम्य निश्चय: । ज—सोम्यनिश्चयः ।
ल भ—सौम्यदर्शन ।
११. ल—मयास्योदाहृतो यज्ञस्तं च ।
भ—महायज्ञफलेनेति तच्च ।
१२. रा—न प्राप्तवानहम् । भ—नैवाप्यते मया ।

अनृतं नोक्तपूर्वं हि[1] विश्वामित्र मया क्वचित् ।
२२] कृच्छ्रे[2]ऽपि वर्तमानेन क्षत्रधर्मेण ते[3] शपे[3] ॥२२॥ [२१
यज्ञैर्बहुभिरिष्टं[4] मे[5] प्रजा धर्मेण पालिताः ।
२३] गुरवश्च महात्मानः[6] शीलवृत्तेन[7] तोषिताः ॥२३॥ [२२
धर्मे प्रयतमानस्य[8] शुद्धवाग्बुद्धिकर्मणः[9] ।
२४] परितोषं न[10] गच्छन्ति गुरवो मुनिपुङ्गव[11] ॥२४॥ [२३
दैवमेव[12] परं मन्ये पौरुषं नात्र[13] कारणम् ।[14]
२५] शुभाशुभफलप्राप्तौ नराणामिति मे मतिः ॥[15]२५॥ [२४
तस्य मे परमार्तस्य[16] दैवोपहतकर्मणः ।
२६] शरणार्थं प्रपन्नस्य प्रसादं[17] कर्तुमर्हसि ॥[18]२६॥ [२५

---

१. ल—न भविष्यं कदाचन ।

२. ल—कृच्छ्रेष्वपि गतः सौम्य ।

३. ज—ते शपं ।

४. ल—०र्बहुविधैरिष्टं । भ—यज्ञैर्मयेष्टं विविधैः ।

५. भ—धर्मतः पालिता मही ।

६. ल—महाभागाः । भ—मया सर्वे ।

७. ल—शीलधर्मेण ।

८. ल—प्रयतमानानां । भ—प्रपद्यमानस्य ।

९. ल—शुद्धवाग्बुद्धिकर्मणां ।

१०. ज—नु ।

११. ल—रिपवो मुनिसत्तम ।

१२. ल भ—दैवमत्र ।

१३. ल भ—नास्ति ।

१४. ब ल—दैवमाक्रमते बुद्धिं दैवं हि परमा गतिः ।

१५. ल—नास्ति ।

१६. ल—परमार्तस्य ।

१७. ल—प्रसादं मुनिपुंगव ।

१८. ल—कर्तुमर्हसि भद्रं ते दैवोपहतकर्मणः ।
भ—शरणागतस्य भगवन्प्रसादं कर्तुमर्हसि ।

नान्[1]यां गतिं[2] मपश्यामि नान्यः शरणदोऽस्ति[3] मे[4] ।
२७]दैवं पुरुषकारेण निवर्तयितुमर्हसि ॥२७॥ [२६

दावानलोपद्रुतपत्रसंघो
यथा तरुर्हर्षमुपैति दृष्ट्वा[5] ।
वर्षासु मेघं तडिदुज्ज्वलाङ्ग[6]
N] तथा ऋषिं प्राप्य नृपस्त्रिशंकुः[7] ॥२८॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[8] त्रिशंकुवाक्यं[9] नाम
चतुष्पञ्चाशः[10] सर्गः ॥ ५४[11] ॥

१. के—नान्यं ।
२. ल—गतिमुपास्यामि ।
३. कै—शरणमोस्ति । ल—शरणमास्ति ।
४. भ—नास्ति ।
५. ब—दृष्ट्वा ।
६. ब—तडिदुज्ज्वलांगं ।
७. ल—नृपस्त्रिशंगः ।
८. कै ब भ—आदिकांडे ।
९. ल—त्रिशंकुशापो ।
१०. कै रा—षष्टितमः । ज—षट्चत्वारिंशः ।
ब ल भ—नास्ति ।
११. ज—॥ ४६ ॥ भ—॥ ४३ ॥

उक्तवाक्यं तु राजानं विश्वामित्रो महामुनिः ।
१] अब्रवीन्मधुरं वाक्यं त्रिशङ्कोर्[1]हर्षवर्धनम् ॥१॥ [१
इक्ष्वाको स्वागतं वत्स[2] जानामि त्वां सुधार्मिकम्[3] ।
२] शरणं ते भविष्यामि वत्स्यसि[4] त्वं[5] ममाश्रमे ॥२॥ [२
सर्वानामन्त्रयिष्यामि[6] त्वत्कृते[7]ऽत्र तपोधनान् ।
३] कांक्षितस्यास्य[8] ते राजन् सिद्धये यज्ञकर्मणः[9] ॥३॥[10] [३
गुरुशापकृतं[11] रूपं [12]यदिदं धार्यते त्वया ।
४] संसिद्धस्त्वमनेनैव रूपेण स्वर्गमेष्यसि ॥[13]४॥ [४

---

१. ज—त्रिशङ्कुं ।

२. ब—तेस्ति । ल—तेस्तु ।

३. के—सुधार्मिकाम् । रा—स्वधार्मिकम् ।
ब—सुधार्मिकां ।

४. ब ल भ—वसेह ।

५. ल—नृपसत्तम ।

६. ज भ—सर्वानामन्त्रयिष्येहं ।

७. भ—त्वत्कृते तु ।

८. भ—वांछितस्यास्य ।

९. रा—०कर्मणा । भ—०कर्मणि ।

१०. ल—अहमामन्त्रये सर्वान्नृपीन्परमधार्मिकान् ।
यज्ञसाहाय्यकरणो ततो यक्ष्यसि निर्वृतः ॥

११. भ—गुरुणा प्रकृतं ।

१२. भ—यदेतद्धार्यते त्वया । ल—०त्वयि वर्तते ।

१३. ल—अनेनैव च रूपेण सशरीरो गमिष्यसि ।

हस्तप्राप्तमहं मन्ये स्वर्गं ते नृपसत्तम ।
५] यत् त्वं मां समुपागम्य त्रिदिवं गन्तुमिच्छसि ॥[1]५॥ [५
एवमुक्त्वा महातेजाः पुत्रानाहूय सर्वशः[2] ।
६] शिष्यांश्च सुहृदश्चान्यानुवाचेदं वचस्तदा ॥[3]६॥ [६ पू
आनयध्वमिह क्षिप्रं यज्ञद्रव्याण्यशेषतः ।
७] मदीयेनैव यज्ञोऽयं द्रव्येणास्य भविष्यति ॥७॥[4] [N
शिष्यानुवाच चाहूय सर्वानेव तदा वचः ।[5]
८] सर्वानृषीनानयध्वं समुपेत्याज्ञया मम ॥८॥[6] [६ उ
यश्च यद् वचनं ब्रूयान् मम वाक्यप्रचोदितः[7] । [७ पू
९] तन्मे भवद्भिरावेद्यं यथाप्रोक्तमशेषतः ॥[8] ९॥ [८
शिष्यास्ततोऽस्य ते जग्मुर्दिशः सर्वास्तदाज्ञया ।[9,10]
१०] आमन्त्र्य चाप्युपावृत्ता न चिरेण तपोधनाः ॥[11,12] १०॥

१. ल —हस्तमात्रमहं मन्ये स्वर्गोति वनरेश्वर ।
यस्त्वं कौशिकमाश्राय शरण्यं शरणं गतः ।
भ—नास्ति ।

२. ल—विश्वामित्रो महामुनिः ।

३. ल—शिष्यांश्च सुहृदश्चैव ऋत्विजस्सपुरोधसः ।

४. कै—मदीयेनैव ।

५. ल—अनोद्वयम्महातेजा यज्ञसंभारकारणं ।

६. ल—शिष्यांश्च सर्वानानाय वाक्यज्ञो वाक्यमब्रवीत् ।
गत्वा मुनिवरान्सर्वान्समानयत सत्वरम् ॥

७. ल—मद्वाक्यपरिनोदितः ।

८. ल—तत्सर्वमखिलेनोक्तं समाख्येयं विनावृतम् ।

९. भ—सर्वे तदाज्ञया ।

१०. ल—ततस्तद्वचनं श्रुत्वा दिशो जग्मुः पृथक् पृथक् ।

११. भ—तपोधनात् ।

१२. ल—आजग्मुरथ देशेभ्यः सर्वेभ्यो ब्रह्मवादिनः ।

प्रोचुः[1] प्राञ्जलयोऽभ्येत्य विश्वामित्रमिदं वचः ।
११] तव[2] चामन्त्रिताः सर्वे मुनयोऽस्माभिराज्ञया ॥११॥[3] [१०
आज्ञा प्रतिगृहीता तैः सर्वैरेव तपोधनैः ।
१२] अस्माभिरुक्तैरभ्येत्य[4] वर्जयित्वा महोदयम् ॥१२॥[5] [११
वसिष्ठस्य च पुत्राणां शतं क्रोधसमा[6]कुलम् ।
१३] यदुवाच वचो घोरं शृणु तन्मुनिपुंगव ॥१३॥[7] [१२
क्षत्रियो याजको यत्र चण्डालस्य[8] यियक्षतः[9] ।
१४] कथं सदसि भोक्ष्यन्ते[10] हविस्तत्र सुरोत्तमाः[11] ॥१४॥ [१३
ब्राह्मणा वा[12] महात्मानो भुक्त्वा चण्डाल[13]भोजनम् ।
१५] कथं स्वर्गं गमिष्यन्ति विश्वामित्रेण पातिताः[14] ॥१५॥ [१४

---

१. भ—ऊचुः ।
२. ज—ऊचाचमंत्रिताः । भ—उपोपामंत्रिताः ।
३. ल—ते तु शिष्याः समागम्य मुनिं ज्वलनतेजसं ।
अब्रुवन् वचनं सर्वे यथोक्तं ब्रह्मवादिभिः ।
४. रा—ऽरभ्येति । ज—ऽरभ्यर्च्य ।
५. ल—श्रुत्वा ते वचनं सर्वे समायांति द्विजातयः ।
भगवन्सर्वदेशेभ्यो वर्जयित्वा महोदयम् ॥
६. भ—क्रोधे समाकुले ।
७. ल—वासिष्ठं च शतं सर्वे शृणु तन्मुनिपुंगव ।
८. भ—चांडालस्यापि ।
९. कै ल—विशेषतः । भ—यजतः ।
"कै" पुस्तके पुनरपरहस्तेन कृतः ।
१०. ल—भोक्तारो । भ—भोज्यं तद् ।
११. ल—सुरर्षयः । भ—सुरोत्तमैः ।
१२. ल—हि ।
१३. रा भ—चांडालभोजनम् ।
१४. रा—घातिताः । भ—पातिताः ।

निष्ठुरं वचनं प्राहु[1]रेते संरक्तलोचनाः ।
१६] वासिष्ठा नरशार्दूल सर्वे ते समहोद[2]याः ॥[3]१६॥[4] [१५
इति तेषां वचः श्रुत्वा शिष्याणां मुनिपुङ्गवः ।
१७] क्रोधसंरक्तनयन इदं वचनमब्रवीत् ॥१७॥[5] [१६
ये[6] दूषयन्त्यदुष्टं मां वासिष्ठा मन्दचेतसः ।
१८] भस्मीभूता[7] दुरात्मानः[8] कालस्य वशमागताः ॥१८॥ [१७
अद्य ते कालपाशेन नीता वैवस्वतक्षयम् ।
१९] सप्तजातिशतान्येवं[9] मृता[10] यास्यन्ति[11] सर्वशः ॥[12]१९॥ [१८
स्वमांसनियता[13]हारा पुक्कसा[14] नाम निर्घृणाः ।
२०] विकृताश्च विरूपाश्च लोकाननुचरन्त्विति ॥२०॥ [१९

---

१. रा—०रैक्यं । भ—०रेतत् ।
२. रा—स महोदयः ।
३. भ—वासिष्ठं मुनिशार्दूल सर्वे ते समहोदयाः ।
४. ल—एतद्वचननैष्ठुर्यं कृतं रक्तविलोचनैः ।
वासिष्ठैर्नरशार्दूलैः सर्वैः सह महोदयैः ॥
५. ल—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा यथोक्तं मुनिपुंगवः ।
क्रोधात् संरक्तनयनः सरोषमिदमब्रवीत् ।
६. रा—प्रदुष्यंस्त्यदुष्टं ।
७. ल—तप वशमुपागतं ।
८. ल—भस्मभूता ० । भ—०भूतात्मनः सर्वे ।
९. भ—०शतान्येव ।
१०. भ—मृतयः ।
११. ब—यास्यंतु । भ—संतु ।
१२. ल—सप्तजातीशतास्मर्तुम्यत्तपा संतु सर्वशः ।
१३. रा—०हाराः । ज—सुमांसनियताहाराः ।
ल—स्वमांसमुनिरताहाराः ।
१४. कै ज—मुष्टिका ।

महोदयश्च[1] दुर्बुद्धिरदुष्टं मां मदूषयन् ।[2]
२१] दूषितः[3] सर्वलोकेषु निषादत्वमवाप्स्य[4]ति ॥२१॥ [२०
प्राणाति[5]पातनिरतो निरनुक्रोशतां गतः ।
२२] दीर्घं[6] कालं मम क्रोधाद्दुर्गतिं वर्तयिष्यति ॥२२॥ [२१
एतावदुक्त्वा वचनं विश्वामित्रो महा[7]मुनिः ।
२३] विरराम महातेजास्तस्मिन् मुनिसमागमे ॥[8]२३॥[9] [२२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[10] वासिष्ठशापो[11]
नाम[12] पञ्चपञ्चाशः[13] सर्गः ॥५५॥[14]

१. ब—महोदरश्च ।
२. ल—महोदयश्च दुर्बुद्धिर्मामदूष्यं प्रदूषकृत् ।
भ— ,, दुष्टं मां च दूषयन् ।
३. के—दूषितः । ल—दूषतः ।
४. के रा—०मवाप्स्यसि । ल—निषाद इति विश्रुतः ।
५. ल—तिपातेनिरतो । भ—०तिपातिनि० ।
६. ज ल भ—दीर्घकालं ।
७. ल—महातपाः ।
८. ल—विरराम महातेजा मुनिमध्ये महामतिः ।
९. ज ल—अतः परमधिकः पाठः—
सक्रोधं विषमुत्सृज्य गाधिजो रघुनंदन ।
१०. के ब भ—आदिकांडे ।
११. के—०शापे । रा—वसिष्ठशापे ।
भ—शतानन्दवाक्ये वसिष्ठानुशापो ।
१२. के रा—नास्ति ।
१३. के रा—एकपञ्च: । ज—सप्तचत्वारिंश: ।
१४. ज—॥४७॥ भ—॥४४॥
ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ॥

१३] तपोबल[1]हतान् कृत्वा[2] वासिष्ठान[3] समहोदयान् ।
ऋषिमध्ये परं वाक्यं[4] विश्वामित्रोऽभ्यभाषत ॥[5]१॥ [१
२] अयमिक्ष्वाकुदायादस्त्रिशंकु[6]रिति विश्रुतः ।
धार्मिकः सत्यसन्धश्च[7] मां चैव शरणं गतः ॥२॥ [२
३] स्वेनानेन शरीरेण स्वर्गं[8] गन्तुमभीप्सति ।
तदिदं[9] मुनयः सर्वे समनुज्ञातुमर्हथ ॥[10]३॥ [३
४] विश्वामित्रवचः श्रुत्वा तत्र[11] ते मुनिसत्तमाः ।
मिथः संमन्त्रयामासुर्विश्वामित्रभयार्दिताः ॥[12]४॥ [४
५] अयं कुशिकदायादस्तपस्वी क्रोधनो[13] भृशम् । [५ पू
न विग्रहः सहानेन क्षमोऽस्माकं शरीरिणाम् ॥५॥[14] [N

---

१. भ—तपोबलात् हतान् ।
२. ल—दृष्ट्वा ।
३. रा—वसिष्ठान् ।
४. ल—महातेजा ।
५. ब—अस्मात् श्लोकात्पूर्वमित्थं पाठः—
·········मुत्सृज्य·········रघुनंदन ।
६. ल—॰त्रिशद्कु॰ ।
७. ल—धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च ।
८. ल—लोकं जिगीषति ।
९. भ—तदिमं ।
१०. ल—अथैवं भाषिते वाक्यं महायज्ञफलैषिणा ।
११. ल—सर्व एव महर्षयः । भ—ततस्ते मुनि॰ ।
१२. ल—ऊचुः समेत्य वचनं धर्मज्ञा धर्मयंत्रिताः ।
१३. रा—क्रोधनो ।
१४. ल—कुशिकदायादो मुनिः परमकोपनः ।
यदाह वचनं सम्यगेतत्कार्यमसंशयम् ॥

६] अग्निकोपो[1] हि भगवान् शापं दास्यति रोषितः[2] ।
तस्मात् प्रवर्ततां[3] यज्ञो यथैवोक्तं महर्षिणा ।।६।। [६
७] क्रियतां च तथा यत्नः सशरीरो यथा दिवम् ।
गच्छेदिक्ष्वाकुदायादो विश्वामित्रस्य तेजसा ।।७।। [७
८] ततः प्रववृत्ते यज्ञः सर्वसंभार[4]संभृतः ।
अध्वर्युर[5]भवत् तत्र विश्वामित्रो महातपाः[6] ।।८।। [८
९] ऋत्विजश्चाभवं[7]स्तत्र मुनयः संशितव्रताः ।[8] [९ पू
तस्य यज्ञे तदा तस्मिंस्त्रिशङ्कोर्भूरितेजसः[9] ।। ९।।[10]
१०] विश्वामित्रोऽथ भगवान् मन्त्रवन्मन्त्र[11]कोविदः ।
चकारावाहनं[12] यज्ञे भामार्थं [illegible]दिवौकसाम् ।।[13] १०।। [१०
११] नाभ्यगच्छन्[14] यदाहूता भागार्थं तत्र[15] देवताः । [११
ततः क्रोधसमाविष्टो विश्वामित्रो महामुनिः ।।११।।

---

१. ल—आग्निरूपो ।
२. रा—रोषतः ।
३. रा—प्रावर्ततां ।
४. ल—सर्वांग: सर्वाधिष्ठितः । भ—सर्वसंपद्भिः संवृतः ।
५. [illegible]—याजकश्च महायज्ञे । भ—अध्वर्युश्चाभवत्तस्य ।
६. ज—महामुनिः ।
७. भ—ऋत्विजाश्चाभवंस्तस्य ।
८. ल—ऋत्विजश्चानुपूर्व्येण मंत्रवन्मंत्रकोविदः ।
९. भ—०रामितौजसः ।
१०. ल—नास्ति ।
११. भ—०मंत्रपारगः ।
१२. ब- चकार वाहनं ।
१३. ल—चक्रुरावाहनं तत्र देवानां देवसंमिताः ।
१४. ज—नाभिगच्छन् ।
१५. ल—न चाजग्मुस्तुतास्तत्र भागार्थं सर्वदेवताः ।

१२] स्तव[1]मुद्यम्य संक्रुद्ध[2]स्त्रिशङ्कुमिदमब्रवीत् । [१२
पश्य मे तपसो वीर्य[3]मूर्जितस्य नरेश्वर ॥१२॥
१३] एष त्वां स्वशरीरेण[4] नयामि स्वर्गमोजसा । [१३
उ१४] बाल्यात् प्रभृति यत्किञ्चित् मया सम्यक् तपश्चितम् ॥[5] १३॥
ते[6]जसा तस्य[6] तपसः[7] सशरीरो दिवं व्रज । [१४
१५] उक्तवाक्ये[8] मुनौ चैवं[9] सशरीरो नृपस्तदा ॥१४॥
ययौ स्वर्गं खमाविश्य मुनीनां पश्यतां तदा । [१५
१६] त्रिदिवं तं[10] गतं दृष्ट्वा त्रिशङ्कुं पाकशासनः ॥१५॥[11]
स[12]ह सर्वैः सुरगणैरिदं वचनमब्रवीत् । [१६
१७] त्रिशङ्को पत[13] भूमौ त्वं न[14] त्वं स्वर्गे[15] कृतालयः ॥१६॥

---

१. कै रा ज ल—स्तुचमु० ।
२. ल—सक्रोधस्त्रिशंकुं तं वचोऽब्रवीत् ।
   भ—भगवांस्त्रिशंकुमिदं० ।
३. रा—वरिमूर्जि० । ल—वीर्यं पूजितस्य ।
४. ज ल भ—सशरीरेण ।
५. ल—बाल्यात्प्रभृति यदस्ति किंचिन्मे तपसः फलम् ।
६. ल—तेजस्तस्य ।
७. ज—तपसा । ल—महतः ।
८. ज—उक्तवाक्यं ।
९. ब भ—०चैवं । ल—मुनावेवं । भ—तु ।
१०. ब—ते ।
११. ल—स्वर्गं जगाम विप्राणां तत्र पश्यतां ।
   देवलोकगतं दृष्ट्वा त्रिशंकुं पाकशासनः ।
१२. भ—स तु ।
१३. भ—पात । बुद्धेऽपि मूलपाठे यकारभावनया दीर्घमात्रा—
   विन्यासः प्रामादिकः पत इत्यस्यैव संगतेरिति तु हृदयम् ।
१४. भ—नास्ति ।
१५. ल—स्वर्ग । भ—स्वर्ग ।

गुरुशापोपहतो मूढः शीघ्रमवाक्(शि)राः । [१७
१८] एवमुक्तो महेन्द्रेण त्रिशङ्कुरपतद् दिवः ॥१७॥[1]
उपक्रोशन्[2] स पाहीति विश्वामित्रमवाक्शिराः ।[3] [१८
१९] तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य पाहीति पततो[4] मुनिः ॥[5] १८॥
विश्वामित्रो भृशं क्रुद्धस्तिष्ठ तिष्ठेत्युवाच[6] तम् ।[7] [१९
२०] ततो ब्रह्मतपोयोगात् प्रजापतिरिवापरः ॥१९॥[8]
पू२१] असृजद् दक्षिणे मार्गे सप्तर्षीनपरांस्ततः ।[9] [२०
पू२२] नक्षत्रचक्रमपरं[10] चासृजत्[11] क्रोधमूर्च्छितः ॥२०॥[12]

---

१. ल—०तद्भुवि । भ—त्रि ०कुः प्रापतद्दिवः ।
२. रा—उदक्रोशन् । भ—उपाक्रोशन् ।
३. ब ल—त्रायस्वेति विक्रोशन्विश्वामित्रं तपोधनम् ।
४. रा ज—पतितो ।
५. ल—तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पतमानस्य मंत्रिणः ।
६. रा—तिष्ठेति चाब्रवीत् ।
७. ल—रोषमाहारयत्तीव्रं तिष्ठ तिष्ठेति चाब्रवीत् ।
८. ल—ऋषिमध्ये च काकुत्स्थ ।
९. ल—ततो दक्षिणमार्गस्थान्सप्तर्षीनपराजितः
भ— सृष्ट्वा दक्षिणमार्गस्थान्स ऋषीनपरान् प्रभुः ।
१०. रा—नक्षत्रचर्ममपरं ।
ल—नक्षत्रमालामपरां । भ ०वर्गमपरं ।
११. के रा ज भ—स्रष्टुं समुपचक्रमे ।
१२. अतपरमधिकः पाठ :—
ल—दक्षिणां दिशमास्थाय मुनिमध्ये महातपः ।
सृष्ट्वा नक्षत्रमालां च क्रोधेन कलुषीकृतः ।
भ—ब्रह्मस्य दक्षिणे मार्गे तेजोमहाबलकाभयात् ।
सृष्ट्वा च नक्षत्रगणं क्रोधसंरक्तलोचनः ।

उ२३] इन्द्रादीनपरान् देवान् स्रष्टुं समुपचक्रमे ।[2] [२२
ततः परमसंभ्रान्ताः सदेवर्षिगणाः सुराः ॥२१॥[3]
२४] विश्वामित्रं महात्मानमूचुः सानुनयं वचः । [२३
अयं राजा[4] शुचिः सौम्य[5] गुरुशापपरिक्षतः ॥२२॥
२५] सशरीरो दिवं गन्तुं नार्हत्यकृतयाचनः[6][7] । [२४
प्रमाणानि च पाल्यानि[8] यत्नतो हि भवादृशैः ॥[9]२३॥
२६] प्रमाणैः[10] स्थापितां संस्थां नातिक्रमितुमर्हसि ।[11][12] [N
इति तेषां वचः श्रुत्वा देवानां मुनिपुंगवः ॥[13]२४॥
२७] अब्रवीत् स्नेहवद्[14] वाक्यमिदमाभाष्य देवताः । [२५
सशरीरस्य विबुधास्त्रिशङ्कोरस्य धीमतः ॥२५॥[15]

---

१. भ—०पराल्लोकान् ।

२. ल—देवानपि च संक्रुद्धः स्रष्टमेवाकरोन्मतिम् ।

३. ज—सर्षिदेवगणाः सुराः । ल—सर्षिसंघाः सुरासुराः ।

४. ज भ—राजात्मजः ।

५. के ब—सोम्य । रा—सम्यग् ।

६. ल—यांत ।

७. ल—नार्हत्येव महायशाः । भ—०कृतपावनः ।

८. रा—माल्यानि ।

९. ल—नास्ति ।

भ—प्रमाणानि पुरायज्ञैः परिपाल्यानि यत्नतः ।

१०. भ—पुराणे ।

११. ब भ—०क्रामितुमर्हसि ।

१२. ल—नास्ति ।

१३. ल—तासां तु वचनं श्रुत्वा देवतानां महाद्युतिः ।

१४. रा—स्नेहवाद् । भ—सुसहद् ।

१५. ल—अब्रवीन्मधुरं वाक्यं वाक्यज्ञः सर्वदेवताः ।

सशरीरस्य भद्रं व इक्ष्वाकोरमितप्रभाः ॥

२८] आरोहणं प्रतिज्ञाय नानृतं कर्तुमुत्सहे ।[1] [२६
गमनं[2] सशरीरस्य त्रिशङ्कोर्मत्परिग्रहात्[3] ॥२६॥

२९] नक्षत्राणि च सर्वाणि ध्रुवाणीमानि[4] सन्तु वः[5] । [२७
यावल्लोका धरिष्यन्ति तावत्[6] स्थास्यन्त्यमून्यपि[6] ॥२७॥

३०] एवं प्रतिज्ञां विहितां समनुज्ञातुमर्हथ[7] । [२८
बभूवुर्विबुधा[8] भीता एवमस्त्विति[9] राघव ॥२८॥[10]

३१] ज्योतींष्येतानि[12] तिष्ठन्तु[11] वैश्वानरपथाद् बहिः । [३०
अवाक्शिरा[13] एव चायं त्रिशङ्कुरिह[14] तिष्ठतु ॥२९॥[15] [३१.३

३२] दक्षिणस्यामभिरतो दिशि स्वप्रभया ज्वलन् ।

---

१. ल—आरोहणप्रतिज्ञां मे नानृतां कर्तुमर्हथ ।
२. ल—स्वर्गस्तु ।
३. ब ल—०मेवनुग्र० ।
४. रा ब ल भ—ध्रुवानिमानि । ब—०ध्रुवाणीमाणि ।
५. रा—वा । भ—नः ।
६. ल—स्थितान्येतानि वै यथा ।
भ—तावत्स्थास्यत्यसावपि ।
७. भ—सर्वे मे समर्थयितुमर्हथ ।
८. भ—तमूचुर्वि० ।
९. कै—एवमित्याति ।
१०. ल—सत्कृतानि सुराः सर्वे तदनुज्ञातुमर्हथ ।
एवमुक्ताः सुराः सर्वे प्रत्यूचुर्मुनिपुंगवम् ।
एवं भवतु भद्रं ते तिष्ठन्त्वेतानि सर्वतः ।
११. ल—नक्षत्राणि च । भ—तिष्ठंत्वेतानि ।
१२. के—सर्वाणि । पुनरपरहस्तेन कृतः । ल—सर्वाणि ।
भ—ज्योतींषि ।
१३. के ब—अवाक्शिरा । रा—अर्वाक्शिरा ।
१४. ब—त्रिशंकुरिव ।
१५. ल—नास्ति ।

विश्वामित्रस्तु तच्छ्रुत्वा देवानां वचनं तदा ॥३०॥[1] [N

३३] बाढमित्यब्रवीत्[2] तत्र सर्वैर्देवैरभिष्टुतः[3] । [३३

ततो देवा ययुः सर्वे यथागतमरिन्दम ॥३१॥[4]

३४] ऋषयश्च महात्मानो यज्ञस्यान्ते तपोधनाः ।[5] [३४

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[6] त्रिशंकुस्वर्गारोहण

नाम[7] षट्[8]पंचाश[9]: सर्ग: ॥२६॥[10]

१. ल—विश्वामित्रश्च धर्मात्मा सर्वदेवैरभिष्टुतः ।

२. भ—०वीद्वाक्यं ।

३. भ—सर्वदेवैर० ।

४. ल—ऋषिभिश्च महातेजा बाढमित्यब्रवीद्वचः ।

ततो देवा महात्मान ऋषयश्च तपोधनाः ।

५. ङ—नास्ति ।

६. के व भ—आदिकांडे ।

७. भ—नास्ति ।

८. ज—अष्टचत्वारिंशः । के रा भ—नास्ति ।

९. भ—नास्ति ।

१०. ज—॥४८॥ भ—॥४२॥

ङ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

मुनीन् प्रतिगतान् दृष्ट्वा विश्वामित्रस्तपोधनः ।
१] अब्रवीन्मुनिशार्दूलः सर्वांस्तान् वनवासिनः ॥१॥[2] [१
महान् विमर्दो वृत्तोऽयं दक्षिणामभितो दिशम् ।
२] दिशमन्यामितो यामस्तप्स्यामो[4] यत्र वै तपः ॥२॥ [२
पश्चिमायां दिशि सुखं पुष्करारण्यमाश्रिताः ।
३] वयं तपः करिष्यामः परं तद्धि तपोधनाः ॥[9]३॥[11] [३
एवमुक्त्वा महातेजाः पुष्करान् समाश्रितः ।
४] तप उग्रं दुराधर्षं तेपे मूलफलाशनः ॥४॥ [४
अथ तत्रापि वसतो विश्वामित्रस्य राघव ।

---

१. कै—मुनींप्रतिगतां ।
२. ल—नास्ति ।
३. ज ल—विमंदो ।
४. भ—यामस्तप्स्यामस्तत्र ।
५. भ—पश्चिमां दिशमास्थाय ।
६. ज—०माश्रितः ।
७. रा—०वरं । भ—तपश्चरिष्यामः परं ।
८. भ—तपोधनं ।
९. ज—नास्ति ।
१०. ल—पश्चिमायां दिशायायां पुष्करेषु तपोधनः ।
सुखं तपश्चरिष्यामः परं वित्तं तपोधनम् ॥
११. ल—पुष्करेषु तपोधनः ।
१२. रा—०फलाशनाः । ल—परमदारुणम् ।

५] अम्बरीषस्य राजर्षेर्यष्टुं मतिरजायत ॥५॥[1] [५
तस्यापि[3] यजमानस्य नरमेधेन भूपतेः ।
६] प्रोक्षितं मन्त्रवद् यूपात् पशुमिन्द्रो जहार ह ॥६॥[5] [६
७ उ] तस्मिन् हृते पशौ विप्रा राजानमिदमब्रुवन् । [N
पशुर्यः प्रोक्षितो राजन् केनापि स हृतो बलात् ॥७॥[6]
८] अरक्षितारं च[7] नृपं घ्नन्ति दोषा[8] नरेश्वर[9] । [७
प्रायश्चित्तं महद्ध्येतत्[10] तं[11] [12]त्वं पशुमुपानय[13] ॥८॥[14]
९] अन्यं वाऽप्यानय क्रीत्वा यावत्कर्म प्रवर्ततां[15] । [८

१. रा—०रिष्टुं । भ—०र्यष्टुं ।
२. ल—एतस्मिन्नेव काले तु अयोध्याधिपतिर्नृपः ।
अम्बरीष इति ख्यातो यष्टुं समुपचक्रमे ॥
३. भ—तस्य वै ।
४. भ—तं ।
५. ब—तस्यापि यजमानस्य पशुमिन्द्रो जहार ह ।
ल—तस्य वै „ „ „ „ ।
भ—अतः परमधिकः पाठः—
नरं लक्षणसंपन्नं पशुत्वे विनियोजितं ।
६. ल—प्रणष्टे च पशौ तस्मिन् विप्रो राजानमब्रवीत् ।
पशुरभ्याहृतो राजन्प्रनष्टस्तव दुर्नयात् ।
७. ल—राजानं ।
८. ल—दोषा ।
९. के ल—नरेश्वरम् ।
१०. भ—महच्चैतत् ।
११. ज—तत्त्वं ।
१२. भ—पशुमिहानय ।
१३. ल—नास्ति ।
१४. ल—आनयस्व पशुं क्षिप्रं । भ—अन्यस्यानयनं कृत्वा ।
१५. भ—प्रवर्तत ।

उपाध्यायवचः श्रुत्वा स राजा बहुशस्तदा ॥९॥

१०] अन्वेष्टुं पशुमारेभे पुरुषं लक्षणान्वितम् ।[3] [९

देशान् जनपदांश्चैव[4] नगराणि वनानि[5] च ॥१०॥

११] आश्रमांश्च तथा पुण्यान् प्रविशन्[6] वै महामनाः । [१०

अन्वेषमाणः सोऽपश्यद् ऋचीकं नाम राघव ॥[7]११॥

१२] बहुपुत्रं दरिद्रं च द्विजं गृहनिवासिनम् । [११

अभिगम्याम्बरीषस्तं विप्रं[8] वचनमब्रवीत् ॥१२॥[9]

१३] तपःस्वाध्यायनिरतं पृष्ट्वा कुशलमादितः । [१२

गवां शतसहस्रेण सुतमेकं[10] प्रयच्छ मे ॥१३॥[11]

१४] नरमेधे महायज्ञे पश्वर्थं [12]भो द्विजोत्तम ।

बहुपुत्रो दरिद्रश्च वृद्धश्चासि[13] द्विजोत्तम ॥१४॥[14] [N

---

१. ल—ऐक्ष्वाकः ।

२. ल—सोमितप्रभः । भ—नाभगात्मजः ।

३. ल—अन्वियेष महाबाहुः पशुं गोभिः सहस्रशः ।

४. ल—०श्चापि ।

५. रा—वनानि नगराणि ।

६. रा भ—प्राविशद्वै० । ल—प्रविविश्वमहायशाः ।

७. ल—स पुत्रसहितं तातमभार्यां रघुनंदन ।

८. ज—अधिगम्या० । भ—०रीषस्तमृषिं ।

९. ल—भृगुतुङ्गे समासीनमृचीकं तं ददर्श ह ।

अम्बरीषो महातेजाः प्रणिपत्याभिवाद्य च ।

१०. ज—पुत्रमेकं ।

११. ल—सर्वत्र कुशलं पृष्ट्वा ऋचीकं तं महामुनिम् ।

उवाच च महातेजा प्रणम्याभिप्रसाद्य च ॥

१२. रा—मे ।

१३. भ—०श्चापि ।

१४. ल—महर्षितपसा दीप्तं राजर्षिरमितप्रभः ।

भगवं शतसहस्रेण दयात्त्वं यदि मे सुतम् ।

१५] यदि ते रोचते ब्रह्मन् सुतमेकं प्रयच्छ मे[1] । [N
बहवो विचिता[2] देशा न लभे यज्ञियं[3] पशुम् ॥१५॥[4]
१६] दातुमर्हसि[5] मूल्येन[6] सुतमेकं[7] द्विजोत्तम । [१४उ
पशोरर्थे[8] कृतार्थः स्यामहं काश्यप सुव्रत ॥[9] १६॥ [१३उ
१७] इत्युक्तोऽथाम्बरीषेण ऋचीको रघुनन्दन ।
न विक्रेष्याम्यहं पुत्रं ज्येष्ठमित्यब्रवीद्वचः ॥[10] [11] १७॥ [१५
१८] ऋचीकवचनं श्रुत्वा माता तेषां यशस्विनी ।
उवाचर्चीकपुत्राणां तं राजानमिदं वचः ॥१८॥[12] [१६
१९] अविक्रेयं सुतं ज्येष्ठं भगवानाह काश्यपः ।

१. भ—परित्यज ।

२. रा ज—विदिता । भ—०भिसृता ।

३. ज—याज्ञियं ।

४. ल—पशोरर्थे कृतार्थोऽस्मि अहं काश्यप सुव्रत ।
सर्वे परिसृता देशा याज्ञियं न लभे पशुं ।

५. भ—दीक्षितोहं च ।

६. रा भ—मूल्येन ।

७. ल—यावत्कर्म प्रवर्तते ।

८. के रा ज—पशोरथ ।

९. ल—नास्ति ।

१०. ल—एवमुक्तो महातेजा ऋचीकस्तमुवाच ह ।
नाहं ज्येष्ठं नरश्रेष्ठ विक्रीणीयां कथंचन ॥

११. ज—यदृच्छया ।

१२. ल—ऋचीकस्य वचः श्रुत्वा तेषां माता महात्मना
उवाच नरशार्दूलं तं राजानं महाव्रतम् ॥
भ—नास्ति ।

ममाप्येकं कनीयांसं सुतं विद्धि परं प्रियम् ॥१९॥[3] [१७
२०] पितॄणां वल्लभा ज्येष्ठाः प्रायेण हि सुता नृप ।[4]
मातॄणां हि कनीयांसस्तस्माद्रक्ष्या हि मे सुताः ॥[5]२०॥[१८
२१] उक्तवाक्ये मुनौ[6]वेवं मुनिपत्न्यां तथैव च ।
शुनःशेपो[7] महाप्राज्ञो मध्यमो वाक्यमब्रवीत् ॥२१॥ [१९
२२] ज्येष्ठः पितुरविक्रेयः कनीयान्मातुरेव च ।
विक्रेयं[9] मध्यमं मन्ये राजपुत्रं नयस्व माम् ॥२२॥ [२०
२३] गवां शतसहस्रेण शुनःशेपं[11] नरेश्वरः ।
गृहीत्वा परमप्रीतो जगाम रघुनन्दन ॥२३॥ [२२

१. ज—ममाप्येवं ।

२. भ—राजन् विद्धि सुतं ।

३. ल—ऽप्यविक्रेयं सुतं ज्येष्ठं पिता प्राह महाद्युते ।
ममाप्येवं कनीयांसं तस्माद्रक्ष्या हि मे सुताः ॥

४. के भ—पितॄणां वल्लभो ज्येष्ठः प्रायेण तु नरश्रेष्ठ ।
भ— ,, ,, ज्येष्ठः ,, हि सुतो नृप ।

५. भ—मातॄणां च कनीयांश्च तस्माद्रक्ष्यौ सुतौ नृप ।

६. भ—मुनौ तस्मिन् ।

७. ल—शुनः शेहो । भ—शुनः शेफ ।

८. भ—इदं तत्र ।

९. ल—विक्रीयं ।

१०. भ—राजसूनो ।

११. भ—शुनः शेफं ततो नृपः ।

रथमारोप्य तं राम शुनःश्शेपं[1] त्वराऽन्वितः ।
२४] आजगाम ततो यज्ञं समापयितुमात्मनः ॥[2] २४॥ [२३

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[3] शतानन्दवाक्ये[4] शुनःशेपविक्रियो[5]
नाम[6] सप्तपञ्चाशः[7] सर्गः[8] ॥५७॥

१. भ—शुनः शेफं ।
२. ल—अम्बरीषस्तु राजर्षी रथमारोप्य सत्वरः ।
शुनः शेपं महातेजा जगाम च यथागतम् ।
स्वयं च भवनं प्राप्तः पुष्करे समागमत् ॥
३. भ—आदिकांडे । के रा ब—नास्ति ।
४. ज भ—नास्ति ।
५. रा—०विक्रेयो । ज ब—विक्रियो । भ—विक्रयः ।
६. के रा—नाम त्रिषष्टितमः । ब—नाम । भ—नास्ति ।
ज—नाम एकोनपंचाशत्तमः ।
७. भ—नास्ति ।
८. ब—॥४६॥ भ—॥४६॥ ल—असमाप्तः सर्गः ।

शुनःशेपं[1] तमादाय स राजा श्रान्तवाहनः ।
१] व्यश्रमत् पुष्करे तीर्थे[2] मध्यमे रघुनन्दन ॥१॥[3] [१
तस्य विश्राम्यतस्तत्र[4] शुनःशेपो[5] महामतिः[6] ।
२] पुष्करं ज्येष्ठमागम्य[7] विश्वामित्रं ददर्श ह ॥२॥ [२
स दीर्ण[8]हृदयो दीनो[9] विक्रयेण श्रमेण च ।
३] जगाम शिरसा पादौ मुनेर्वाक्यमुवाच ह[10] ॥३॥[11] [३
न मेऽस्ति माता न पिता सुहृन्मे[12] च बान्धवैः[13] ।

१. भ—शुनः शेफं ।
२. कै रा—तीरे ।
३. रा—शुनः शेपं नरश्रेष्ठो गृहीत्वाथ महाबलः ।
विश्रम्य पुष्करे राम मध्यमे रघुनंदन ॥
४. रा—०मतस्तस्य । ल—विश्रमतस्तत्र ।
भ—विश्रमतस्तस्य ।
५. ल—शुनः शेपो । भ—शुनः शेफो ।
६. ल—महातपाः भ—महामुनिः ।
७. ज—तीर्थमा० ।
८. कै—चीर्ण० ।
९. ज—भीतो ।
१०. ब—च ।
११. ल—विघूर्णमानहृदयो लज्जया च श्रमेण च ।
पपातांके मुनेस्तत्र वचनं चेदमब्रवीत् ॥
१२. ल—ज्ञातिर्मे ।
१३. रा ल—बांधवाः ।

४] त्रातुमर्हसि मां त्यक्तं बन्धुभिः शरणागतम् ।।४।।[2] [५
राजा च कृतकार्यः स्याज्जीवेयं चाप्यहं यथा ।
५] भवतो वीर्यमाश्रित्य तथा त्वं कर्तुमर्हसि ।।५।।[3] [६
नाथो मे त्वमनाथस्य भव भव्येन[4] चेतसा ।
६] पितेव पुत्रं कृपणं त्रातुमर्हसि मां मुने ।।६।।[5] [७
तस्यैतद्[6] वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रस्तपोधनः[7] ।
७] सान्त्वयित्वा शुनःशेपं[8] स्वान् पुत्रानिदमब्रवीत्[9] ।।७।। [८
यत्कृते पितरः पुत्रानिच्छन्ति गुणवत्तरान् ।
८] दुर्गसन्तारणार्थाय तस्य कालोऽयमागतः ।।८।।[10] [९
अयं मुनिसुतो बालो मत्तः शरणमिच्छति ।
९] अस्य जीवितदानेन प्रियं[11] मे[12] कर्तुमर्हथ ।।९।। [१०

१. ल—सौम्य तन्मे त्वं मुनिपुंगव ।
२. ल—अतः परमधिकः पाठः—
त्रात[1] त्वं हि मुनिश्रेष्ठ पितेव मम सुव्रत ।
३. ल—राजा च कृतकृत्यः स्यादयं यज्ञफलार्जितं ।
स्वर्गलोकमुपाश्नीयास्तव सौम्याभिदर्शनात् ।।
४. भ—दिव्येन तेजसा ।
५. ल—मम नाथो ह्यनाथस्य भव व्यसनचेतसः ।
पितेव पुत्रं धर्मात्मंस्त्रातुमर्हसि किल्बिषात् ।।
६. ल—तस्य तद् ।
७. ल—विश्वामित्रो महातपाः ।
८. ल—बहुविधं । भ—शुनः शेफं ।
९. ल—पुत्रानिदमुवाच ह ।
१०. ल—यत्कृते पितरः पुत्रा जयंति शुभार्थिनः
परलोके हितार्थाय तस्य कालोयमागतः ।।
११. कै ब—पुत्रं ।
१२. ल—कुरुत पुत्रकाः ।

सर्वे सुकृतकल्याणाः[1] सर्वे सुचरितव्रताः[2] ।
१०] ते यूयं मन्नियोगेन मोक्षयध्वं मुनेः सुतम् ॥१०॥[3] [११
अध्वराग्नेः समिद्धस्य गत्वा तृप्तिं प्रयच्छत ।
११] मोक्षयध्वमिमं चैव पशुत्वान्मम शासनात् ॥११॥[4] [N
शरणं मामनुप्राप्तमृचीकस्य मुनेः सुतम् । [N
१२] स्यादविघ्नो यथा तस्य राजर्षेः[5] क्रियतां तथा ॥१२॥[6] [१२पू
इति पित्राऽनुसृष्टास्ते[7] मधुच्छन्दादयस्तदा ।
१३] साभिमानमिदं[8] वाक्यमूचुः पितरमप्रियम्[9] ॥[10] १३॥ [१३
कथमात्मसुतांस्त्यक्त्वा त्राता परसुतानसि[11] ।[12]
१४] भगवन्न कार्यमेतत्[13] ते स्वम[ां]स्येव भक्षणम्[14] ॥१४॥ [१४
इति तेषां वचः श्रुत्वा पुत्राणां मुनिरप्रियम् ।

---

१. ज ब—च कृत कल्याणाः ।
२. ज—च चरित० । ल—धर्मपरायणाः ।
३. ल—नास्ति ।
४. ल—पशुत्वे राजसिंहस्य तृप्तिमग्नेः प्रयच्छत ।
५. के—राजर्षे ।
६. ल—यावता च मुनः शेषे यज्ञे चाविघ्नता भवेत् ।
देवतास्तर्पिताश्च स्युर्मम स्याच्च वचः कृतम् ।
मुनेस्तु वचनं श्रुत्वा मधुच्छंदादयस्ततः ।
७. भ—०नुशिष्टास्ते ।
८. रा—स्वाभिमान० ।
९. ज—पितरमभ्ययर्थं ।
१०. ल—साभिमानं मुनिश्रेष्ठं सर्वाक्यमिदमब्रुवन् ।
११. रा भ—०तानपि ।
१२. ल—कथमात्मसुतं त्यक्त्वा त्रायसेऽन्यसुतं प्रभो ।
१३. ब ल—अकार्यमेतत्पश्यामः ।
१४. ल—भोजने ।

१५] क्रोधसंरक्तनयनः पुत्रांस्तानशपत् क्रुधा ॥१५॥[2] [१५
निःसाध्वसमिदं वाक्यं धर्माद्भिहितं बहिः[4] ।
१६] यस्मात् पुमांसमुद्दिश्य युष्माभिरवमन्य माम् ॥[6] १६॥ [१६
स्वमांसवृत्तयस्तस्माद् वासिष्ठा इव जातिषु ।
१७] गता वर्षसहस्रं वै कुत्सिता विचरिष्यथ ॥[9] १७॥ [१७
इति शापाग्निना दग्ध्वा पुत्रान् स्वान् कुशिकात्मजः ।
१८] शुनःशेपमुवाचेदं वचनं परिसान्त्वयन् ॥१८॥[13] [१८
यदा तात पशुत्वे त्वं प्रोक्षितः स्यास्तदा जपेः । [१९

१. कै—क्षुधा । भ—तदा ।

२. ल—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा सुतानां मुनिपुंगवः ।
क्रोधसंरक्तनयनो व्याहर्तुमुपचक्रमे ।

३. रा— धर्मादपिहितं । ब—धर्मतोभिहितं ।

४. ब ल—मया ।

५. रा ल—स्वमांसमुद्दिश्य । भ—स्वमांसमुद्दिष्टं ।

६. ल—स्वमांसमिति यत्प्रोक्तं दारुणं लोमहर्षणं ।

७. ल—स्वमांसभोजिनस्त० ।

८. भ—पातिताः ।

९. ब—पूर्णं वर्षसहस्रं वै पृथिवीमनुवत्स्यथ ।
ल—„ „ „ „ मनुवत्स्यथ ।
भ—पतिताः सहस्रवर्षाणां भ्रंशिता विचरिष्यथ ।

१०. रा—दग्धान् ।

११. भ—शुनः शेफमिदं वाक्यमुवाच ।

१२. रा—परिसंत्वयत् ।

१३. ल—दत्वा शापं च सोयुक्तं दारुणं लोमहर्षणम् ।
अथाब्रवीच्छुनः शेपं कृत्वा रक्षां निरामयां ।

१४. भ—पशुत्वे पुत्र ।

१९] इमं मन्त्रं मया प्रोक्तमिन्द्राभिष्टवसंयुतम् ॥१९॥[1] [२० पू

जपन्[2]तमेनं मन्त्रं त्वां मोक्षयिष्यति वासवः । [N

२०] पशुत्वादस्य चाविघ्नं भविष्यति म[3]हीपतेः ॥२०॥[4] [N

शुनःशेपो[5]ऽथ तन्मन्त्रम[6]धीत्य त्व[7]रितं तदा । [8]

२१] उपेत्य हृष्टो राजानमम्बरीषमभाषत ॥२१॥[8] [२१

एहि राजन्नितः शीघ्रं नय मां यज्ञमात्मनः ।

२२] [9]त्वं मां मन्त्रयुतं प्रोक्ष्य दीक्षामेतां समापय ॥२२॥[10] [२२

तद् वाक्यमृषिपुत्रस्य श्रुत्वा हर्षसम[11]न्वितः ।

२३] जगाम नृ[12]पतिः श्रीमान् स[13] देवयजनं तदा ॥२३॥ [२३

---

१. ल—पवित्रपाशैराविष्टो रक्तमाल्यानुलेपनः ।
वैष्णवं रूपमासाद्य ध्यायम्मां मनसा मुहुः ।

२. भ—जपंश्च मन्त्रमेवं ।

३. रा—महीपते ।

४. ल—इमे च गाथे द्वे योगी गाथस्त्वं मुनिपुत्रक ।
अम्बरीषस्य यज्ञार्थं ततः सिद्धिमवाप्स्यसे ॥

५. भ—शुनः शेफोथ ।

६. ज—मन्त्रं तदधीत्य । भ—तं मन्त्रमधीत्य ।

७. भ—त्वरितस्तदा ।

८. ल—शुनः शेहश्च ते कृत्वा पाठे गाथे समाहितः ।
त्वरया राजसिंहं तमम्बरीषमुवाच ह ।

९. भ—पशु मां मन्त्रतः ।

१०. ल—राजसिंहं नरश्रेष्ठ गच्छ शीघ्रमतः परम् ।
निवर्तय मया सौम्य प्राविश्येन महाक्रतुम् ॥

११. ल—०समुत्सुकः ।

१२. ज ल—०शीघ्रं । भ—नृपतिर्धीमान् ।

१३. ल—यज्ञवाटमतन्द्रितः । भ—समेव यजनं० ।

[1]सदस्यानुमतं सोऽथ पवित्रं[2] कृतलक्षणम् ।
२४] शुनःशेपं[3] पशुं यूपे बबन्ध[4] मुनिर्यन्त्रितम् ॥२४॥[5] [२४
स यूपबद्ध[6]स्तुष्टाव देवेन्द्रं हरिवाहनम् ।
२५] भागार्थिनमनुप्राप्तं स्वरेणो[7]च्चैर्विनादयन् ॥२५॥[8] [२५
तस्मै[9] प्रीतः सहस्राक्षस्तदा[10] प्रादादभीप्सितम् ।
२६] आयुरिष्टं यशश्चा[11]ग्र्यं शुनःशेपाय[12] राघव ॥[13]२६॥ [२६
स राजा तु क्रतुफलं तदा प्राप यथेप्सितम् ।[14]
२७] धर्म्यं[15] यशः श्रियं[16] चाग्र्यं सहस्राक्षप्रसादतः ॥२७॥[17] [२७

---

१. भ—स तस्यानुमते ।
२. भ—पवित्री ।
३. भ—शुनः शेफं ।
४. ज—०मुनिमं० । भ—निबबन्धानुमंत्रितं ।
५. ल—सदस्यानुमतो राजा पवित्रीकृतलक्षणः ।
एकं रक्ताम्बरं कृत्वा यूपमूले न्ययोजयत् ।
६. ज—यूपबद्धं ।
७. भ—स्तावनार्थे विनोदयन् ।
८. ल—स बद्धो वाग्भिरग्र्याभिरभिष्टुत्य महौजसम् ।
इन्द्रमिन्द्रानुजांश्चैव यथावन्मुनिपुंगवः ॥
९. ल—ततः ।
१०. ल—०स्तस्य स्तुतिभिरीषितः ।
११. भ—यशश्रेष्ठं ।
१२. भ—०शेफाय ।
१३. ब—नास्ति । ल—दीर्घमायुस्ततः प्रादाच्छुनःशेफाय राघव ।
१४. ब—नास्ति ।
ल—स च राजा नरश्रेष्ठ तस्य यज्ञस्य लब्धवान् ।
भ—,, ,, क्रतुफलं तदवाप यथेप्सितं ॥
१५. रा ज—धर्मं । भ—धर्मे ।
१६. रा—प्रियाचाग्र्यं । भ—प्रियं चाग्र्यं ।
१७. ल—फलं बहुगुणं राम सहस्राक्षप्रसादजं ।

विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा चचारोग्रं[1] तपस्तदा[2] ।
२८] पुष्करेष्वेव वर्षाणां सहस्रं नियतव्रतः ॥[3]२८॥ [२८

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[4] विश्वामित्रमाहात्म्ये[5]
अम्बरीषयज्ञो[6] नाम अष्टपञ्चाशः[6] सर्गः ॥[7]५८॥

१. ल—तसवां ।
२. ल—सुमहत्तपः । भ—महत्तपः ।
३. ल—उग्रं परमनाधृष्यं ब्राह्मण्ये कृतमानसः ।
सहस्रं शरदामेकं पुष्करेषु तदानघ ॥
४. के भ—आदि काण्डे ।
५. रा ज—नास्ति ।
६. के—०पञ्चचतुःपंचितमः ।
रा—चतुषष्ठितमः । ज—नामपञ्चाशत्तमः ।
भ—नाम ।
७. ज—॥५०॥ भ—॥४७॥
च ल—सर्गसङ्ख्यातिर्न दृश्यते ॥

पूर्णे[1] वर्षसहस्रे तु व्रतस्नातं[2] महामुनिम् ।
१] अभ्यागच्छन्[3] सुरा[4] रामं तपोबलसमाहितम्[5] ॥१॥ [१
तत्रैनमब्रवीद्[6] ब्रह्मा[7] पुनः सुरुचिरं वचः ।
२] ऋषिश्रेष्ठो मतो[8] नस्त्वं निवर्तस्व तपोधन ॥[9] २॥ [२
इत्युक्त्वाऽनन्तरं ब्रह्मा जगामाशु यथागतम् ।[10]
३] विश्वामित्रोऽपि तच्छ्रुत्वा[11] चचारैव पुनस्तपः ॥३॥ [३
तत्र[12] चैनं[12] तपस्यन्तं कालस्य महतस्ततः[13] ।

---

१. रा—०वर्षं सह० । भ—पूर्णवर्षसहस्रेथ ।

२. कै रा ज—०स्नानं । ल—०श्रांतं ।

३. के रा ज भ—अभ्यगच्छन् ।

४. रा—सुरा राम । ब ल—सुराः सर्वे ।

५. ब—तत्तपोबलविस्मितः । ल—तत्तपोबलविस्मिताः ।
भ—तपोबल० ।

६. ल—अब्रवीच्च महातेजा ।

७. ज ब—पुरः । ल—ब्रह्मा । भ—मुनिं ।

८. रा—मनतस्त्वं ।

९. ल—ऋषिस्त्वमपि भद्रं ते वार्जितं कर्मभिः शुभैः ।
भ—ऋषिस्त्वमसि भद्रं ते स्वर्जितैः कर्मभिः शुभैः ।

१०. ल—एवमुक्त्वाथ देवेशस्त्रिदिवं पुनरभ्यगात् ।
भ—एवमुक्त्वा तु ,, पुनरभ्यगात् ।

११. ल—धर्मात्मा तपः परमतप्यत ।

१२. भ—तत्रैवाथ ।

१३. भ—०स्तपः

४] आजगामाप्सरा राम तं वै[2] लोभयितुं रहः ॥ ४॥[3] [४
मेनका नाम सुश्रोणी विश्वामित्राश्रमं प्रति ।
५] पुष्करे सा सुचार्वङ्गी मेनकां निर्जने वने ॥[5] ५॥ [४
N] जलप्रक्लिन्नवसना स्नातुं समुपचक्रमे । [४
तां[7] ददर्शाद्भुताकारां मेनकां कुशिकात्मजः ॥६॥
६] रूपेणाप्रतिमां राम श्रियं मूर्तिमतीमिव । [५
तां दृष्ट्वा चारुसर्वाङ्गीं मेनकां निर्जने वने ॥[10] ७॥ [६
७] जलप्रक्लिन्नवसनां मनोहरतराकृतिम् ।[13]
कन्दर्पवशगोऽभ्येत्य मुनिर्वचनमब्रवीत् ॥[14] ८॥ [६
८] का त्वं कस्य कुतो वेदं वनं भद्रेऽभ्युपागता ।

१. भ—०माश्रमं ।
२. भ—प्रलोभ० ।
३. ल—ततः कालस्य महतो मेनका नाम याप्सराः ।
४. भ—नास्ति ।
५. ल—नास्ति ।
६. ल—पुष्करे तु नरश्रेष्ठ । भ—नास्ति ।
. ल—तामपश्यन्महातेजाः ।
८. भ—चैव ।
९. ल—राजन्तीमिव विद्युतम् ।
१०. ल—नास्ति ।
११. भ—अम्भेन क्लिन्नवसनां ।
१२. भ—मनोहरकृताकृतिं ।
१३. अतः परमधिकः पाठः—
भ—क्वणत्कनककेयूरनादापूरितदिङ्मुखां ।
ल— ,, केयूरनादपूरितदिङ्मुखां ।
१४. ल—कन्दर्पदर्पवशगो मुनिस्तामिदमब्रवीत् ।

एहि विश्रम्यतां[1] भीरु ममाश्रमपदं प्रति ॥[2]९॥[3] [७

९] मेनका तद्वचः श्रुत्वा विश्वामित्रमभाषत ।[4]

अप्सरा मेनका नाम त्वत्प्रीत्याऽहमुपागता ॥१०[5]॥ [N

१०] रोचते यदि ते ब्रह्मन्ननुरक्तां भजस्व माम् ।

इति तां रुचिरं वाक्यं भाषमाणामनिन्दिताम् ॥११॥[6] [N

११] पाणौ गृहीत्वा भगवानाश्रमं प्रविवेश ह ।[7] [N

---

१. अ—विश्राम्यतां ।

२. ब—नास्ति ।

३. ल—नास्ति ।

भ—मेनके स्वागतं तेऽस्तु वसेहात्र मया सह ।
अनुगृह्णीष्व मां भद्रे मदनेन प्रमोहितं ॥

४. भ—इत्युक्ता सा वरारोहा कौशिकेन महात्मना
उवाच प्रश्रितं वाक्यं प्रणयात्प्रीतिवर्द्धनं ।

५. भ—त्वत्प्रीत्यर्थं० ।

६. ल—नास्ति ।

७. ल—नास्ति ।

ब ल—अतः परमधिकः पाठः—

मेनके स्वागतं तेऽस्तु वसेहात्र मया सह ।
अनुगृह्णीष्व मां भद्रे मदनेन प्रमोहितं ॥
इत्येवमुक्ता कुशिकात्मजेन
सा मेनका नाम मनोहरांगी* ।
तत्रावसत्तस्य वचोनुरोधात् ।
कंदर्पभार्येव मनोभवेन ॥
इत्यार्षे रामायणे बालकांडे विश्वामित्रतपो
नाम सर्गः ॥

इत्युक्ता सा वरारोहा तत्रावासमगात्तदा ।
तपसस्तु महाविघ्नो विश्वामित्रमुपागमत् ॥

---

*ल—मनोरमाङ्गी ।

तानि[1] वर्षाण्यतीतानि[2] पञ्च पञ्च च[2] राघव ॥१२॥ [९पू
१२] विश्वामित्रस्य रमतः क्षणवद्[3] व्यतिचक्रमुः ।
क्षतविज्ञान[4]बुद्धिर्हि तया मुनिरसौ तथा[5] ॥१३[6]॥ [N
१३] तानि वर्षाण्यतीतानि बुबोधैकमहर्यथा[7] ।
अथ काले गते तस्मिन् बुद्ध्वा[8] बुद्ध्वाऽऽत्मविक्रियाम् ।१४[9] [N
१४] जगादैवं तदा वाक्यं विश्वामित्रस्तपोधनः[10] ।
सोऽमर्षस्तच्च[11] मे ज्ञानं तत्तपः स च निश्चयः[12] ॥१५॥ [N
१५] नष्टान्येकपदेनेह सर्वथा किमपि स्त्रिया[14] ।
अनया लोभयित्वा[15] मां[16] तपोपहरणं कृतम् ॥१६॥[13] [N

१. ल—तस्यां वसत्यां वर्षाणि । ?—तया च सह वर्षाणि ।

२. कै—वराणि च ।

३. भ—क्षणवद्व्यतिचक्रतुः ।

४. ज—क्षणवि० । भ—हृतविज्ञा० ।

५. ज भ—तदा । ज पुस्तके पुनः शोधनम् ।

६. ल—विश्वामित्राश्रमे रम्ये सम्यक्परिचचार ह ।
स तेषु बुद्धिरुत्पन्ना सामर्षा रघुनन्दन ॥

७. भ—०कमहो यथा ।

८. भ—बुद्ध्या ।

९. ल—विघ्नोयं देवविहितस्तपसो मे महात्मनः ।
अथ काले गते तस्मिन्विश्वामित्रो महायशाः ।

१०. रा भ—०स्तपोधनाः ।

११. भ—सर्वार्थस्तच्च ।

१२. भ—विनिश्चयः ।

१३. ल—संत्रस्तहृदयस्तत्र चिताशोकसमन्वितः ।
सर्वं सुरा[illegible] कर्मेदं तपोपहरणं मम ॥

१४. भ—स्त्रियः ।

१५. ज—आनयित्वा ।

१६. भ—मे ।

१६] इन्द्रमियं चिकीर्षन्त्या तस्मादेनां सजाम्यहम् ।[1]   [N
ततस्तां[2] मधुरै वाक्यै विसृज्य कुशिकात्मजः ॥१७॥
१७] पुष्कराणि परित्यज्य जगामोत्तरपर्वतम् ।   [१४
नैष्ठिकीं बुद्धिमास्थाय जेतुं[3] काममर्मर्षितः ॥१८॥[4]
१८] कौशिकीतीरमासाद्य तपस्तेपे[5] सुदारुणम् ।   [१५
सहस्रमपरं राम वर्षाणाममितद्युतिः ॥१९॥[6]
१९] चचार दुश्चरं तेन[7] देवा भयसमन्विताः ।   [१६
समेत्य मन्त्रयामासुः सर्षिसंघाः सवासवाः ॥२०॥[8]
२०] महर्षिशब्दं लभतां साध्वयं कुशिकात्मजः[9] ।   [१७
मा च नस्तपसोग्रेण तापयत्वेवमुद्यतः ॥[10]२१॥

---

१. ल—नास्ति ।

ब ल—अतः परमाधिकः पाठः—

अहोरात्रापदेशेन गताः संवत्सरा दश ।
काममोहाभिभूतस्य विघ्नोयं प्रत्युपस्थितः
स निःश्वसन्मुनिश्रेष्ठः पश्चात्तापेन मूर्छितः ।
भीतामप्सरसं दृष्ट्वा वेपमानां कृतांजलिं ॥

२. कै—ततस्त्वां । ब ल—मेनकां ।

३. भ—स जेतुं काममागतः ।

४. ल—उत्तरं पर्वतं राम विश्वामित्रोभ्ययात्पुनः ।
कृत्वा सुनिश्चितां बुद्धिं कामं जेतुं महायशाः ।

५. ल—तपे [पो ?] तप्यत दारुणं ।

६. ल—तस्मिन्वर्षसहस्रं तु तप्यमानो महत्तपः ।

७. रा—राम । भ—ते तु ।

८. ल—उत्तरे पर्वते राम देवानामभवद्भयम् ।
ते मन्त्रयान्तुः सहिताः सर्षिसंघाः सुरासुराः ।

९. ल—कौशिकात्मजः ।

१०. ल—नास्ति ।

२१] निवर्ततामयं ब्रह्मंस्तपसोग्रयादिति प्रभो । [N
देवानां निश्चयं श्रुत्वा ब्रह्मा लोकपितामहः ॥२२॥
२२] अब्रवीन् मधुरं वाक्यं विश्वामित्रं महामुनिम् । [१८
महर्षे विनिवर्तस्व तपसः कुशिकात्मज ॥२३॥
२३] महत्त्वमृषिमुख्यानां ददामि तव सुव्रत । [१९
ब्रह्मणस्तद् वचः श्रुत्वा विश्वामित्रस्तपोधनः ॥२४॥ [२०
२४] प्राञ्जलिः प्रणतो वाक्यं प्रत्युवाच महायशाः । [२१
ब्रह्मर्षिशब्दं भगवन् दुर्लभं तपसार्जितम् ॥२५॥

---

१. भ—विवर्त्यतामयं ।
२. ल—देवतानां ।
३. ब—वचनं । ल—वचः ।
४. ज—कृत्वा ।
५. ल—सर्वलोकपितामहः ।
६. ब—अब्रवन् ।
७. रा—तपसा ।
८. ल—महर्षे स्वस्ति ते वत्स तपसोग्रेण कर्षितः ।
९. भ—अब्रवीद्राधिजं ब्रह्मा वरं याचस्व सुव्रत ॥
१०. रा—महत्त्वमृषिमुख्यानां ।
ल—महर्षित्वं दुरावापं ।
११. ल—पितामहवचः ।
१२. रा ब—०स्तपोधनाः ।
१३. कै रा ल भ—तपसोर्जितम् ।
१४. ल—प्रांजलिः प्रणतो भूत्वा विश्वामित्रस्ततोऽब्रवीत् ।
महर्षिशब्दमतुलं तपोबलसमन्वितम् ॥
भ—प्रत्युवाच रघुश्रेष्ठ विश्वामित्रो महातपाः ।
महर्षिशब्दं भगवन्दुर्लभं तपसार्जितं ।

२५] लभेयं त्वत्प्रसादेन[1] यदि मेऽस्ति तपार्जितम् ।[2][3] [२२
तमुवाच ततो ब्रह्मा न तावत् त्वं जितेन्द्रियः ॥२६॥ [२३
२६] कामक्रोधावनिर्जितस्य[4] कथं ब्रह्मत्वमिच्छसि ।
जयेन्द्रियाणि[5] तावत् त्वं कामक्रोधौ च कौशिक ॥२७॥[6] [२३
२७] ततः परं[7] त्वं ब्रह्मत्वं समवाप्स्यसि दुर्लभम् ।
इत्युक्त्वा प्रययौ ब्रह्मा पुनरेव यथागतम् ॥२८॥ [N
२८] विश्वामित्रोऽपि तत्रैव तेपे घोरतरं तपः ।
ऊर्ध्वबाहु निरालंब एकपादप्रतिष्ठितः ॥२९॥[8]
२९] वायुभक्षः स्थितः[9] स्थाने एकस्मिन् स्थाणुवत् स्थिरः ।[10] [२४
[11]घर्मे पञ्चतपा[12] भूत्वा वर्षास्वभ्रावकाशिकः ॥३०॥
३०] शिशिरे जलशायी च भूत्वा तेपे महत् तपः । [२५उ

---

१. भ—लभे यत्प्रसादेन ।
२. भ—तपास्विता ।
३. ल—यदि मे भगवानाह ततोस्मिन्नजितेन्द्रियः ।
४. भ—कामक्रोधमानिर्जेस्य ।
५. ज—जितेन्द्रियाणि ।
६. ल—इन्द्रियाणि जयेत्युक्त्वा जगाम त्रिदिवं पुनः ।
यतस्वेति मुनिश्रेष्ठमुक्तवांस्तं दिवं व्रजेत्
७. ज—परस्व ।
८. ल—विप्रस्थितेषु देवेषु विश्वामित्रो महामुनिः ।
ऊर्ध्वः बाहुर्निरालंबो वायुभक्षस्ततोभवत् ॥
९. कै भ—स्थितः ।
१०. ल—नास्ति ।
११. ल भ—ग्रीष्मे ।
१२. कै—पंचतपः । ल—पंचतपो ।
१३. ल—०स्वाकाशगोभवत् । भ—०भ्रावकाशगः ।

एवं वर्षशतं[1] सोग्रं घोरं तप उपाश्रितः[2] ॥३१॥[3] [२६

३१] समेता[4] दिवि काकुत्स्थ देवा भयमुपागमन् । [N

संभ्रमं परमास्थाय[5] ततः शक्रः सुराधिपः[6] ॥३२[7]॥

३२] चिन्तयित्वा तपोविघ्नमुपायं[8] रघुनन्दन । [२७

आहूयाप्सरसं रम्भां मरुद्गणयुतः[9] प्रभुः ।[10]

३३] उवाचात्महितं[11] वाक्यमहितं[12] कौशिकस्य च[13] ॥[14]३३॥ [२८

इत्यार्षे रामायणे[15] बालकाण्डे विश्वामित्रतपो[16] नाम

एकोनषष्टितमः[17] सर्गः[18] ॥५९[19]॥

---

१. ब—वर्षसहस्रेण ।

२. भ—उपासतः ।

३. ल—सलिले शिशिरं सर्वमहोरात्राणि सर्वशः ।

एवं वर्षसहस्रेण तपोतप्यत दारुणम् ।

४. भ—समस्ता ।

५. भ—परमापन्नस्ततः ।

६. भ—सुरेश्वरः ।

७. ल—ततस्तपसि संसक्ते विश्वामित्रे महामुनौ

संभ्रमः सुमहानासीत्सुराणां वासवस्य च ।

८. के—०मपायं ।

९. भ—०न्नयावृतः ।

१०. ल—रम्भामप्सरसं शक्रः सह सर्वैर्मरुद्गणैः ।

११. ल—स उवाच हितं ।

१२. रा—वाक्यं मिहितं । ल—वाक्यं सहितं ।

१३. भ—तु ।

१४. ल—अतः परमधिकः पाठः—वरारोहे गुणैः सर्वैरप्सरोभि र्विशिष्यते ।

१५. के—आदि काव्ये भ—नास्ति ।

१६. के रा—नास्ति । भ—विश्वामित्रमाहात्म्ये ।

१७. के रा—पंचषष्टितमः । ज—एकपंचाशत्तमः । भ—नास्ति ।

१८. भ—नास्ति ।

१९. ज—॥५१॥ भ—॥४८॥ ब ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ॥

सुरकार्यमिदं रम्भे कर्तुमर्हसि मामिमिं[1] ।
१] लोभयस्व तपस्यन्तं कौशिकं गुणसंपदा[2] ॥[3]१॥ [१
एवमुक्ता ततो रम्भा सहस्राक्षेण धीमता ।
२] प्राञ्जलिः प्रणतोद्विग्ना[5] प्रत्युवाच सुराधिपम् ॥[6]२॥ [२
कोपनश्च तपस्वी च विश्वामित्रः शचीपते ।
३] स कोपं[7] नियतं देव मय्युत्स्रक्ष्यति[8] कोपितः[9] ॥३॥[10]
तस्मात् त्वं मे सुरपते[11] प्रसादं कर्तुमर्हसि । [३
४] तेनासादयितव्यानि[12] तपांसि[13] जयतां वरं[14] ॥४॥ [N

---

१. ल—कर्त्तव्यं सुमहत्त्वया ।
२. भ—रूपसंपदा ।
३. ल—प्रक्षोभ्य कौशिकं भद्रे कामक्रोधवशं नय ।
४. ल—तथोक्तामप्सरा राम ।
५. भ—प्रणता मूर्ध्ना ।
६. ल—वित्रस्ता प्राञ्जलिर्भूत्वा प्रत्युवाच सुरेश्वरम् ।
७. ब—शापं ।
८. कै—मय्युत्प्रपाति । ब—मय्युद्दास्यति ।
भ—समुत्स्रजति ।
९. भ—कोपनः ।
१०. ल—अयं सुरपते क्रोधी विश्वामित्रो महाद्युतिः ।
शापमुत्स्रक्ष्यति देवानां भयप्रदः ॥
११. ज—तस्मान्मे त्वं सुर० । ल—ततो मे भगवन्साधु ।
१२. भ—नाभ्युत्थापयितव्यानि ।
य ल—न मे सदयित० ।
१३. ब ल—तेजांसि ।
१४. ब ल—च तपांसि च । भ—तपतां वर ।

तामुवाच ततः शक्रो वेपमानां कृताञ्जलिम् । [४ उ
५] मा भैषीः कुरु रम्भे त्वं प्रियं मे प्रियभाषिणि ॥५[4]॥ [५
कोकिलो हृदयग्राही काले कुसुमितद्रुमे ।
६] अहं कन्दर्पसहितः स्थास्ये तव समीपतः ॥६॥ [६
मनोहरं तु रम्भोरु कृत्वा रूपमथाद्भुतम् ।
७] तमृषिं रुचिरापाङ्गे गच्छ लोभयितुं वने ॥७॥[11] [७
इत्युक्ता देवराजेन रम्भा सुरुचिरानना ।
८] कृत्वा रूपं मनोहारि विश्वामित्रमलोभयत् ॥८॥[12] [८
इन्द्रोऽपि कोकिलो भूत्वा वल्गु व्याहरते वने[13] ।

---

१. रा ज —तमुवाच ।

२. ल—सहस्राक्षो ।

३. भ—त्वं रम्भे कुरु मा भैषीः ।

४. ल—रंभे मा भूत्तव भयं कुरुष्व वचनं मम ।

५. रा-काली । ल —माधवे ।

६. ल—रुचिरे मतौ ।

७. ब ल—अयं ।

८. ल—स्थोत: ।

९. भ—मनोरमम् ।

१०. भ—रुचिरापांगि ।

११. ल—त्वं च रूपं बहुगुणं कृत्वा परमभास्वरं ।
तमृषिं कौशिकं भद्रे मोहनार्थमुपाहय ॥

१२. ल—सा श्रुत्वा वचनं तस्य रूपमप्रतिमं भुवि ।
कृत्वा बहुगुणं रूपं विश्वामित्रमुपाद्रवत् ॥

१३. भ—इंद्रोपि कोकिलो भूत्वा कंदर्पसहितस्तदा ।
वर्णरागाहितस्तत्र तस्थौ राम विलोकयन् ॥
कोकिलस्य वचः श्रुत्वा वर्यं व्याहरतो वने ।

९] रम्भागीतस्वनं चैव मधुरं सुमनोहरम्[1] ॥९[2]॥ [N
मारुतं च सुखस्पर्शं दिव्यपुष्पाधिवासितम्[3]।
११] आयान्तं समभिप्रेत्य कामिनां मदवर्धनम्[4] ॥१०॥ [N
सहसा हृतचित्तात्मा मदनेन महामुनिः।
१२] गीतस्वनेनानुसृतो[5] रम्भां दृष्ट्वा मनोहराम् ॥११॥ [N
शब्देनापहृतस्तेन[6] रम्भासन्दर्शनेन च।
१३] स्मृत्वा चात्मतपोभङ्गं[7] मुनिः शङ्कामुपागमत् ॥१२॥ [१०
सहस्राक्षस्य तत्कर्म दृष्ट्वा[8] च ध्यानचक्षुषा[9]।
१४] रम्भां कोपसमाविष्ट इदं वचनमब्रवीत् ॥[10] १३॥ [१२

---

१. ज—स्वमनोहरम्।

२. नवमश्लोकादारभ्य द्वादशश्लोकपर्यन्तमित्थं पाठः--

ब—कोकिलाशब्दसंभ्रस्य वसंतपवनतः स्वनं।
...............न मन ....विश्वामित्रो......
अथ.......... गीते............. मंन सः।
...... नन च रंभाया मुनिः मोहमुपागमत्।

ल—कोकिलस्य च संभ्रत्य वल्गु व्याहरतः स्वनम्।
तां प्रहृष्टेन मनसा विश्वामित्रोभ्यवैक्षत।
अथ तस्य सशब्देन गीतेनाप्रतिमेन सः।
दर्शनेन च रंभाया मुनिः संमोहमागमत्॥

३. ज—दिव्यगंधाधिवासि०।

४. भ—अरंभंतमभिप्रेक्ष्य कामिनामपिवर्द्धनं।

५, भ—गीतध्वनिं चानु०।

६. भ—०पहृतस्तत्र।

७. भ—०तपोभ्रंशं।

८. ब ल—विज्ञाय।

९. ब ल—मुनिपुंगवः। भ—ज्ञानचक्षु०।

१०. ल—नास्ति।

यस्माल्लोभयसे रम्भे मामात्मगुणसंपदा[1] ।
१५] तस्माच्छैलमयी भूत्वा स्थास्यसी[2]ह तपोवने ॥[3]१४॥[4] [१३
वर्षाणामयुतं पूर्णं मच्छापकलुषीकृता ।
१६] ब्राह्मणस्तु तपः सिद्ध उद्धर्ता ते भविष्यति ॥१५॥[5] [१४
रम्भां शैलमयीं कृत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।
१७] सन्तापमगमत् तीव्रं कोपस्य[7] वशमागतः ॥१६॥[8] [१५
दृष्ट्वा तथागतां रम्भां सद्यः शैलमयीं रुषा ।
१८] कन्दर्पसहितं चैव दृष्ट्वा [10]नष्टं पुरन्दरम् ॥१७॥[11] [N
तपोऽपहारं च पुनः कृतं दृष्ट्वा तया[12] पुनः ।

१. ल—कामक्रोधजयैषिणं । भ—स्वमात्म० ।
२. रा—यास्यसीह । ज—स्थास्यसेह ।
३. ल—दशवर्षसहस्राणि शैले स्थास्यसि दुर्भगे ।
४. ब ल—अतः परमधिकः पाठः—
ब्रह्मादयो महाभागास्तपोबलसमन्विताः ।
उद्धरिष्यन्ति रंभे त्वां मत्क्रोधकलुषीकृताम् ॥
५. ज—ब्राह्मणस्तु तपः सिद्धा ।
६. ब—नास्ति ।
७. भ—क्रोधस्य ।
८. ल—एवमुक्त्वा महातेजा विश्वामित्रो महामुनिः ।
पश्चात्तुवन्धारयितुं क्रोधसंतापमागतम् ॥
९. भ—शस्तां ।
१०. भ—व्यवस्थं च ।
११. ल—तस्य चिंताद्युपेतस्य रंभा वै शैलमागता ।
भीषितश्चापि कंदर्पो जगामाशु यथागतम् ॥
१२. ज—तथात्मनः । भ—तपोधनः ।

१६] अजितेन्द्रियोऽस्मीति भृशं जगर्हात्मानमात्मनो ॥१८॥ [१९
अथ हैमवतीं त्यक्त्वा दिशं रम्यां महामुनिः ।
२०] पूर्वां दिशमुपागत्य तपस्तप्तुं प्रचक्रमे ॥१९॥ [६९,१

१. भ—असंयतेंद्रियोस्मीति ।

२. रा—० मात्मनः ।

३. ल—क्रोधेन च महातेजास्तपसो हरणात्कृतः ।
इंद्रियैरजितै राम न लेभे शांतिमात्मनः ॥

४. ल भ—राम ।

५. ल भ—त्यक्त्वा ।

६. ल—० मपाक्रम्य । भ—० मुपागम्य ।

७. ल—तपस्तेपे सुदारुणम् ।

८. ब ल—अतः परमाधिकः पाठः—
तां दृष्ट्वा शापसंयुक्तां रंभां शैलमयीं कृतां ।
अभ्यागच्छन्मुनिर्निश्चितां तपोपहरणे कृते ॥
नैव कोपं करिष्यामि संवत्सरशतान्बहून् ।
स्वयं च शोषयिष्यामि स्वमात्मानं यतेन्द्रियः ॥

ब—तावद्यावद्धि मे प्राप्तं ब्राह्मण्यं महदूर्जितम् ।
ल—तावत्यावद्धि ,, ,, ब्रह्मण्यं महदूर्जितम् ।
ब—अनुच्छ्वसन्न भुंजन्वै तिष्ठेयं शाश्वतीः समाः ।
ल— ,, ,, तिष्ठेय ,, ,, ॥
ब ल—न हि मे तप्यमानस्य क्षयं यास्यति वासवः ।
ब—मौनं वर्षसहस्रं तु कृत्वा मनसि सुस्थिरं ।
ल—,, वर्षसहस्राय ,, ,, ॥
ब—अकरोदप्रतिसमां प्रतिज्ञां रघुनंदन ।
ल— ,, प्रतिज्ञं ,, ।
न हि मे तप्यमानस्य क्रोधमात्सर्यवर्जितः ॥

मौनं वर्षसहस्रं[1] तु कृत्वा स[2] कृतनिश्चयः ।
२१.] वज्रस्थानमुपाश्रित्य[3] तस्थौ गिरिरिवाचलः ॥२०॥[4] [२

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[5] रम्भाशापो[6] नाम
षष्टितमः[7] सर्गः[8] ॥ ६० ॥[9]

१. भ—वर्षसहस्राणि ।
२. कै—सु— ।
३. भ—वज्रासनमुपावृत्य ।
४. ळ—पूर्णवर्षसहस्रे तु काष्ठभूतं महामुनिम् ।
विघ्नैर्बहुभिराधूतं कोपो नान्तरमाविशत् ।
गत्वा च परमं हर्षं तप आतिष्ठदुत्तमम् ।
अथ वर्षसहस्रेण व्रतदीक्षेण आगतः ।
इन्द्रो द्विजाति गत्वैतं यथातिष्ठमयाचत ।
निःशेषमन्नं भगवन्भुक्तं च महातपाः ।
तथैव मौनमकरोदनुच्छ्वासं च राघवः ।
५. कै व भ—आदिकाण्डे ।
६. कै व भ—रंभाशापः । रा—रंभाशाप ।
७. कै रा—षट्पञ्चाशत्तमः । अ—द्विपंचाशत्तमः ।
व भ—नास्ति ।
८. भ—नास्ति ।
९. अ—॥ ५२ ॥ भ—॥ ४६ ॥
ळ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

स्थाणुभूते स्थिते तस्मिन् मुनौ मौनव्रताश्रिते[1] ।
१] आविशन्नान्तरं[2] कामो न क्रोधो ददृशे मुनेः[3] ॥१॥[4] [३
अक्रोधनमकामं च तं दृष्ट्वा शान्तचेतसम् ।
२] तपसोग्रेण संसिद्धिं परां गतमरिन्दम[5] ॥२॥[6] [N
संभ्रान्तमनसो भीता[7] ब्रह्माणं[8] तपसां[9] निधिम् ।
३] ऊचुरभ्येत्य विबुधाः सर्वे शक्रपुरोगमाः ॥३॥[10] [९
उपायै र्विविधै र्विप्रो विश्वामित्रस्तपोनिधिः[11] ।
४] क्रोधितो लोभितश्चैव तपसा च विवर्धितः[12] ॥४॥[13] [१०पु

१. रा ज भ—मौनव्रतान्विते ।

२. भ—ग्रावेष्टुं न च तं ।

३. भ—मुनिं ।

४. ल—अथ वर्षसहस्रेण निरुच्छ्वासो भवं मुनिः ।
निरुच्छ्वासो मुनेस्तस्य मूर्ध्नि धूमो व्यजायत ॥

५ ज भ—गतिम० । भ—पुनरपरहस्तेन विम्यरतः ।

६. ल—त्रैलोक्यं येन संभ्रांतमादीपितमिवाभवत् ।
ततो देवर्षिगंधर्वाः पन्नगासुरराक्षसः ॥

७. भ—भूत्वा ।

८. ज—ब्राह्मणं ।

९. रा ज भ - तपसो ।

१०. ल—मोहितास्तेजसैवासंस्तपसा मंदररमयः ।
कश्मलापहृताः सर्वे पितामहमथाब्रुवन् ॥

११. भ—० मित्रः तपोधनः ।

१२. कै—विवर्धतः ।

१३. ल— बहुभिः कारणैदेव विश्वामित्रो महामुनिः ।
क्षोभितः क्रोधितश्चैव तपसा...विवर्द्धते ॥

न ह्यस्य वृजिनं[1] किञ्चिद् दृश्यते स्वल्पमप्यथ । [१०उ

५] न दीयते यदा[2] तस्मै मनसो यदभीप्सितम्[3] ॥५॥[4]

विनाशयति लोकांस्त्रींस्तेजसा स चराचरान् ।[5][6] [११

६] व्याकुलाश्च दिशः सर्वा न च सूर्यः प्रकाशते ॥६॥

सागराः क्षुभिताः सर्वे[7] विदीर्यन्ते च पर्वताः[8] । [१२

७] कम्पते पृथिवी चैव[9] वायुर्वाति[10] भृशाकुलः[11] ॥७॥[12] [१३पू

बुद्धिं न[13] कुरुते यावदेष वै[14] तपसां निधिः[15] । [१५पू

८] देवराज्यपरिप्रासौ दीयतां तावदीप्सितम् ॥[15]८॥[16] [१६उ

---

१. कै—रंजिनं ।

२. ल—यदेतस्मै ।

३. ल—हि मर्वाप्सितम् ।

४. भ—श्लोकादस्मादारभ्य सप्त मश्लोकपर्यन्तं नास्ति पाठः ।

५. कै—चराचरम् ।

६. ल—नाशयिष्यंति लोकांश्च नेष सचराचरम् ।

७. ज—क्षुभिताः सर्वे । ल—०श्चैव ।

८. ल—सर्वतः ।

९. ल—प्रकम्पते च पृथिवी ।

१०. ज—० श्चाति ।

११. ल—भृशाविलः ।

१२. ल—अतः परमाधिकः पाठः—

ब्रह्मविप्रानभजते नास्तिको जायते नरः ।
त्रैलोक्यमपि संमूढं स प्रक्षुभितमानसं ॥

१३. ज—च ।

१४. भ—प्रतपतां वर ।

१५. भ—पूर्वं प्राप्तं परिप्राप्तं ल...तां तावदीप्सितं ।

१६. ल—बुद्धिं न कुरुते देव यावदेव जगत्पते ।

तावत्प्रसाद्यो भगवानग्निरूपो महाद्युतिः ।
कालाग्निरिव निः शेषस्त्रैलोक्यं प्रदहेदयं ।
देवराज्यं चिकीर्षेद्वा दीयतामस्य वाञ्छितम् ॥

ततः सुरगणाः सर्वे पितामहपुरःसराः ।
९] विश्वामित्रमुपागम्य वाक्यमूचुरिदं तदा [2]॥९॥ [१७
ब्रह्मर्षे विनिवर्तस्व तपसोऽग्र्यादितः परम् ।
१०] ब्रह्मर्षित्वमनुप्राप्तस्तपसा ह्यसि दुर्लभम् ॥१०॥[5] [१८पू
प्रीतः स्वच्छन्दमरणं ददानि च तवेप्सितम् ।
११] स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते तपसोऽग्र्यांदुपारम ॥११॥ [१८उ
पितामहवचः श्रुत्वा तत् तदा मधुराक्षरम् ।
१२] कृताञ्जलिरिदं वाक्यमुवाच मुनिपुङ्गवः ॥१२॥[12] [१९

१. ल—०पुरोगमाः ।
२. ल—विश्वामित्रं महात्मानमूचुः सानुनयं वचः ।
३. भ—तपसोग्रात्परंतप ।
४. भ—स्वाति ।
५. ल—महर्षे स्वस्ति ते साधो तपसा स्म सुतोषिताः ।
ब्रह्मण्यं रूपमोग्रेण प्राप्तवानसि कौशिक ।
६. भ—० चरणं ।
७. भ—ददामि ।
८. कै—स्वस्ति ।
९. भ—प्राप्नुहि ।
१०. ल—गच्छ सौम्य यथासुखं । भ—०सोग्रादु० ।
११. भ—विश्वामित्रस्तदा ।
१२. ल—श्लोकादस्मादारभ्याष्टादशश्लोकपर्यन्तमित्थं पाठः—
पितामहवचः श्रुत्वा सर्वेषां च दिवौकसां ।
कृत्वा प्रणामं विधिवद्व्याहरत्स्म महामुनिः ॥
ओंकारश्च वषंकारा वेदाश्चायांतरित्यथः ।
क्षत्रवेदविदां श्रेष्ठो ब्रह्मवेदवतामपि ॥
ब्राह्मपुत्रो वसिष्ठोयमेवमेवब्रवीत्तमाम् ।
ततः प्रसाद्य तं देवा विश्वामित्रमथाब्रुवन् ।
महर्षिस्त्वं न संदेहः सर्वं संपत्स्यते तव ॥
इत्युक्ता देवताः सर्वा जग्मुस्त्रिभुवनास्तदा ।
सर्वं चकार ब्रह्मार्षिरेवमास्त्विति चाब्रवीत् ॥
अपूजयत्तु ब्रह्मार्षिं वासिष्ठं जपतां वरम् ।
ब्राह्मण्यमेवमेतेन प्राप्तं राम महात्मना ॥

यदि प्राप्तं मया ब्रह्मन् ब्राह्मण्यं तपसो बलात् ।
१३] ततो ब्रह्म[१] च वेदाश्च सत्यं च वरयन्तु माम् ॥१३॥ [२०
सिद्धि[२]र्धृतिः स्मृतिश्चैव विद्या मेधा यशः[३] क्षमा ।
१४] तपो[४] दमश्च शान्तिश्च सर्वज्ञत्वं कृतज्ञता[५] ॥१४॥ [N
असंमोह इति प्राहु ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।
१५] अद्रोहः सर्वभूतानामपकल्मष[६]संज्ञितः ॥१५॥ [N
तन्मा[७] भजतु[८] विप्रेशे[९] ब्रह्माव्ययमनुत्तमम् ।
१६] तपसा च यदि प्राप्तं ब्राह्मणत्वं यथेप्सितम् ॥१६॥ [N
तमेवंवादिनं ब्रह्मा प्रत्युवाच तपोनिधिम् ।
१७] प्रतिभास्यन्ति[१०] ते वेदा ब्रह्म चाव्ययमुत्तमम् ॥१७॥ [N
अधिकस्त्वं मतो मेऽद्य[११] सर्वब्रह्मविदां मुने ।
१८] इत्युक्त्वैनं ततो ब्रह्मा ययौ सुरगणैर्वृतः ॥१८॥ [२३
विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा लब्ध्वा ब्राह्मण्यमुत्तमम् ।
१९] कृतकृत्यश्चचारेमां पृथिवीं सिद्ध[१२]मानसः ॥[१३]१९॥ [२४

---

१. व—ब्रह्मा ।
२. भ—सिद्धिवृद्धिः ।
३. भ—शमः ।
४. भ—तपो दमो दया चांतिः ।
५. के रा—कृतज्ञया ।
६. भ—०मसंकल्पमसंज्ञिता ।
७. रा भ—तन्मां ।
८. ज—व्रजतु ।
९. ज - विप्रर्षे । भ—विप्रेश ।
१०. ज—०भास्यंति ।
११. भ—अधिकं त्वामहं मन्ये ।
१२. के अ—सिद्धिमा० ।
१३. ल—कृतकार्यो महीं सर्वां चचार तपसि स्थितः ।

एष ब्रह्मविदां श्रेष्ठ एष ब्रह्मविदां वरः ।[1]
२०] एष विग्रहवान् धर्म एष सिद्धिमतां वरः ॥२०॥[2] [२६
२१उ] शतानन्दवचः[3] श्रुत्वा रामलक्ष्मणसन्निधौ ।[4]
जनकः प्राञ्जलिर्भूत्वा विश्वामित्रं ततोऽब्रवीत् ॥[5]२१॥ [२७
२२] धन्योऽस्म्यनुगृहीतोऽस्मि यस्य मे त्वं महामुने[6] ।
यज्ञं काकुत्स्थसहितो द्रष्टुमभ्यागतः[7] स्वयम् ॥२२॥[8] [२८
२३] गुणाः[9] सुबहवः प्राप्तास्त्वत्सन्दर्शनजा मया[10] ।
सदश्च पावितमिदं त्वद्गुणौघैस्तपोनिधे ॥[11][12]२३॥ [N

१. अ भ—तेजास्विनां ।

२. ल—एष धर्मपरो नित्यं वीर्यस्य च परायणम् ।
एष सत्ये दमे शौचे वेदे च परिनिष्ठितः ॥

३. ल—इत्युवाच शतानंदो ।

४. ल—इत्यार्षे रामायणे विश्वामित्रब्राह्मण्यलाभो नाम सर्गः ।

५. ल—ततः कथांते वाक्यज्ञो [वाक्यं] मधुरमब्रवीत् ।

६. ल—मुनिपुंगव ।

७. रा—॰मभ्यागतः ।

८. ल—यज्ञं काकुत्स्थसहितः प्राप्तवानसि धार्मिक ।
ल—सहितो द्विजमुख्यैश्च बहुभिः सुमहायशाः ।
पावितोऽहं त्वया ब्रह्मन्दर्शनेन महामुने ।
भ—काकुत्स्थसहितो द्रष्टुं यज्ञमभ्यागतः स्वयं ।

९. ल—गुणा बहुविधाः । भ—गुणाश्च बहवः ।

१०. रा—प्राप्ता त्वत्संद॰ । ल भ—प्राप्तास्तव सन्दर्शनान्मया ।

११. भ—सद्गुणैस्ते तपोधन ।

१२. ल—नास्ति ।

२४] विप्रभावश्च ते ब्रह्मन् कीर्त्यमानो महातपोः ।[2]
श्रुतो मया महातेजा रामेण च महात्मना ॥२४॥ [३०
२५] सदस्यैः प्राप्य च सदः श्रुतास्ते बहवो गुणाः । [३१
अप्रमेयं तव तपो ह्यप्रमेयं च ते बलम् ॥२५॥
२६] अप्रमेया गुणाश्चापि नित्यं ते पुरुषर्षभ । [३२
तृप्तिराश्चर्यभूतानां कथानां नास्ति मे विभो ॥२६॥
२७] कर्मकालो मुनिश्रेष्ठ लम्बते रविमण्डलम् । [३३
२८पू] श्वः प्रभाते मुनिश्रेष्ठ द्रष्टुमेष्याम्यहं पुनः ॥२७॥[12] [३४पू
एवमुक्त्वा मुनिश्रेष्ठं वैदेहो मिथिलाधिपः ।
२९] प्रदक्षिणमुपावृत्य विश्वामित्रं ततो ययौ ॥[14] २८॥ [३६

---

१. के ब—महातपः । भ—महत्तपः ।

२. ळ—विप्रभावं च ते ब्रह्मं कीर्त्यमानं मया श्रुतम् ।

३. ळ—श्रुतं श्रुवि मया चाद्य ।

४. ळ—च ते रूपमप्रमेयं ।

५. ळ भ—गुणाश्चैव ।

६. ळ—०भूताभिः ।

७. ळ—कथाभिर्नास्ति ।

८. रा भ—प्रभो ।

९. ळ—कर्मकाले ।

१०. ज ळ—परश्रेष्ट ।

११. ळ—द्रष्टुमर्हाम्यहं । भ—प्रष्टुमेष्यामि वै ।

१२. ळ—अतः परमधिकः पाठः—

गच्छाहं अपतां श्रेष्ठ मामनुज्ञातुमर्हसि ।
एवमुक्तो मुनिवरः प्रशस्य पुरुषर्षभं ।
विससर्जाशु जनकं प्रीतं प्रीतमनास्तदा ॥

१३. ळ—पूजितो मुनिना तेन ।

१४. ळ—प्रदक्षिणं तमकरोत्सोपाध्यायः सबान्धवः ।

विश्वामित्रोऽपि धर्मात्मा सहरामः[1] सलक्ष्मणः ।
६०] स्वं[2] वासमुपचक्राम[3] पूज्यमानो द्विजातिभिः ॥२६॥[4] [३७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे विश्वामित्रब्रह्मत्वप्राप्तिकथनं
नाम (एकषष्टितमः) सर्गः ॥६१॥

१. ल भ—सरामः सहलक्ष्मणः ।

२. ब भ—स्ववास० । ल—सुवाटमभिचक्राम ।

३. ज ल—महर्षिभिः ।

४. ल—अतः परमधिकः पाठः—

तती जगाम स्वगृहं स राजा
सहर्षचितो मुनिमर्चयित्वा ।
स तद्वियोगतृषितो महर्षिः
कृच्छ्रेण रात्रिं गमयांबभूव ॥

५. भ—आदिकांडे ।

६. ल—विश्वामित्रचरितं समाप्तम् ।
भ—विश्वामित्रब्रह्मत्वकामः ।

७. ल भ—नास्ति ।

८. के रा—सप्तषष्टितमः । ज—त्रिपंचाशत्तमः ।
ब ल भ—नास्ति ।

९. ल भ—नास्ति ।

ततः प्रभाते विमले कृतकर्मा नराधिपः ।
१] विश्वामित्रं महात्मानमुपायात् सहराघवम् ॥१॥ [१
तमर्चयित्वा धर्मात्मा शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ।
२] राघवौ च महात्मानौ ततो वाक्यमुवाच ह ॥२॥ [२
भगवन् स्वागतं तेऽस्तु किं करोमि महातपः ।
३] भवानाज्ञापयतु मामाज्ञाप्यो भवतो ह्यहम् ॥३॥ [३
एवमुक्तस्तु धर्मात्मा जनकेन महात्मना ।
४] प्रत्युवाच मुनिर्धीरो वाक्यं वाक्यविशारदः ॥४॥ [४
पुत्रौ दशरथस्येमौ क्षत्रियौ लोकविश्रुतौ ।
५] द्रष्टुकामौ धनुर्दिव्यं यदेतत्व त्वयि तिष्ठति ॥५॥ [५
एतद् दर्शय भद्रं ते कृतकामौ नृपात्मजौ ।
६] दर्शनादस्य धनुषो यथेष्टं ते करिष्यतः ॥६॥ [६
इत्युक्तो जनको राजा प्रत्युवाच कृताञ्जलिः ।
७] श्रूयतां धनुषस्तत्त्वं यदर्थं मयि तिष्ठति ॥७॥ [७

---

१. ल—कृतकृत्यो ।
२. ल—०माजुहाव सराघवम् !
३. रा—जनकेन महात्मना ।
४. रा—नास्ति ।
५. ज ल—महामुने । भ—महत्तपः ।
६. रा—नास्ति ।
७. ल—मुनिवरो ।
८. ल—वाक्यविदांवर ।
९. ज—नृपात्मज ।
१०. ल—प्रकरिष्यति । भ—वै करिष्यतः ।
११. ल—एवमुक्तस्तु जनकः प्रत्युवाच महामुनिम् ।
१२. ल—यदाहं चेह । भ—यदेतन्मयि ।

देवरात इति ख्यातो निमेः षष्ठो महीपतिः।
८] न्यासभूतमिदं तस्मै धनुर्दत्तं महात्मना ॥८॥ [८
दक्षयज्ञवधे पूर्वं धनुर्षोऽनेन शङ्करः।
९] विध्वंस्य त्रिदशान् सर्वानिदं किल तदोक्तवान् ॥९॥ [९
यस्माद् भागार्थिनो भागं न कल्पयथ मे सुराः।
१०] तस्मार्दङ्गानि सर्वाणि धनुषा शातयामि वः ॥१०॥ [१०
तस्मै देवा भयोद्विग्ना रुद्राय प्राणमंस्तदा।
११] प्रसादयामासुरेनं तेषां तुष्टोऽभवद् भवः ॥११॥ [११
प्रीतश्चापि ददौ तेषां तान्यङ्गानि महौजसाम्। [१२
१२] धनुषा यानि यान्यासन् शातितानि महात्मना ॥१२॥ [N

---

१. भ—देवराज।

२. भ—तस्य।

३. ल—न्यासोयं तस्य तु पुरा हस्ते दत्तं महद्धनुः।

४. ल—धनुरायस्य।

५. रा—शंकराः। ल—यक्षतः।

६. रा—विध्वंसि।

७. ल—विध्वंस्य त्रिदशान् रुद्रः सलीलमिदमब्रवीत्।

८. ब—यस्मादंगानि।

९. रा—शांतयामि।

१०. महार्हं मयि यज्ञागं यत्प्रयच्छथ देवताः।
शातयामि वराङ्गस्तु तेषामङ्गानि वै पुनः।

११. ज—०मासुरेवं। भ—०दयांचक्रुरेनं।

१२. नास्ति।

१३. कै रा—शांतितानि।

१४. ल—नास्ति।
भ—प्रीतियुक्तस्तु सर्वेषां ददौ तेषां महात्मा ।
शातितानि महार्हाणि तेषामंगानि वै मुने॥

तदेतद् देवदेवस्य धनुर्दिव्यं महात्मनः । [१३
१३] तिष्ठत्यद्यापि भगवन् कुलेऽस्माकं सुपूजितम् ॥[1]१३॥
वीर्यशुल्का च मे कन्या दिव्यरूपगुणान्विता । [१४उ
१४] भूतलादुत्थिता पूर्वं नाम्ना सीतेत्ययोनिजा ॥१४॥[2] [१४पू
तां नृपा वरयामासुरागत्यागत्य वै पुरा ।
१५] वीर्यशुल्का प्रदेयेति तानहं चाब्रुवं नृपान् ॥१५॥[3] [१५
ततो नृपतयः सर्वे प्रार्थयन्तः सुतां मम ।[4] [N
१६] वीर्यजिज्ञासया तेषां मया सन्दर्शितं धनुः [5]॥१६॥
न शेकुश्चापि ते ब्रह्मन्नुद्धर्तुं मम ते धनुः ।[6] [१९
१७] तेषामल्पमहं मत्वा[7] वीर्यं तत्र महामुने ॥[8]१७॥ [२०पू

१. ल भ—धनूरत्नं ।

२. ल भ—नास्ति ।

३. ल भ—अथ वाहयतः चेत्रं फलाग्रादुत्थिता मम ।

ल——सर्वलक्षणसंपन्ना नाम्ना सीतेति मे सुता ।
भ—— संयुक्ता ,, ,, विश्रुता ।

ल भ—भूतलादुत्थितां तां तु वर्धमानां ममात्मजाम्
आगत्यावरयन् सर्वे राजानो मुनिपुंगव ।
तेषां वरयतां कन्यां सर्वेषां पृथिवीक्षितां ।
वीर्यशुल्कामकथयं ते शुभूषम तत्त्वतः ॥

४. ल—ततः सर्वे नृपतयः समेत्य मुनिपुंगव ।
भ—ते च ,, ,, ,, ,,
ल—मिथिलामधुपेयुस्ते वीर्यं जिज्ञासितं स्वकं ।
भ— ०मभ्युपेयुस्ते ,, ,, ,, ।

५. ल भ—तेषां जिज्ञासमानानां मया धनुरुपाहृतं ।

६. ज—नास्ति ।

ल—न शक्ता धारणे तस्य धारणे तोलने तथा ।
भ—,, ,, ग्रहणे ,, ,, ,, ,, ।

७. ज—तत्र मत्वा वीर्यं ।

८. ल भ—तेषां वीर्यवतां वीर्यमल्पं ज्ञात्वा तपोधन ।

नृपतीन् सं[1]हितान् [2]सर्वान् प्रत्याख्यायितवांस्तदा । [२०उ
१९पू] [3]ततस्ते परम[4]क्रुद्धा राजानस्ते महाबलाः ॥ १८ ॥[5] [२१पू
२०उ] रोषेण महताऽऽविष्टा मिथिलामभ्यपीडयन् । [२२उ
संवत्सरं च ते पूर्णं रुरुधुः कृतनिश्चयाः ॥ [6]१९ ॥
२१] अवरोधेन तेषां च यदा क्षीणोऽस्मि सर्वशः । [२३
तदा प्रसादयाञ्चक्रे देवदेवमुमापतिम् ॥ २० ॥[7]
२२] प्रसादाद् भगवान् प्रीतश्चतुरङ्गं बलं ददौ । [२४
ततो भग्ना नृपतयः प्रतिजग्मुर्महामुने ॥ २१ ॥[8]
२३] अल्पवीर्यबलोत्साहा अल्पसत्त्वाभिमानिनः ।[9] [२५
तदेतन् मुनिशार्दूल दि[10]व्यं परमभा[11]स्वरम् ॥ २२ ॥

---

१. रा—संहितान् ।
२. ल—सर्वांस्तांस्तथाख्यातवानहम् ।
भ—सर्वांस्तान्प्रत्याख्यातवानहं ।
३. ल भ—ततः परमकोपात्ते ।
४. ज ल भ—राजानः सुमहाबलाः ।
५. ल भ—अतःपरमधिकःपाठः—
अलब्धान्मिथिलां सर्वे वीर्यसंदेहमागताः ।
आत्मानमवधूतं ते विज्ञाय मुनिपुंगव ॥
६. ल—ततः संवत्सरे पूर्णे क्षयं यातानि सर्वशः ।
भ— „ संवत्सरः पूर्णः „ „ „
७. ल भ—साधनानि मुनिश्रेष्ठ ततोहं भृशदुःखितः ।
ततो देवगणाः सर्वे तपसा मे प्रसादिताः ॥
८. ल भ—प्रददुस्ते च सुप्रीताश्चतुरंगं बलं मम ।
ततो नृपतयो भीता वध्यमाना ययुर्दिशः ॥
९. ल—अवीर्या वीर्यसंदिग्धा निःसत्वाः पापकारिणः ।
······अवीर्यसंदिग्धाः निसत्वाः पापकारिणः ॥
१०. ल. भ—धनुः ।
११. कै—०भासुरम् ।

२४] दर्शयाम्यद्य रामाय लक्ष्मणाय च कार्मुकम् ।[1] [२६
कुर्यादारोपणं रामो धनुषश्चास्य चेदयम् ॥[2]
२५] दद्राम्ययोनिजामस्मै[3] सीतां दशरथस्नुषाम् ॥ २३ ॥ [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकवाक्यं
नाम[4] द्विषष्टितमः[5] सर्गः ॥६२॥

१. ल भ—नास्ति ।
२. ल भ—यदि त्वारोपणं कुर्याद्रामोऽस्य धनुषः स्वयं ।
३. ल भ—सुतामयोनिजां सीतां दद्यां ।
४. के रा—नामाष्टषष्टितमः । ज—नाम चतुःपंचाशत्तमः ।
५. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

जनकस्य वचः श्रुत्वा विश्वामित्रो महामुनिः ।
१] धनुर्दर्शय रामाय तदिति[1] प्राब्रवीन्नृपम् ॥ १ ॥[2] [१
सुरोपमस्तु[3] जनकः सोऽमात्यानादिदेश[4] ह ।
२] रामसन्दर्शनार्थं तद्धनुरानीयतामिति[5] ॥ [6]२ ॥ [२
जनकेन समादिष्टाः प्रविश्य सचिवाः पुरीम्[7] ।
३] धनुरानाययामासुः पुरुषैराप्तकारिभिः ॥ ३ ॥[8] [३
पुरुषाणां शतान्यष्टौ व्यापृतानां महौजसाम् ।[9]
४] मञ्जूषामष्टचक्रां तां गुर्वीमूहुः कथश्चन ॥ [10]४ ॥ [४
समानीय[11] [12]चे मञ्जूषामायसीं यत्र[13] तद्धनुः ।

---

१. ब—तदेतत्

२. ल भ—श्लोकस्यास्यादावयमित्थं पाठः—
पौरुषं ब्रह्मिरूपं हि शंसे क्षीरमिवार्पितम् ।

३. भ—सुरोपमोथ ।

४. ल—सोमात्यां व्यादिदेश । भ—सोमात्यान्व्या० ।

५. ज—०रादीयतामिति ।

६. ल भ—धनुरानीयतां दिव्यं रामरूपमणयोरिति ।
यत्तद् बलपरीक्षार्थं सर्वेषां पृथिवीक्षिताम् ॥

७. ल भ—मिथिलां ।

८. ल—तद्धनुर्वै पुरस्कृत्य निर्जग्मुः पार्थिवाज्ञया ।
भ— ,, ,, ,, पार्थिवाज्ञयात् ॥

९. ल भ—शतानि पंच पुंसां तु व्यायतानां महात्मनां ।

१०. ल—मंजूषामष्टचक्राः तामूहुः कृच्छ्रात्कथंचन ।
भ— ,, चक्रां तामूहुः ,,

११. ल—समानीय । भ तामानीय ।

१२. ल भ—तु ।

१३. ज ल भ—तत्र ।

५] सुरोपमं तु जनकं[1] तमूचुरिति मन्त्रिणः ॥ ५ ॥ [५
तदेतद्[2]धनुरानीतमाज्ञया ते नराधिप ।
६] दर्शयैतद्देवरस्य राघवस्य च भास्वरम्[3] ॥६॥ [६
तेषामेतदुपश्रुत्य जनकः प्रश्रितं वचः ।[4]
७] विश्वामित्रमुवाचेदं[5] तौ चोभौ रामलक्ष्मणौ ॥७॥ [७
ब्रह्मन् धनुरुपानीतं[6] यत् तु तिष्ठति नो गृहे ।[7]
८] राजभिर्यन् न शकितमुद्धर्तुमपि सारवत् ॥[8]८॥ [८
नैतत् पूरयितुं शक्ताः सेन्द्राः सुरगणा अपि ।[9][10]
९] न यक्षोरगरक्षांसि देवदेवादृते शिवात् ॥[11]९॥ [९

१. ल भ—जनकमूचुस्ते नृपमन्त्रिणः ।
२. ज—तदेतद् ।
३. कै—भासुरम् ।
४. ल—इदं धनुर्वरं राजन्सर्वलोकेषु पूजितम् ।
भ—,, धनुर्वरं ,, ,, ।
ल—मिथिलेश महाभाग दर्शयैतन्महामुनेः ।
भ—मैथिलेय महाभाग ,, ।
५. ल भ—तेषां तद्वचनं श्रुत्वा कृताञ्जलिरुवाच ह ।
६. ल भ—विश्वामित्रं तदा राजा ।
७. कै—धनुरुपानीयं ।
८. ल—इदं धनुर्वरं ब्रह्मं जनकेनाभिपूजितम् ।
भ—,, इदं धनुर्वरं दिव्यं जनकैरभिपूजितम् ।
९. ल—राजभिः सुमहावीर्यैरशक्यं तोलने तदा ।
भ— ,, ,, रशक्तैः पूरणे तदा ।
१०. ल भ—नेदं सुरगणैः शक्यमसुरैर्वा महामुने ।
११. ल भ—गन्धर्वयक्षप्रवरैः सकिन्नरमहोरगैः ।
एकैको वा समस्ता वा शक्ता मतिमतां वर
सज्यं कर्तुं मुनिश्रेष्ठ कुत एव तु मानुषाः ।

न शक्तिर्मानुषाणां तु धनुषोऽस्य प्रपूरणे ।[1]
१०] कुत एव हि सन्धाने शक्ति र्वा स्याद्धि कर्षणे ॥१०॥ [१०
११] इदं मम धनुर्दिव्यं तवानायितमाज्ञया ।[2]
विश्वामित्रस्तु धर्मात्मा श्रुत्वा जनकभाषितम् ॥११॥[3] [११
१२] अभ्यभाषत काकुत्स्थं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ।[4]
गृहाणैतन्[5] महाबाहो यत्नमातिष्ठ राघव ॥१२॥[6] [N
१३] वत्स राम धनुर्दिव्यमिदं पश्येत्युवाच ह ।[7][8] [१२
मुनेस्तु वचनाद् रामो यत्र तिष्ठति तद्धनुः ॥१३॥[9][10]
१४] मञ्जूषां तां समाश्रित्य विश्वामित्रमभाषत । [१३

---

१. ल भ —अशक्तिर्मानुषाणां हि धनुषोस्य प्रपूरणे ।
ल—आरोपणे समायोगे वेदने तोलनेपि वा ।
भ— ,, ,, वेधने तोलने तथा ।
२. रा—तवानायितमाज्ञया ।
३. ल भ—तदेतद्धनुषां श्रेष्ठमानीतं मुनिगौरवात् ।
दर्शयैतन्महाभाग त्वनयो राजपुत्रयोः ।
४. रा—अभ्यभाषित ।
५. ल भ—गृहाणेदं ।
६. ल भ—दिव्यं धनुरनुत्तमम् ।
७. अतः परमाधिकः पाठः—
ल—धारणे कर्षणे चास्य* यत्नमातिष्ठ राघव ।
८. ल—वत‡ राम धनुः पश्येत्येवं राघवमब्रवीत् ।
९. ल भ—वचनं श्रुत्वा ।
१०. ल—मंजूषां तामुपाश्रित्य दृष्ट्वा च धनुरब्रवीत् ।
भ— ,, समुपाश्रित्य ,, तद्धनुरब्रवीत् ।

---

* भ—वास्य ।
‡ भ—वत्स ।

इदं धनुरहं[1] दिव्यं तोलयिष्यामि[2] पाणिना ॥ १४ ॥[१४
१५] यत्नवांश्च[3] भविष्यामि सज्जोऽस्म्यस्य विकर्षणे[4] ।
बाढमित्येव तं राजा मुनिश्च समभाषत ॥ १५ ॥[१५
१६] सलीलमिव तं[5] रामस्तोलयित्वैकपाणिना ।
पश्यतामभितस्तत्र सदस्यानां समन्ततः ॥[6] १६ ॥ [१६
१७] आनम्य नातियत्नेन सज्यं चक्रे हसन्निव ।[7]
सज्यं कृत्वा ततश्चैतत् पूरयामास वीर्यवान् ॥१७॥[8] [१७
१८] पूर्यमाणं बभञ्जाथ मध्ये रामबलाद्धनुः ।
तस्य शब्दो महानासीद् गिरेरिव विदीर्यतः ॥१८॥[10] [१८पू
१९] वज्रस्येव विमुक्तस्य[11] शक्रेण नगमूर्धनि ।[12] [N

१. ल—धनुर्धरं । भ—धनुर्वरं ।
२. ल—सम्प्रक्ष्याम्यद्य । भ—संस्पृक्ष्याम्यद्य ।
३. भ—यत्नवांस्तु ।
४. ल भ—तोलने पूरणे तथा ।
५. ज—तद्रामस्तोल० ।
ल भ—तद्रामो जग्राह वचनान्मुनेः ।
६. ल भ—पश्यतां च सहस्राणां बहूनां रघुनंदन (भ-०नंदनः ।)।
७. भ—आरोपयत् स धर्मात्मा सलीलमरिसूदनः ।
८. ज—०धनुश्चैतत् । ल भ—आरोप्य च महाबाहुः ।
९. कै—अतः परमधिकः पाठः—
बभंज पूरयंश्चैतन्मध्ये रामो बलादिव ।
१०. ल भ—बभंज च नरश्रेष्ठ धनुर्मध्ये महायशाः ।
तस्य शब्दोऽभवद्भीमो निर्घातसमनिःस्वनः ॥
११. रा—शक्रेन ।
१२. ल—भूमिश्चचकम्पे सुमहां दीर्यमाणो गिरीरिव ।
भ—भूमिश्चकंपं सुमहान्दीर्यमाणो गिराविव ।

निपेतुस्तेन शब्देन सर्वशो मोहिता जनाः ॥[1] १९ ॥
२०] विश्वामित्रं वर्जयित्वा राजानं तौ च राघवौ ।[2] [१९
प्रत्याश्वस्ते जने तस्मिन् राजा विस्मयमागतः ॥ २० ॥
२१] उवाच प्राञ्जलिर्वाक्यं विश्वामित्रमिदं तदा[4] ।[२०
भगवन् श्रुतपूर्वो[5] मे रामो दशरथात्मजः ॥ २१ ॥
२२] अत्यद्भुतमिदं[6] कर्म स चायं कर्तुमर्हति ।[7] [२१
जनकानां कुले कीर्तिमाहरिष्यति मे सुता[8] ॥ २२ ॥
२३] सीता भर्तारमासाद्य रामं दशरथात्मजम् ।[२२
वीर्यशुल्का प्रदाने मे प्रतिज्ञा सफलीकृता ॥[9] २३ ॥
२४] सीतां दास्यामि रामाय प्राणेभ्योऽपि प्रियामहम् ।[10] [२३
भवतोऽनुमते तस्मादितो यान्तु महामुने ॥[11] २४ ॥

---

१. ल भ—निपेतुश्च नराः सर्वे तेन शब्देन मोहिताः ।

२. ल—विज्ञायि* च मुनिवरं राजानं तौ च राघवौ ।

३. ल भ—विगतसाध्वसः ।

४. ज—० तथा । ल—वाक्यज्ञो नरपुंगवः ।
भ—वाक्यज्ञो मुनिपुंगवं ।

५. ल भ—श्रुतपूर्व ।

६. कै—अत्युद्भुत० ।

७. ल—अत्यद्भुतमचिन्त्यं च अतर्कितमिदं× मया ।

८. भ—श्रुतां ।

९. ल—न मे सत्या प्रतिज्ञा च वीर्यशुल्केति कौशिक ।
भ—मम ,, ,, ,, ,,

१०. ल भ—सीता प्राणैर्बहुमता देया रामाय मे सुता ।

११. ल—भवतोनुमता मह्यं शीघ्रं गच्छन्तु मंत्रिणः ।
भ—भवतोनुमते ब्रह्मन् ,, ,, ,,

---

*भ—वर्जयित्वा ।

×भ—अतर्कितमिदं ।

२५] दूता ममाज्ञया शीघ्रा अयोध्यां जवनैर्हयैः ।[2] [२४
विज्ञाप्य चैव राजानमानयन्तु पुरं मम ॥[3]२५ ॥
२६] प्रदानं वीर्यशुल्कायाः सीतायाः कथयन्तु च[4] ।[२५
त्वया गुप्तौ च काकुत्स्थौ[5] वेदयन्तु[6] नृपाय वै[7] ॥२६॥
२७] एभिः प्रह्लादितं वाक्यैरानयन्त्विह तं नृपम् ।[8] [२६
कौशिकेन तथेत्युक्तो[9] राजा भृत्यानुपस्थितान् ॥२७॥
२८] अयोध्यां प्रेषयामास[10] स हि राजा त्वराऽन्वितः[11] । [२७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[12] धनुर्भङ्गो नाम
त्रिषष्टितमः सर्गः[13] ॥६३॥[14]

१. ज—शीघ्रमयोध्यां । ब—शीघ्रा अवध्या ।
२. ल भ—मम कौशिक भद्रं ते त्वयोध्यां त्वरिता रथैः ।
३. ल—राजानं प्रश्रितैर्वाक्यैरानयंतु परं मम ।
भ— ,, ,, पुरं मम ।
४. ल भ—कथयंतु च सर्वशः ।
५. ल भ—मुनि० ।
६. रा—देवयन्तु ।
७. ल—च नित्यशः । भ—नृपाय तु ।
८. ल—आनयंतु च राजानं स्वालयं मम चानुगाः ।
भ—प्रीयमाणं तु राजानमायंत्वाशु शीघ्रगाः ।
९. ल—त्युक्त्वा ।
१०. ल भ—आभाष्य अंबिषः ।
११. ल भ—धर्मात्मा मुनिशासनात् ।
१२. के ब—आदिकांडे ।
१३. के—ऊनसप्ततितमोऽध्यायः ।
रा—ऊनसप्ततितमो सर्गः ।
ज—पंचपंचाशत्तमः सर्गः । ब भ—सर्गः ।
१४. ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

जनकेन समादिष्टा दूतास्ते श्रान्तवाहनाः ।[2]
१] मार्गे त्रिरात्रमुषिता अयोध्यां प्राविशन् पुरीम् ॥१॥[3] [१
ते राज्ञो विदिता दूता राजवेश्मप्रवेशिताः ।[4]
२] ददृशुस्तं महात्मानं तत्राथ नृपसत्तमम् ॥२॥[5] [३
दृष्ट्वैव तं च प्रणताः कृताञ्जलिपुटास्ततः ।[6]
५] ऊचुर्दशरथं वाक्यमिदं प्रियनिवेदिनः ॥३॥[7] [४
वैदेहो जनको राजा पृच्छति त्वां नराधिप ।[8]

---

१. अतः पूर्वमित्थं पाठः—

ल—यथा च ख्यसमाख्यातुमानेतुं च नृपं तदा ।

भ— „ च तत्समा०　　„ „ „ „ ।

२. ल भ—शीघ्रवाहनाः ।

३. ल भ—त्रिरात्रमुषिता मार्गे तेयोध्यां ।

४. ल भ—राजवचनाद् ।

५. ल—ददृशुर्देवसंकाशैर्वशिष्टाद्यैश्च मन्त्रिभिः ।

भ—ददृशुर्देवसंकाशं वृद्धं दशरथं नृपं ।

६. भ—अतः परमधिकः पाठः—

शाश्वत्प्रजाः प्रशासंतं धर्मज्ञैः सचिवैर्वृतं ।

ऋत्विग्भिर्देवसंकाशैर्वसिष्ठाद्यैश्च मन्त्रिभिः ।

७. ल—आश्वास्यमानं सुप्रीतैः शक्रमांगिरसैरिव ।

भ—आशास्यमानं „ „ ।

ल भ—तं लोकपालप्रतिमं लोकपालं सुनिश्चितं ।

बद्धांजलिपुटाः सर्वे दूता विगतसाध्वसाः ।

ल—राजानं प्रयता वाक्यं मधुरं मधुराक्षरम् ।

भ— „ „ „ वाक्यमब्रुवन् „ ।

८. ल—मैथिलो जनको राजन्सोऽभिहोत्रपुरस्कृतः ।

६] कुशलानामयं स्निग्धः[1] संसत्या सपुरोहितम् ॥[2]४॥ [५
मुहुर्मुहुर्मधुरया स्नेहसंसक्तया[3] गिरा।
७] जनकस्त्वां महाराज[4] पृच्छति त्वामनामयम् ॥[5]५॥ [६
पृष्ट्वा कुशलमव्यग्रो[6] वैदेहो मिथिलाधिपः ।
७] कौशिकानुमते[7] वाक्यं वाक्यज्ञस्त्वाऽब्रवीदिदम्[8] ॥६॥ [७
सुता मे वीर्यशुल्केति प्रख्याता[9] विदिता च ते ।[10]
८] राजभिर्हीनवीर्यैश्च पुराऽपि प्रथिता तथा ॥[11]७॥ [८
सेयं मम सुता राजन् विश्वामित्रस्य शासनात् ।
९] पुरीमिमां समागत्य तव पुत्रेण निर्जिता ॥८॥[12] [९
आनम्य च धनुर्दिव्यं[13] मध्ये भग्नं महात्मना ।
१०] रामेण[14] बलमाश्रित्य[15] महत्यां जनसंसदि ॥९॥ [१०

१. रा—स्निग्धा ।
२. ल भ—कुशलं चाव्ययं चैव सोपाध्यायपुरोहितः ।
३. रा—०संसिक्तया । ल भ—०संपृक्तया ।
४. ज—जनकस्त्वामहं राज ।
५. ल भ—नृपतिस्त्वां महाराज राजानं परिपृच्छति ।
६. रा—कुशलमावृतो ।
७. ल भ—०नुमतो ।
८. ज—०ज्ञस्त्वब्रवीदिदं । ल भ—वाक्यज्ञ इदमब्र० ।
९. ज—प्रख्यातं ।
१०. ल—विहिता ते प्रतिज्ञा वै वीर्यशुल्का ममात्मजा ।
भ—विदिता ते प्रतिज्ञैषा वीर्यशुल्का „
११. ल भ—राजभिर्यो न विजिता निर्वीर्यैर्विमुखीकृतैः ।
१२. ल भ—तामिमां मत्सुतां राजन्विश्वामित्रपुरःसरः ।
यदृच्छया गतो वीरो तव निर्जितवान् सुतः ।
१३. ल भ—तच्च दिव्यं धनुः श्रीमन् ।
१४. ल भ—राघवेण ।
१५. ल—महातेजो । भ—महाराजन् । पुनः पुनः ।

तस्मै सीता मया देया वीर्यशुल्का सुताय ते[1] ।
११] प्रतिज्ञां तर्तुमिच्छामि[2] तदनुज्ञातुमर्हसि ॥१०॥ [११
सोपाध्यायः सस्वजनः सवर्गः[3] सपदानुगः ।
१२] शीघ्रमर्हसि राजर्षे त्वमागन्तुमिह प्रभो ॥११॥[4] [१२
प्रीतिं च मम राजेन्द्र संवर्धयितुमर्हसि ।
१३] उभयोः पुत्रयोश्चैव वध्वौ ते कल्पिते मया ॥१२॥[5] [१३
इति त्वां जनको राजा विज्ञापयति पार्थिव ।[6]
१४] विश्वामित्राभ्यनुज्ञातः शतानन्दमते स्थितः ॥१३॥ [१४
इति तेषां वचः[7] श्रुत्वा राजा परमहर्षितः[8] ।
१५] उवाचैवं वसिष्ठादीन् सर्वानेव पुरोधसः ॥[9]१४॥[10] [१५
गुप्तः[11] कुशिकपुत्रेण कौसल्या[12]ऽऽनन्दवर्धनः ।
१६] लक्ष्मणेन सह भ्राता[13] स विदेहेषु तिष्ठति ॥१५॥ [१६

---

१. ल भ—महाद्युते ।

२. ज—प्रतिज्ञातं तु मिच्छामि ।

३. ज—सर्वगः ।

४. ल भ—नास्ति ।

५. ल भ—पुत्रयोरुभयोरेवं प्रीतिं समुपकल्पयसि ।

६. ल—एवं विदेहाधिपतिर्वाक्यं मधुरमब्रवीत् ।
भ—नास्ति ।

७. ल भ—वृतवचः ।

८. ल—परमाविस्मितः ।

९. ल भ—सोपाध्यायश्च राजेन्द्रः पुरस्कृत्य पुरोहितं ।
वसिष्ठं वामदेवं च मन्त्रिणोभ्यास्च सोऽब्रवीत् ।

१०. भ—एवं विदेहाधिपतिर्वाक्यं मधुरमब्रवीत् ।

११. ल—गुप्तं ।

१२. भ—कौशल्या० ।

१३. ज ल—भ्राता ।

[1] दृष्टवीर्ये च काकुत्स्थे जनकः सुमहायशाः ।

१७] स संप्रदानं सीताया रामे कर्तुं किलेच्छति ॥[2] १६॥ [१७

यदि वो रोचते ब्रह्मन् जनकः स महीपतिः ।[3]

१८] सं[4]बन्धे तत्र गच्छामस्ततः शीघ्रमितो वयम् ॥[5] १७॥ [१८

बाढमित्येव तच्छ्रुत्वा वसिष्ठप्रमुखा द्विजाः ।[6]

१९] ऊचुः परमसंहृष्टाः श्वः प्रयास्याम इत्यपि ॥[7] १८॥ [१९

ते चापि रजनीं तत्र दूताः परमसत्कृताः ।[8]

२०] ऊ[9]षुर्विदेहराजस्य सर्वकामैः प्रपूजिताः ॥१९॥ [२०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनकदूत[10]वाक्यं नाम
चतुःषष्टि[11]तमः सर्गः ॥६४॥

---

१. ल—दृष्टमात्रं । भ—दृष्टमात्रे ।

२. ल भ—संप्रदानं सुतायाश्च राघवे कर्तुमिच्छति ।

३. ल भ—वृत्तं जनकस्य महात्मनः ।

४. कै ज ब—संबन्धी ।

५. ल भ—गच्छामस्तां पुरीं शीघ्रं मा भूत्कालस्य पर्ययः ।

६. ल—मन्त्रिणो बाढमित्याहुः सह सर्वैः महर्षिभिः ।
भ— ,, बाढमित्यूचुः ,, सर्वैर्मनीषिभिः ।

७. ल भ—प्रीतश्चाप्यभवद्राजा श्वो भूत इति चाब्रवीत् ।

८. ल भ—मन्त्रिणो जनकस्यापि रात्रिं परमसत्कृताः ।

९. कै—व्यूषुर्वि० । ल भ—ऊषुः प्रमुदितास्तत्र ।

१०. ल भ—दूतवाक्यं ।

११. कै रा—सप्तवितमः । ज—षट्पंचाशत्तमः ।
ब ल भ—नास्ति ।

तस्यां रात्रौ व्यतीतायां सोपाध्यायो नराधिपः ।

१] राजा दशरथः श्रीमान् सुमन्त्रमिदमब्रवीत् ॥१॥ [१

अद्य सर्वे धनाध्यक्षा धनमादाय पुष्कलम् ।

२] निर्यान्त्वग्रे समारोप्य नानारत्नचयान् मम ॥ २ ॥ [२

चतुरङ्गं च मे सर्वं बलं निर्यातु सर्वशः ।

३] ममाज्ञासमकालं च युज्यतां युग्यमुत्तमम् ॥ ३ ॥ [३

वसिष्ठो वामदेवश्च जाबालिः कश्यपो भृगुः ।

४] मार्कण्डेयश्च दीर्घायुर्मुनिः कात्यायनस्तथा ॥ ४ ॥ [४

एते द्विजाः प्रयान्त्वग्रे स्यन्दनैः सहिता मया ।

१. ल भ—अथ ।

२. ज ल भ—राज्यां ।

३. ल भ—दशरथो हृष्टः ।

४. कै—धनमाधाय ।

५. ल—व्रजंत्वग्रे सुविहिता नानारत्नसमन्विताः ।
भ—प्रयांत्वग्रे ,, ,,

६. रा—ते ।

७. ज—शीघ्रं ।

८. ब—निर्यान्तु ।

९. ल भ—चतुरंगं बलं चापि शीघ्रं निर्यातु सर्वशः ।

१०. ल—यातु युग्यमनुत्तमम् । भ—यानयुग्यमनुत्तमं ।

११. रा—तपोगुरुः । ल—जाबालिरथ काश्यपः ।
भ—जाबालिरथ काश्यपः ।

१२. कै ब—मार्कंडेयश्च । रा—पुनः शोधनेन मूलसंगतः ।

१३. ल भ—स्यंदनं योजयाशु मे ।

५] यथा कालात्ययो न स्याद्दूता हि त्वरयन्ति माम्॥५॥ [६
इत्याकर्ण्य नरेन्द्रस्य सेना सा चतुरङ्गिणी।
६] राजानमृषिभिः सार्धं व्रजन्तं पृष्ठतोऽन्वगात् ॥ ६ ॥ [७
चतुर्भिस्तानहोरात्रैर्विदेहानुपजग्मिवान् ।
७] ददर्श मिथिलां रम्यां जनकेनोपशोभिताम् ॥ ७ ॥
८पू] प्रत्युद्गम्याथ जनकस्तेषां पूजामकल्पयत् । [८
N] स तं राजानमासाद्य वृद्धं दशरथं नृपम् ॥ ८॥
८उ] उवाच जनकः प्रीतः शतानन्दसमन्वितः । [९
स्वागतं ते महाराज दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मे गृहम् ॥९॥
९] पुत्रयोरुभयोः प्रीतिं दिष्ट्या प्राप्स्यसि राघव । [१०

१. ल भ—वचनात्तु ।

२. ल भ—निर्ययौ ।

३. ल भ—पृष्ठतोन्वयात् ।

४. ल—०वैदेहानभ्युपेयिवान् ।
भ—०विदेहानभ्युपेयिवान् ।

५. व—जनकस्तेजा

६. ल भ—नास्ति ।

७. रा—समं । ल भ—ततो ।

८. ल—तदा ।

९. ल भ—जनको मुदितो राजा प्रहर्षं परमं ययौ ।
उवाच च नरश्रेष्ठो नरश्रेष्ठं मुदान्वितः ।
जनकः श्लक्ष्णया वाचा वृद्धं दशरथं नृपं ।

१०. ल भ—राघव ।

११. ल भ—प्रीतिः प्राप्यतां वीर्यनिर्जिता ।

दिष्ट्या प्राप्तो महाराज वसिष्ठो भगवानयम् ॥१०॥[3]

१०] मार्कण्डेयादयश्चैव दिष्ट्या प्राप्ता महर्षयः ।[5] [११

दिष्ट्या मे[6] निर्जिता विघ्ना दिष्ट्या मे पूजितं कुलम् ॥११॥

११] राघवैः सह संबन्धं कृत्वा प्रार्थितसद्गुणैः । [१२

अद्य मे सफलं जन्म प्राप्तं चाद्य क्रियाफलम् ॥१२॥[7] [N

१२] अद्य पूतोऽस्मि राजर्षे त्वत्संबन्धात् सबान्धवः ।

अमीषां च महर्षीणामद्याभ्यागमनादहम् ॥ १३ ॥[8] [N

१३] सविशेषतरं पूतो राजन्नाप्यायितस्त्वया ।[9] [N

श्वः प्रभाते महाराज निवर्तयितुमर्हसि ॥ १४ ॥

१४] यज्ञस्यावभृथे पुण्यमुद्वाहमृषिभिः सह ।[11] [१३

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा दशरथस्तदा[12] ॥[13] १५ ॥

---

१. ल भ—महातेजा ।

२. ल भ—भगवानृषिः ।

३. के—दशमश्लोके एकादशश्लोके चेत्थं पाठः—

पुत्रयोरुभयोः प्रीतिं दिष्ट्या मे पूजितं कुलम् ।

४. व—मार्कण्डेयादय० ।

५. ल भ—सह सर्वैर्द्विजगणैर्देवैरिव शतक्रतुः ।

६. ल—संनिर्जिता ।

७. ल—राघवै सह संबन्धाद्वीर्यश्रेष्ठैर्महाबलैः ।

भ—राघवैः ,, संबंधाद्वीर्यश्रेष्ठैर्महाबलै ।

८. कै रा—०मद्याभ्यागमना० ।

९. ल भ—नास्ति ।

१०. ल—निर्वापयतु । भ—निर्वर्तयितुमर्हसि ।

११. ल—यज्ञस्यांते महाराज विवाहमृषिसंमतं ।

भ— ,, ,, ,, सम्मितं ।

१२. ज—दशरथस्तथा ।

१३. ल भ—ततस्तद्वचनं श्रुत्वा मुनिमध्ये नराधिपः ।

१५] ऋषिमध्य[1] उवाचैवं जनकं[2] मिथिलाधिपम् ।[3] [१४
राजन् प्रतिग्रहीतार[4]ः स्मृता दातृवशाः[5] किल ॥१६॥[6] [N
१६] यद्[7] वक्ष्यसि यदा चैवं[8] तत्कर्तारस्तदा[9] वयम् ।
श्लक्ष्णं चैवानुरूपं च वचनं प्रियवादिनः ॥[10] १७ ॥ [N
१७] तद्[11] राज्ञो जनकः श्रुत्वा परं विस्मयमागतः ।[12] [१६
ततः सर्वे मुनिगणाः परस्परसमागमे ॥ १८ ॥
१८] हर्षमेत्य परं तत्र निशां तामवसंस्तदा ।[13] [१७
कथयन्तः कथा हृद्याः पुण्यश्रवणकीर्तनाः ॥[14] १९ ॥
१९] परस्परप्रभावज्ञाः पूजयन्तः परस्परम् । [N
विश्वामित्रं च[15] दृष्ट्वैव राजा दशरथस्तदा ॥ २० ॥ [N

---

१. ज—ऋषिमध्ये ।
२. कै—मिथिलं जनकाधिपम् ।
३. ल भ—वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठः प्रत्युवाच महीपतिः ।
४. रा ज—प्रतिगृहीतारः ।
५. ब—दातृवशात् ।
६. ल—प्रतिग्रहो दातृवशः श्रुतमेतत्पुरा मया ।
भ— ,, ,, न्मया पुरा ।
७. ल भ—यथा ।
८. ल—धर्मज्ञ । भ—धर्म्मज्ञ ।
९. ज—तत्कारश्च तदा । ल भ—तत्करिष्यामहे ।
१०. ल—तद्धर्मिष्टं च वचनं वरिष्ठं सत्यवादिनः ।
भ—तद्धर्मिष्ठं वरिष्ठं च वचनं सत्यवादिनः ।
११. ज ल—तद्राज्ञो ।
१२. ल—श्रुत्वा विदेहाधिपतिः परं विस्मयमागमत् ।
भ— ,, ,, ,, विस्मयमागतः ।
१३. ल भ—नास्ति ।
१४. ल भ—कथयंतः कथां दिव्यां हृद्यां श्रोत्रसुखावहाम् ।
१५. ल भ—तु ।

२०] शिरसा प्रणतः प्रीत्या ववन्दे हृष्टमानसः ।
भवन्तं नाथमासाद्य पावितोऽस्मीति चाब्रवीत् ॥२१॥ [N
२१] विश्वामित्रोऽपि चैवैनं प्रीतिमानिदमब्रवीत् ।
पूत एवासि राजर्षे त्वमेतैः कर्मभिः शुभैः ॥२२॥ [N
२२] अनेन चापि पुत्रेण रामेणाक्लिष्टकर्मणा ।
पूतोऽसि श्लाघनीयश्च देवानामपि सम्मतः ॥२३॥ [N
२३] एष ते नृपते पुत्रो रामो निर्यातितो मया ।
लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा कुशली रघुनन्दन ॥२४॥ [N
२४] इत्युक्तो मुमुदे राजा विश्वामित्रेण धीमता ।
तौ चापि पुत्रावाघ्राय परिष्वज्य च पीडितः ॥२५॥[10] [N
२५] उवास स निशां तत्र सुमुखी हृष्टमानसः ।[12]

---

१. ल भ—प्रयतो भूत्वा ।
२. ल—पूर्वतोस्मि च तेजसा ।
भ—पूतोस्मि तव तेजसा ।
३. ल—पूर्व ।
४. ल—सुकृतै । भ—सुकृतैः ।
५. ल भ—रामेणामिततेजसा ।
६. ल भ—श्लाघनीयोसि ।
७. ल भ—संगमे ।
८. अ ल—भ्राता ।
९. ल भ—निपीडितौ ।
१०. अतः परमधिकः पाठः—
ल—हर्षेण महताविष्टस्तां निशामनयच्चिकुवाम् ।
भ— ,, ,, निशामवसत्स्थिवाद् ।
ल—स तैः पुत्रैः परिवृतो निशां परमहर्षितैः ।
भ—,, ,, ,, ,, ,, परमहर्षितः ।
११. रा—सुमुखी ।
१२. ल भ—स ह्योवास भृशं प्रीतो जनकेन सुपूजितः ।

जनकोऽपि [1]तदा राजा [2]क्रियां धर्मेण धर्मवित्
२६] कृत्वा यज्ञोचिताः सर्वास्तां रात्रिमवसत् सुखम् ॥[3]२६॥ [२०

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे दशरथसमागमो [4]नाम
पञ्चषष्टितमः सर्गः ॥६५॥[5]

---

१. रा—ततो० । ल भ—महातेजाः ।

२. भ—क्रियां ।

३. ल—यज्ञश्च सुतयोश्चैव कृत्वा रात्रिमुवास ह ।
   भ—यज्ञस्य ,, ,, ,, ।
   ल भ—रामजामातरं लब्ध्वा हृष्टः परमधार्मिक ।

४. के रा—नामैकसप्ततितमः ।
   ज—नाम सप्तपंचाशत्तमः । ब—नाम ।

५. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

ततः प्रभाते जनकः कृतपूर्वाह्णिकक्रियः।[1]
१] उवाच मधुरं वाक्यं शतानन्दं पुरोधसम् ॥ १ ॥[2][3][4] [१
भ्राता ममानुजः श्रीमान् वीर्यवानाज्ञया मम।[5]
२] कुशध्वज इति ख्यातो योऽध्यास्ते नगरं शुभम् ॥२॥ [२
वर्याट्टालकपर्यन्तं पिबन्निक्षुमतीं नदीम्।[6]
३] सांकाश्यं दिव्यसांकाश्यं विमानमिव पुष्पकम् ॥३॥[7] [३
तमहं द्रष्टुमिच्छामि नानार्थो हि स मे मतः।[8]
४] प्रीयते हि महासत्त्वः स मया राजसत्तमः ॥४॥[9] [४
तस्याथ शासनाद् दूतास्तं गत्वा शीघ्रयायिनः।[10]
५] आनयामासुरव्यग्रा विष्णुमिन्द्राज्ञया यथा ॥५॥[11] [५
स तस्य शासनाद् भ्रातुराजगाम कुशध्वजः।[12]

---

१. ल—कृतकामः महर्षिभिः। भ—कृतकामो महर्षिभिः।
२. ल भ—वाक्यं वाक्यज्ञः।
३. भ—शातानंदं।
४. ज—पुरोहितं।
५. ल भ—भ्राता मम महातेजा वीर्यवानतिधार्मिकः।
६. कै भ—चयाज्वालकपर्यंतं।
७. कै—०सांकाशं। ज ल—दिव्यसंकाशं।
८. ल भ—यज्ञगोप्तारमेव तु।
९. ल—प्रीति सोपि महातेजाः प्रीतियुक्तो महायशाः।
भ—प्रीतः ,, ,, ,, ,,
१०. ल भ—शासनात्ते नरेंद्रस्य प्रयाताः शीघ्रवाहनाः।
११. ल—आनयामासुरव्यास्ता विष्णुमिंद्राज्ञयेव तं।
भ— ,, रव्यग्रा ,, ,,
१२. ल भ—आज्ञया तु नरेंद्रस्य आगतः स कुशध्वजः।

६] ददर्श चोपसृत्याशु जनकं भ्रातृवत्सलम् ॥ ६ ॥ [८
सोऽभिवाद्य शतानन्दं जनकं च महीपतिम् ।[3]
७] अध्यतिष्ठदनुज्ञातो राजार्हं परमासनम् ॥[4]७॥ [९
सहोपविष्टौ [5]तौ तत्र प्रेषयामासतुस्तदा ।
८] मन्त्रिश्रेष्ठं समाहूय सुदामानं समाहितौ ॥८॥[6] [१०
गच्छ मन्त्रिवराभ्येत्य शीघ्रं दशरथं नृपम् ।
९] आनयेह सहामात्यं सपुत्रं सपुरोधसम् ॥९॥[7] [११
उपकार्यां स गत्वा तमिक्ष्वाकुकुलनन्दनम् ।
१०] दृष्ट्वा दशरथं प्रह्वः सोऽभिवाद्य ऽब्रवीत् ॥१०॥[10] [१२

१. रा.—चोपसृत्याश्च । ल भ—च महात्मानं ।
२. ल भ—धर्मवत्सलं ।
३. ल भ—अभिवाद्य महात्मानं शतानंदं सपार्थिवं ।
४. ल—राज्यार्हं परमं दिव्यमध्यारोहसदासनम् ।
भ—राजार्हं ,, दिव्यमध्यरोहसदासनं ।
५. ज—तत्रैव ।
६. ल भ—उपविष्टौ सुखासीनौ महाभागौ महाबलौ ।
ल—मंत्रिमुख्यं सुदामानं प्रेषयामासतुस्तदा ।
भ—मंत्रिश्रेष्ठं ,, ,,
७. ल भ—आमंत्रयस्व शीघ्रं तमिक्ष्वाकुममितप्रभं ।
आत्मजैः सह दुर्धर्षं सोपाध्यायं समंत्रिणम् ॥
८. रा ज—उपकार्यं ।
९. के रा—प्राह्वः ।
१०. ल भ—उपकार्यंकृतं तं तु इक्ष्वाकुकुलनंदनं ।
ल—दृष्ट्वा दशरथं प्राह सोभिवाद्य महामतिः ।
भ— ,, ,, ,, ,, कृतांजलिः ।

अयोध्याऽधिपते देवं वैदेहो मनुजेश्वरः ।
११] त्वां द्रष्टुमिच्छति क्षिप्रं सोपाध्यायं सबान्धवम्॥ ११॥ [१३
मन्त्रिश्रेष्ठवचः श्रुत्वा राजा सर्षिगणस्तदा ।
१२] सबन्धुरगमत् तत्र यत्र राजा स मैथिलः ॥१२॥ [१४
तमासाद्य च राजानं राजा दशरथस्ततः ।
१३] वाक्यं वाक्यविदां श्रेष्ठो वैदेहमिदमब्रवीत् ॥१३ [१५
विदितं ते यथाऽस्माकमिक्ष्वाकुकुलदैवतम् ।
१४] प्रवक्ता धर्मकार्येषु वसिष्ठो भगवानृषिः ॥१४॥ [१६
विश्वामित्राभ्यनुज्ञातः सर्वैश्चैव महर्षिभिः ।
१५] एष वक्ष्यति नः सर्वं यथाधर्मं यथाक्रमम् ॥१५॥ [१७
तूष्णींभूते दशरथे वसिष्ठो भगवानृषिः ।
१६] उवाचेदं वचो धर्म्यं जनकं सपुरोहितम् ॥ १६॥ [१८
आकाशप्रभवो ब्रह्मा शाश्वतो नित्यमव्ययः ।
१७] तस्मान्मरीचिः संजज्ञे मरीचेः कश्यपः सुतः ॥१७॥ [१९

---

१. ल—वीर विदेहस्त्वां नरेश्वर । भ—वीर वैदेहस्त्वां नरेश्वर ।
२. ल भ—द्रष्टुमिच्छति धर्मेण सोपाध्यायः सबान्धवः ।
३. ल भ—स राजा यत्र ।
४. ल भ—समासाद्य ।
५. ज—०रथस्तदा । ल भ—सोपाध्यायगणैर्वृतम ।
६. ल भ—वै वाक्यकुशलो ।
७. ल भ—विदितोयं यथा राजन्निक्ष्वाकुकुल दैवतम् ।
८. ल—वक्ता सर्वेषु लोकेषु । भ—वक्ता सर्वेषु कालेषु ।
९. ल भ—सर्वैश्च परमार्षिभिः ।
१०. ल—धर्मात्मा यथायोगं । भ—धर्मात्मा यथायोग्यं ।
११. ल—वसिष्ठं ।
१२—ल भ—वाग्विदां वरः ।
१३. ल भ—उवाच वाक्यं वाक्यज्ञो वैदेहं सपुरोधसम ।

मारीचादङ्गिरास्तस्मात् प्रचेतास्तनयोऽभवत् ।[1]
१८] मनु प्रचेतसः पुत्र इक्ष्वाकुस्तु मनोः सुतः ॥१८॥[2] [२०
स इक्ष्वाकुरयोध्यायां राजाऽभूत् प्रथमः पुरि ।
१६] इक्ष्वाकोस्तु सुतः श्रीमान् विकुक्षिरुदपद्यत ॥१६॥ [२१
विकुक्षेस्तु महातेजा बाणः पुत्रो व्यजायत । [२२उ
२०] बाणस्य तु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान् ॥२०॥ [२३पू
अनरण्यात् पृथुर्जज्ञे त्रिशङ्कुश्च पृथोरपि । [२३उ
२१] त्रिशङ्कोरभवत् पुत्रो धुन्धुमारो महायशाः ॥२१॥
धुन्धुमारसुतो राजा युवनाश्वो महाबलः ।
२२] युवनाश्वसुतश्चासीन्मान्धाता पृथिवीपतिः ॥२२॥ [२४
मान्धातुः सुमहातेजाः सुसन्धिः समपद्यत ।
२३] सुसन्धेर्ध्रुवसन्धिश्च द्वितीयश्च प्रसेनजित् ॥२३॥ [२५

---

१. ल भ—मारीचः कश्यपाज्जज्ञे विवस्वांल्लोकभावनः ।
२. ल भ—मनुर्विवस्वतः ।
३. भ—श्राद्धदेवः प्रतापवान् ।
४. ल—तमिक्ष्वाकुमयोध्यायां राजानं विद्धि पूर्वकम् ।
भ—बाणस्य तु महातेजा ,, ,, ।
५. ल भ—विकुक्षिः समपद्यत ।
६. ल—बाणः पुत्रः प्रतापवान् ।
भ—बाणपुत्रः ,, ।
७. ज—विकुक्षेस्तु महातेजा अनरण्यः प्रतापवान् ।
८. ल भ—त्रिशंकुस्तु ।
९. रा—मांधातुरथ महा० । भ—मांधातुस्तु ।
१०. ब भ—सुगन्धिः ।
११. ल—०सान्धिस्तु । भ—सुगन्धेस्त्वंसान्धिस्तु ।
१२. ल भ—द्वितीयस्तु ।

यशस्वी ध्रुवसन्धेस्तु भरतो नाम वीर्यवान् ।
२४] भरतात् तु महातेजा असितः समजायत ॥२४॥[3] [२६
२५उ] सह तेन गरेणैव ततः स सगरोऽभवत् ।[5] [३७उ
सगरादसमञ्जास्तु अंशुमानसमञ्जसः ॥२५॥[6]
२६] दिलीपोंऽशुमतः पुत्रो दिलीपस्य भगीरथः । [३८

---

१. भ—तूर्ध्वसंधेस्तु ।

२. ल भ—नामतः ।

३. भ—अतः परमाधिकः पाठः—

यस्यैते प्रतिराजान उदपद्यन्त शत्रवः ।
हैहयास्तालजंघाश्च शूराश्च शशबिन्दवः ।
तांस्तु स प्रतियुध्यान्हि युद्धे राजा प्रवासितः ।
हिमवंतमुपागम्य भार्याभ्यां सहितस्तदा ।
असितोऽल्पको राजा मंत्रिभिः सहितस्तदा ।
द्वे चास्य भार्ये गर्भिण्यौ बभूवतुरिति श्रुतिः ।
एका गर्भविघातार्थं सपत्न्यै सागरं ददौ ।
ततः शैलवरं रम्यं बभूवाभिरतो मुनिः ।
भार्गवश्च्यावनो नाम हिमवंतमुपाश्रितः ।
तत्र चैका महाभागा भार्गवं देववर्चसं ।
पद्मपत्रविशालाक्षी कांक्षती परमं सुतं ।
तमृषिं साभ्युपागम्य कालिंदी चाभ्यवादयत् ।
स तामभ्यवदद्विप्रो पुत्रेप्सुं पुत्रजन्मनि ।
तव कुक्षौ महाभागे सुपुत्रः संभविष्यति ।
महावीर्यो महातेजा अचिरादुत्पविष्यति ।
गरेण सहितः श्रीमान्मा शुचः कमलेक्षणे ।
च्यवनं तु नमस्कृत्य राजपुत्रं व्यजायत ॥

४. भ—तस्मात्स ।

५. ल—महातेन गरेणैव तस्मात्स सुगभोभवत् ।

६. ल भ—सगरस्यासमंजोभूदसमंजसुतोंऽशुमान् ।

भगीरथात् ककुत्स्थश्च[1] ककुत्स्थाच्च[2] रघुस्तथा[3] ॥२६॥ [३९
२७] रघोस्तु वंशे तेजस्वी प्रवृद्धः[4] पुरुषादकः ।
कल्माषपादो ह्यभवच्छंखलस्तस्य[5] चात्मजः ॥२७॥ [४०
२८] सुदर्शनः[6] शंखलस्य अग्निवर्णः सुदर्शनात् ।
शीघ्रगस्त्वग्निवर्णस्य शीघ्रगादभवन्मनुः[7] ॥२८॥
२९] मनोस्तु सुश्रुतो ह्यासीदम्बरीषस्तु सुश्रुतात् ।[8] [४१
अम्बरीषस्य पुत्रोऽभून् नहुषः पृथिवीपतिः ॥२९॥
३०] नहुषस्य[9] ययातिश्च[10] नाभागश्च[11] ययातिजः[12] । [४२
अजो नाभागपुत्रस्तु तस्माद्दशरथोऽभवत् ॥३०॥
३१] राज्ञो दशरथस्यैतौ तनयौ रामलक्ष्मणौ ।[13] [४३
आमनोरतिशुद्धानां राज्ञाममिततेजसाम् ॥३१॥ [N

---

१. ल भ—ककुत्स्थस्तु ।

२. ल भ—ककुत्स्थात्तु ।

३. ल—रघुः स्मृतः । भ—रघुः पुनः ।

४. ल भ—विवृद्धः ।

५. ल भ—राजाभूच्छंखनकस्तस्य ।

६. ल भ—सुदर्शनस्तु शंखनकादग्निवर्णः ।

७. ल भ—शीघ्रगस्त्वाभवन्मुनिः ।

८. ल भ—मुनेः प्रसुश्रुकोह्यासीदंबरीषः प्रसुश्रुतकात् ।

९. ल—नहुषाच्च ।

१०, ल भ—ययातिस्तु ।

११. भ—नाभागस्तु ।

१२. ल—ययागतः ।

१३. ल भ—नृपाद्दशरथाज्जातौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।

३२] ककुत्स्थेक्ष्वाकुसगररघुप्रवरजन्मनाम् ।[1]
उदाराचारसत्त्वानां क्षत्रधर्मानुपालिनाम् ॥३२॥[2] [N
३३] कुले जलनिधिप्रख्ये जातयोर्वृत्तशालिनोः ।[3] [N
रामलक्ष्मणयोरर्थे वरयाम्यात्मजे तव ॥३३॥[4] [४५
३४] सदृशाभ्यां तु सदृशे सुते त्वं दातुमर्हसि ।[5]
इत्युक्तो जनको राजा कृताञ्जलिरभाषत ॥[6][7]३४॥ [N
३५] अस्माकमपि राजर्षे कुलं त्वं श्रोतुमर्हसि ।[8]
३६पू] कन्यादाने हि[9] वक्तव्यं कुलं निरवशेषतः ॥३५॥ [N

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे कुलप्रशंसनं[10] नाम
षट्षष्टितमः सर्गः ॥६६॥[11][12]

१. रा ज—काकुत्स्थे० ।
२. ल भ—नास्ति ।
३. ल भ—कुलवंशानुरूपिणयोः कुलवंशानुरूपयोः ।
४. ल—वरयोरात्मजे ।
५. ल भ—नरश्रेष्ठ सदृशे ।
६. अतः परमित्थं सर्गसमाप्तिपरः पाठः—
ल—इत्यार्षे रामायणे आदिवंशकीर्तनं नाम सर्गः ।
भ—इत्यार्षे रामायणे वंशकीर्तनो नाम सर्गः ॥२१॥
७. ल भ—एवमुक्तोथ जनकस्तमुवाच कृताञ्जलिः ।
८. ल भ—श्रोतुमर्हसि धर्मज्ञ कुलं नः शृण्वतां वर ।
९. ल भ—प्रदाने स्वस्य ।
१०. कै—कुलप्रवंशकीर्तनं ।
ज—रघुवंशवर्णनं ।
११. कै—द्विसप्ततितमः । रा—द्विसप्ततितमः ।
ज—अष्टपंचाशत्तमः । ब—नास्ति ।
१२. ल भ—३४ श्लोकस्य पूर्वार्द्धे एव समाप्तः ।

तत आभाष्य जनको वसिष्ठं वदतां वरम् ।
१] नृपं दशरथं चेदं प्रोवाच वचनं तदा ॥१॥[1] [१
राजाऽभूत् त्रिषु लोकेषु विश्रुतः स्वेन कर्मणा ।
२] निमिः परमधर्मात्मा सर्वसत्त्ववतां वरः ॥२॥[2] [३
तस्य पुत्रो मिथिर्नाम बभूवानुपमद्युतिः ।
३] तस्यापि जनको नाम जनकस्याप्युदावसुः ॥३॥ [४
उदावसोरभूत् पुत्रः प्रथितो नन्दिवर्धनः ।[7]
४] नन्दिवर्धनतश्चासीत् सुकेतुर्नाम पार्थिवः ॥४॥[8] [५
सुकेतोरभवत् पुत्रो देवरातो महाबलः ।
५] देवरातस्य तनयो बृहद्रथ इति श्रुतः ॥५॥[8] [६
बृहद्रथस्य च सुतो महावीर्यः प्रतापवान् ।[9]

१. भ—वक्तव्यं कुलजातेन तन्निबोध नरेश्वर ।
ल—नास्ति ।
२. ल—राजाभूस्त्रिषु लोकेषु निमिः परमदुर्जयः ।
३. ल भ—जनितो नेमिपर्वते ।
४. भ—प्रथमो ।
५. ल भ—राजा ।
६. ज—०प्युदावसुः । ल—जनकात्तु गदावसुः ।
भ—जनकात्तु रुदावसु; ।
७. ल—गदावसोस्तु धर्मात्मा महावीर्यो व्यजायत ।
भ—रुदा ,, ,, ,, ,,
८. ल भ—नास्ति ।
९. ल भ—नास्ति ।

६] महावीर्यस्य धृतिमान् सुधृतिश्च[1] ततोऽभवत् ॥६॥ [७
सुधृतेरपि धर्मात्मा धृष्टकेतुः[2] सुतोऽभवत् ।
७] धृष्टकेतोरभूच्चापि हर्यश्वस्तनयस्तथा ॥७[3]॥ [८
हर्यश्वस्य मरुः पुत्रो मरोः पुत्रः प्रसिद्धकः[4] ।
८] प्रसिद्धकस्य[5] धर्मात्मा राजा कृतिरथः[6] सुतः ॥७॥ [९
पुत्रः कृतिरथस्यापि[7] देवमीढ[8] इति श्रुतः[9] ।
९] देवमीढस्य[10] विबुधो विबुधस्यापि[11] चान्धकः ॥८॥ [१०
अन्धकस्य सुतश्चासीत् कृतिरात[12] इति श्रुतः ।[13]
१०] कृतिरातस्य[14] च[15] सुतः कृतिरोमा[16] व्यजायत ॥१०॥ [११

---

१. ल भ—सुधृतिस्तस्य चात्मजः ।
२. ल भ—०केतुरजायत ।
३. ल भ—धृष्टकेतोस्तु काकुत्स्थ हर्यश्व इति विश्रुतः ।
४. ल—हर्यश्वस्य मरुत्पुत्रो मरुत्पुत्रः प्रतद्धकः ।
   भ— ,, मरुत्पुत्रो मरुत्पुत्रात्प्रतंधकः ।
५. ल—प्रतद्धकस्य । भ—प्रतंधकस्य ।
६. ज—कृतिरथस्ततः । ल—कीर्तिरथस्तत ।
   भ—कीर्तिरथः सुतः ।
७. ल भ—कीर्तिरथस्यापि ।
८. ज—देवमेढ ।
९. भ—श्रुतः ।
१०. ज—देवमेढस्य ।
११. ल भ—विबुधस्य महान्धकः ।
१२. ज—कृतरात ।
१३. ल भ—महांधकसुतो राजा कीर्तिरातो महाबलः ।
१४. ल भ—कीर्तिरातस्य ।
१५. ल भ—काकुत्स्थ ।
१६. ज—कृतरोमा । ल भ - महारोमा ।

कृतिरोमसुतश्चापि स्वर्णरोमेति विश्रुतः ।[2]

११] स्वर्णरोमोद्भवश्चापि ह्रस्वरोमा सुतो बली ॥[4]११॥ [१२

तस्य पुत्रद्वयं जज्ञे धर्मज्ञस्य महात्मनः ।

१२] ज्येष्ठोऽहमनुजश्चायं भ्राता मम कुशध्वजः ॥१२॥ [१३

मां तु ज्येष्ठं ततो राज्ये ह्यभिषिच्य पिता मम ।

१३] कुशध्वजं यौवराज्ये त्यक्त्वा राज्यं वनं गतः ॥१३॥ [१४

वृद्धे पितरि स्वर्याते ततोऽहं रघुनन्दन ।[15]

१. ज—कृतरोमसुतश्चासीद् ।

२. भ—महारोम्णस्तु धर्मात्मा ह्रस्वरोमा व्यजायत ।

ल—नास्ति ।

३. रा ब—स्वतो ।

४. ल—सुवर्णरोमा काकुत्स्थ ह्रस्वरोमा व्यजायत ।

भ— ,, ,, ह्रस्वरोम्णो ,, ।

५. ल भ—यस्य ।

६. ल भ—राजन् ।

७. भ—तस्य ज्येष्ठाहमनुजो ।

८. ल भ—भ्राता मम ।

९. भ—नियोज्य सुतं ।

१०. ल भ—विनियुज्य ।

११. ज—पितामह । ल भ—नराधिप ।

१२. ल भ—समावेश्य ।

१३. ल—यौवराज्ये । भ—भ्रातरं मे ।

१४. ज—विना ।

१५. ल भ—गते पितरि तस्मिंस्तु स्वर्गमास्थाय तिष्ठति ।

१४] भ्रातरं देवसङ्काशमपश्यं स्वशरीरवत् ॥१४॥
कस्यचित् त्वथ कालस्य सांकाश्यादागतो नृपः ।
१५] सुधन्वा बलवीर्याढ्यो मिथिलामवरोधकः ॥१५॥　[१६
स च मे प्रेषयद् दूतं यदेतत् ते धनुर्गृहे ।
१६] तिष्ठत्यभ्यर्चितं दिव्यमेतद् देहीति राघव ॥१६॥　[१७
तस्य प्रदाने धनुषः सोऽयुध्यत मया सह ।
१७] हतश्च स मया राजा सुधन्वा बलगर्वितः ॥१७॥　[१८
निहत्य समरे चाहं सुधन्वानं महीपतिम् ।
१८] सांकाश्ये भ्रातरं शूरमभ्यषिञ्चं कुशध्वजम् ॥१८॥ [१६

---

१. ल भ—०शं पालयामि ।
२. ल भ—कुशध्वजम् ।
३. ब—०संकाशादागतो नृप ।
ल भ—संकाश्यादागमत्पुरात् ।
४. ज—कस्यचित्त्वथ संकाश्यागतो नृपसत्तमः ।
५. कै—स धन्वा । ज—स्वधन्वा ।
६. ल भ—वीर्यवान् राजा ।
७. रा ल भ—प्रेषयत् ।
८. ल भ—शैवं धनुरनुत्तमम् ।
९. ल भ—प्रेषयाशु नरश्रेष्ठ रत्नभूतं ममेत्युत ।
१०. ज—प्रधाने ।
११. ल—तस्याप्रधाने काकुत्स्थ युद्धमासीन्मया सह ।
भ—तस्याप्रदाने । „ „ „ ।
१२. ल भ—प्रमुखो ।
१३. ल भ—मिथिकामवरोधकः ।
१४. ल भ—च नरश्रेष्ठ ।
१५. ल भ—नराधिपं ।
१६. ज भ—संकाश्ये । ल—संकाशे ।
१७. कै—शूरमभूषिं च । रा—०मभिषिञ्चं ।
ज—०मभ्यासिञ्च ।

कनीयानेष मे भ्राता सत्यसन्धः कुशध्वजः ।
१९] ददानि सहितोऽनेन वध्वौ तेऽहं सुते नृप ॥१९॥ [२०
सीतां रामाय तनयामूर्मिलां लक्ष्मणाय च । [२१
२०] वीर्यशुल्का मम सुता सीता सुरसुतोपमा ॥२०॥ [२२
अयोनिजा समुत्पन्ना वेदीमध्यात् सुमध्यमा ।
२१] तां रामाय प्रयच्छामि पत्नीं वीर्यबलार्जिताम् ॥ २१॥ [N
रामलक्ष्मणयो राजन् कुरु गोदानमङ्गलम् ।
२२] पितृश्राद्धं च भद्रं ते ततो वैवाहिकं कुरु ॥२२॥ [२३
वर्ततेऽद्य मघा राजन् दिवसे तूत्तरे पुनः ।

१. ज—कनीयानेष ।

२. ल भ—ज्येष्ठोऽस्याहं महायशाः ।

३. रा भ भ—ददामि ।

४. ल भ—परमप्रीतो ।

५. ल भ—ते रघुनन्दन ।

६. ल भ—भद्रं ते कथमयाय तथोर्मिलाम् ।

७. ल भ—मया कृता ।

८. ब—देवीमध्यात् । वस्तुतस्तु मात्राविपर्ययपरो भ्रम एषः ।

९. ल—इति कन्ये प्रयच्छामि त्रिर्ददामि न संशयः ।
भ—इमे ,, ,, त्रिर्वोमि ,, ,, ।

१०. ल भ—प्रदानं चानयोर्वध्वौ धर्मेणेक्ष्वाकुनन्दन ।

११. ल भ—गोदानमुत्तमं ।

१२. पितृकार्यं ।

१३. ज—महा ।

२१] फल्गुन्यंः प्रतिपत्स्यन्ते विवाहस्तत्र नोऽस्त्वयम् ॥२३॥[2] [२४

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे जनककुलाख्यानं नाम
सप्तषष्टितम: सर्ग: ॥६७॥[6]

१. के—फल्गुण्याः। रा—फल्गुण्या।

२. ल भ—मयापि तु महाबाहो तृतीये दिवसे शुभे।

ल.—फल्गुणीविषये राजं कार्यं कन्यापवर्जनम्।

भ—फल्गुनीविषये राजन् ,, ,,

ल—यथा च भ्रातृयोर्वीरधर्मकार्यसुखोदयम्।

भ—यथावत्पुत्रयोर्वीर धर्मकार्यं सुखोदयम्।

ल भ—क्रियतां देवपूर्वं हि प्रथमं कार्यमुत्तमम्।

३. के ब—नास्ति।

४. रा—सनत्कुमाराख्याने। ज—जनकवंशवर्णनम्।

५. के रा—त्रिसप्ततितम:। ज—एकोनषष्टितम:।

ब—नास्ति।

६. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते॥

उक्तवाक्ये तु जनके[1] विश्वामित्रो महामुनिः ।
१] उवाच वचनं धीमान् वसिष्ठसहितस्तदा[2] ॥१॥ [१
उभे महोदधिमख्ये उभयोरपि वां[3] कुले ।[4]
२] ख्यात इक्ष्वाकुवंशे हि जनकानां तथैव च ॥[5]२॥ [N
सदृशोऽपत्यसंबन्धो युवयोरिति मे मतिः ।[6]
३] सीताया ऊर्मिलायाश्च रामलक्ष्मणयोस्तथा[7] ॥३॥ [३
वक्तव्यमस्ति नः किञ्चिद् भूधाऽपि शृणु तन् नृप । [४
४] भ्राता ते सदृशो योऽयं शूरो राजा कुशध्वजः ॥४॥[9]
तस्यास्ति किलं[10] धर्मात्मन् रूपेणाप्रतिमं भुवि ।[11]
५] कन्याद्वयं राघवार्थे[12] तद् वयं वरयामहे ॥[13]५॥ [५

---

१. ल भ—वैदेहे ।
२. ल—धीरं वसिष्ठं सहितं नृपं ।
भ—धीरो वसिष्ठसहितो नृप ।
३. ज—मां ।
४. ल भ—सर्वेस्याम्यप्रमेयानि कुलानि कुलपुंगव ।
५. ल भ—नृपेक्ष्वाकुविदेहानां नैषां तुल्योस्ति कश्चन ।
६. ल—सदृशो धर्मसम्बन्धो रूपसम्पत्तथैव च ।
भ—सदृशो धर्मसम्बन्धे ,, ,,
७. ल भ—रामलक्ष्मणयोरिति ।
८. ल भ—वक्तव्यं ते नरश्रेष्ठ वचनं श्रूयतामिदं ।
९. ल भ—भ्राता ह्येष यवीयांस्ते धर्मात्मा हि कुशध्वजः ।
१०. रा.—कुल ।
११. ल भ—अस्य धर्मात्मनो नित्यं रूपेणाप्रतिमं भुवि ।
१२. ल—राघवाय ।
१३. ल भ—सुताद्वयं नरश्रेष्ठ पत्न्यर्थं वरयामहे ।

धर्मतो भरतस्यार्थे शत्रुघ्नस्य च धीमतः ।
६] वध्वौ मे संप्रयच्छ त्वं यदि ते[1] रुचिता वयम् ॥६॥[2] [६
पुत्रा दशरथस्यास्य चत्वारोऽमितपौरुषाः ।[3]
७] लोकपालोपमा वीराः सर्वे सत्यपराक्रमाः ॥[4]७॥ [७
एषामर्थे वयं राजन् भवन्तं वरयामहे ।
८] सदृशोऽसि प्रभावेण राघवाणां महीपते ॥[6]८॥ [८
सम्बन्ध उभयोर्भ्रात्रो र्युवयोः सदृशस्त्वयम् ।[8]
९] इक्ष्वाकुभि र्धर्मशीलैः सदृशैर्वा प्रजापते ॥[9]९॥ [८
इत्युदारं वचः श्रुत्वा विश्वामित्रवसिष्ठयोः ।[10]
१०] जनकः प्राञ्जलिर्वाक्यमुवाच मुनिपुङ्गवौ ॥१०॥ [९
सदृशः कुलसम्बन्धो भवद्भ्यामुपवर्णितः ।[11] [१०उ

---

१. रा—तैरुचिता ।

२. ल भ—भरतस्य कुमारस्य शत्रुघ्नस्य च धीमतः ।
ल—इत्युक्त्वा मुनिशार्दूलं वरयामासतुर्नृपम् ।
भ— „ मुनिशार्दूलौ „ नृप ।

३. ल—पुत्रौ दशरथस्येतौ रूपयौवनशालिनौ ।
भ— „ दशरथस्येमौ „

४. ल भ—भरतश्च महातेजाः शत्रुघ्नश्चापराजितः ।

५. ल भ—तयोरर्थे महाराज ।

६. कै रा ज ब—राघवानां

७. ल भ—कुशध्वजसुताभ्यां च प्रदानमभिरोचय ।

८. ल भ—उभयं हि नरश्रेष्ठ सम्बन्धेनानुगृह्यतां ।

९. ल—इक्ष्वाकुकुलमत्यग्र्यं भवताच यशस्विनः ।
भ—इक्ष्वाकुकुलमव्यग्रं भवतश्च यशस्विनः ।

१०. ल भ—विश्वामित्रवचः श्रुत्वा वसिष्ठस्य च भाषितं ।

११. ल भ—सदृशात्कुलसंबन्धात्कुरुष्वंतावनुग्रहम् ।

११] एवं भवत्विमे कन्ये कुशध्वजसुते उभे ॥ ११ ॥
दैदानि भरतायैकां शत्रुघ्नायं तथाऽपराम् । [११
१२] इच्छाम्यहमतिमीतिं सम्बन्धं च पुनः पुनः ॥ १२॥ [N
१३पू] एकाहे राजपुत्राणां चत्वारो रघुनन्दनाः । [१२पू
१४उ] विवाहेषु प्रशंसन्ति नक्षत्रं वै विपश्चितः ॥ १३॥
एवमस्त्विवति तत् तत्र वसिष्ठः प्रत्यभाषत । [N
एवमुक्त्वा वचः सौम्यं प्रत्युत्थाय कृताञ्जलिः ॥१४॥
१५] उभौ मुनिवरौ राजा जनको वाक्यमब्रवीत् । [१४
वरधर्मः कृतो ब्रह्मन् शिष्योऽस्मि भवतां सदा॥१५॥ [१५
१६] सामान्यः सबलश्चैव परवानस्मि चिन्त्यताम् । [N

---

१. ल—भवतु भद्रं वो । भ—भवतु भद्रं नः ।

२. ल भ—इमे ।

३. के—ददामि ।

४. ज—भरतायैव ।

५. ज—शत्रुघ्ना च ।

६. ल भ—पत्न्यौ भजेतां सहितौ शत्रुघ्नभरतावुभौ ।

७. ल भ—एकाहेनैव सर्वासां कन्यानां मुनिपुंगवौ ।

८. रा—एकाके राज० । ज—०राजपुत्रीणां ।

९. ल भ—पाणिं गृह्णन्तु चत्वारो राजपुत्राः महाबलाः ।

१०. ल—उत्तरे दिवसे ब्रह्मं फल्गुणीनां मनीषिणः ।
भ— ,, ,, ब्रह्मन् फल्गुनिभ्यां ,,

११. ल—वैवाहिकं प्रशंसंते पूषा यत्र तु दैवतम् ।
भ— ,, प्रशंसंति भगो यत्र तु दैवतं ।

१२. के ज—वरधर्मकृतो । ल भ—वरधर्मकृतः ।

१३. ल भ—सर्वे ।

१४. ल भ—शिष्योहं ।

प्रभुर्दशरथो राजा ममास्य विषयस्य च ॥[1]१६॥

१७] भवन्तश्चापि सर्वे मे सर्वत्र प्रभविष्णवः । [N

विषयस्यास्य सर्वस्य राज्यस्य मम चेश्वराः ॥१७॥[2]

१८] भवन्तः क्रियतां तस्माद् भवद्भिः प्रणयो मम ।[3] [१६

तथा वदति वैदेहे[4] जनके प्रश्रितं वचः ॥१८॥

१९] राजा दशरथो हृष्टः प्रत्युवाच हसन्निव । [१७

२०उ] सर्वस्या अवने राजन् प्रभुरस्मि यथाऽऽत्थ माम् ॥[9]१९॥[N

अहं तव ममापि त्वं यत् तवास्ति ममैव तत् ।

२१] विश्वामित्रादयश्चापि ममैवं तव चेश्वराः ॥२०॥[11] [N

सर्वतः प्रणयोऽस्माभिः कृतस्त्वयि महीपते ।

२२] करिष्यामश्च भूयोऽपि नास्ति नः स्वे विचारणा॥२१॥[12] [N

युवामसंख्येयगुणौ भ्रातरौ मिथिलेश्वरौ ।

२३] प्रियौ संबन्धिनौ लब्धौ लोकेऽस्मिन् प्रथितौ मया॥[14]२२॥[N

---

१. ल भ—राज्ञो दशरथस्येयं यथायोध्यापुरी तथा ।

२. ल भ – प्रभुत्वे नास्ति संदेहो यथेष्टं कर्तुमर्हथ ।

३. ल भ—नास्ति ।

४. ल भ—एवं ।

५. ल भ—ब्रुवति ।

६. ज—वैदेही ।

७. ल—रघुनंदन: । भ—रघुनंदनाः ।

८. ल—महीपतिम् । भ—महीपतिः ।

९. ल भ—नास्ति ।

१०. ज—ममैव ।

११. ल भ—नास्ति ।

१२. ल भ—नास्ति ।

१३. ल भ—मिथिलेश्वर ।

१४. ल भ—उत्तमो राजवंशोयं युवाभ्यामभिपूजितः ।

स्वस्ति प्राप्नुहि भद्रं ते गमिष्यामि स्वमालयम् । [१६पू
२४] गोदानादीनि कर्माणि कर्ता सर्वाण्यनन्तरम् ॥[1]२३॥ [N
धर्मार्थ वृद्धिकामानां मा नः कालोऽत्यगादयम् ।
२५] सर्वेषामेव चास्माकमाज्ञां त्वं दातुमर्हसि ॥२४॥[3] [N
आपृच्छ्यैव दशरथो राजानं मिथिलेश्वरम् ।
२६] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् निर्जगाम मुनींस्ततः ॥२५॥[4] [N
स गत्वा निलयं राजा कृत्वा श्राद्धं महत्तदा ।
२७] पुत्राणां प्रियपुत्रः स चक्रे गोदानमङ्गलम् ॥२६॥[8] [२२
गवां शतसहस्रं हि ब्राह्मणेभ्यो नरेश्वरः ।[9]
२८] एकैकशो ददौ तत्र पुत्रानुद्दिश्य तान् पृथक् ॥२७॥ [२२

---

१. ल—शेषकर्माणि सर्वाणि विधास्ये इति चाब्रवीत् ।
भ—शेषकर्माणि पर्वाणि विधास्य इति चाब्रवीत् ।
२. के रा—कालोऽतिगादयम् ।
३. ल भ—नास्ति ।
४. ल भ—आपृच्छय तं पुरस्कृत्य मुनिं दशरथो ययौ ।
५. ल भ—श्राद्धं कृत्वा सुपुष्कलं ।
६. ल भ—पुत्रार्थे ।
७. रा—प्रियपुत्रस्य ।
८. ज—गोदानसंकुलं । ल भ—०मुत्तमम् ।
९. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
गवां शतसहस्राणि विधास्य इति चाब्रवीत् ।
ल—आपृच्छ्य जनकं राजा दानमत्यद्भुतं तथा ॥
भ— ,, ,, ,, दानमभ्युदयं ,, ॥
१०. ल—गवां शतसहस्राणि चत्वारि पुरुषर्षभ ।
भ— ,, ,, ,, पुरुषर्षभः ।
११. ल भ—राजा ।
१२. ल भ—धार्मिकः ।

पयस्विनीनां हि गवां सवत्सानां सुवर्चसाम् ।[2]
२९] ददौ शतसहस्राणि चत्वारि रघुनन्दनः[3] ॥२८॥[4] [२१
ततश्च कृतगोदानो वृतः पुत्रैर्महीपतिः ।[5]
३०] लोकपालैरिव बभौ वृतः साक्षात् प्रजापतिः ॥२६॥[6] [२५

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे गोदान-
विधिर्नाम अष्टषष्टितमः सर्गः ।[8]

१. ज—स्ववर्चसां ।
२. ल भ—सुवर्णशृंगीः सुछ्वाः सवत्साः कांस्यदोहनाः ।
३. ल—वित्तमन्यच्च सुबहु द्विजेभ्यो रघुनन्दनः ।
भ—वित्तमन्यद्बहु वसु " " ।
४. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
ददौ गोदानमुद्दिश्य पुत्राणां पुत्रवत्सलः ।
५. ल—स सुतैः कृतगोदानैर्वृतस्तु नृपतिस्तदा ।
भ—सुकृतः " " ।
६. ल भ—विभुर्वृतः सौम्यः ।
७. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—
मुमुदे तत्र सुप्रीतः स्वर्गे शक्र इवामरैः ।
८. के—चतुः सप्ततितमः । रा—चतुःसप्तति ।
ज—षष्टितमः । ब—नास्ति ।
९. ल भ—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

यमेव दिवसं राजा चक्रे गोदानसत्क्रियाम् ।
१] तमेव दिवसं तत्र युधाजित् समपद्यत ॥१॥ [१
पुत्रः केकयराजस्य शूरो भरतमातुलः ।
२] दृष्ट्वा पृष्ट्वा च कुशलं राजानं परिषस्वजे ॥२॥ [२
युधाजिच्चापि संपूज्य पर्यपृच्छदनामयम् ।
३] पृष्ट्वा चानामयं पश्चादिदं वचनमब्रवीत् ॥३॥[6] [N
N] केकयादिनिवासानामन्येषामपि पार्थिवः ।[7] [N
केकयाधिपती राजन् स्नेहात् कुशलमब्रवीत् ॥४॥
४] येषां कुशलकामोऽसि तेषां कुशलमुत्तमम् ।[8] [३
स्वस्रेयं द्रष्टुकामो हि[10] [11]त्वां राजन् सहबान्धवम् ॥५॥

---

१. ज—गोदानमंगलं । ल भ—गोदानमुत्तमं ।
२. ल—शूरैः । शूरो ।
३. ज—०प्रत्यदृश्यत । ल भ—जिदुपयातवान् ।
४. के ल—कैकय० ।
५. भ—साक्षाद् ।
६. के—०परिषस्वजे । ज—पश्चाद्राजानमब्रवीत् ।
भ—राजानमिदमब्रवीत् ।
७. ल भ—नास्ति ।
८. ल—येषां कुशलकामः स तेषां पृच्छत्यनामयं ।
भ— ,, ,, ,, ,, पृच्छत्यनामयं ।
९. के रा—स्वस्रेयं । भ—स्वस्रीयं ।
१०. ल भ—मम राजेन्द्र ।
११. रा—०स सबान्धवं । ज—त्वां च राजन् सबान्धवम् ।
ल भ—द्रष्टुकामो महीपतिः ।

५] स्वपुरादागतः शीघ्रमयोध्यां रघुनन्दन । [४
श्रुत्वा चाहमयोध्यायामिहस्थं त्वां सबान्धवम् ॥[2]६॥ [५पू
६] त्वरावानुपयातोऽहं द्रष्टुं ते वृद्धिमीप्सिताम् ।[4] [६पू
तं[5] स राजा दशरथः प्रियातिथिमुपागतम् ॥७॥
७] दृष्ट्वा परमसत्कारैः पूजाऽर्हं प्रत्यपूजयत । [७
ततस्तामुषितो रात्रिं सह पुत्रैर्महीपतिः ॥८॥
८] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् मुनीन् यज्ञमुपाययौ । [८
युक्ते मुहूर्ते वैवाहे महाऽर्हाम्बरभूषणैः ॥९॥
९] कृतकौतुकमङ्गल्यैः पुत्रैः दशरथो वृतः । [९
वसिष्ठं पुरतः कृत्वा तांश्चैवान्यान् महामुनीन् ॥[13]१०॥[१०पू

---

१. ल भ—तदर्थमुपयातोहमयोध्यां ।

२. ल भ—श्रुत्वा त्वहमयोध्यायां विवाहेषु समागमं ।

३. ज—वृद्धिमीप्सितं ।

४. ल भ—त्वरयाभ्युपयातोस्मि द्रष्टुकामः स्वसुः सुतम् ।

५. ल भ—अथ ।

६. ल भ—प्रियातिथिमुपस्थितं ।

७. ल—पूजार्हमपूजयत् । भ—पूजनार्हमपूजयत् ।

८. ल—०मुषतो ।

९. ल भ—पुत्रैर्महात्माभिः ।

१०. ल भ—मुनिं तदा पुरस्कृत्य यज्ञवाटमुपागमत् ।

११. ल भ—विजये ।

१२. ज—वरांवराविभूषणैः । ल—सर्वाभरणपूजितैः ।
भ—०भूषितैः ।

१३. ल भ—वसिष्ठमग्रतः कृत्वा सर्वांश्चैव द्विजर्षभान् ।

१०] यथान्यायमुपागम्य राजा वैदेहमब्रवीत् । [११
प्राप्ताः स्म राजन् भद्रं ते विवाहार्थं सदस्तव ॥११॥[1] [N
११] तत् साधु चिन्तयित्वाऽस्मान् प्रवेशयितुमर्हसि ।[2]
स्थिता हि ते वशे सर्वे वयमद्य सबान्धवाः ॥१२॥[3] [N
१२] स्ववंशधर्मा[4]द्युचितं कुरु वैवाहिकक्रमम् । [१३उ
इत्यु[6]क्तः मरमोदारं वा[7]क्यं वाक्यविशारदः ॥१३॥
१३] प्रत्युवाच ततो राजा मैथिलस्तं नराधिपम् ।[8] [१४
कः स्थितः प्रतिहारो मे कस्याज्ञा प्रतिपाल्यते ॥[9]१४॥
१४] स्वगृहे को विचारस्ते विश्रंभेण प्रविश्यताम् । [१५
यज्ञभूमिमिमां प्राप्ताः कृतकौतुकमङ्गलाः ॥[10][11]१५॥

१. ल भ—उपगम्य वसिष्ठस्तु वैदेहमिदमब्रवीत् ।
राजा दशरथो राजन् कृतकौतुकमंगलः ॥
२. कै—तत्साधु चिंतयितुमर्हसि ।
३. ल भ—पुत्रैर्नरवरश्रेष्ठ दातारमभिकांक्षति ।
दातृप्रतिगृहीतृभ्यां सर्वार्थाः प्रभवन्ति हि ।
४. रा—०धर्मायुचितं । ल—स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व ।
भ—स्वधर्मं प्रतिपद्यस्व ।
५. ज—वैवाहिकं क्रमं । ल भ—वैवाहमुत्तमं ।
६. रा—इत्युक्त्वा ।
७. ज—०वाक्यविदां वरः । ल भ—वसिष्ठेन महात्मना ।
८. ल—प्रत्युवाच महातेजा वाक्यं परमधर्मवित् ।
भ— ,, ,, ,, परमधर्मतः ।
९. ल—प्रतीहारः स्थितः को मे । कस्याज्ञां संप्रतीक्षथ ।
भ— ,, ,, ,, ,, ,, संप्रतीक्षथ ।
१०. ल भ—यदा राज्यमिदं तव ।
११. ल भ—कृतकौतुककृत्यास्तु वेदीमूलमुपागताः ।

१५] मम कन्याश्चतस्रो हि वह्नेर्दीप्ता इवार्चिषः । [१६
सज्जोऽहं त्वत्प्रतीक्षश्च वेद्यामस्यां स्थितो नृप ॥[3]१६॥
१६] अविघ्नं कुरु राजेन्द्र किमर्थं त्वं विलम्बसे । [१७
श्रुत्वैतज्जनकेनोक्तं वाक्यं दशरथो नृपः ॥१७॥
१७] प्रवेशयामास तदा वसिष्ठादीन् द्विजर्षभान् । [१८
ततो राजा विदेहानामुवाच रघुनन्दनम् ॥१८॥ [३२पृ
१८] रामं कमलपत्राक्षं पूर्वं वेदीमुपागतम् । [N
इयं सीता मम सुता सहधर्मचरी तव ॥१९॥
१९] गृहाण पाणिना पाणिं त्वमस्या रघुनन्दन । [३३
लक्ष्मणागच्छ पुत्र त्वमूर्मिलाया मयोद्यताम् ॥[12]२०॥[13]

---

१. ल भ—मम कन्या मुनिश्रेष्ठ ।

२. ल भ—इव त्विषः ।

३. ल भ—सज्जोस्मि त्वत्प्रतीक्षोस्मि वेद्यामस्यामवास्थितः ।

४. ल भ—च ।

५. ल—तदर्थं जन० । भ—तद्वाक्यं जन० ।

६. ल भ—श्रुत्वा ।

७. ल भ—ततः सर्वानृषिगणान्नृपः ।

८. ल—रघुनन्दन ।

९. ल भ—पूर्वमेव महायशाः ।

१०. ल भ—नरश्रेष्ठः ।

११. भ—मयोद्यतं ।

१२. ल भ—लक्ष्मणागच्छ भद्रं ते ऊर्मिलायाः परंतप ।

१३. ल—नास्ति ।

२०] गृहाणोपेत्य धर्मेण पाणिं राघव पाणिना ।[1] [३७
तमेवमुक्त्वा जनको भरतं केकयीसुतम् ।।२१।।
२१] नोदयामास धर्मात्मा माण्डव्याः पाणिसंग्रहे ।[5] [३८
शत्रुघ्नमपि चापीदं जनको वाक्यमब्रवीत् ।।[6]२२।।
२२] श्रुतकीर्तेर्गृहाण त्वं पाणिना पाणिमुद्यतम् । [३९
सर्वे भवन्तु सदृशैर्दारैर्युक्ता यतव्रताः ।।२३।।[8]
२३] कुलोचितं वै चरत धर्मं कल्याणमस्तु नः[11] ।[12]
जनकस्य वचः श्रुत्वा पाणींस्तान्जगृहुस्तदा ।।२४।। [४०
२४] चत्वारस्ते चतसृणां शतानन्दानुमोदिताः । [४१
अग्निं प्रदक्षिणं चक्रुस्ततः सर्वे यथाक्रमम् ।।२५।। [४२पू

---

१. ज छ भ—गृहाण पाणिना पाणिं माभूत्कालस्य पर्ययः ।
२. ल—तामेवमुक्त्वा ।
३. ल—प्रत्यभाषत ।
४. ज—चोदयामास ।
५. ल भ—गृह्णीष्व पाणिना पाणिं मांडव्या रघुनंदन ।
६. ल—शत्रुघ्नाय धर्मात्मा यथापूर्वं नरेश्वरः ।
भ—शत्रुघ्नाय च धर्मात्मा ,, जनेश्वरः ।
७. रा ज व—भवंतः ।
८. ल भ—श्रुतकीर्त्या महाबाहो पाणिं गृह्णीष्व पाणिना ।
सर्वे भवंतः सहिताः दीर्घकालमनिंदिताः ।
९. कै—कुलोचितं ।
१०. व—चरित ।
११. रा व—वः ।
१२. भ ल—पत्नीः संपरिगृह्णीध्वं मा भूत्कालस्य पर्ययः ।
१३. ल भ—कुमारा रघुनंदनाः ।
१४. ल भ—शतानंदमते स्थिताः ।
१५. ल भ—अग्नेः ।
१६. ल भ—चक्रुर्वेदीं राजानमेव च ।

२५] राज्ञा कृतस्वस्त्ययनाः तैश्च सर्वैर्महर्षिभिः ।[1] [N
पपात पुष्पवृष्टिश्च लाजैर्मिश्रा नभश्च्युता ॥[2]२६॥ [N
२६] तेषामुपरि सर्वेषां विवाहे पुण्यकर्मणाम् । [N
देवदुन्दुभयो नेदुरम्बरे मधुरस्वनाः ॥२७॥[4]
२७] शुश्रुवे मधुरश्चैव वीणावेणुस्वनो महान् ।[5] [४३
जगुश्च देवगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः[6] ॥२८॥
२८] विवाहे रघुमुख्यानां तदद्भुतमिवाभवत् [४४
सदृशे वर्तमाने च काले रतिकरे शुभे ॥[7]२९॥
२९] त्रिरग्निं ते परिक्रम्य तास्तद्वद्वर्वधूः पृथक् ।[8] [३५
स्वानि यानानि चारोप्य दारांस्ते प्रययुस्ततः ।[9] [N

---

१. ल भ—ऋषींश्च सुमहात्मानः सभार्यो रघुनंदन ।
२. ल भ—पुष्पवृष्टिर्महत्यासीदंतरिक्षेषु भास्वरा ।
३. ज—मधुरस्वराः ।
४. ल भ—नास्ति ।
५. ल—शंखदुंदुभिनिर्घोषः शंखशब्दश्च शुश्रुवे ।
भ—„ शांतिशब्दश्च „
६. ल—ननृतुश्चाप्सरःसंघा गंधर्वाश्च जगुः कलम् ।
भ—ननृतुश्चाप्सरो हृष्टा „ „ „ ।
७. ल भ—तादृशे वर्तमाने तु तूर्योत्कृष्टनिनादिते ।
८. कै—प्रयुयुस्ततः ज—० स्तदा ।
९. ल—त्विग्नींस्ते परिक्रम्य प्रतिजग्मुर्यशस्विनः ।
भ—त्रिरग्नींस्ते „ „ ।
ल—यथोपकार्यां विविशुः प्रहृष्टः रघुनंदनः ।
भ— „ „ प्रहृष्टा रघुनंदनाः ।

३०] राजाऽप्यनुययौ पश्चात् सर्षिसंघः सबान्धवः ॥[1] ३०॥[४६७

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[2] दशरथपुत्राणां[3] विवाहो नाम[4]
एकोनसप्ततितमः सर्गः[5] ॥६९॥

१. अतः परमधिकः पाठः—

ळ भ—अथ दशरथनामा भूपतिः सं बभासे
परिवृत इति पुत्रैर्बन्धुभाभिः समेतैः ।

ळ—शशधर इव मेघैर्मुक्तबिंबोथकान्ति—
समवदल्पकुबेरैराद्कुकांतासमेतैः ॥

भ—शशधर इव मेघैर्मुक्तबिंबो ब्रसान्ति—
र्यमवरुणकुबेरैरात्मकांतासनाथैः ॥

२. ळ भ—नास्ति ।

३. ज—दशरथपुत्र ।

४. कै रा—विवाहः । ळ—वाक्वैवाहिको नाम ।
भ—वैवाहिको नाम ।

५. कै. रा— पंचसप्ततितमः । ज—एकषष्टितमः ।
ब ळ भ--नास्ति ।

अथ राज्यां व्यतीतायां विश्वामित्रो महामुनिः ।
१] आमन्त्र्य तौ नरव्याघ्रौ जगामोत्तरपर्वतम् ॥ १ ॥ [१
विश्वामित्रे गते तस्मिन् जनकं मिथिलाधिपम् ।
२] आपृच्छ्य तं ययौ चापि राजा दशरथः पुरम् ॥२॥ [२
अथ राजा विदेहानां तत्र कन्याधनं ददौ । [४
३] कंबलाजिनरत्नानि दुकूलानि बहूनि च ॥[११]३॥ [५उ
नानारागाणि वासांसि शुभान्याभरणानि च ।[१२]
४] रत्नानि च महाऽर्हाणि[१४] यानानि विविधानि च ॥४॥[१५] [N
गवां शतसहस्राणि चत्वारि पृथगेव च । [५पू

---

१. ल भ—आपृच्छ्य ।
२. ल—नरव्याघ्रौ ।
३. ल भ—चापि ।
४. ल भ—वैदेहं ।
५. ल भ—आपृच्छ्याथ जगामाशु ।
६. ल भ—पुरीं ।
७. ल भ—ददौ ।
८. के—कन्याधनो ।
९. ल भ—बहु ।
१०. के—दुगूलानि । ज—दुष्कूलानि ।
ब—दुर्गूलानि ।
११. ल भ—कम्बलादीनि वस्त्राणि क्षौमपट्टांबराणि च ।
१२. रा—नानारंगाणि ।
१३. के—नास्ति ।
१४. ज—महार्घाणि ।
१५. ल भ—नास्ति ।

५] ददौ राजा महाऽर्हाणि[१] कन्याधनमभीप्सितम्[२] ॥५॥[३] [७३

चतुरङ्गं बलं चान्यद्[४]धनपानं महद् ददौ ।

६] दासीनां निष्ककण्ठीनां सहस्रमपि चाददत्[५] ॥६॥[६] [N

सुवर्णस्यायुतं पूर्वं[७] हिरण्यस्य च मैथिलः ।[८]

७] ददौ प्रीतेन[९] मनसा कन्याधनमनुत्तमम्[१०] ॥७॥ [N

एवं दत्त्वा बहुविधं तमनुज्ञाप्य पार्थिवः ।[११]

८] प्रविवेश पुरीं रम्यां[१२] मिथिलां मिथिलेश्वरः ॥८॥ [८

राजाऽप्ययोध्याऽधिपतिः सह पुत्रैर्महात्मभिः[१३] ।

९] पुरस्कृत्य वसिष्ठादीन् गुरूंस्तान् प्रययौ ततः ॥[१४]९॥ [६

तं गच्छन्तं कृतोद्वाहं स्वपुरं सपदानुगम् ।[१५]

---

१. ज—महार्घाणि ।

२. रा—कन्यादानमभिप्सितम् ।

३. ल भ—गवां शतसहस्राणि बहूनि मिथिलाधिपः ।

४. रा—०वस्त्रपानं ।

५. कै—चालङ्कृत ।

६. ल—पदातींश्च द्विपरथां दिव्यरूपानलंकृताम् ।

भ—पदात्यश्वद्विपरथान्दिव्यरूपानलंकृतान् ।

७. ज—पूर्णं ।

८. ल—हिरण्यस्य सुवर्णस्य दासीनां च शतशतम् ।

भ— ,, ,, ,, शतं शतम् ।

९. ल भ—परमसंहृष्टः ।

१०. रा—कन्यादानमनुत्तमं ।

११. ल भ—दत्त्वा बहुविधं राजा समनुज्ञाप्य पार्थिवं ।

१२. ल भ—स्वनिलयं ।

१३. ल—सहसपुत्रैर्महा० ।

१४. ल भ—ऋषीन् सर्वान्पुरस्कृत्य जगामाशु महाबलः ।

१५. ल—कृतोद्वाहं तं गच्छन्तं सर्षिसंघं सुबान्धवम् ।

भ— ,, स ,, ,, सबान्धवम् ।

१०] अपसव्यं ततो जग्मुः पक्षिणो भयवेदिनः ॥ १० ॥ [N
मृगाश्च शमयन्तस्तान् प्रतिजग्मुः प्रदक्षिणम् । [१०
११] तान् दृष्ट्वा व्यथितो राजा वसिष्ठं पर्यपृच्छत ॥ ११ ॥ [११
असौम्याः पक्षिणः कस्मान् मृगाश्चेमे प्रदक्षिणाः ।
१२] अकस्माच्चैव साकम्पं हृदयं केन मे मुने ॥ १२ ॥ [१२

---

१. ल भ—घोराः पक्षिगणा वाग्भिः प्रत्याशंसुः समंततः ।

२. ल भ—सौम्याश्चापि मृगा भीमा गच्छंति स्म प्रदक्षिणं ।

३. के ब ल—तां ।

४. ल भ—राजशार्दूलो ।

५. ल भ—प्रत्यभाषत ।

६. अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—भगवन्पश्यतामेतानुत्पातांश्च सुदारुणान् ।

ल—दिशश्च सर्वा भगवन्भूमोत्पातसमाकुलाः ।

भ—,, ,, भगवन्महोत्पातसमाकुलाः ।

ल—परिवेशस्तथा सूर्ये दृश्यते तु महानपि ।

भ—परिवेषस्तथा ,, ,, सुमहानपि ।

ल भ—तमसा च नभः सर्वं न प्राज्ञायत किंचन ।

दृष्ट्वा भयमुपाक्लिष्टं हृदयं मम चाभवत् ।

ब्रूहि मे विदितज्ञान भगवन्को ह्ययं विधिः ।

नान्यो वक्तामिदं शक्तस्त्वदृते मुनिसत्तम ।

किमनिष्टं महद्ब्रह्मन् पश्यामि सुमहद्भयं ।

७. ब—असोम्यः ।

८. ल भ—सव्या ।

९. ल—मृगाश्चापि । भ—मृगाश्चाथ ।

१०. ल—किमर्थं हृदयोत्कंपे हृदयं मे विषीदति ।

भ— ,, ,, त्कंपो ,, ,, ,,

राज्ञो दशरथस्येदं[1] श्रुत्वा वाक्यं तदा मुनिः[2] ।
१३] वसिष्ठस्तमुवाचेदं[3] श्रूयतामस्य यत्फलम् ॥१३॥ [१३
उपस्थितं भयं घोरं पक्षिणो वेदयन्ति ते[4] ।
१४] प्रदक्षिणं मृगाः सौम्यास्तदेव शमयन्ति ते ॥[5]१४॥ [१४
तयोः संवदतोरेवं[6] वायुः प्रादुरभून्महान्[7] ।
१५] प्रचण्डः शर्करावर्षी कम्पयन्निव मेदिनीम् ॥[8]१५॥ [१५
दिशः सतिमिरा[9]श्चासन्नुत्तताप दिवाकरः ।
१६] रजसा च जगत् सर्वं भस्मनेव व्यदीप्यत ॥१६॥[10] [१६
सर्वे चाप्यभवंस्तत्र सैनिका मूढचेतसः ।[11]
१७] वर्जयित्वा वसिष्ठादीनृषींस्तांश्चैव राघवान् ॥[12]१७॥ [१७

---

१. ल भ—॰रथस्येतच्छ्रुत्वा ।

२. ल भ—महामुनिः ।

३. ल भ—उवाच मधुरां वाणीं ।

४. ल—दिव्यं पक्षिमुखच्युतं ।
भ—दिव्यपक्षिमुखच्युतं ।

५. ल—मृगाः प्रशंसयंत्येते संतापस्त्यज्यतामहम् ।
भ— ,, प्रशमयंत्येते ,, तामयम् ।

६. ल भ—संवदतोस्तत्र ।

७. ल भ—प्रादुर्बभूव ह ।

८. ल भ—कंपयन्मेदिनीं सर्वां सपर्वतवनां शुभां ।

९. ज—सुतिमिरा॰ ।

१०. ल भ—तमसा संवृतः सूर्यो न प्राज्ञायत किंचन ।
भस्मनेवावृतं सर्वं संमूढमिव तद्बलम ॥

११. ल—वसिष्ठ ऋषयश्चान्ये राजा च ससुतस्तदा ।
भ—वसिष्ठो ,, ,, ,, ,,

१२. ल भ—विसंज्ञा इव तत्रासन्सर्वेऽन्ये च विचेतसः ।

ततो रजसि संक्रान्ते सैनिका लब्धचेतसः ।[1]
१८] आयान्तं ददृशुस्तत्र जटामण्डलधारिणम् ॥१८॥[2] [१८
महेन्द्रमिव[3] दुर्धर्षं कालान्तकयमोपमम् ।[4]
१९] दुर्निरीक्ष्यं[5] नरैरन्यैर्ज्वलितानलवर्चसम् ॥[6]१९॥ [१९
स्कन्धे[7] परशुमादाय धनुश्चेन्द्रायुधप्रभम् ।
२०] प्रगृह्यैकं शरं घोरं रुद्रं साक्षादिवागतम् ॥२०॥[8] [२०
रोषामर्षसमाविष्टं सधूममिव पावकम् ।
२१] जमदग्निसुतं रामं दृष्ट्वाऽभ्याशमुपागतम् ॥२१॥[9,10] [N
वसिष्ठप्रमुखा विप्रा जेपुः शान्तिपरायणाः ।[11] [२१उ
२२] सङ्गताश्चर्षयः सर्वे संजजल्पुरथो[12] मिथः ॥२२॥
कच्चित् पितृवधामर्षात् पुनर्नोत्सादयिष्यति ।[13] [२२

---

१. ल भ—तस्मिंस्तमसि घोरे तु भस्मछन्नेव सा चमूः ।
२. ल भ—ददर्श भीमकर्माणं ।
३. ल—कैलासमिव । भ—कैलाशमिव ।
४. ल भ—कालाग्निमिवदुःसहं ।
५. ज—दुर्निरीक्ष्यं ।
६. ल भ—ज्वलंतमिव तेजोभिर्दुर्निरीक्ष्यं पृथक् जनैः ।
७. ज—स्कंदे ।
८. ल—स्कंदावसक्तपरशुं धनुर्विद्युद्गुणोपमम ।
भ—स्कंधावसक्तपरशुं ,,
ल भ—प्रगृहीतशरं रामं त्रिपुरघ्नं यथा हरं ।
९. ज—दृष्ट्वाभ्याशं समागतं ।
१०. ल भ—तं दृष्ट्वा भीमकर्माणं ज्वलंतमिव पावकं ।
११. ल भ—जपहोमपरायणाः ।
१२. भ—समजल्पुरथो ।
१३. ल—कश्चित्क्षत्रवधामर्षीक्षत्रं नोत्सादयेत्पुनः ।
भ—कश्चित्क्षत्रवधामर्षी ,, ,, ।

२१] क्षत्रं रामोऽयमागत्य शान्तमन्युर्गतज्वरः ॥[1]२३॥ [२२
सर्वक्षत्रवधं घोरमसकृत् कृतवान् पुरा । [२१
२४] कच्चिदद्यापि सक्रोधः क्षत्रमुत्सादयिष्यति ॥२४[2]॥ [२३
इत्युक्त्वा चार्घ्यमुद्यम्यैं भगवन्तं ततोऽब्रुवन् ।[4]
२५] वसिष्ठप्रमुखा विप्राः सान्त्वपूर्वमिदं वचः ॥[5]२५॥ [२४
राम सुस्वागतं तेऽस्तु गृहाणार्घ्यमिदं प्रभो ।
२६] मुने भार्गव संशाम्य न क्रोद्धुं पुनरर्हसि ॥२६॥[8] [N
प्रतिगृह्य स तां पूजां प्रतिनन्द्य च तानृषीन् ।[9]
२७] रामं दाशरथिं रामं उवाचेदमनन्तरम् ॥२७॥ [२५

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे रामरामसमागमो नाम

सप्ततितमः सर्गः ॥७१॥[13]

---

१. ल—पूर्वं क्षत्रवधं कृत्वा भार्गवो विगतज्वरः ।
भ— „ „ „ गतमन्युर्गतज्वरः ।
२. ल भ—क्षत्रस्योत्सादनं भूयो मा त्वत्स्य चिकीर्षितम् ।
३. ज—०मादाय ।
४, ल—एवमुक्त्वार्घ्यमादाय भार्गवं भीमदर्शनं ।
भ— „ र्घमादाय „ „
५. ल भ—ऋषयो राम रामेति तदा मधुरमब्रुवन् ।
६. ब—स्वस्वागतं ।
७. ज—क्रोधं ।
८. ल भ.—नास्ति ।
९. ल भ—प्रतिगृह्य तु तां पूजां जामदग्न्यः प्रतापवान् ।
ज्वलज्ज्वलनसंकाशस्तेजसा मोहयन्निव ।
१०, ल भ—रामः समुपेत्याभ्यभाषत ।
११. ज—परशुराम० ।
१२. कै रा—षट्सप्ततितमः । भ—द्विषष्टितमः ।
१३. ल भ—सर्गसमाप्तिर्नास्ति

राम दाशरथे[1] वीरे[2] वीर्यं ते श्रूयतेऽद्भुतम् ।
१] धनुः किल त्वया भग्नं दिव्यं यत् तच्छ्रुतं मया ॥[3]१॥[4] [१
२उ] श्रुत्वैवाहमनुप्राप्त आदायेदं महद्धनुः ।[5] [२उ
अनेन धनुषा राम मया कृत्स्ना मही जिता ॥[6]२॥ [N
३] पूरयेदमपि क्षिप्रं बलं दर्शय राघव । [३उ
विकर्ष चापं सन्धाय बाणेनानेन[7] राघव ॥३॥[8] [N
४] गृहाणेदं धनुर्दिव्यं शरं चेमं मयोद्यतम् ।[9]
शक्नोषि चेद् योजयितुं बाणेनानेन[10] कार्मुकम् ॥४॥[11] [N
५] ततो दास्यामि चापं ते वीर्यश्लाघ्यमनुत्तमम् ।[12] [४उ

---

१. रा—दाशरथी ।
२. ल भ—शूर श्रूयते ते महद्बलम् ।
३. ल—धनुषो भेदनं सर्वं निखिलेन मया श्रुतम् ।
भ— ,, ,, ,, निखिलं च ,, ,,
४. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
तदद्भुतमचिन्त्यं च धनुषो भेदनं त्वया ।
५. ल—श्रुत्वाहं समनुप्राप्तो गृहीत्वेदं महद्धनुः ।
भ— ,, ,, गृहीत्वेतन्महद्धनुः ।
६. ल भ—नास्ति ।
७. कै रा—बाणेनानेन ।
८. ल भ—तदिदं समनुप्राप्तं जामदग्न्यं महद्धनुः ।
९. ल भ—सशरं पश्य राम त्वं स्वबलं दर्शयस्व मे ।
१०. कै रा—बाणेनानेन ।
११. ल भ—तदहं ते बलं ज्ञात्वा धनुषोस्य प्रपूरणे ।
१२. ल—धनू राम प्रदास्यामि वीर्यश्लाघ्यमिदं तव ।
भ— ,, ,, ,, वीर्यश्लाघ्यमतस्तव ।

तस्येदं वचनं श्रुत्वा राजा दशरथस्तदा ॥५॥

६] विषण्णवदनो भूत्वा प्राञ्जलिः प्रणतोऽब्रवीत् । [५

राम रोषः प्रशान्तस्ते ब्राह्मणस्त्वं क्षमात्मकः ॥६॥

७] बालानां मम पुत्राणामभयं दातुमर्हसि । [६

भृगूणां हि कुले जातः शान्तानां त्वं महात्मनाम् ॥७॥

८] तपःस्वाध्यायशीलानां न क्रोद्धुं पुनरर्हसि । [७

ऋचीकच्यवनादीनां पितॄणां सन्निधौ पुरा ॥८॥

९] न योत्स्यामीति सन्त्यज्य शस्त्रमुत्स्रष्टुमर्हसि । [N

तपोदमरतो भूत्वा कश्यपाय वसुन्धराम् ॥९॥

१०] दत्त्वा वनमुपागम्य संन्यासं कृतवान् कथम् । [८

मम सर्वविनाशाय भूयो योद्धुमिहेच्छसि ॥१०॥

---

१. ल भ—तस्य तद्वचनं ।

२. ज—०रथस्तथा ।

३. ल भ—विषण्णवदनस्त्रस्तः प्राञ्जलिर्दीनमब्रवीत् ।
रामरोषाच्च शान्तस्त्वं ब्राह्मणश्च महायशाः ।

४. ल भ—पुत्राणां मामयं ।

५. ल भ—कर्तुमर्हसि ।

६. ल भ—स्वाध्यायव्रतशालिनाम् ।

७. ज—क्रोधं ।

८. के—०रच्यवनादीनां । रा—०कस्यपवादी० ।
ज—०कस्यपवना० ।

९. के ब—पितृणां । रा—पितॄणां ।

१०. ल भ—[illegible] ।

११. ल भ—सहसा वै प्रतिज्ञाय कथं निक्षिप्य यास्यसि ।

१२. ल—यस्त्वं धर्मपरो । भ—स त्वं धर्मरतो ।

१३. ल भ—महेन्द्र कृतकेतन ।

१४. ल भ—संप्राप्तः किं महामुने ।

११] न ह्येतस्मिन् हते राम जीवामः सर्व एव हि ।[1] [६
प्रसीद भृगुशार्दूल त्रायस्व शरणागतम् ॥[2]११॥
१२] राम पुत्रं न मे बालं रामं सन्दग्धुमर्हसि ।[3] [N
ब्रुवत्येवं दशरथे जामदग्न्यः प्रतापवान् ॥१२॥
१३] अनादृत्यैवं तद् वाक्यं भूयो राममभाषत । [१०
द्वे इमे धनुषी राम दिव्ये लोकत्रये श्रुते ॥१३॥
१४] दृढे बलवती मुख्ये निर्मिते[10] विश्वकर्मणा । [११
तयोरेकं त्र्यम्बकाय दत्तं राम युयुत्सवे ॥[11]१४॥ [१२ज
१५] त्रिपुरं जघ्नुषो देवैर्भग्नं[13] काकुत्स्थ तत् त्वया ।

---

१. ल भ—न चैकस्मिन्हते रामे सर्वे जीवामहे वयं ।

२. ज—गुरुशार्दूल ।

३. ल भ—नास्ति ।

४. ल भ—ब्रुवत्येवं ।

५. ल भ—अनादृत्य तु ।

६. ल भ—एव ।

७. ज—धनुषे ।

८. ल भ—रते ।

९. ल भ—त्रैलोक्यविश्रुते ।

१०. ल भ—मुख्ये ।

११. ल भ—अतिसृष्टं सुरैरेकं त्र्यम्बकस्य युयुत्सवे ।

१२. अतः परमधिकः पाठः—
ल—जृंभकस्य विष्णोरथ [illegible] ।
भ— ,, ,, [illegible] ।

१३. ल भ—पुराहते [illegible] ।

१४. के रा—काकुत्स्थ । अ—काकुत्स्थ ।

इदं द्वितीयमपरं विष्णवे यद्द ददुः सुराः ॥१५॥[1] [१३

१६] द्रव्यसारबलमाणप्रमाणाकृतिभिः समम् । [N

प्रमाणं यत्र पप्रच्छुः सुराः कौतूहलान्विताः ॥१६॥[2]

१७] शितिकण्ठस्य विष्णोश्च धनुषोर्यद्द बलाबलम् ।[3] [१५

अभिप्रायं विदित्वा [4]तं देवानां च पितामहः ॥१७॥[5]

१८] विरोधयामास मिथो विष्णुं शङ्करमेव च । [१६

विरोधे[6] च[7] महद्द युद्धमभवत् तत्र देवयोः ॥१८॥[8]

१९] शितिकण्ठस्य विष्णोश्च परस्परजिगीषया[9] । [१७

तदैतत्[10] पूरितं शैवं धनुर्भीमपराक्रमम् ॥१९॥

२०] हुङ्कारेण महादेवं[11] स्तंभयामास केशवः । [१८

दैवतैस्तु[12] समागम्य सर्षिसंघैः सचारणैः ॥२०॥

---

१. ल भ—द्वितीयमपि दुर्धर्षं ।

२. ल भ—समानसारं काकुत्स्थ रौद्रेण धनुषान्वितं ।
दृष्ट्वा च देवताः सर्वाः पृच्छन्ति स्म पितामहं ।

३. भ—धनुषोरेव बलाबले ।

४. भ—तु देवतापितामहः ।

५. ल—नास्ति ।

६. ज—तदा ।

७. रा—विरोधेन ।

८. भ—विरोधं जनयामास तयोः सत्यवतां वरः ।
विरोधे सुमहद्युद्धमभवद्रोमहर्षणं ।
ल—नास्ति ।

९. ल भ—परस्परजयैषिणोः

१०. ल भ—तस्य तत्पूरितं ।

११. ज—महादेव ।

१२. रा ज—देवतैस्तु ।

२१] याचितो न प्रहृतवान् विष्णु र्बलवतां वरः । [१९
जिते[1] हि धनुषा सार्धं शिवे[2] विष्णुपराक्रमात्[3] ॥२१॥
२२] अधिकं मेनिरे विष्णुं विबुधा धनुषा सह[4] । [२०
धनुस्तु जृंभितं रुद्रो विदेहेषु महायशाः[5] ॥२२॥
२३] देवरातस्य राजर्षेर्ददौ न्यासमनुत्तमम्[6] । [२२
इदं च वैष्णवं राम धनुरभ्यधिकं ततः ॥२३॥
२४] ऋचीके भार्गवे न्यासं निदधे धनुरूर्जितम्[7] । [२४
ऋचीकोऽपि[9] महातेजाः पुत्रायामिततेजसे[10] ॥२४॥
२५] पित्रे[11][12] मम ददौ दिव्यं कार्मुकं जमदग्नये । [२५
न्यस्तशस्त्रे तु[13] पितरि[13] मदीये शमेमास्थिते[14] ॥२५॥

---

१. ज—जितो ।

२. अ—जितो ।

३. कै—०पराक्रमम् ।

४. ळ भ—देवाः सर्षिगणास्तदा ।

५. ळ—यदा तु रुद्रः संक्रुद्धो ।
 भ—ततस्तु „ „ ।

६. ळ—देवरातस्य देवेशो ददौ स न्यासमायुधम् ।
 भ—देवराताय „ „ „ „ ।

७. ळ भ—धनुः परमपूजितम् ।

८. ळ—ऋचीके भार्गवे प्रादाद्विष्णुः सन्न्यासमायुधम् ।
 भ—„ „ „ सन्न्यासमुत्तमं ।

९. ळ भ—ऋचीकस्तु ।

१०. ळ भ—पुत्रायाद्भुतकर्मणे ।

११. ळ भ—पुत्रेणाद्भुतदो ?

१२. भ—पित्र्यं ।

१३. ळ—पतरि मे । भ—पितारि मे ।

१४. ळ—तपोबलसमन्विते ।
 भ—तपोद्युमसमन्विते ।

२६] अर्जुनो विदधे मृत्युं माकृतां बुद्धिमास्थितः।[1] [२६
तं रामासदृशं श्रुत्वा पितुस्तस्य वधं मया॥[2]२६॥ [२७पू
२७] असकृत् सूदितं क्षत्रं जातं जातमनेन हि।[3] [२९उ
पृथिवी चापि विजिता मयाऽस्य धनुषो बलात्॥[4]२७॥
२८] दत्त्वा चेयं विनिर्जित्य कश्यपाय महात्मने।[5] [२९पू
कश्यपाय च दत्त्वेमामखिलां सागराम्बराम्॥[6]२८॥[7]
२९] न्यस्तशस्त्रस्तपस्तप्तुं गतोऽहं मेरुपर्वतम्।
तत्र संन्यस्तशस्त्रोऽपि तपस्यभिरतोऽभवम्॥२९॥[8] [३०
३०] श्रुत्वाऽस्य धनुषो भङ्गं द्रष्टुं त्वां समुपागतः [३१
तदिदं वैष्णवं राम पितृपर्यागतं मम॥३०॥[11][12]

---

१. ज—प्रकृतां।

२. ल भ—वधमप्रतिमं श्रुत्वा पितुस्तस्य महात्मनः।

३. ल—क्षात्रमुत्सादितं क्रोधाज्जातं जातमनेकधा।
भ—क्षत्रमुत्सादितं „ „

४. ल भ—नास्ति।

५. ल भ—पृथिवीमखिलां जित्वा कश्यपाय महात्मने।

६. ल—यज्ञस्यान्तेऽहमददं दक्षिणां पुण्यकर्मणे।
भ—यज्ञस्यान्तेऽहमदां „ पुण्यकर्म्मणः।

७. अतः परमाधिकः पाठः—
ल—ततो महेन्द्रनिलयं तपोबलसमन्वितः।
भ— „ „ निलयो बलवीर्यसमन्वितः।

८. भ—ऽप्यहं।

९. ल—नास्ति।

१०. भ—श्रुत्वा च।

११. भ—पितृपाणिगतं।

१२. ल—नास्ति।

३१] क्षत्रधर्ममुपाश्रित्य[1] गृहाण धनुरुत्तमम् । [१२
योजयस्व गृहीत्वा च शरेण रघुनन्दन ॥३१॥[2]

३२] यदि शक्ष्यसि सन्धातुं[3] युद्धं दास्यामि ते ततः ।[4] [३३
तच्छ्रुत्वा जामदग्न्यस्य रामो रामस्य भाषितम्॥[5] ३२॥

३३] गौरवाद्यन्त्रितस्तस्य पितुर्वचनमब्रवीत् ।[6] [७६,१
श्रुतवानस्मि ते कर्म [7]घोरं यद् तत्कृतं त्वया ॥३३॥

३४] न तेऽभ्यसूये तव कर्म पितुरानृण्यकारिणः ।[8] [२
वीर्यशक्तिपरिक्षीणं[9] क्षत्रमुत्सादितं त्वया[10] ॥३४॥ [३५

३५] माऽतिक्रूरेण[11] तेन त्वं कर्मणा गर्वितो भव ।

---

१. भ—क्षत्रधर्मं समाश्रित्य ।

२. ल—नास्ति ।

३. कै—संधानं ।

४. अतः परमधिकः पाठः—

ल भ—एवं ब्रुवाणे वचनं महामुनौ ।

ल—युगान्तकालोच्छ्वसिताभिधकर्मणी ।

भ— ,, च्छ्वसिताभिभैरवं ।

ल भ—चचाल सर्वं सचराचरं जगत्त्रयाचकम्पे सह देवदानवैः ॥

भ—इत्यार्षे रामायणे बालकांडे रामरामसमागमो नाम सर्गः ॥५२॥

५. ल भ—तच्छ्रुत्वा वचनं तस्य वाक्यं दशरथात्मजः ।

६. ल भ—गौरवाद्यन्त्रितकथो रामो राममथाब्रवीत् ।

७. ल भ—कृतं यत्तत्पुरातनम् ।

८. ल भ—न ते सूयामि ते ब्रह्मन्पितुरानृण्यकारिणः ।

९. ल अ—वीर्यहीनमिदं यत्तु ।

१०. रा—० मुत्सारितं० । भ—क्षत्रधर्मेण भार्गव ।

११. रा ब—मातेऽक्रूरेण ।

आनयैतद्[1] धनुर्दिव्यं पश्य मे बलपौरुषम् ॥[2]३५॥[3] [N
३६] क्षत्रस्यापि महत् तेजः पश्य मे[4] भृगुनन्दन ।[5] [N
इत्युक्त्वा तद् धनुर्दिव्यं रामो जग्राह वीर्यवान् ॥[6]३६॥ [४पू
३७] रामस्य जामदग्न्यस्य हस्तादीषत्कृतस्मितः ।
शरं च हस्तादादाय ततो लघुपराक्रमः ॥३७॥[7] [४उ
३८] सन्धाय च शरं चापं[8] प्रचकर्ष[9] महायशाः ।
प्रकृष्य बलवच्चापि तद् धनुः सशरं तदा ॥३८॥[10] [५पू
३९] रामो दाशरथि र्वाक्यमिदं राममुवाच ह ।[11] [५उ
ब्राह्मणोऽसीति पूज्यो मे विश्वामित्रकृतेन च ॥३९॥
४०] शक्तोऽपि ते न मुञ्चेयमिमं[12] प्राणहरं[13] शरम् । [६
इमां तु ते [14]गतिं दिव्यां निहन्मि तपसाऽर्जिताम्॥[15] ४०॥

---

१. के—आनयैस्तद्धनुर्दिव्यं ।
२. ल—नास्ति ।
३. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
प्रतिगृह्णामि तेजोस्य पश्य मे तत्र पौरुषम् ।
४. ज भ—पश्याद्य ।
५. ल—नास्ति ।
६. ल भ—इत्युक्त्वा राघवो वाक्यं भार्गवस्य वरायुधम् ।
७. ल—स तथाप्रतिसंहस्ताद् गृहीत्वात्र पराक्रमात् ।
भ—,, ,, ,, गृहीत्वा सुपराक्रमः ।
८. रा—चापि ।
९. ज—प्रकर्ष च ।
१०. ल भ—आरोप्य रामस्तु धनुः शरमारोप्य कांचनं ।
११. ल भ—जामदग्न्यमसंभ्रान्तो राघवो वाक्यमब्रवीत् ।
१२. ल भ—मुंचेयमहं ।
१३. ज—इमं ।
१४. के—गतं ।
१५. ल भ—इमांस्तव कृते राम तपोबलसमन्विताम् ।

४१] लोकानप्रतिमान् पुण्यान् निहन्मि शरतेजसा । [७
न ह्ययं वैष्णवो राम शक्यो दिव्यो महाशरः ॥४१॥
४२] मयाऽमोघः समुत्सृष्टो बलदर्पविनाशनः । [८
ततो वरायुधधरं रामं दशरथात्मजम् ॥४२॥
४३] द्रष्टुं ब्रह्मादयो देवाः समाजग्मुर्मनोजवाः । [१०
देवानुपरि तांस्तत्र दृष्ट्वा दिव्येन चक्षुषा ॥४३॥
४४] बुद्ध्या च ध्यानयोगेन समं नारायणेन तान् । [N
रामाभिभूतवीर्यौजा जामदग्न्यस्ततोऽब्रवीत् ॥४४॥
४५] कृताञ्जलिरिदं वाक्यं रामं दशरथात्मजम् । [१२
कश्यपाय यदा राम मया दत्ता वसुन्धरा ॥४५॥

---

१. ल भ—चापि वधिष्यामि यदीच्छसि ।
२. ल भ—दिव्यः शरः परपुरंजयः ।
३. ल भ—मोघः पतति वीरेषु ।
४. ल भ—वरायुधधरं रामं देवाः सर्षिगणास्तदा ।
५. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
पितामहं पुरस्कृत्य समेतास्तत्र सर्वशः ।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धचारणकिंनराः ॥
६. ज—देवानुपरतांस्तत्र ।
७. ल—यक्षराक्षसनागाश्च तद्द्रष्टुं महदद्भुतम् ।
भ— ,, ,, समुपागतं ।
ल भ—एकीभूते तदा लोके रामे चापि धनुर्धरे ॥
८. कै रा—बुद्ध्याऽवध्यान० । ज—बुद्ध्याऽवधान० ।
९. ल भ—निर्वीर्ये जामदग्न्येऽथ रामो राममुदैक्षत ।
१०. कै रा—०वीर्योजा ।
११. ल—यक्षराक्षसनागाश्च जामदग्न्यो जडीकृतः ।
भ—तेजोपहतवीर्यश्च ,, ,,
१२. ल भ—रामं कमलपत्राक्षं मन्दं मन्दमुवाच ह ।
१३. ल भ—पुरा दत्ता ।
१४. ल भ—राम ।

४६] विषये मे न वस्तव्यं त्वयेत्यथ स माऽन्वशात् ।[2] [१५
सोऽहं तदाप्रभृत्यस्यां[3] न वसामि क्षितौ क्वचित्॥[4]४६॥
४७] मिथ्याप्रतिज्ञः काकुत्स्थ मा भूवमिति निश्चितः ।[5] [१६
ततो नार्हसि मे हन्तुं[6] गतिं दिव्यां मनोजवाम्॥[7]४७॥[8] [१७
४८] लोकांस्तु जहि मे पुण्यान् शरेणानेन राघव ।[9] [१८
अक्षयं मधुहन्तारं[10] जाने त्वां[11] पुरुषोत्तमम् ॥४८॥
४९] धनुषोऽस्य परामर्षात् स्वस्ति तेऽस्तु प्रसीद मे[12] । [१९
एते सुरगणा रामं[13] पश्यन्ति त्वां समागताः ॥४९॥
५०] वरायुधधरं वीरं साक्षाद् विष्णुमिवापरम् ।[14] [२०

१. भ—कश्यपः ।
२. ल—विषये मे [न] वास्तव्यमिति वै काश्यपोऽब्रवीत् ।
भ— ,, ,, वस्तव्यमिति ,, ,,
३. ज—०प्रभृत्येतां ।
४. ल भ—सोहं गुरुवचः कुर्वन्निवसाम्यवशो भुवि ।
५. ल भ—हीनप्रतिज्ञः काकुत्स्थ तस्य कश्यपसंश्रया ।
६. कै—हतुं ।
७. ल भ—इमां मम गतिं तात हंतुं नार्हसि राघव ।
८. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
मनोजवो गमिष्यामि महेंद्रं पर्वतोत्तमं ।
ल—लोकास्त्वप्रतिमा राम तपसा निर्जिता मया ।
भ— ,, ,, निर्जितास्तपसा ,,
९. ल—जहि तां शरमोक्षेण मा भूत्कालस्य पर्ययः ।
भ— ,, तान् शरमुक्तेन ,, ,, ,,
१०. कै ल—मधुहर्तारं ।
११. ल भ—त्वाहं सुरोत्तमम् ।
१२. ल भ—परंतप ।
१३. ल—सर्वे निरीक्षंते । भ—सर्वे निरीक्षते ।
१४. ल भ—त्वामप्रतिमकर्माणमप्रतिद्वंद्वमाहवे ।

न चेयं मम काकुत्स्थ व्रीडा भवितुमर्हति[1] ॥५०॥

५१] त्वया त्रैलोक्यनाथेन[2] यदहं[3] विमुखीकृतः ।[4] [२१

इत्युक्तः[5] स शरं[6] रामो मुमोच रघुनन्दनः ॥[7]५१॥ [२२

५२] लोकेषु जामदग्न्यस्य रामस्यामिततेजसः[8]

५३उ] मुक्ते तस्मिन् शरे देवाः प्रशशंसुश्च राघवम् ॥५२॥ [२४

आकाशगा विमानेषु स्वेषु दिव्येष्ववस्थिताः ।[9]

५४] आसन् वितिमिराः सर्वा दिशोऽथ विदिशस्तदा ॥५३॥[10] [२५

रामोऽपि जामदग्न्यः स रामं दशरथात्मजम् ।

---

१. ल भ—भवति कर्हिचित् ।

२. ल—त्रिलोकनाथेन ।

३. कै—यद्वयं ।

४. ल भ—अतः परमाधिकः पाठः—

ल भ—शरं चाप्रतिमं राम त्यक्तुमर्हसि धार्मिक ।

शरमोक्षे गमिष्यामि महेन्द्रं पर्वतोत्तमम् ।

ल—रामोऽपि प्रददौ ह्येवं जामदग्न्ये प्रतापवान् ।

भ—रामेऽपि „ „ „ „ ।

५. रा—इत्युक्त्वा ।

६. ज—शरवं ।

७. ल भ—रामो दाशरथिः श्रीमान्चिक्षेप शरमुत्तमं ।

८. ल भ—नास्ति ।

९. ल—दिशः प्रतिदिशस्तथा ।

भ—दिशः प्रातिदिशस्तथा ।

१०. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—

प्रववुश्च शिवा वाता मृगाश्च शुभशंसिनः ।

सुराः सर्षिगणाश्चैव प्रशशंसुर्नृपात्मजं ॥

५५] प्रदक्षिणमुपावृत्य जगामाथ स्वमालयम् ॥५४॥' [२६

इत्यार्षे रामायणे बालकाण्डे[3] जामदग्न्यशोकवधो नाम
एकसप्ततितमः सर्गः ॥७१[6]॥

१. ल भ—रामो दाशरथिं रामं प्रशस्य रघुनंदनं ।
प्रदक्षिणीकृत्य ततो जगामात्मगतिं तदा ।

२. के भ—नास्ति ।

३. के—जमदग्निशोकवधः ।
रा—जामदग्निशोकवधः ।
भ—रामरामविवादे ।

४.—के रा ज—नास्ति ।

५. के रा—सप्तसप्ततितमः ।
ज—त्रिषष्टितमः ।
ब भ—नास्ति ।

६. ज—॥६३॥ भ—॥५६॥
ल—सर्गसमाप्तिर्न दृश्यते ।

जामदग्न्ये गते रामे[1] रामो दाशरथिर्धनुः । [१पू
१] लब्ध्वा सन्दर्शयामास पितुः स्वबलनिर्जितम् ॥१॥[2] [N
ततोऽभिवादयाञ्चक्रे वसिष्ठप्रमुखानृषीन् ।
२] प्रोवाच पितरं चेदं रामागमनविह्वलम् ॥[3]२॥ [२
जामदग्न्यो गतो रामः प्रयातु चतुरङ्गिणी ।
३] अयोध्याऽभिमुखी सेना त्वया नाथेन नाथिनी ॥३॥ [३
रामस्याथ वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनो नृपः ।[7]
४] बाहुभ्यां संपरिष्वज्य मूर्ध्नि चाघ्राय राघवम् ॥४॥ [५
गतो राम इति श्रुत्वा प्राप्य हर्षमनुत्तमम् ।
५] योजयित्वा पुनः सैन्यं जगाम स्वपुरीं प्रति ॥५॥[8] [६
समुच्छ्रितध्वजवतीं तूर्यस्वनविनादिताम् ।[9]

१. ल भ—गते रामे प्रशान्तात्मा ।

२. ल भ—वरुणायाप्रमेयाय ददौ हस्ते महायशाः ।

३. ल भ—अभिवाद्य ततो रामो । के—०अभिवादयाञ्चक्रे ।

४. ल भ—पितरं विह्वलं वाक्यमुवाच रघुनन्दनः ।

५. रा—अयोध्याधिपते ।

६. ल भ—पालिता ।

७. ल भ—रामस्य तद्वचः श्रुत्वा राजा दशरथः सुतम् ।

८. रा—नास्ति ।

ल—नोदयामास तां सेनां जगामाशु ततः पुरीम् ।

भ—„ „ „ जगाम ससुतः पुरीं ।

९. ल भ—पताकाध्वजिनीं रम्यां तूर्योत्कृष्टविनादितां ।

६] सिक्तराजपथां रम्यां प्रकीर्णकुसुमोत्कराम् ॥६॥[2] [८
राजप्रवेशाभिमुखैः पौरैर्मङ्गलवादिभिः ।
७] प्रकीर्णां प्राविशद्राजा पुरीं स्वं च निवेशनम् ॥७॥ [९
कौसल्या च सुमित्रा च कैकेयी च सुमध्यमा ।
८] वधूप्रतिग्रहे युक्ता याश्चान्या राजयोषितः ॥८॥ [१२
ततः सीतां श्रीप्रतिमामूर्मिलां च यशस्विनीम् ।
९] कुशध्वजसुते चोभे प्रतिगृह्यानुगृह्य च ॥९॥ [१४
ततः प्रवेशयामासुर्नृपवेश्म स्वलंकृताः ।[11] [N
१०] मङ्गलालभनीयैश्च शोभिताः क्षौमवाससः ॥१०॥ [१५पू
उपनिन्युश्च ता एता देवताऽऽयत ...न्यपि ।[12] [१५उ
११] अभिवाद्याभिवाद्यांश्च तेत्रै पूज्यान् गुरूंस्तथा ॥११॥ [१६पू

---

१. ल भ—कृत्वा ।

२. भ—०कुसुमोत्करां ।

३. रा—नास्ति ।

४. ल भ—प्रकीर्णा ।

५. ल भ—पुरं ।

६. रा—मुंच । ल भ—चक्रे ।

७. भ—कौशल्या ।

८. रा—कैकीये ।

९. रा ब—वधूप्रतिगृहे । ल—वधुप्रतिग्रहे ।

१०. अ भ—जग्मुर्नृपालयं ।

११. ल भ—नास्ति ।

१२. ल भ—दैवतायतनान्यादौ सर्वास्ताः परिचक्रमुः ।

१३. ल—सर्वा राजसुताः तथा ।
भ—सर्वा राजसुतास्तथा ।

रेमिरे मुदितास्तत्र भर्तृप्रियहिते रताः । [१७३
१२] तासां भूयो विशेषेण मैथिली जनकात्मजा ॥१२॥ [२४५
रमयामास भर्त्तारं विष्णुं श्रीरिव रूपिणी ।
१३] प्रकृत्यैव प्रिया सीता रामस्यासीन् महात्मनः ॥१३॥ [N
प्रियभावः स तु तया स्वगुणैरभिवर्धितः ।
१४] तथैव रामः सीतायाः प्राणेभ्योऽपि प्रियोऽभवत् ॥१४॥ [३२
हृदयं ह्येव जानाति प्रीतियोगं पुरातनम् ।
सीतया तु तया रामः प्रियया सह सङ्गतः । [N
१५] प्रियोऽधिकतरस्तस्या विजहारामरोपमः ॥१५॥
तया स राजर्षिसुतोऽनुरूपया,
समेयिवाननुत्तमराजकन्यया ।

---

१. अतः परमधिकः पाठः—
ल भ—कृतदाराः कृतास्त्राश्च सधना ससुहृज्जनाः ।
शुश्रूषमाणाः पितरं वर्तयन्ति नरर्षभाः ।
तेषामतियशा लोके रामः सत्यपराक्रमः ।
स्वयंभूरिव भूतानां बभूव गुणवत्तरः ।
रामस्तु सीतया सार्द्धं विजहार बहूनृतून् ।
मनश्च तद्गतं तस्य नित्यं हृदि समर्पितम् ।
प्रिया तु सीता रामस्य दाराः पितृकृता इति ।
ल—गुणाद्रूपगुणाच्चापि पुनर्भूयोपि वर्धिता ।
भ—गुणरूपगुणैश्चापि ,, हृदिस्थितः ।
ल—तस्याः स भर्ता द्विगुणं पुनर्भूयो हृदि स्थितः ।
भ—तस्यापि ,, ,, ,, ,, ,,
ल—अनाख्यातमपि व्यक्तं व्याख्यातहृदयं हृदि ।
भ— ,, व्यक्तमाख्याति हृदि ।
२. ल भ—तस्य । ३. ल भ—देवताभिः समा रूपे सीता ।
४. ल भ—नास्ति । ५. ल भ—नास्ति ।
६. ज—०मरोत्तमः । ७. ल भ—नास्ति । ८. ल—ततः ।
९. ज—०सुतः सुरूपया । ल—०सुतोऽभिकाम्यया । भ—०सुतोऽभिकाम्यया ।
१०. रा ज ल—समीयिवा० ।

अतीव रामः शुशुभे [1]सुकान्तया
१६] [2]युक्तः श्रिया विष्णुरिवा[3]पराजितः ॥१६॥[4] [२६

इत्यार्षे[5] रामायणे बालकाण्डे[6] अयोध्याप्रवेशो[7] नाम
द्विसप्ततितमः सर्गः[8] ॥ ७२ ॥

॥ [9]समाप्तमिदं बालकाण्डम् ॥

---

१. ल भ—ऽभिरामया ।
२. ज—युक्त० । ब—चक्षुः श्रिया ।
ल भ—शशीव पूर्णो ।
३. ल भ—दिवि देवकन्यया ।
४. ज—अतः परमधिकः पाठः—
आदिकाण्डमिदं प्रोक्तं सर्वाभ्युदयकारकं ।
यस्य श्रवणमात्रेण ब्रह्महत्यां व्यपोहति ।
आयुरारोग्यजनकं सबुद्धिवर्धनकारकं ।
पुत्रपौत्रादिवृद्धिश्च लभते परा गतिः ।
५. ल भ—अतः परमधिकः पाठः—
ल—महर्षिवाल्मीकिविरचिते चतुर्विंशतिसाहस्र्यां संहितायां ।
भ—महर्षिवाल्मीकिविरचिते ।
६. ब—आदिकांडे । भ—नास्ति ।
७. के रा—अयोध्याप्रवेशोद्विसप्ततितमः ।
ज—चतुःषष्टितमः । ब—अयोध्याप्रवेशो नाम ।
ल—दशरथप्रवेशप्रमोदो नाम ।
भ—दशरथप्रमोदनो नाम पंचाशत्तमः ।
८. भ—सर्गः समाप्तः ।
९. रा ज ब—समाप्तोऽयमादिकांडः ।
ज ल— ,, बालकांडः ।
के—नास्ति ।

सूचीपत्राणि

सूची (१)

शब्दविशेषसूची ।

(सूची–३)

॥ पुरनाम ॥

(सूची—४)

॥ नदनदीनाम ॥

(सूची--९)

॥ शस्त्रास्त्रादिनाम ॥



दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत-ग्रन्थमाला

प्रकाशित ग्रन्थ *

१—अथर्ववेदीया पञ्चपटलिका १॥)
२—ऋग्वेद पर व्याख्यान १।)
३—जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण २॥)
४—दन्त्योष्ठविधि ॥)
५—अथर्ववेदीया माण्डूकी शिक्षा १)
६—अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका ४)
७—रामायण, अयोध्या-काण्ड ७॥)
८—वैदिक कोष प्रथम भाग १२)
९—काठकगृह्यसूत्र with extracts from three com. ed. by Dr. W. Caland.
१०—वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग द्वितीय ५)
११—चारायणीय मन्त्रार्षाध्याय १)
१२—रामायण, बालकाण्ड ५)
१३—वैदिक वाङ्मय का इतिहास भाग १ खण्ड २ ५)

अन्य ग्रन्थ

१—संस्कृत साहित्य का इतिहास ३)
२—विशाल भारत ३)

* यन्त्रस्थ *

१—ऋग्वेदभाष्य-उद्गीथाचार्यकृत
२—रामायण, आरण्यकाण्ड

SUPDT. RESEARCH DEPARTMENT,

D. A. V. College Lahore